1292 ॥ श्रीः ॥

मीज़ान तिब्ब ।

अर्थात्

सर्वांग चिकित्सा ।

———०———

(हिकमत का अपूर्व ग्रंथ)

लाला बंशीधरजीने उर्दूसे हिन्दी भाषा में अनुवाद कराया और मथुरा निवासी श्रीकृष्णलाल ने शुद्ध किया

जिसको
लाला श्यामलाल हीरालाल,
मालिक 'श्यामकाशी यंत्रालय'
मथुरा ने
छपवाकर प्रकाशित किया ।

सं० १९८१

प्रिन्टर—पं० बाबूराम शर्मा शान्ति प्रेस आगरा ।

भूमिका।

प्रियवर वाचकवृन्द !

आज तिब्ब अकबर को छपे हुए बहुत वर्ष होगये, उसके उपरान्त हमको ऐसा सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ कि हम फार सिकमतें का और ग्रन्थ लेकर पाठकोंकी भेटके लिये उपस्थित होते, यद्यपि कितनी ही बार प्रयत्न किया गया पर औरर कामोंकी अधिकता से यह मार्ग अवरुद्ध रहा।

अब यह मीजानतिब्ब नामका ग्रन्थ आप लोगोंकी भेट है यह हिकमत का अपूर्व ग्रन्थ है इसमें सिरसे पांव तक के सब रोगों के लक्षण निदान पूर्वरूप और चिकित्सा दिये गये हैं चिकित्सा प्रकरण में अनेक प्रकार के छोटे बड़े नुसखे दिये गये हैं जो तीरकी समान काम करने वाले हैं।

यह ग्रन्थ बहुत उपयोगी है इसकी प्रथमावृत्ति लिथो में हुई थी अबकीबार यह टाईपमें सुवाच्य अक्षरोंमें मोटे कागजपर छापा है।

आशा है आप सब लोग इसकी एकर प्रति अवश्य खरीद कर अन्य ग्रन्थों के प्रकाश करने में हमारा उत्साह बढ़ावेंगे।

तृतीय सम्करण।

यहाही शुभ समय है कि पहिली और दूसरी बारका छपा हुआ यह ग्रन्थ हाथों हाथ बिक गया अब तीसरी बार पाठकों समीप छपकर उपस्थित है।

पुस्तकें मिलने का पता—

लाला श्यामलाल हीरालाल

श्यामकाशी प्रेस मथुरा।

अनुक्रमणिका

—— :: ——

श्रीगणेशायनमः।

अथ मीज़ानुतिब्ब हिन्दी

पहिला खण्ड

गरमी, सरदी, तरी, और खुश्की की पहचान और रूह के विषय में।

गर्मी की पहचान

अधिक प्यास, जलन, देह पर जर्दी, या सुर्खी, ठंडक का अच्छा मालूम होना, सिर में भारीपन, अंगड़ाई, जंभाई, और नींद की अधिकता सुस्ती मुंह में पीलापन देह और जीभ पर लाली होगी, फुन्सियां और फोड़े बहुत निकलेंगे, मसूड़े से खून का बहना, नकसीर बहना, हाथ पांव गिरना, और देह का दुखना ये रुधिर की गर्मी के लक्षण हैं। जो गरमी पित्त से होगी उसकी पहचान यह है, देह जिह्वा और आंख में पीलापन, मुख में कड़वापन, जीभ में सूखापन और कांटे पड़ें, नाक में खुश्की, प्यास का होना, भूख की कमी, जी मिचलाना, रोमांच का खड़ा होना, इतने लक्षण से गरमी की पहचान है।

सरदी की पहचान।

प्यास और जलन का न होना, बदन का रंग सफेद या काला होना, जो सरदी कफ से हो उसकी पहचान यह है देह की सफेदी और नरमी सुस्ती होना बदन ठंडा होना, प्यास न होना, खट्टी डकार आनी, नींद बहुत आनी, इन्द्रियों का शिथिल होना, थूक का पतला और बेनमक होना, नाक से पतला पानी बहना, जो सरदी सौदा से हो उसकी पहचान

यह है बदन का काला होना, फस्द से काला और गाढ़ा रुधिर निकलना, बदन का दुबला होना, सोच में वृथा बैठा रहना, कोठी की जगह ऐंठा होना और झूंठी भूख होनी।

तरी की पहचान।

शरीर का नरम और ढीला होना, अधिक भूख होना, नींद अधिक होना, जो तरी गर्मी के साथ हो उसकी पहचान ऊपर हो चुकी है।

खुश्की की पहचान

बदन की सख्ती और दुबला और कुरूप होना जो गर्मी पित्त और सौदा के साथ हो पहचान उसकी ऊपर हो चुकी है।

॥ इति पहचान ॥

——॥॥——

अब जानना चाहिये रुधिर, कफ, सौदा और पित्त से आदमी का शरीर स्थिर है, जो कोई इनमें से घट बढ़ जाता है तो रोग उत्पन्न हो जाता है, रुधिर गर्म और तर है, पित्त गर्म और खुश्क है, कफ सर्द और तर है, सौदा सर्द और खुश्क है इन ही चारों १ खिल्त से एक ठंढा धूंआं प्रकट होता है, उस में गर्मी नहीं रहती, और न मनुष्य के बदन की स्थिरता होती है उसे बायु कहते हैं, और यह बहुधा कफ और सौदा से उत्पन्न होती है और इनही चारों से जो धूंआं उत्पन्न होता है और बदन की स्थिरता और जान जिससे होती है उसको रूह कहते हैं।

॥ इति प्रथम खण्ड ॥

१ खिल्त अर्थात् रुधिर, कफ, सौदा, और पित्त ॥

दूसरा खण्ड ।

दवा और खाने के विषय में ।

अध्याय पहिला ।

न दवाओं के विषय में जो इन चारों के बिगाड़ को खोवें जानना चाहिये कि रुधिर चार प्रकार से बिगड़ता है-एक-यह कि अधिक होजाय, दूसरे पतला पड़ जाय, तीसरे गाढ़ा हो जाय, चौथे सड़ जाय। वह दवा जो रुधिर के जोश को थामें यह हैं-कासनी काहूकेबीज, धनियाँ, गुलाब के फूल, नीबू का रस, सिकञ्जबीन, शर्बतउन्नाव, शर्बत सन्दल, शर्बत केवड़ा, और जो इनके बराबर ठंडी हों। जो दवा गाढ़े रुधिर को अच्छा करें वे दवा यह हैं, आलूबुखारे का पानी, सौंफ का पानी, शाहतरे का पानी, सिकञ्जबीन, और शहद, अपने से दूने पानी में औटाया हुआ। और जो दवाइयां सौदा को निकालेंगी वे गाढ़े रुधिर को भी अच्छा करेंगी-क्योंकि सौदा के मिलने से रुधिर गाढ़ा हो जाता है, और गाढ़े बलगम अर्थात् कफ के मिलने से भी रुधिर गाढ़ा हो जाता है ऐसे समय में कफ का जुलाब और खट्टी दवाइयां दें, कि गाढ़े कफ काढ़े और कफ और सौदा के पतले होने के पीछे मूत्र लाने वाली दवाइयां दें जब रुधिर में बलगम मिला होगा तो फस्द में रुधिर सफेद निकलेगा और जो सौदा मिला होगा तो रुधिर काला होगा।

वे उपाय और दवाइयां कि जो पतले रुधिर को अच्छा करें जब रुधिर बलगम के मिलने से पतला हो तो बादरञ्जबोया, रेहां के बीज, हसराज, और जो दवाइयां खुश्क गर्म हों और कफ को निकाले, कायलीहद कफ के निकालने को बहुत अच्छी है और पहिचान इस बलगम के रुधिर में मिलने की यही है कि रुधिर का रंग सफेदी मिला हुआ होगा बदन का भलना और

मिहनत का करना, कसरत करना, कफ को फायदा देता है-जो रुधिर पित्त के मिलने से पतला हो जाय पहचान उसकी यह है-कि फस्द से पीला कफ रुधिर पर दिखाई देगा, उपाय इसका पित्त का निकालना है और पीली हड़ इसके लिये बहुत अच्छी है मसूर का पानी, शर्बत उन्नाब और कासनी का पानी फाड़ा हुआ और जो दवा रुधिर के जोश को फायदा करेंगी वे ही दवा इसको भी फायदा करेंगी-अब जानना चाहिये कि कभी गर्मी पहुंचने से खिल्त सड़ जाता है और बुखार जरूर हो जाता है और बिना गर्मी के कोई खिल्त नहीं सड़ता, इलाज उसका सर्द और खुश्क दवा से उचित है जो दवा रुधिर के जोश में लिखी गई हैं। रुधिर के गरम होने को रुधिर का जोश कहते हैं।

बिगाड़ पित्त का पांच प्रकार से है

एक यह कि पतला कफ उसमें मिले; दूसरे गाढ़ा कफ मिले, तीसरे थोड़ा सा सौदा उसमें मिल जाय, चौथे पहिला और तीसरा प्रकार दोनों मिल जांय, पांचवे पहिला और तीसरा प्रकार बहुत जलके उसमें मिले। चौथे और पांचवे प्रकार में यह भेद है कि-चौथे में गरमी कम होती है और पांचवे में अधिक नहीं तो दोनों एक हैं।

ये दवा जो पित्त को अच्छा करती हैं जहां गरमी अधिक हो वहां ठंडी दवा दें या एक दिन में दो तीन बार दें और जहां गरमी यकम होहां कम ठंडी दें ये यह हैं ईसबगोल, बीदाना, कुलफा, कासनी, खीरे ककड़ीकेबीज, सूखा धनियां, चंदन, काहूकेबीज, कपूर, ईसबगोल का लुआब, निकाल कर दें या फंका दें इसको कूटना नहीं क्योंकि कूटने से जहर हो जाता है, और बीदाने का भी लुआब निकालें, खांसी में खट्टी बिही का बीदाना दें

कुलफे और कासनी के बीजों का शीरा निकाले और इनके पत्तों का रस निकालें कासनी के पत्तों को धोना न चाहिये क्योंकि उसका असर जाता रहता है, जो कासनी के पत्तों का पानी फाड़ले और अकेला या कुछ मिठाई या खटाई मिलाकर पीवें तो रुधिर के साफ करने में इसके बराबर कोई दवा नहीं है, कुलफे के बीज को पीसकर बहुत छानना कावक दूर करने के लिये कुछ अच्छा नहीं है, *खीरा ककड़ी के बीज और धनिये* का शीरा निकाल लें या पानी में भिगोकर कूटकर पीवें और यही भिगोया हुआ बहुत जल्दी असर करता है।

चन्दन पानी में घिसकर देना बड़ी भारी गरमी का बुझाता है, और सफेद चन्दन लाल से अच्छा होता है, कपूर देह की गरमी को दूर करता है, और जो कि यह बहुत ठंडा है, इसलिये सिवाय जवान आदमी और गरम प्रकृति वाले के और को न दे और ठंडे फल जैसे खरबूज आदि और सब खटाइयां पित्त को अच्छी हैं, और स्त्री और लड़कों और बूढ़ों को बहुत ठंडी दवाइयां न देनी चाहियें।

पित्त को फायदा करने वाली दवाइयां

कुर्स बवासीर मुलय्यन १, कुर्स बवासीर काबिज २, कुर्स कपूर ३, शर्बत बदन, शर्बत आलूबुखारा, शर्बत बनफशा, शर्बत नीलोफर, और ठंडी दवाओं का सूंघना और लगाना भी पित्त के लिये अच्छा है और गर्मी को बुझाता है॥

कफ का बिगाड़ भी पांच प्रकार का है।

एक यह कि थोड़ा सा रुधिर कफ में मिल जाय और उसके असर को बदल दे, उसको मीठा बलगम कहते हैं। दूसरे जला हुआ पित्त थोड़ा सा बलगम में मिलजाय उसको खारी कफ कहते हैं और स्वभाव पित्त के बराबर होता है। तीसरे

बलगम गरम हो जाय तो उसको खट्टा कफ कहते हैं। चौथे
थोड़ा सा सौदा बलगम में मिलजाय तो कसीला कफ कहला
यगा। पाचवें कफ पतला पड़ जाय उसको फीका कफ कह
हैं और ये सब कफों से अधिक ठंढा होता है।

कफ को अच्छा करने वाली दवा।

सोंफ अनीसून, मुल्हैटी, जीरा, दालचीनी, इलायची
बालछड़, मुनक्का, विरन्जास्फ. इनके देने की रीति हकीम की
राय पर है, कफ में दवा को औटाकर देना अच्छा है। और
जब बलगम सड़जाय तो बहुत गरम दवा न देनी चाहिये खास
कर खारी बलगम में क्योंकि उसमें तप बहुत होती है। और
कुसुम के बीज जहां कहीं रगों के भीतर बलगम सड़जाय तो
बहुत अच्छे हैं। और कफ के सड़ने में जो देखें सो कुछ दवा
जो पित्त में बयान हुई हैं मिलाकर दें।

कफ नाशक बनी हुई दवा।

मअजून फिलासफा, सोंठ की मअजून, माजूनसांर, अया
रिज जालीनूस इन दवाओं को उस समय में दें जब कि कफ
सड़ा न हो और बुखार न हो और तप में कुर्सगुल
गाफिस, सिकंजबीन बजूरी मौतदिल, बजूरी गर्म, शर्बत बजूरी
मौतदिल और गर्म, और गुलकद देना चाहिये।

बिगाड़ सौदा का भी पांच प्रकार का है।

एक यह कि सौदा अधिक बढ़जाय दूसरे यह कि
जल कर बिगड़ जाय—तीसरा यह कि रुधिर जल कर
बन जाय चौथा यह कि कफ जल कर सौदा हो जाय
यह कि पित्त जल कर सौदा हो।

जान लो कि कोई खिल्त जब जल जाता है तो
हुआ सौदा हो जाता है और मतलब जलने से यह है

सकी गर्मी से उड़कर गाढ़ा रह जाता है और उसकी असल नहीं रहती और जलने से यह मतलब नहीं है कि जल कर राख हो जाय और अगर कोई खिल्त सरदी से गाढ़ा हो कर जम जाय तो वह सौदा न कहलावेगा।

सौदा (बादी) नाशक दवा।

ल्हसोड़े, गावजवां, खरबूजे के बीज, मुलहठी, कनोचे के बीज, इन्जीर, मुनक्का, आदि जो गर्म और तर हों जो सौदा गर्म खिल्त से पैदा हों तो दवा ठंडी और तर देनी चाहिये जैसे कुलफा, बीदाना, खीरे ककड़ी के बीज, आदि और नहीं तो गर्म और तर या वह दवा जो गर्मी और सर्दी में बराबर और तर हैं।

सौदा के वास्ते बनी हुई दवायें।

सिकंजबीन इफ्तीमूनी, नौशदारू, माजून सुकरात, याकूती, यूमली, मुफर्रह दिलकुशा, शर्बतगावजवां शर्बतबादरनबोया आदि, और उचित है कि हर जगह गर्मी और सर्दी का भी ध्यान रक्खें जो सौदा सड़जाय और तप होय तो ये दवायें औटा कर दें कासनी के बीज, कसूम के बीज तीन तीन दिरम् (दिरम् ३॥ माशे का होता है) मुल्हठी, अरक, हरएक दो दो दिरम, गावजवां ५ दिरम, कन्द या सिकंजबीन के साथ और इससे पहिले चाहिये कि मुंजिस देकर जुल्लाब दे लिया हो तो जल्दी गुणकरेगा बादी के रोगों में बहुत दिनों तक दवा देनी चाहिये इस लिये कि बादी दवा को देर में गुण करने देती है सड़े हुये सौदा की दवाइयां और उपाय तप में लिखेंगे।

सूघने मलने आदि की औषधि।

शमूम—उस खुश्क या तर दवा को कहते हैं जो सूंघी जाय।

लखलखा—उसको कहते हैं कि पतली खुशबूदार दवायें शीशी या किसी बरतन में डालकर सूंघे।

सऊत—उस दवा को कहते हैं जो नाक में डाली जाय।

नफूक—वह खुश्क दवा है जो नाक में डाली जावे।

वजूर—अर्थात् तर दवा को गले में चुआना।

सनून—अर्थात् मंजन।

कतूर—अर्थात् किसी दवा को बदन के किसी सुराख में टपकावें।

नतूल—अर्थात् धारना।

सकूब—अर्थात् बहती हुई दवा को दूर से रह रह कर बदन पर डालना।

इकबाब—अर्थात् भपारा लेना।

कुमाद—अर्थात् कोई दवा गरम करके बदन को सेकदे चाहे दवा खुश्क हो या तर।

बुखूर—अर्थात् दवाओं को जलाकर धूनी उसको पहुंचाना।

आबजन—अर्थात् दवाओं को औटाकर बीमार को उसमें बिठाना।

पाशोया—अर्थात् गरमपानीमें या औटी हुई दवामें बीमार के पांव रक्खें-भूसी गुलखैरू, बनफशा के फूल बाबूंके फूल, वेद के पत्ते, और बेरी के पत्ते औटावें यह उपाय सिर के दर्द और बुखारके लिये बहुत अच्छा है। पाशोये के समय बीमार को तकिया लगादे और सिर पीछे झुका रहे, और मुख के आगे परदा डाल दे कि भाप सिर को न पहुंचे इससे खफकान (पागलपन) हो जाता है।

तमरीख—अर्थात् तर दवा को बदन पर मलना।

तदहीन—अर्थात् बदन पर कोई तेल मलना॥

बरूद—अर्थात् ठंढी दवायें मिलाकर आंख में लगाना

जरूर—अर्थात् खुश्क दवायें पीस कर छिड़कना।

जिमाद–अर्थात् गाढ़ी और तर दवा को बदन पर लगावे।

तिला—अर्थात् तर और पतली दवाको बदन पर लगावे।

क़ुरस—अर्थात् सज्जन ॥

हुकना–अर्थात् किसी पतली दवा को ग़ुदा या मूत्र की राह से भीतर पहुँचावे ॥

शाफा—अर्थात् दवाकी बत्ती बनाकर बदन के किसी छेद में रक्खे।

फत्तीता–अर्थात् कपड़े में दवा लगाकर और बत्ती बनाकर बदन के किसी सूराख में रक्खे ॥

हमूल—अर्थात् कपड़ा दवामें भिगोकर किसी जगह रक्खे।

फरजजा–अर्थात् कपड़े में दवा लगाकर गद्दी की तरह औरत के मूत्र करने की जगह रक्खे ॥

शमूम—गरम बीमारियोंको फायदा करता है, सफ़ेद चन्दन घिसकर सिरका और धनियेके पत्तोंका रस और गुलाब मिलाकर सूँघे और जो लखलखा बनावें तो बहुत अच्छा है और जो नींद न आती हो तो सिरका न मिलावें और जो गरमी बहुत होय तो कपूर भी मिलादें और खीरेको काटकर और ठंढे मेवे और फूलोंका सूंघना फायदा करता है और जिसको हरे धनिये की सुगंधि अच्छी न लगे तो तरबूजका रस या भुने हुए बीए का रस मिलादें ॥

शमूम—ठंढी बीमारियों को फायदा करता है मुश्क, अंबर, दालचीनी, जुन्द बेदस्तर, लौंग, केसर, कलौंजी थोड़ी थोड़ी लेवें ॥

सऊत—सिरकी गर्म और खुश्क बीमारियों को फायदा करता है काहूका रस, नीलोफरका तेल, एक २ हिस्सा, लड़कीकी माका दूध दो हिस्से, बादामका तेल या कद्दू का तेल मिलाकर नाक में डाले और जो नींद कम आती हो तो खशखश का तेल भी उस में मिलावे ॥

सऊत—सिरके ठंढे और तर रोगोंको फायदा करता है

सऊत—उस दवा को कहते हैं जो नाक में डाली जाय।

नफूक—वह खुश्क दवा है जो नाक में डाली जावे।

वजूर—अर्थात् तर दवा को गले में चुआना।

सनून—अर्थात् मंजन।

कतूर—अर्थात् किसी दवा को बदन के किसी सुराख में टपकावें।

नतूल—अर्थात् धारना।

सकूब—अर्थात् बहती हुई दवा को दूर से रह रह कर बदन पर डालना।

इकबाव—अर्थात् भपारा लेना।

कुमाद—अर्थात् कोई दवा गरम करके बदन को सेकदे चाहे दवा खुश्क हो या तर।

बुखूर—अर्थात् दवाओं को जलाकर धूनी उसकी पहुंचाना।

आबजन—अर्थात् दवाओं को औटाकर बीमार को उसमें बिठाना।

पाशोया—अर्थात् गरमपानीमें या औटी हुई दवामें बीमार के पांव रक्खें भूसी, गुलखैरू, बनफशा के फूल बाबूं के फूल, बेद के पत्ते, और बेरी के पत्ते औटावें यह उपाय सिर के दर्द और बुखारके लिये बहुत अच्छा है। पाशोये के समय बीमार को तकिया लगादे और सिर पीछे झुका रहे, और मुख के आगे परदा डाल दे कि भाप सिर को न पहुंचे इससे खफकान (पागलपन) हो जाता है।

तमरीख—अर्थात् तर दवा को बदन पर मलना।

तदहीन—अर्थात् बदन पर कोई तेल मलना॥

बरूद—अर्थात् ठंढी दवायें मिलाकर आंख में लगाना।

नरूर—अर्थात् खुश्क दवायें पीस कर छिड़कना।

इकलीलुल्मुल्क, नम्माम, पर जन्मोशाविरन्मास्क, सातर, घर-कुलगार सब बराबर लेकर पानी में औटाकर तरेडादे और चहर उढ़ाकर बफारा दे ॥

चि-ह-सिरकी गर्म बीमारियों में तरेडा न दे जब तक कि जुल्लाब न दिया हो ॥

नतूल-वातनाशक बाबूने फूल, इकलीलुल्मुलक, कर-फसके बीज और पत्ते राजीयाना, किरमानी जीरा, मरजन जोश, सोया, सातर, बराबर लेकर पानी में औटावे तरेडादे ॥

कमाद-कसी हुई रही को पचावे-बाजरा और नमक पोटली में बांध कर मदी आग पर गरम करके सेके रेह या गेंहूं की भूसी या गर्म ईंट से कपड़े में लपेट के सेकना भी लाभकारक है ॥

कमाद-जो देह को नरम करता है और दर्द को आराम देता है बनफशे के फूल, बाबूने के फूल, सोये के बीज, पानी में औटा के इस्पज अर्थात् भरा हुआ बादल उसमें भिगोकर सेके ॥

बखूर-अर्थात् धूनी जो मस्तक और स्मरण शक्ति वर्द्धक है यह खफकान मूर्च्छा और सुस्ती को दूर करता है ऊदगर की, मीठा कूट, सफेद चंदन एक २ दिरम, कपूर, मुश्क, आधे २ दिरम सब को कूट छानकर गुलाब में सानकर गोलियां बनाकर सुखा रक्खे और आग पर जलाकर धूनी दे॥

धूनी-यह पसीना लाती है और पित्त कफ के ज्वर को दूर करती है पहिले मुभिश देना चाहिये, सौंफ की जड़की छाल, सौंफ अंगीठी में जलावे और चहर ओढकर धूनी ले इससे बहुत पसीना आवेगा ॥

आबजन-देह की खुश्की और तपेदिक को अच्छा करता है घीया ककड़ी, कुल्फा, काहू, सरधूत, नीलोफरके फूल, बनफशे के फूल, छिले हुये जौ, इन सब को औटाकर ऐसे

लुआ, मुरमकी, कुंदर, माजू, जुंदबे दस्तर, केसर, दोना मरुवा के पानी में पीसले ॥

नफूख—मूर्च्छा वालेको होशमें लावे और सिरके सुद्दों को खोले नकछिकनी, कुटकी कूट छानकर थोड़ी २ नाक में फूके।

वजूर—लड़कोंके पसली चलनेके रोगोंको फायदा करता है सातर, जुन्द बेदस्तर, जीरा किरमानी, सबको बराबर लेकर दूधमें घोलकर लड़के के मुखमें टपकावें ॥

वजूर—मिरगी वालेको होशमें लावे हींग जुन्द बेदस्तर सिकंजबीन, सदाबें घोलकर मुखमें टपकावे ॥

मजन—दांतोंको दृढ करता है सुरजान. लौंग. मोथा माई पीली हरडका बक्कल. सफेद चन्दन, गुलाबके फूल सबको बराबर लेकर मंजन बनावे जो गरमी हो तो लौंग न डाले ॥

कतूर—कानके दर्दको जो गर्मीसे हो गुण करता है रोगन गुल ६ दिरम, रोगन बादाम ३ दिरम, अगूरका सिरका १० दिरम मिलाकर मंदी आग पर पकावे जब सिरका जल जाय और तेल रह जाय तो गुन गुना कान में टपकावे और जो दर्द बहुत हो तो थोडी अफीम भी मिलावे।

कतूर—सोजाक को फायदा करता है कासगरी, सफेदा, कुन्दर, ईसबगोल, बबूल का गोंद, निशास्ता, दम्मुल अखवैन बराबर लेकर कूट छान कर लड़की की मां के दूध में घोल मूत्र के छिद्र में टपकावे।

नतूल—जो नींद लावे और गर्म सरसाम को फायदा देती है बनफसे के फूल, काहू के बीज प्रत्येक पांच दिरम् पोस्तदाने समेत, गुलाब के फूल नीलोफरके फूल हरे घीया के छिल्के बाबूने के फूल, दस २ दिरम, जौ छिले हुए ५० दिरम् इन सब को ५ सेर पानी में पकाकर तरेडा दे।

नतूल—जो सिर की ठंडी बीमारियों को फायदा देती है,

(६) इरकुन्निसा-यह रग गांठदार पिंडली पर है पांव के कसने से दिखाई देती है और जो यहां न मिले तो पांव की छिंगुलियां और चौथी अंगली के बीच में खोलें इसी रग क दर्द के लिये इसकी फस्द लाभ देती है ॥

(१०) चाररग-ये चार रगें हैं जो दो ऊपर के होठ में और दो नीचे के होठ में हैं फस्द इनकी गाल नश्तर से होठ के भीतर खोली जाती है यह मुख और मसूड़ों के रोगों को लाभ देती है। जब नश्तर शिरियान को लगजावे तो उसकी पहिचान यह है कि रुधिर साफ और उछल कर निकले और दिल शीघ्र सुस्त होता जाय जब ऐसा हो तो जल्दी से रग पर अंगुली रखदे और ? चिप्पी लगाकर और गद्दी रखकर बांधदे और हाथ एक ऊंचे तकिये पर रखदें और हिलाने न दें दस दिन तक बंधा रखें ग्यारहवें दिन धीरे से खोलकर फिर बांधे इसी प्रकार से जब तक घाव न पुर जावें किया करे चिप्पी की दवायें यह हैं दम्मुल, अखवैन, इमरूत, फिटकिरी, किल्कितार, अकाकिया, जलनार, पलुआ, कुन्दर, एक २ दिरम और बबूल का गोंद दो दिरम सब को कूट छान कर अण्डे की सफेदी में मिलाकर खरगोश के रूएँ या मकड़ी के जाले में सानकर सफाई से घाव में भर दें और दूसरी ओर के हाथ और पैरों को बांध रक्खे इससे रुधिर हट जायेगा।

तीसरा अध्याय।

सिंगी और जोंक के विषय में ।

भारी सिंगी और जोंक लड़कों के फस्द की जगह लगाते हैं दो वर्ष की अवस्था से कम में न लगाना चाहिये और चौदहवीं या पन्द्रहवी तारीख मुसलमानी महीने की को सिंगी न लगानी चाहिये परन्तु सोलहवीं या सत्रहवीं तारीख मुसलमानी महीने की को सिंगी लगानी चाहिये स्नान करने के पीछे सिंगी लगाना बुरा है जिस

की सीध पर कीफाद के नीचे है फस्द इसकी सब देह के रोगों को लाभ करती है ॥२॥

(३) बासलीक-यह रग पांच कीअंगली के सामने अ इल की तरह उन रोगों को लाभ देती है जो देह में गरदन नीचे उपस्थित हैं इस रग के नीचे एक रग और है जिस इलना तथा फुदकना मालूम होता है ऐसा न हो कि इस र में नश्तर गहरा लग जाय ॥३॥

(४) हबलुज्जिरा-यह रग किसी के हाथ में बासलीक और किसी के हाथ में अकहल से मिली होती है अगूठे सामने कलाई के ऊपर फस्द खोलना उचित है इसकी औ कीफाल की फस्द का लाभ बराबर है और कभी २ बासली के बराबर भी हो जाता है ॥४॥

(५) इबती-छुंगलिया अर्थात् कनिष्टिका उंगली की सी पर कोहनी के बराबर है भीतरकी बीमारियों को और नीचे देहके रोगोंको लाभ देती है ॥ ५ ॥

(६) असैलम-इबतीसे मिली हुई है इसकी फस्द बाई खोलते हैं और हाथ को गरम २ पानीमें रखते हैं यह फस दाहिने हाथ से जिगर के रोगों कोऔर बायें हाथ से तिल्ली रोगों को फायदा देती है रुधिर और फैंफड़े के रोगों को दोन ओर से लाभ देती है इस रग से दिल और जिगर निकलत है इस वास्ते थोड़ासा ही रुधिर लेना चाहिये ॥ ६ ॥

(७) साफन-इस रगकी फस्द टकनेके ऊपर पांवके अगूठे सामने खोलते हैं जो स्त्री रजस्वला न होती हो उसको खोलने के लिये और बात और खुजली के लिये लाभ देती है और मवाद को सिर से निकलती है ॥ ७ ॥

(८) मानिम-यह रग है जिसकी फस्द घुटनेके नीचे खोली जाती है यह साफनसे अधिक लाभ देती है पीठ गुदा और पेशाबकी जगह के रोगोंको और भीतरके दर्दकोलाभ देती है।

(९) इरकुल्निसा-यह रग गांठदार पिंडली पर है पांव के हसने से दिखाई देती है और जो यहां न मिले तो पांव की छिगुलियां और चौथी उंगली के बीच में खोलें इसी रग क दर्द के लिये इसकी फस्द लाभ देती है ॥

(१०) चाररग-ये चार रगें हैं जो दो ऊपर के होठ में और दो नीचे के होठ में हैं फस्द इनकी गाल नश्तर से होठ के भीतर खोली जाती है यह मुख और मसूड़ों के रोगों को लाभ देती है। जब नश्तर शिरियान को लगजावे तो उसकी पहिचान यह है कि रुधिर साफ और उछल कर निकले और दिल शीघ्र सुस्त होता जाय जब ऐसा होवे जल्दी से रग पर अंगुली रखदे और ? पिण्डी लगाकर और गद्दी रखकर बांधदे और हाथ एक ऊंचे तकिये पर रखदें और हिलाने न दें दस दिन तक बंधा रखें ग्यारहवें दिन धीरे से खोलकर फिर बांधे इसी प्रकार से जब तक घाव न पुर जावें किया करे पिण्डी की दवायें यह हैं दम्मुल, अखवैन, इमरूत, फिटकिरी, किल्किसार, अकाकिया, जलनार, पलुआ, कुन्दर, एक २ दिरम और बबूल का गोंद दो दिरम सब को कूट छान कर अण्डे की सफेदी में मिलाकर खरगोश के रूएँ या मकड़ी के जाले में सानकर सलाई से घाव में भर दें और दूसरी ओर के हाथ और पैरों को बांध रक्खे इससे रुधिर हट जायेगा।

तीसरा अध्याय।

सिंगी और जोंक के विषय में।

भारी सिंगी और जोंक लड़कों के फस्द की जगह लगाते दो वर्ष की अवस्था से कम में न लगाना चाहिये और चौदहवीं या पन्द्रहवीं तारीख मुसलमानी महीने की को सिंगी न लगानी चाहिये परन्तु सोलहवीं या सतरहवीं तारीख मुसलमानी महीने की को सिंगी लगानी चाहिये स्नान करने के पीछे सिंगी लगाना बुरा है जिस

मनुष्यका रुधिर गाढ़ा हो उसके स्नानसे एक घड़ी पीछे सींगी लगाना चाहिये और जब किसी जगह मवाद इकट्ठा हो तो पहिले फस्द खोलकर सींगी लगाना चाहिये सींगीके पीछे पछने लगाना सराख फस्दकी तुल्य है कुछ नीचेको लगाना चाहिये और गरदन के माहरोंपर पछने लगाना अकहल की फस्द के समान है और दोनों मोढों अर्थात् मुड्ढों के बीच में लगाना बासलीक का काम देती है परन्तु पेट को और खफ कान को बुरा है चाहिये कि ऊपर चढ़ाकर पछने लगावें और पिंडलीपर पछने लगाना साफन की फस्दका काम देता है और खाली सींगी बुखार अर्थात् तप और मवाद के निकालने में काम आती है, जो मनुष्य पछने को न सह सके उसके जोंक लगानी उचित है ॥

❋ चौथा अध्याय ❋

मुंजिसके विषयमें ।

मुंजिससे कच्चा मवाद पक जाता है और मवादके पकने से यह प्रयोजन है कि गाढ़ा मवाद पतला हो जाय और जो पतला होतो गाढ़ा हो जाय जानना चाहिये कि रुधिरमें मुंजिस न देना चाहिये और जब रुधिर में और मवाद मिले हों तो मुंजिस फायदा करेगा ॥

वे औषधें जो पित्तको पकाती हैं यह हैं-उन्नाव ७ दाने बनफशे के फूल, नीलोफरके फूल, स्यातरा, गुलाबके फूल, हरएक दोदो दिरम कासनी के बीज ३ दिरम पानी या अरक में चारपहर या आठ पहर भिगोवे और खाली या सिकंजबीन तुरंजबीन या कोई और शर्बत मिलाकर पीवे जुसांदा इनही दवाओं को औटानेसे बनजाता है दवा औटानेसे उसमें गरमी आजाती है जिस रोगीको गरमी अधिक हो उसको दवा औटाकर न दे भिगो

कर व शीरा निकालकर या अकेले उसके योगदे, जो तोल दवा-ओं की ऊपर लिखीगई है वे जवान मनुष्यके वास्ते हैं, जो बच्चा हो तो दवाओं का कम करदे, पित्त तीन दिनमें पकता है जो उसमें किसी और दूसरे मवाद का मिलाव नहो, नहीं तो पांच या अधिक दिनों में पकेगा।

मुंजिस बलगमका, मुनक्का ५ दाने १सौंफकुटी हुई दो दिरम या सौंफ जगह अनी सून हो तो अधिक फायदा करे। मुलैठी छिलीहुई तीन दिरम मुनकाई कुचली २ दिरम, हंसराज ५ दिरम, पीले अंजीर ५ दाने, गुलाबके फूल ३दिरम इन सबको औटाना और ७दिरम शहदका गुलकंद डालकर छानके पिलावें और जो २ तोला सिकंजबीन डाले तो अच्छा होगा जो रोगी को खांसी हो तो सिकंजबीन न मिलाव खारी बलगम में पित्त, और कफ दोनों को मिलाकर मुंजिस देवे॥

और यह बात सबमिले हुए मवादोंमें याद रखनी चाहिये, औटाया हुआ चनेका पानी कफ और बादी के पकानेका बहुत अच्छा हैं परन्तु तपमें न देना चाहिये और जो तप पुरानी होय तो काम करेगा जो कफ गाढा या पतला नहो वह नौ दिन में पकेगा और जो गाढा या पतला हो तो पांच दिनमें या नौ से अधिक दिन में पकेगा।

मुंजिस सौदा का, छिहारे१० दाने, उन्नाब १० दाने, गावजवा, बादरंजाबोया, उस्तखुद्दूस, हसराज सौंफ, स्याकरा दो २ दिरम औटाकर कंद या तुरंजबीन या गुलकंद मिलाकर दें ये दवायें अकेली बादी की हैं॥

जो बादी किसी और मवाद के जलानेसे पैदा हो तो उसी मवादके पकने वाली दवाईयां थोडी २ मिलाकर दे अकेली बादी १५ दिनमें या एक दो दिन कम बढ में पकती है और मतलब पकने से यहां यह है कि मवाद जुल्लाबके जोर से नि-कलजाय इससे जानागया कि मुंजिस का असर मवादमें धीरे२

होता है ऐसे रोगों में कि मादा उनका गाढ़ादो बार २ मुंजिस देकर जुल्लाब दिया जाता है और जब तक मुंजिस का असर अच्छी भांति मालूम न हो तो दूसरा जुल्लाब न दिया जावे कभी ऐसा होता है कि बिना मुंजिस के मवाद पक जाता है। और रोग बिना खाने दवाके जाता रहता है इससे जाना गया कि उपाय से रोगी के दिल को मदद होती है ॥

पाचवां अध्याय

जुल्लाब और मुलय्यन के विषय में

जुल्लाब उसे कहते हैं जो मवाद को रगों और दूर २ से खेंचलाता है। मुलय्यन वह है जो केवल पेट और आंतों से मवाद को निकालता है जुल्लाब के देनेमें मुंजिस पहिले देना अवश्य है मुलय्यन में उसकी आवश्यकता नहीं और जो मुलय्यन से पहिले मुंजिस दे तो अच्छा है।

गुलेयम मुवारिक भीतर और बाहर की बहुत सी बीमारियों को लाभ कारक है। गर्भवती स्त्री बच्चों और बूढ़ों को भी पिला सकते हैं सिवाय ज्वर के भीतरकी सूजन को भी लाभ कारक है और सब प्रकार के मवाद को अच्छा है। अमलतास लेकर गुलाब या गरम पानीमें मलकर छान ले और जो गर्मी बहुत हो तो कासनी का रस या ठण्ड बीजों का शीरा उसमें मिलावे और जो पेट के भीतर सूजन होय तो हरी मकोय का रस उसमें मिलावे और बायगोले के वास्ते सोंफ का शीरा और गुलकंद मिलावे जो अमलतास की दुर्गंधि दूर किया चाहे तो सोंफ और गुलाब का मिलाना अच्छा है जो उसे अधिक उत्कृष्ट करना चाहे तो शीरखिश्त बसील और तुरंजबीन मिलादे उन्नाब, लिसोड़े, बनफशेके फूल, मुनक्का, गावजबां आदिको औटाकर अमलतासको उसमें घोलदे तो बहुत अच्छा

जानना चाहिये कि मनुष्य की आंतें निर्बल हों और उसे मरोड़ा होसक्ता हो—तो रोगन बादाम पिलाये बिना अमलतास न दे और ऐसे ही गर्भवती स्त्री और बूढ़ों को भी दें। दूध पीते बच्चों को रोगन बादाम पिलाने की आवश्यकता नहीं है—उनकी आंतें दूध पीने से ऐसी नर्म होजाती हैं कि अमलतास उनमें चिपट नहीं सक्ता और अच्छे तरुण आदमी को सोलह दिरम अमलतास देते हैं। एक दिरम साढ़े तीन मासे का होता है इससे अधिक हानिकारक है॥

अब जुल्लाब का वर्णन होता है—जो बड़ी आवश्यकता के समय जुल्लाब देना पड़े तो उसके पहिले मुंजिस नहीं दी जाती—जैसे कूलंज के दर्द में रात, बादल मेह और पहुंच दवा का विचार नहीं करते—जिस जुलाब की दवा औटाकर या भिगो कर दीजाय उसके ऊपर गरम पानी न देना चाहिये, इससे उसका असर जाता रहता है और जो जुल्लाब पेट में मरोड़ा करे तो उसके ऊपर थोड़ा सा गरम पानी पिला देते हैं और जो दवा जुल्लाब के लिये गोलियां या फकी हो तो गरम पानी पिलाने से दस्त आने लगते हैं और जो जुल्लाबमें प्यास लगे तो ठण्डा पानी न पीना चाहिये—ताजा पानी थोड़ा सा पीले, परन्तु गर्म प्रकृति वाले को ठण्डे पानी का डर नहीं है, और कुछ दवाइयां, ऐसी हैं—कि जिन पर ठण्डा पानी पीया जाता है—गर्म पानी के देने से उनका असर जाता रहता है—जैसे शरबत वर्द और दवाएं जुल्लाब की जिनमें जमालगोटा या तुरबुद और नमक मिला हो। जिस मनुष्य को दवा अच्छी न लगती हो उसकी दोनों भुजा कसकर बांधदे और नाक पकड़ कर दवा पिलावै और कुल्ली करादे दवा पिलाने के पीछे पोदीना चबाना और सूंघना या पान और इलायची खाना अच्छा है।

जो इस पर भी वमनका हो तो पहिले वमन कराके जुल्लाब पिलाना चाहिये और जुल्लाब के पीछे सोना न चाहिये और गुदा प्रक्षालन के लिये रेशाख्तमी डाल कर औटाया हुआ गुनगुना पानी ले ॥

जो जुल्लाब न हो तो उसी दिन दूसरा जुल्लाब न दे, और शाफा करें आलू बुखारे का रस या इमली गुलकंद और तुरञ्जबीन मिलाकर जुल्लाब पर पिलावें इसमें अमलतास भी देते हैं इसी प्रकार मस्तगी को कूट छान कर डेढ़ दिरम बूरा या मिश्री मिला कर गरम पानी में फांकना बहुत अच्छा है और जो जुल्लाब से मूर्छा आजाय तो जल्दी से वमन करादे जो इससे भी लाभ न हो और कोई हानि न देखे तो बासलीक और अकहल की फस्द खोले और २) पेट और आंतडियों में गरमी लगे तो बीदाने और ईसबगोल का लुआब पिलावें, और जिस मनुष्य की प्रकृति समान हो उसे तुख्मरैहा शरबत गुलाब के साथ दे और एक घडी पीछे नर्म भोजन करावें। जानना चाहिये कि बुरे जुल्लाब और फस्द से बड़ी हानि होती है इसमें बीमार का बल देख कर दूसरा जुल्लाब दे जिस्से जो मवाद निकालना हो निकल आवे और जो बीमार निर्बल हो उसे थोड़ा थोड़ा जुल्लाब दो दो तीन तीन दिन पीछे दे। जुल्लाब से जो बहुत दस्त आवें और उनको बन्द करना चाहे और ज्वर भी न हो चावल छाछ में मिलाकर दे और जो ज्वर हो तो तुख्मरैहा भुना हुआ भुने हुये कुलफे और बारतंग के रसके साथ पिलावें और वह उपाय जो दस्तों के विषय में लिखा जायगा करै ॥

पित्त के जुल्लाब की दवा यह हैं ।

पीलीहड़,इमली,तुरञ्जबीन, बनफशे के फूल,इफसन्तीन सफ

सकमूनिया भुनी हुई (१) इशफ्पेचा, आलूबुखारा स्यातरे के पत्ते, एलुआ, गुलाब के फूल, शीरखिश्त इन में से कुछ दवा चलिष्ट हैं और कुछ निर्बल चाहे अकेली २ दें या मिलाकर और सकमूनिया घे भुने न दे।

पित्त निकालने वाला जुलाब

पीली हरड़ का वक्कल ६ दिरम, काले आलू १५ दाने लिहसोढ़े २० दाने, सनायमक्की स्यातरा तीन २ दिरम उन्नाब ८ दाने कासनी के बीज २ दिरम, कुसुम के बीज डेढ़ दिरम, शीर खिश्त या तुरजबीन १ दिरम से १५ दिरम तक भिगोकर या औटाकर पिलावे और जो दस्त, उससे अच्छे न आवें तो अमलतास भी मिलादे और जब अमलतास मिलाया हो तो रोगन बनफशा या रोगन बादाम एक दिरम मिलाना चाहिये और कमती बढ़ती दवा की हकीम की बुद्धि पर है।

जुल्लाब की कोई दवाऐसी नहीं जो एकही मवादको निकाले जो जुलाब जिस मवाद को बहुधा निकालता है वह उसी मवाद के नाम से प्रसिद्ध है सब में एक पखवाड़े से पहिले पीली-हरड़ न देनी चाहिये इसमें २ इस हालकबिदी हो जाता है और जो आवश्यकता हो तो रोगन बादाम में उसे चिकनालें और बीदाने और ईसबगोल के लुआबमें मिलाकर खिलावें तो हानि न करेगा

---

(१) सकमूनिया के भूनने की रीति यह है कि सेब या बिही का पेट खाली करके उसमें मस्तगी के साथ सकमूनिया रक्खें और उसको बन्द करके किनारों पर आटा लगादें जिस में भराव बन्द हो जाय और मिट्टी के बरतन में रखे कर चूल्हे या गाद में रखदे जब भुन जाय निकाल कर काम में लावें।

२ इस हालकबदी कलेजे के दस्त आने को कहते हैं।

कफ के जुल्लाब की दवा

बकायन के फलका छिलका, कंतूयून, माहीज इमम गा
इन्बुलनील, तुर्बुद हुर्मल, फडबिस फायम, कलाजी शुम

जुल्लाब कफ का

अयारिज फैक, तुर्बुद सफेद इन्बुल नील एक २ दिरम
फून-अफ्तीमून हेढ २ दिरम नमक-और बकायन के मि
डेढ़ २ दांग इन सब दवाओं को कूटें और सौंफ के अर्क में
यह एक पूरी मात्रा युवा आदमी की है। गारीकून को कूटन
चाहिये इसमें एक चीज नाखूनसी होती है। वह कूटे से नह
जाती है, इस वास्ते उसे बालों की चलनीमें छान लेना चा
कि महीन महीन उसका निकल आवे ॥

बादी के निकालने वाली दवा।

कावली हरड़, काली हरड़, सनाय, मक्की बालगू, अर्थात् रंजबोया इफ्तीमून बस्सुदूम लाल बरद घुला हुआ) हजर अरमनी आंवला ॥

जुल्लाब बादी का।

अयारिज फैकरा पांच दिरम इफ्ती मून दस दिरम लाल- [धुला हुआ सात दिरम हजर अरमानी नौ दिरम, सकं- या भुनी हुई, बकायन का बक्कल, काली खरबिक दो दिरम मुकल्ल सतीव, अनी सून एक एक दिरम सब को छानकर करफस के पानी में सान कर गोलियां बना रक्खें ी मात्रा ढाई दिरम है।

दूसरा जुल्लाव

ादी की बीमारियों को लाभ देता है कालीहरड़ दोतोले ११ ' बिसफायज, अर्थात् संघाली १तोले ५॥ माशे इफतीमून [ओकाशबेल २ तोले ७ माशे, सनाय मक्की २ तोले४ रत्ती सुद्दूस अर्थात् स्द्वाव्वर २ तोले ४ रत्ती, गुलाबकेफूल १तोले ो, गावजबां १०॥ माशे बालगू १०॥ माशे, अनीसून अर्थात् ान रूमी ७ माशे, सौंफ ७ माशे काली कुटकी २ दानेसफेद ३॥ माशे सोंठ १॥। माशे इन सबको औटावे और छनी हुई ुन, हजर अरमनी मिलनिफती अर्थात् नमक निफती दोदो कुचल कर पकते में गिलादे और छानकर पिये जो अधिक

लाजवेरद के धोने की यह रीति है कि लाजवरद को महीन पीस नी में औटावे और थोड़ासा जेतून का तेल डाले फिर मिलोवें पीछे बहुत सा पानी डाल कर धीरे धीरे घोले और रंगीन ूसरे बरतन में निकाल कर उस बरतन को ढक कर थोड़ी देर ो लाजवरद निथरकर बैठ जावे उसे निकाल कर सुखालें बार सब धोलें।

पुष्ट करना चाहे तो पकायन के वकल और पलुआ, सकोता और बहादे।

जिसदवामें आकाशबेलशामली होतो दवाओंके औटनेमें उसको पोटलीमें बांधकर डाले और ठन्डीमें उतार व छानकर पिलावे

हुकना और शाफा भी मवादके निकालने के लिये अच्छा है परन्तु हमारे देशोंमें हुकने की रीतिकम है और जोवह वैद्यक की रीतिसे नहो तो हानि करता है, इसलिए इसका वर्णनयहां नहीं किया जाता और शाफाहुकने की जगह किया जाता है उसका वर्णन यह है कि जब जुल्लाब दिया जाय और अपना असर न करे तो शाफा करना उचित है और कूलजमें जब तक शाफ से मवादको न निकाल सके जुलाब न पिलावे और ऐसाही बद्धकोष्ठमें जब तक आवश्यकता नहो तब तक शाफा न करे क्योंकि शाफा बहुत करनेसे बवासीर उत्पन्न होती है इसजगहबहुधा शाफे अच्छे अच्छे लिखे जाते हैं।

१ शाफा-जो कूलज की बीमारी को अच्छा करताहै और दस्त लाता है इसे बपर्वेभी दसक्ते हैं बनफशाके फूल ७ माशे, सनाय ७॥माशे, हिन्दुस्तानी नमक अर्थात खारीनोंन ३॥माशे, अमलतास का लुआब ३५माशे लाल शक्कर ३५मासे लेकर शाफा बनावे इसकी लम्बाई रोगीके ६ अंगुल की होनी चाहिये।

२ शाफा-जो जुल्लाबके पीछे दिया जाता है जबतककि उसके प्रभावमें देर होजाय, यह गर्म प्रकृति वाले को अच्छा है तुरंजबीन १७॥माशे, साबन इरानी ७माशे, खतमी ७ माशे, सांभर नमक ७माशे, लाल शक्कर १७॥ माशे इनऔषधों को कूटछान कर शाफा बनाले।

३ शाफा-जो जल्दी प्रभाव करे एक टुकड़ा साबन का छुहारेकी

(१) खुलके दस्त न हो उसे कब्ज कहते हैं।

पुठली की बराबर लेकर पाखाने की जगह में रक्खे और जो गुल रोगन से चिकना करलें तो अच्छा होगा ॥

४ शाफा—लड़के और बूढ़ों को काम करता है मोम ७॥ माशे, नमक ५। माशे, बूरह अरमनी ५। माशे, इन दोनों को मोम में मिलाकर शाफा बनावें और गुल रोगन में चिकना करके काम में लावें ॥

छटा अध्याय ।

वमन लाने वाली औषधियों के विषय में ।

पहले उन उपायों का वर्णन किया जाता है, जो वमन (अर्थात् उलटी) से पहिले अवश्य हैं जानलो जब वमन का काम पड़े तो उससे एक दिन पहिले नर्म नर्म भोजन करे और जो गरमी या और कोई बात न हो तो सुगंध वाला तेल मलें और जिस दिन वमन करे तो पहिले मूंग की दाल या चावल पतली करके पीवें और थोड़ी देर पीछे वमन लाने वाली दवा पीकर वमन करे और जिसके मिजाज में तरी हो उसको पहिले दाल चावल खिलाना न चाहिये और जिसको कठिनता से वमन आती हो उसे तीन तीन दिन गर्म जगह में रक्खें और देह पर तेल की मालिश करे और भांति२ के भोजन करावें इसके उपरांत उलटी करे और उलटी करने के समय सीधा बैठे और पेट तथा कमर को दाबले बहुधा मनुष्य खड़े होकर वमन करते हैं और ऐसी वमन पेट की जड़से मवाद को निकाल लाती है और चाहिये कि वमन दो बार थोड़ी२ देर के पीछे की जाय इससे बेशकुबा पेट निर्मल होजायगा और इस के पीछे गरमी में गर्म

ठंडे मिजाज वाले को हाथ मुंह गर्म पानी से धोना चाहिये और शहद की सिकन्जबीन से कुल्ली के पीछे मस्तगी २॥ माशे पीसकर शक्कर के साथ या बिना शक्कर के सेब के अर्क के साथ पीवें और जो मस्तगी की जगह गुलकंद, इतरीफल सगीर हो तो भी हर्ज नहीं है और जो औषधों की तेजी से हिचकियां आने लगें तो थोड़ा२ गर्म पानी पिलावें और छींक लाने का उपाय करें और जो वमन के पीछे छाती और पसली में पीड़ा होजाय या पेट फूल जाय तो गुल रोगन या बाबूने का तेल मले और गर्म पानी की धारदे और जो वमन की तुरत आवश्यकता हो तो इन बातों के बिना ही वमन करना चाहिये और जो विष के खाने पर वमन कराना पड़े तो उसे पेट से अच्छी भांति निकालना चाहिये।

वमन द्वारा पित्तों को निकालने वाली दवा।

सिकन्जबीन कन्दी १० मिसकाल, पालक का अर्क ४० मिसकाल, जौ के औटाये हुये पानी में या खुब्बाजी के पानी में घोल कर गुनगुना पिलावें ॥

वमन में बलगम को निकालने वाली औषध ये हैं।

मूलीके बीज ७ माशे, सोये के बीज ३॥ माशे, खारी नमक ३॥ माशे सब को कूट छान कर शहद में मिला के, खिलावे जो वमन आप से आजाय तो अच्छा है, नहीं तो ऊपर से गरम पानी पिलादे ॥

वमन द्वारा बादी को निकालने वाली दवा।

मूली को खाली करके कुटकी उसमें भरदे फिर उसको सिकन्जबीन में रात भर डाले रक्खे सवेरे खिलादे और ऊपर से सिकन्जबीन सोयिया के पानी में घोल कर पिलावे ॥

(१) मिसकाल ४॥ माशे का होता है और बाजे ३॥ माशे का

वमन द्वारा कफ पित्त को निकालने वाली दवा ।

शहदकी सिकञ्जबीन १० मिसकाल, खारी नमक २ मिसकाल, मूली का अर्क ४० मिसकाल मिलाकर गुनगुना करके पिलावे ॥

वमन द्वारा पित्त कफ और वादी को निकालने वाली दवा ।

मुलहटी५ मिसकाल, सोये के बीज ५ मिसकाल, सुस्याभी बीज और जौ, हर एक ३ मिसकाल, सब को एक कटोरे पानी में औटावें जब पानी आधा रहजाय तब उसमें आकाश बेल का शरबत १० मिसकाल डाल के और अंगूर का सिरका मिलाके और गुनगुना करके पिलावे और वमन करादे। जबतक उलटी कराने की अत्यन्त चाहना न हो तबतक काली-कुटकी न देना चाहिये, क्योंकि वह विष है, और उससे नुकसान होता है और इसी प्रकार जिसने वमन न की हो उसे बिना आवश्यकता वमन कराना न चाहिये ॥

सातवां अध्याय ।

मूत्र द्वारा मवाद निकालने वाली दवा ।

इस प्रकार की औषधें मवादे को रगों के अन्दर से निकाल में बहुत काम आती हैं परन्तु जब मवाद बहुत हो तो जब तक फस्द या जुल्लाब न देलें इन औषधों को काम में न लावें हकीमों ने कहा है कि जो मवाद जिगर के पीछे हो तो उसका निकालना इन औषधों से अच्छा है पेशाब के जारी होने से पसीना, और दस्त रुक जाता है इसी प्रकार दस्तों के आने से पेशाब कम आता है क्योंकि मवाद दूसरी ओर से निकल जाता है, इन औषधों से पतला मवाद निकलता है, इसलिये चाहिये कि जब तक सरीका रोग न हो इन औषधों को न दे, इसलिये, इस्तिसका, (अर्थात् जलधर) फालिज, जोड़ों के दर्द में

इन्हीं औषधों को देते हैं और मवाद के पकने से पहिले इनको न देना चाहिये ॥

पेशाब लाने वाली ठंडी दवाइयां ।

फासनी—खीरे ककड़ी के बीज सिकंजबीन लोकी अर्थात् घीया का अर्क, कुलफे के बीज, गोखरू, काकनज, तरबूज का पानी आदि ।

गर्म औषध ।

करफस के बीज, सौंफ, जीरा, बिरन्जासफ, सूखा हुआ जूफा अजवायन, गाजर के बीज, सुदाब, कपासा आदि ।

मौतादिल अर्थात् वह औषधि जिनमें सरदी गरमी बराबर हैं यह हैं

हंसराज खरबूजे के बीज, ठंडी और गरम औषधों का मिलाकर देने से भी यही बात होती है ।

पेशाब लानेवाली मौतादिल औषधि

जीरा, सौंफ हरएक सातमाशे, कुचलकर एक प्याले पानी में औटावे जब पीनेके अनुमान रहजावे तो उसे छान ले और खीरे ककड़ी के बीज, और खरबूजे, के बीज हरएक साढ़े दस माशे, पीसकर इसमें मिलादे, और मिश्री मिलाकर पिलादे, यह दवा मवाद को बहुत निकालती है और बन्द पेशाब को जारी करती है और जो, जीरा और सौंफ को कूट छानकर पहिले फांक ले और ऊपर से खीरे ककड़ी और खरबूजे के बीज पीसके पीवे तो भी यही फायदा होगा ॥

बन्द हैज को जारी करनेवाली औषधि ।

सन, कलौंजी दोमिसकाल, अबहाल,जुन्दबेदस्तर,हरएक ७ माशे, सब को कूट छानकर दुगुणे शहद में मिलावे, और एक मिसकाल से दो मिसकाल की गोली बांध ले और ...

एक गोली निगलकर ११ तोले ८ माशे सौंफ का अर्क पीवेजो बन्द होनेका कारण रुधिर की कमी या मिजाज की गर्मी न होगी तो यह औषध लाभ करेगी नहीं तो हानि ।

जोशांदः जो हैजको जारीकरे और पुरुषका वीर्य्य जो ठण्ड से रुका हो उसे निकाल दे ।

अफसनतीन (अर्थात् सवारू) दुरमनय तुर्की, तुरमस, सुदाब, सौंफ, करपसके बीज, हर एक ७ माशे इंजीर५ गुल-कन्द १० मिसकाल, सबका औटाकर और गुलकन्द मिला कर बराबर तीन दिन पिलावे, और फिर तीन दिन पीछे फिर पिलावे, जिससे मवाद अच्छी तरह से निकल जावे और हैज जारी करन वाली औषधों को रजस्वला होने के दिनों में पिलावे इससे बड़ा लाभ होगा ।

आठवां अध्याय

उन औषधोंके वर्णनमें जो दिल और सिर और जिगर और मेदे को पुष्ट करती हैं ।

सिरकी पुष्ट दाता ठण्डी औषधें यह हैं मोती, आमला, मिही, सेव और अमरूदके हरेफूल, गुलाबके फूल, गुलाब, नारंगी

और गर्म यह हैं, बलादर, फन्दक, बालछू, सोंठ, नागर-मोथा मालकड़, मुश्क, ऊद, अम्बर, गालिया, लौंग, कुन्दर, अबहर का तेल, भेड़ी का दूध ॥

दिलकी पुष्ट दाता और प्रसन्नता करने वाली ठण्डीदवा-इयां यह हैं, नाशपाती, मीठाअनार, आमला, इमली, सेब, चन्दन, वसलोचन, गिलेमखतूम, रायबास, बसद, कहरुबा, कपूर, गाव जुबां, धनियां, गुलाब के फूल, मोती, नीलोफर, नारंगी, हरद याकूत चांदी के वरक ॥

गर्म यह हैं, सोने के वरक़, इतरज छिलके, उस्तखुद्दूस, अवरेशम सफेद वहमन लाल वहमन बिसफायज बाल जगली तुलसी, निरबिसी, दालचीनी, नरकचूर, दारूनज जाफरान सुम्बुल नागरमोथा, तग शकाकुल ऊदगरकी, अम्बर फिरंमन मुश्क ऊदसलीब इलायची पोदीना, लाजवर्द ।

जिगर की पुष्टि दाता ठण्डी औषधें यह हैं कासनी, जरिश्क, अनार ॥

गर्म यह हैं छरीला, अजकाहस्तीव जायफल, हम्माया, हब्ब बिलसान, दालचीनी, गाफिस, लोंग, तज, फसशू रूमी मस्तगी

जानना चाहिये कि जिगर की कमजोरी बहुधा सरदीओर गर्मी से होती है। इसलिये जिगर की पुष्टि दाता औषधें यह हैं,

मेदेकी पुष्टिकारक ठण्डी औषधें यह हैं आमला अनारदाना समाक, बहेडा, हड़ और हड़का मुरब्बा, बिही, बसलोचन, गुलाब के फूल ॥

गर्म यह हैं सरकंडे की डटी, नारंगी के छिलके, बालगू, जायफल, दालचीनी, जरम्बाद नागरमोथा, तज सालिब हिन्दी लोंग, इलायची, कुन्दुर रूमीमस्तगी, मशकत रामशोर पोदीना ऊदगरकी ॥

जानना चाहिये कि जो वस्तु मेदे को पुष्टि कारक हैं वह अतड़ियों को भी पुष्ट करती है; और जो औषध दस्त लाती हैं वह मेदे को कमजोर करती हैं परन्तु हरड़ दस्त भी लाती है और मेदे की पुष्टिकारक भी है और सनाय को भी बहुत से लोग मेदे की पुष्टि कारक कहते हैं ॥

सिर के रोगों का वर्णन ।

पहिला पाठ ।

जो दर्द रुधिर की अधिकता से हो तो फस्द सराफ़
सिर के पीछे सींगी लगावे और थोड़ा ही रुधिर निका
नीबू का शरबत पिलावे और रुधिर लेने के पीछे जो कर
ो, नुकु अहाविम. या मुतय्यन मुवारिक और जो वी
के लिये लाभदायक हैं काम में लावें ॥
और पित्त की पकाने वाली और ठीक करने वाली औष
वे इसके पीछे जुल्लाब उसी का दे, और सफेद चदन
निया के साथ पीस कर सिर में लगावे ॥
और जो कफ अधिकता से हो तो कफ को ठीक करें औ
को औटा के शहद डाल कर पिलावे और कुस्त का ते
पर मले और मुन्जस और जुल्लाब कफ काढ़े और वेदा
की जड़ और सोंठ को पानीमें घिसकर लगाना अच्छा है।
और जो वादी की अधिकता से हो तो वादी को ठीक क
उसकी मुन्जस और जुल्लाब दे बाबूने और बादाम क
सिर में मलें।
जो दर्द इन मवादों से हो उसमें पाशोया बड़ा लाभदायक
है ॥
ऐसी पीड़ा में सिर को दबाना नहीं चाहिये क्योंकि इससे
तो चैन पड़ता है परन्तु अन्तमें दुःखदायक है इसको लगा
को दबावें और तलुओं को मलें परन्तु जो सिर को केवल
से पकड़े तो डर नहीं और जुल्लाब के पीछे होलेर दबाना
लाभदायक है ॥
जो पीड़ा अकेली गरमी या अकेली सरदी से हो

जुल्लाव की आवश्यकता नहीं जो गरमी से हो तो ठढाई पिलावे और सरदी से हो तो गर्म औषधें दें ॥

और जो सिर की पीडा किसी और रोग के कारण से हो तो पहिले उस रोग का उपाय करे ॥

(आधासीसी की पीडा) आधे सिरमें होती है और देर में जाती है उसका उपाय वैसे ही करना चाहिये जैसे कि ऊपर लिखा गया है।

और इस औषधि का सिरमें लगाना गुणदायक है, बबूल का गोंद ३॥ माशे, अफीम १॥। माशे, केसर ७ रत्ती पीसकर गुलाब में मिलाकर कागज पर लगावे और कनपटी पर चिपटा दे और इस रोग का जल्दी उपाय करे नहीं तो दृढ़ होजाने से कठिनता से दूर होता है ।

बहुत से लोग सिर की पीडा में अफीम आदि का लेप करते हैं इनसे पहिले तो तुरन्त चैन पड़ता है, परन्तु हकीमों ने इनका लगाना नहीं बतलाया है, और जो अत्यन्त आवश्यकता हो तो अफीम के साथ केशर या बाबूना मिलादे ॥

सिरकी पीडा में जो गुलाब सिर पर डाले तो इतना डाले कि सिर भीगा रहे नहीं तो हानि करेगा ॥

जो सिर की पीडा वाले की नकसीर फूटे तो उसे बन्द न करें क्योंकि यह उसके लिये अच्छा है परन्तु जब रुधिर अधिक निकले और उस्से कमजोरी बहुत पैदा हो तब बन्द करना चाहिये सिर के रोगों में नाक या कान से पीप का निकलना बहुत अच्छा है ॥

दूसरा पाठ २

सरसाम के विषय में

सिरके पर्दों या भेजे...

साम कहते हैं॥ जो यह रुधिर की अधिकता से हो तो उस का चिन्ह यह है कि रोगी के मुख पर हसी सी मालूम होगी॥

और जो पित्त की विशेषता से होतो उसका चिन्ह यह है कि रोगी को झुंझलाहट और चिड़चिड़ाहट होगी।

और जो कफ से हो तो उसका चिन्ह यह है कि रोगी सुस्त और घबराया हुआ होगा।

और जो बादी से होतो रोगी चौकन्ना मालूम होगा बादी से बहुत कम होता है. और जो २ चिन्ह हर प्रकार के लिये हम पहिले लिख आये हैं वह हर प्रकार के सरसाम में पाये जायगे॥

सरसाम जो रुधिर से हो उसे फरानीतुस कहते हैं और पित्त वाले को फरानीतुस खालिस और बलगमी को लीसरगुस कहते हैं॥

सरसाम में भी फस्द को अच्छा लिखा है परन्तु इन दोनों में रुधिर कम निकालना चाहिये ।

बकना और बहकाना सरसाम में अवश्य है परन्तु कभी२ बिना सरसाम ऐसा होता है । जैसे कि बारी के तप में बारी के समय और किसी पीड़ा या रोग की अधिकता में इसको सरसाम गैरहक़ीकी कहते हैं, जब वह रोग जाता रहता है तो बकना और बहकाना भी जाता रहता है इसलिये पहिले उस रोग का उपाय करना चाहिये ॥

तीसरा पाठ

जुमूद के विषय में

यह वह रोग है कि मनुष्य बैठा हो तो बैठा रह जाता है और जो लेटा हुआ होतो लेटा, और सोता होतो सोता और खड़ा होतो खड़ा रहजाता है, कारण इसका यह है कि बादी सिर के पीछे गिरती है और वहीं बन्द होके रहजाती है, उपाय इसका यह है कि बेहोशी के समय कोई गरम शाफा या बादी के निकालने वाला हुकना करें। और बाबूने के फूलों का तेल और बादाम के तेल में सोंठ, या जुन्दबेदस्तर, मिलाकर सिरपर मलें और जब होश होजाय तो मुफ्रिश और सौदा का जुल्लाब दें। और गर्म और तर खिलावें, और सिरके पीछे मोम रोगन लगावें, जो रुधिर की अधिकता से हो तो फस्द भी करें, और पिंडलियों पर सींगियां लगावें। फस्द का नश्तर गहरा दें, परन्तु रुधिर कम निकालें॥

चौथा पाठ

सकते के विषय में

यह वह रोग है कि मनुष्य का शिरा ...

जाता है, और मुर्दे की तरह बिना पड़ा रहता है, जो श्वास न आता होतो इसका कारण यह है कि सिर के सब परदे बन्द हो गये होंगे जो यह रुधिर की अधिकता से होती फस्द खोले नहीं तो कफ के निकालने वाले हुकने और छीकें दें और सिरके बाल काट कर सिर को सेके, और नफ़ूख और सऊत काम में लावें और जो किसी प्रकार उलटी होसके तो बहुत अच्छा है, और हाथ पांव का मलना और जोर से बांधना भी लाभदायक है, सिरपै पछने लगाकर उसपर पारा मलना या बछनाग, पीस कर मलना अच्छा है और जब होश आजाय तो कफ की मुन्जिश और जुल्लाब दें।

इस रोग में जब दम आता जाता मालुम न हो तो चंगा होना असंभव है परन्तु जिसमें दम आता जाता हो उसका अच्छा होना भी अति कठिन है इस रोग में और मृत्यु में यह अन्तर है कि इस रोग वाले की पुतली में परछाई दिखाई देती है, और मुर्दे की आंख में नहीं दिखाई देती, चाहिये कि रोगी का तीन दिन रात दाह कर्म न करें किन्तु उसके अच्छे होने की आशा नहीं है, परन्तु परमेश्वर की कृपा से अच्छा हो जाय तो क्या आश्चर्य है और जो देह नीली होजाय तो उसका उपाय न करें॥

पांचवां पाठ

सबात के विषय में

स्वभाव से अधिक अचेत होके सोना रोग है और इसीको सबात कहते हैं, कारण इसका यह है कि सिर में तरी अधिक होजाती है, चाहे अकेली तरी हो या उसमें बलगम और रुधिर का मवाद भी मिला हो इस रोग में जैसा कारण हो वैसा ही जुल्लाब दें, और सिरका सुघावें, खुश्की लाने वाली वस्तु

और इतरीफल खिलाना बहुत लाभ दायक है, और इसका कारण मेदा का बुखार हो तो चिन्ह इसका यह है, कि पहिले मंदहजमी हुई होगी, और भूख के समय कमती मालूम होती होगी, उपाय इसका यह है कि पेट को साफ करें, और इतरीफल कश्नी भी खिलावें और सूखा धनियां कूट छानकर खाने के पीछे फकावें ।

छठा पाठ

सहर के विषय में

सहर उस रोग का नाम है जिसमें स्वभाव से विशेष मनुष्य जागे और नींद उसे कम आवे कारण इसका सिर में खुश्की, होजाना है, चाहे वह अकेली हो या उसमें बादी और पित्त और खारी कफ मिला हो, जो यह रोग अकेली खुश्की से हो तो सिरको तर रक्खें और खाने पीने और सूंघने में तर वस्तुओं को काम में लावें और जो यह मवाद से होतो उसी का जुल्लाब दें और सिरका कभी न सुंघावें क्योंकि यह नींद को बहुत खोता है, निद्रा लाने वाली औषधें यह हैं, हरा सोया सिरहाने रखना और कफ वाले सहर में सिरपर भी लपेटना और नार्मबू गुलाब में भिगोकर सूंघना और लख्लखा हरदम पास रखना अफीम और बनफशे के तेल को मिलाकर सिरपर मलना ।

जब जागने का कारण तप हो तो पहिले उसका उपाय करे और सिरपर तेल मलें और पाशोया करके हाथ पांव मलें ॥

सातवां पाठ

सबात सुहरी और सहर सबाती के विषय में

यह वह रोग है जो सहर और सबात के [illegible] के इकट्ठे से होता है और बहुतसे [illegible] म यह [illegible] विश

और कफ से दिमाग में सूजन होजाने से होजाता है चिन्ह इस रोगका यह है, कि कभी अचेत और घोर निद्रा बहुत काल तक रहती है और कभी रोगी बहुत देर तक जागा करताहै और जो मनुष्य इसे भेजे की सूजन बताते हैं उनकी दलील यह है कि इस रोग में बकना और आखें बथर आना अवश्य है जो निद्रा अधिक होतो इसे सबात सहरी कहेंगे और जो जागना विशेष होतो सहर सुबाती कहेंगे और जागना और सोना बराबर बहुत कम देखा गया है जो ऐसा हो तो पढ़ने वाला जिस शब्द को चाहे पहिले कहे सच तो यह है कि इस रोग में भेजे की सूजन जरूर नहीं परन्तु सूजन में यह रोग हो सकता है ऊपर के दो पाठों में जो उपाय लिखे गये हैं उन दोनों को मिलाकर सुघावें और जिस समय पित्तों की अधिकता से हो तो ठंडी वस्तु सुघावें ऐसे ही और उपाय जानो ॥

और जब यह रोग भेजे की सूजन से हो तो वह उपाय करें जो कफ और पित्त के सरसाम में ऊपर लिखा गया है ॥

आठवां पाठ ।

काबूस के वर्णन में ।

यह वह रोग है कि मनुष्य सोते में बुरे २ स्वप्न देखता है जैसे कि कोई भारी चीज उस पर गिर पड़ी वा किसी ने उसे दबोचा और वह घबराके बर्राने लगता है, जो यह रुधिर की अधिकता से हो तो फस्द सरारू करे, और पिंडलियों पर पछने लगावें, और भोजन कम दें, और जो बलगम वा बादीकी अधिकता से होतो उन्हीं का जुल्लाब दे, और इस रोग का उपाय तुरन्त करे नहीं तो मृगी हो जायगी ॥

——:o:——

नवां पाठ।

मृगी के विषय में।

यह वह रोग है जिसमें मनुष्य अचेत होकर गिर पड़ता और मुख और हाथ पांव टेढ़े और खिचे रह जाते हैं, और तड़फा करता है, इस रोग में सिरका बोझिल होना और जी की रगों का हरा होना अवश्य है. कभी यह रोग बारी होता है जो इसकी बारी बहुत होतो बुरा है परन्तु बालकों कभीर ऐसा देखा गया है, कि एक दिनमें आठ२ बार आ है और फिर ऐसी चली जाती है कि कभी नहीं होती उप इसका यह है कि बारी के समय वह चिकित्सा करें जो मूछ होती है, और कोई वस्तु या कपड़ा लपेट कर उसके मुखमें दें, कि वह अपनी जीभ चबा न डाले और हाथ पांव उस जकड़ दें, कि चोट न लगे और जब होश में आवे तो जै मवाद हो वैसा ही जुल्लाब दें, और तर मेवें और दूध दही खिलावें और कदसलीब, को गले में लटकावें और नास दूसरे खंड में लिखा गया है सुघावें॥

बच्चों को जो पसली का रोग होता है वह भी इसी प से है. उपाय उसका मवाद के अनुसार करना चाहिये बिना कारण के जाने अधिक गर्म और अधिक ठंडी औषध दें और दूध पिलाने वाली की दुग्धधारी रक्खे कि हानिका वस्तु न खावे. उससे भोग न करे कि इससे दूध बिगड़ जा है और बच्चों को कब्ज होतो शाफा करें॥

दसवां पाठ।

माली खोलिया के वर्णन में।

यह वह रोग है कि मनुष्य को अच्छी बातें नहीं सूझती बह बातें मन [illegible]

और अंहकार और घमंड और व्यभिचार भी इसी प्रकार के हैं॥

जैसा मवाद हो उसके अनुसार जुल्लाब दें और दिलको खुश करने वाली वस्तु और नोशदारु खिलावें, और भोजनमें हल्की वस्तु खिलाना और थोड़े२ दिन पीछे कईबार जुल्लाब देना अधिक लाभदायक है और जानना चाहिये कि ऐसे रोगोंमें उपायका लाभ बहुत कालके पीछे प्रत्यक्ष होताहै घबरावें नहीं॥

ग्यारहवां पाठ।

जुनून के विषय में।

यह रोग कई प्रकार का है जो इसमें क्रोध और कोप पाया जाय तो, मानिया कहलावेगा, और जो हंसी खेल और सचाना हो तो उदाउल कल्ब कहेंगे॥

और जो मनुष्य से न मिले झुले तो कुतरब कहते हैं यह रोग माली खोलिया से बढ़ कर है उपाय इसका वैसा ही करें जो मालीखोलिया का है और स्त्रियोंका दूध दुह कर नाक में डालें और बनफशे और बादाम का तेल सिर पर मलें और पेट पर गर्म पानी डारें और मवाद पकजाने के पीछे माजून सुफाइ, खिलावें॥

बारहवां पाठ।

सदर और दव्वार के विषय में।

जब मनुष्य खड़ा हो या चले और आंखों के तले अन्धेरा आजाय तो उसको सदर कहते हैं॥

और जब यही बढ़ जाय और सिर घूमने लगे तो उस दव्वार है जैसा मवाद हो वैसा ही जुल्लाब दे, जो मवाद सिर में हो तो सिर में भी कोई रोग मालूम होगा, और जो मवाद

पेट में होगा तो जी मचलायगा और पेट में कोई रोग होगा उचित है वैसा ही उपाय करें, और जो कमजोरी के सिर घूमें तो भोजन में हलकी और दिल खुश करने वस्तु खिलावें, और मोतियों को पीसकर, नीबू या चदन, अनार के शर्बत में मिलाके पावें और जो सिरमें सरदी प. पने से सिर घूमे तो सेक और गरम लेप लगावें और गर मसाला पड़ा हुआ भोजन खिलावें ॥

तेरहवां पाठ।

निसयोन अर्थात् भूल जाने के रोग के वर्णन में

बहुधा इस रोग में बलगम या वादी अधिक होजाती है या मिजाज में अकेली गरमी बहुत होजाती है, कफ और वा के मवादमें मुञ्जिस देकर, हब्ब फोकाया, आदि खिलाकर सि को साफ करे, और माजून फिलासफा और बच और सोंठ व मुरब्बा, कुन्दर, और शक्कर मिलाकर खिलावें और ठंडे पानी बचते रहें और सौदावी में तेल सिरपर मलें और जो यह रो अकेली गरमी से हो तो ठंडी और तर वस्तु काम में लावें ॥

चौदहवां पाठ।

फालिज के विषय में।

यह वह रोग है कि आधा बदन लम्बाई में हिलता जुलता नहीं है, बहुधा इसका कारण कफकी अधिकता है, और कभ रुधिर से भी होजाता है। कफमें चार दिन तक पुष्ट औषधें न देवे और खाना पीना बिलकुल बन्द करदे। और जो भूख न रुक सके तो जीरा और दालचीनी औटा के दे। और पानी की जगह, माउल असल, पिलावें फिर औषधें दिन

ी मुञ्जिज़श पिलावें, और ६ दिन या चौदह दिन के पीछे जब
ि मवाद पक जाय तो जुल्लाब दें, और जुल्लाब के पीछे कूट
ा तेल मलें और, जवारिशविलादर, और तिरयाक करीब,
ौर ममरोदी तुस, खिलाना बहुत लाभदायक है, और जु-
ल्लाब के पीछे, सुरक, और कुन्दश, फिलफिल, नौसादर, पीस
र सुघावें और गर्म पानी बदन पर न डालें, क्योंकि यह इस
ोग के लिये ठण्डे पानी से अधिक हानिकारक है, जो फालिज
: साथ रुधिर की अधिकता हो तो, फस्द भी खोल सकते हैं
ौर जो यह रोग गरमी से हो तो गर्म औषधें न देना चाहिये
हिले गर्मी को दूर करलें, फिर इसका उपाय करें। और जो
ालिज रुधिर की सूजन से हो तो पहिले फस्द खोल कर
सका उपाय करें ॥

और जो बदन में किसी एक जगह का हिलना झुलना बद
ोगया हो तो उसको इस्तिरखा कहते हैं ॥

पन्द्रहवां पाठ

खदर के विषय में

मनुष्य की देह में कोई जगह सुन पड जाय उसे खदर कहते
ं जो यह रोग रुधिर की अधिकता से हो तो फस्द खोलें,
ौर भोजन कम दें, और जो कफ की अधिकता से हो तो कफ
ा जुल्लाब दें, और जो खुश्की से हो तो उसका चिन्ह और
पाय आगे लिखा जायगा और जो दब जाने और जो रस
िचने के कारण से हो तो उस कारण को दूर करें ॥

सोलहवां पाठ

लकवे के विषय में

इस रोगमें मुख टेढा हो जाता है, और कारण इसका खिच
ाना या ढीला होजाना मुखकी एक ओर का है ढीलाहोजाना

कफ से होता है, चिन्ह उसका सुस्त होना, और जीभके में फर्क पड़ जाना और नीचे की पलक और तालू का आना है, और खिच जाने का चिन्ह थूक का कम होना और पाये का खिच जाना है। ढीले होजाने में फालिज का उपाय करे, और खिच जाने का उपाय आगे लिखा जायगा, जब तक चार दिन या सात दिन न व्यतीत हो जांय, कुछ उपाय न करे, और भोजन बन्द करदे, और जो हो सके तो पानीभी न दे, और अंधेरी जगह में बिठावें और चीनी आईना आगे रख दे, कि रोगी हर दम उसमें अपना मुख देखा करे, और जायफल मुख में रखवावें और किर्न की जड़ की छाल जो मारत अस्त में औटी हुई हो उससे कुल्ली करवावें, और जो रुधिर की अधिकता से होतो फस्द भी खोल सकते हैं इस रोग के उपाय में देर करनी न चाहिये, जो तीन महीने व्यतीत हो जांयगे तो मुंह सीधा न होगा ॥

चीनी आईना चांदी तांबे और पीतल को मिलाकर बनाते हैं इसमें मुख देखने से जोर पड़ता है, इस कारण मुह सीधा हो जाता है ॥

सत्तरहवां पाठ

तशन्नुज के विषय में

'तशन्नुज' किसी जगह के खिच जाने को कहते हैं जो कारण उसका कफ की अधिकता हो तो उसका नाम तशन्नुज रतब और इम्तिलाई कहते हैं, चिन्ह उसका यह है कि अचानक उत्पन्न हो जाय, और चिन्ह कफ के दृष्टि पड़ें और जो खुश्की के कारण पैदा हो उसको, तशन्नुज याबिस कहते हैं। चिन्ह उसका यह है कि धीरे पैदा होगा और उसके पहिले के या दस्त या रुधिर बहुत निकला होगा या तप आई होगी या

रोगी बहुत जागा होगा या उसको क्लेश बहुत हुआ होगा और उसका बदन दुबला होगा। तशन्नुज इमतिलाई का उपाय ख़ालिस के अनुसार करना चाहिये और तशन्नुज याबिस में बदन को बाहर से और भीतर से तरी पहुंचाना चाहिये, और मोम का बनफ़शे या बादाम के तेल में मिलाकर मलें, और स्त्री का दूध नाक में डालें॥

बिच्छूके डंक मारने से और पट्ठेपर घाव लगने से या कीड़े पड़ने से जो तशन्नुज हो चाहिये कि उस कारण को दूर करें और-मृगी के समय जो तशन्नुज होता है वह मृगी के दूर होने से जाता है और जो न जाय तो रोगनगुल या कोई और तेल गुनगुना करके मलें, और कभी २ आदमी का मुख जम्हाई लेने में खुला रह जाता है, उसमें किसी तेल का मलना लाभदायक है, और जो इसमें अच्छा न हो तो तशन्नुज इमतिलाई का उपाय करें॥

अठारहवां पाठ

तमद्दुद के विषय में

अंग का कोई भाग लम्बाईमें तनकर रहजाता है और समेटने से नहीं सिमटता कारण इसका यह है कि कोई पट्ठा दोनों ओर से खिंच जाता है उपाय इसका वही करें जो तशन्नुज में लिखा गया है॥

उन्नीसवां पाठ

कजाज के वर्णन में

तशन्नुज जो गरदनमें हो और गरदन इधर उधर न फिर सके उस कजाज कहते हैं, जैसा कारण हो वैसा उपाय तशन्नुज के

अनुसार करें, और यह रोग सब प्रकार के तशन्नुजों से बुरा है, इसका उपाय बहुत जल्दी करना चाहिये।

वीसवां पाठ

राशे के वर्णन में

इस रोगमें मनुष्य का शरीर कांपने लगता है, जो यहकफ की अधिकता से हो तो निसयान और कफ के चिन्ह पाये जायेंगे, उपाय इसका यह है कि कफ को निकालें, और जो विषय की अधिकता से हो तो उसको छोड दें और ताजा दूधपीना और देह पर तेल मलना अति लाभदायक हैं॥

इक्कीसवां पाठ

इख्तलाज के विषय में

शरीरमें किसी जगह के फड़कने को इख्तलाज कहते हैं। नित प्रति मुख का फड़कना लकवा आने का चिन्ह है पेट का फड़कना मृगी हो जाने का, और बगल का प छाती और बगल की सूजन का चिन्ह है और सार का फड़कना रुकवा होजाने का चिन्ह है, पेट की फड़कना माली खोलिया का चिन्ह है उपाय इसका कि नमकको गर्म करके उस जगह सेकें, और जो इससे न हो तो कफ को निकाले, और हैज के बन्द हो जाने रोग हो तो फस्द खुलवाने से जल्दी जाता रहता है॥

बाईसवां पाठ

लवी के विषय में

इस रोग में देह भारी हो जाती है और मुंह और आंखें लाल होती है, और जम्हाई और अंगड़ाई —— आती हैं, और ऐसा मालूम होता है कि तप आने

काल के पीछे यह बात जाती रहती है। या बार बार आती है जो बार बार आवे तो रुधिर और पित्त का कम करे। और भोजन थोड़ासा दें और गर्म मिजाज वाले को ठण्डा पानी पीना और ठण्डे पानी से स्नान करना अति लाभदायक है और धनिया का कूट छानकर शक्कर के साथ फांकना या उसको भिगा कर और मिठाई में मिला कर पीना लाभदाता है॥

तेईसवां पाठ।

हिस के वर्णन में।

यह वह रोग है कि भेजे में खुजली बिना दर्द के होती है उपाय उसका यह है कि भेजे को ठण्डा और तरी पहुंचावे क्यों कि यह रोग पित्त के बुखार के कारण से होता है। और जो इस से भी अच्छा न हो तो पित्तों का जुल्लाब दें। और जो रुधिर की अधिकता देखें तो फस्द भी खोल दें॥

चौबीसवां पाठ।

असावा के वर्णन में।

यह वह दर्द है जो भौं अर्थात् भृकुटी में होता है। जो अकेली गरमी से हो तो उसका चिन्ह यह है कि सूरज के निकलने से उत्पन्न हो और ज्यों ज्यों दोपहर तक दिन चढ़ता जायगा त्यों२ दर्द भी बढ़ेगा और दोपहर पीछे घटता जायगा यहां तक कि बिलकुल न रहेगा और फिर सवेरे यों ही होगा उपाय इस का यह है कि, कपूर को रोगन गुल में घोल कर नाक में टपकाये और बाहर से देह को साफ रक्खें, और जो देहकी गरमी ऊपर चढ़ने के कारण यह रोग हो तो चिन्ह उसका यह है कि रोगी औंधा पड़ा रहेगा और माथे की खाल खिंची हुई होगी, उपाय इसका यह है, कि नाक में कोई वस्तु कड़ी और खुरखुरी

डाल कर या नख और अंगुली चिभो कर नकसीर फोड़े जो इससे न फूटे तो फस्द सराऊ करे और कपूर सुंघावें हाथ पांव मलें ॥

पच्चीसवां पाठ।

जुकाम और नजले के विषय में।

जानना चाहिये कि भेजे का मल जो नासिका के द्वारा उसे जुकाम कहते हैं, और जो गले पर गिरे तो नजला हो गरमी का चिन्ह यह है, कि यह मल पतला और जलता नि होगा। और सरदी का चिन्ह इसका गाढ़ा होना या जलन हो उपाय इसका यह है, कि मिजाज को दुरस्त करें और जैसा वाद हो वैसे ही उसे निकालें चाहिये कि जुकाम में मवाद साफ करने से पहिले वह वस्तु न खांय पीवें जो मवाद को नि लने से रोके, और बंधन का दूर करे, और सिर को ढांके नजला चाहे गरम हो या ठण्डा, बहुत सोने और चित्त लेट और बहुत चलने फिरने और सिर झुकाने और खट्टी वस्तु औ दूध दही खाने से बचते रहें और जो जुकाम से साथ खांसी हो तो उपाय भी अति आवश्यक है ॥

माशरा और बादश नाम सूजन हैं जो मुख पर हो जाती और जुल्लाब से जाती रहती है उनका वर्णन इस पुस्तक अन्त में आवेगा ॥

दूसरा अध्याय।

आंख के रोगों के वर्णन में।

नेत्रों में सात परदे और तीन रतूबतें और एक असबा को रग क ... बीच में से खाली है और इसी असबे में दिखाई देता है, और आंख की पुतली भी इसे ... हैं बीचाबीच में आकर, रतूबत जली दीया पड़ी ...

दीया में सब चीजें दिखाई देती हैं और असब से निकल कर दृष्टि की इन्द्री तक पहुंचती है यह इनको पहचान लेती है ॥ और इसी रतूबत और असबे के बचाव के लिये और सब परदे और रतूबते आसँ पास हैं ॥

अब जानना कि आंख का परदा जो बाहर की ओर हवा से मिला हुआ है छुआ जाता है वह मुलतहिमा और करनियां है अर्थात् सफेदी आंख की जो दिखलाई देती है वह मुलतहिमा है। गोल और काली वस्तु करनियां हैं ॥ यह दोनों परदा रंगदार है और करनिया में रंग है वह इसीका है इसी परदे के बीच में एक छिद्र है, और चित्रों के निकलने के लिये और आंख में पानी उतरने की जगह भी यही है इस परदे के पाछे रतूबत बैजिया है, इसका रंग अंडे की सुफेदी के समान है इसके पीछे परदा अनक-बूतिया है यह परदा मकड़ी के जाले के समान है, इसके पीछे र-तूबत जलीदीया है और इसके पीछे रतूबत जजाजिया है जो पि-घली हुई कांच की सी है और इसके पीछे परदा शबकीय है जो जाल के अनुसार है और इन दोनों रतूबतों को घेरे हुये है और इसके पीछे परदा मशीमिया और इसके पीछे परदा सलबिया है जो आंख के ढेले से लगा हुआ है इन दो परदों और रतूबतों में अलग२ रोग होते हैं उनका वर्णन आगे करेंगे ॥

पहिला पाठ ।

रमद अर्थात् आंख आने के विषय में ।

मुलतहिमा पर सूजन आजाने का नाम रमद है जो यह रु-धिर में हो तो चिन्ह उसका यह है कि आंख लाल और भारी हो जायगी और दर्द होगा और चीपड़ उसमें बहुत निकलेंगी और जो पित्त से हो तो जलन और पीड़ा बहुत होगी परन्तु चीपड़

बहुत न होगा और जो कफ से हो तो रंग इसका सफेद हो और आंख फूल जायगी चीपड आसू बहुत बहेंगे और जो से हो तो सूजन बहुत होगी और और चीपड कुछभी न निकलेगी और पलकें न चिपकेंगी आंख बोझल होगी और सिर में दर्द रहेगा, और जो रहिसे हो तो बोझ न होगा न चीपड निकलेगा। उपाय इसका यह है कि मवाद के अनुसार उसे साफ करें और फस्द और जुल्लाव जो पहिले कोई औषध आंख में न डालें परंतु जब यह रोग हलका तो तो दो तीन दिन पीछे बिना फस्द और जुल्लाब के दवा डालनी चाहिये, गर्म रमद में रसौत को लड़की माफ दूध में घोल कर आंख के अन्दर और ऊपर लगाना अति लाभदायक है, और जब पीडा बहुत हो तो थोडी अफीम भी उसमें मिलालें और चाकसू पीसकर आंख में डालना सब प्रकार की रमद में अच्छा है परन्तु इसको थोड़े दिन पीछे डालें रोग के होते ही न डालना चाहिये और गर्म वस्तु न खावें ॥

चाकसू के बनाने की रीति यह है, कि उसे छीलकर पानी में पकावें और गल जाय तो सुखादे, उसके दो हिस्से लेकर एक एक हिस्सा मिसरी और चीनी ममीरा को मिला और आंख में डालें, लड़की की आंख में कभी कभी बहुत होजाता है, उसको बादीनम, कहते हैं, उसका है, कि सिर के पीछे पछने लगावें और चुटकी च आंख में डाले ॥

दूसरा पाठ।

तुरफा के वर्णन में।

इसमें मुलतहिमा पर रुधिर की फुटकी पड जाती है उपाय इसका यह है कि, कबूतर या बवस का कचा पर उखाड कर

सके रुधिर की बूंद अकेली या मिले अरमनी के साथ आंख टपकावें, और कुन्दर को मलाकर उसकी धूनी आंखको दें और जो उसका कारण अत्यन्त बुढापा होवो पहिले फस्द करें और पछने लगा कर जुल्लाब दें ॥

तीसरा पाठ

जुफरा अर्थात् नाखूने के विषय में

इसका उपाय यह है कि लाहौरी नमक की सलाई बनाकर दैवार दिनमें आंख में लगावें और जो मवाद बहुत होवो फस्द सराक करें और हब्बा अयारिज खिलावें और बलगम रपम करने वाली वस्तु से बचें और जो नाखूना बहुत उभरा हो तो किसी अच्छे दस्तकार से कटवालें ॥

चौथा पाठ

आंखमें जाला पड़जाने के विषय में

इसका कारण यह है कि करनियां पर कोई वस्तु उत्पन्न हुई होगी उपाय इसका यह है कि समदरफेन पानी में घिसकर आंख में लगाये थोड़े दिनों में अच्छा हो जायगा और जो मवाद पुष्ट होतो भेजे को मवाद से साफ करें और उस जालेको प्रातःकाल बिनाकुछ खाये जीभसे चाटना अति लाभदायक है॥

पांचवां पाठ

सबल के वर्णन में ।

इसरोग में आंखकी रगें लाल और मोटी होजाती हैं। और सुजली होती है जो इसमें आंसू भी निकलें और पलकों में पानी भरा रहे तो उसको सबलरतब कहेंगे और ऐसा न हो तो सबलयाबिस कहेंगे, उपाय इसका यह है कि फस्द सराक करें-इसके पीछे माथे की रग और कोये की रगकी फस्द खोलें

और जो यह रोग कम हो तो, शियाफदीनार आंख में और जो भारी हो तो शियाफअहमर, और बासलीकून, लगावें और सबलयाबिस में सुरमा और औषधों के लगाने से पहिले और पीछे गर्म पानी से गर्म जगह में बैठकर स्नान करना आवश्यक है, जब रमद और सबल दोनों मिले हुए हों तो दोनों के चिन्ह पाये जायगे, ऐसे समय में न गर्म औषधें देना चाहिये न ठंडी परन्तु मवाद को निकालें और अंडे की सफेदी आंख पर लगावें यह दोनों रोगों को लाभदायक है जो इस उपाय से न जावे, तो दस्तकारी से उठालें ॥

छटा पाठ

मुलतहिमा के फूलजाने के विषय में

जो मुलतहिमा का फूल जाना रीह के कारण से हो तो चिन्ह उसका यह है कि अचानक उत्पन्न होगा और पहिले आंख के कोनों में मक्खी या मच्छर के काटने की सी जलन होगी और बलगम से हो तो धीरे धीरे उत्पन्न होगा और पीड़ा बहुत न होगी। और अङ्गुली के दबाने से चिन्ह रहजायगा और जो मवाद बहुत और पतला होगा तो वह चिन्ह देरतक न रहैगा उपाय इसका यह है, कि जैसा मवाद हो वैसा ही जुल्लाब दें, और ठंडी रमद की औषधें काम में लावें, और जो यह रोग रीह से होतो तीन दिन तक कुछ उपाय न करें आप से आप जाता रहेगा ॥

सातवां पाठ

मुलतहिमाकी खुजली का वर्णन।

इसमें बहुधा पलक भी घायल या लाल होजाते हैं। उपाय, इस का यह है कि नमकीन और चरपरा भोजन न खावें, और फस्द और जुल्लाब लें। और जिस्म को नरकुशपर रगड़ कर

आंख में लगावें और गर्म पानी से मुख धोया करें ॥

आठवां पाठ

सोसतुल मुलतहिमा के वर्णन में

इस रोग में आंख की सफेदी पर बड़े पौये की ओर नरम मांस उत्पन्न हो जाता है उपाय इसका यह है कि कई बार मवाद को साफ करें, और फिर दस्तकारी के काट डालें॥

नवां पाठ

दोकतुलमुलताहिमा के विषय में

यह वह रोग है कि आंख में बहुधा कोये की ओर कड़े और लाल और काले दाने पड़ जाते हैं उपाय इसका यह है कि जो मुवाद अधिक हो तो उसे साफ करें नहीं तो गुलाब में कपड़ा भिगो कर आंख पर रखना अच्छा है और इससे अधिक उपाय की आवश्यकता नहीं ॥

दसवां पाठ

दमआ अर्थात् आंसू बहने के विषय में

जो गर्मी से होतो सुरमा लगावे और सरदीसे होतो बालछी ... और जो आंख की निर्बलता से हो तो जली हुई पीली हड़, और नमक, और माजू, बराबर बराबर कूट छान कर आंख में सलाई से लगावें और जो थोड़ी २ देर आंसू बहकर थम रहा करे तो उसको हिन्दी में मलना कहते हैं। उपाय इसका यह है, कि पहिले मवाद को निकाले, और इसके पीछे आंसू बहाने वाली दवा लगावें। जैसे बासलीकून और शयाफ अहमर॥

ग्यारहवां पाठ

हरकतुलऐनअर्थात् आंखमें जलन होनेके विषयमें

जो यह गर्म मवाद के कारण से होतो उस मवाद को

निकालें और जो कोई मवाद न हो तो तूतिया को कच्चे खट्टे अंगूर के रस में भिगो कर सलाई से आंख में लगावें। और हरी कासनी के पत्ते कूट कर पानी उसका तेल में मिला कर लगावें, और कपूर भी उस के साथ मिलालें तो अति लाभदायक हो ॥

बारहवां पाठ

कुज़ा अर्थात् आंखमें किसी वस्तुके पड़जाने का विषय

जब आंख में कुछ पड़ जाय तो आंख को कभी न मलें ऐसा न हो कि कोई कड़ी वस्तु हो तो मलने से आंख में घुस जाय। आंख को गर्म पानी से धोवें और स्त्री का दूध आंख में डाले। और दिखाई देती हो तो उसे रुई या नर्म कपड़े से उठालें, और यह भीतर चिपटी हुई हो और छुट न सके तो निशास्ते को पीस कर आंख में भरदे, और थोड़ी देर ठहरे रहे इससे वह वस्तु निशास्ते में लिपट जायगी, फिर उसे अलग रुई से उठालें, और कोई भुनगा या मच्छर आदि हो तो मुलतानीमिट्टी या गेरू पीसकर आंख में डालें, और थोड़ी देर आंख में बांधदें, वह उसमें लिपट आवेगा फिर उसको रुई से उठावें और शीशे का चूरा आंख में जा पड़े उस समय वह चीपना जो ऐसे कामों के लिये बनाया गया है काम में लावें या जिस प्रकार से बन सके निकालडाले, और निकालने के पीछे स्त्री का दूध और अंडे की सफेदी मिलाकर आंख में डालें, इस से बन्द करने में आंख नहीं चिपटेगी ॥

तेरहवां पाठ

आंख पर चोट लगने का विषय।

जो चोट लगने से आंखपर लाली या सूजन हो तो उपाय इसका यह है कि फस्द खोले, और मुलय्यन नुकूअ, फवाके,

ो पिलावे और गुद्दी पर पछने लगावे, इसके पीछे अण्डे की सफेदी रोगन गुल में मिलाकर आंख में लगावे और जो पीड़ा जाने के पीछे चोट का चिन्ह अर्थात् नीलाहट रह जाय तो धनिया पोदीना और काला पत्थर जो मिरचों की थैली में निकलता है, और हरताल पीसकर लेप करे इस से नीलाहट जाती रहेगी, और तलवार या पत्थर का घाव मुलतहिमापर लगा हो, उसका उपाय यह है कि फस्द और जुल्लाब कई बार दें और अंडे की जरदी का आंख पर लेप करे, इस के पीछे वही उपाय करे जो आंख के घाव का उपाय आगे लेखा जायगा ॥

चौदहवां पाठ

आंख के घाव का विषय

आंखके सब परदों में घाव हो सकता है। परन्तु जो घाव केवल मुलतहिमा पर लगा हो और दूसरे परदेबचेहोंउसेसालिम कहते हैं उसमें पीड़ा कम होती है. मुलतहिमा, करनिया, और मनबीया. का घाव आंख से देख सकते हैं, परन्तु परदों के घाव में केवल अधिक पीड़ा मालूम होती है और जब तक सूजन नहीं पड़ती कोई चिन्ह घावका नहीं मालूम होता उपाय उसका यह है कि फस्द सराफ तुरन्त करे और ऐसी औषधें देते रहें जिनसे कब्ज न होने पावें और जब पीड़ा हो तो स्त्री का दूध टपकावे और जो वह घाव तुरंत न पके तो धोई हुई मेथी का लुआब टपकावें अर्थात् मेथी के बीजों को दो पहर तक पानीमें भिगो रक्खें, फिर निकालकर बीस गुने पानी में पकावे जबतक पानी आधा रहजाय उसको हिलाकर निकालले यही धोई हुई मेथी का लुआब है, जब घाव पक कर बहने लगेतो दूध और शहद मिलाकर आंखमें डाले इसमे घावसाफ

होजायगा, इसके पीछे शियाफ कुन्दर काम में लावें, और अगर घाव भर आने पर भी रह जाय तो जो उपाय दानों के घाव दूर करने का है. वही काममें लावे, और लिए पुरानी हड्डी गुलाब में घिसकर लगाना लाभदायक है

पन्द्रहवां पाठ

कमना का वर्णन

यह कई रोगों का नाम है एक जब पलक रोह से भारी हो जाय और फूलजाय और जागने के पीछे ऐसा मालूम हो कि आंखोंमें धूल पड़ गई ॥

दूसरे जब करनियांके पीछे पीप इकट्ठी हो जाय ।

तीसरे मुलतहिमा पर सुर्खी हो तो इससे कम दिखाई दे और सब वस्तु धुंधली मालूम हों ।

यह जो केवल पलक का रोग है । उपाय उसका पलक के रोगोंमें लिखा जावेगा, और करनियां के रोग का उपाय यह है कि मेथी और अलसी का लुआब आंख में डालकर मवाद को पकावे और कई बार गर्म पानी मे स्नान करें इसके पीछे साफ करने के लिये रूपामुखी पीसकर आंख में लगावे और जो इससे लाभ न हो तो दस्तकारी करे और नहीं तो इसे छूटे नहीं ऐसा न हो कि कोई और रोग पड़ खड़ा हो और जो मुलतहिमा का रोग है उसका यही उपाय करे जो बादी का है, और मेथी, बाबूना, और अकलीलउलमुलक के आंख में धार दे ॥

सोलहवां पाठ

रतौंदी का विषय

उपाय इसका यह है कि शहद का सौंफ के पानी में घोलकर आंख में लगावे, और पीपल को बकरी या बारहसींगेकी कले

। में घुमोकर आगपर रखदें उससे जो पानी निकले उसको ।लमें लगावे इसम तुरन्त ही अच्छा हो जायगा, और जो ग़ाद अधिक हातो जुल्लाब दे और फस्द खाले।

सतरहवां पाठ

दिनौंदी के विषय में

उपाय इसका यह है, कि लड़की की मा का दूध सिर पर ले और नाक में टपकावें. और ठंडे पानी में गोता लगा कर स में आंखें खोले और अनार का शरबत पीवे ॥

अठारहवां पाठ

सुदाहिद्कहः और शकीक चश्म के विषय में

यह वह रोग है कि आंख के अन्दर धमक होती है और ईसी छिदती है और ऐसा मालूम होता है कि आंख को कोई दबोचता है और कभी पीड़ा जाती रहती है, और फिर हो जाती है जैसे आधासीसी और रमद का कोई चिन्ह नहीं हो तो जो उपाय आधासीसी का है वही इसका करे। और कनपटी की रग को काट डालें ऐसा न हो कि कोई रोग उत्पन्न हो जाय ॥

उन्नीसवां पाठ

हुजूजउलऐन के विषय में

इसमें बिना सूजन आंख बाहर निकल आती है, उपायास का यह है, कि जैसा मवाद हो वैसे ही उसे साफ करे। और हरड़ घिस कर आंख में लगावे और भोजन कम खाय ॥

बीसवां पाठ

करनिया के उभरआने के वर्णन में

उपाय इसका यह है कि मवाद गाढ़ा हो तो उसे साफ करें

और नकर अस्फर को मलाई से आंखमें लगावे और ॰ से मुंह धोया करें और उसकी भाप आंख को दें के उभार आने का यह चिन्ह हैं कि कड़ी होती है और सम य नहीं दरती, और आंसू नहीं हो तो और उसमें पीड़ा न होती और फुन्सियां जो करनियां में हो जाती हैं वह नर्म हैं, और दबाने से दब जाती हैं और उनमें पीड़ा भी होती है

इक्कीसवां पाठ

करनियां पर फुंसी हो जाने के विषयमें

जानना चाहिये कि करनियां के चार परदे हैं कभी सबमें फुन्सी होती है और कभी एक में परन्तु फुन्सी पड़ने की जगह किसी में सफेद दिखाई देती है और किसी में नहीं, उपाय इसका यह है कि फस्द और जुल्लाब दे और पहिले ऐसी ठंढी औषधें लगावे जो मवाद को इधर गिरने से रोके और इस के पीछे शियाफ अहमरलीन लगावे फिर शियाफ अबि यनकुन्दरी ॥

बाईसवां पाठ

मोरसिरच के वर्णन में

यह वह रोग है कि करनियां का परदा फट जायऔर उसके मड़े से अनबिया ऊपर को उभर आये, उपाय इसका उससे पहिले करें जब कि किनारे करनिया के मोटे न पड़ जाय और ऐसा उपाय करें जो अधिक उभरने से रोकें और अनबिया को अन्दर दबादें, यह इस प्रकार है कि धोया हुआ शादना और चांदी को इकलीमीया जली हुई सीपी पीस के आंख में डालें और धोये हुए शादने का सुरमा आंख में भरे और ऊपर से गद्दी रखकर बांध दे या सीसे का टुकड़ा आंख के बराबर बनाके या सीसे का बुरादा थोड़ी सी थैली में भरके आंख पर

। दें, और पट्टी से कस दें और जो पिसा हुआ सुरमा छोटी पोटली में भर के आंख पर रखकर पट्टी से कस दें, तो अति फ़ायदायक है, और जब किनारे करनिया के मोटे हो जायेंगे फिर किसी प्रकार अच्छा न होगा इस रोग का उपाय जल्द करना चाहिये ॥

भेंगा होने का विषय ।

इसमें एक वस्तु की दो वस्तु दिखाई देती, हैं जो यह रोग जन्म से हो तो अच्छा नहीं हो सक्ता, परन्तु बच्चों की मृगी रोग से और एक करवट सुलाने या भयानक शब्द सुन कर अचानक चौंक पड़ने से भी यह रोग हो जाता है, उपाय इसका यह है कि कोई लाल या चमकदार वस्तु आंख के किनारे के उस ओर रख दें जिधर कि आंख को फिराना चाहते हैं बच्चा हर दम उसे देखेगा इससे आंख उसकी सीधी हो जायगी ॥

जो यह रोग जवानी में उत्पन्न हो तो कारण इसका तशन्नुज इमतिलाई या याबिस होगा, पहिचान तशन्नुज याबिस की यह है कि इसमें पहिले गर्म रोग हुए होंगे, उपाय इसका यह है कि आंख को तरी पहुंचावें और लड़की की मा का दूध सिर पर डारें और पहिचान इमतिलाई की यह है कि पहिले मृगी आई होगी और तशन्नुज इमतिलाई के चिन्ह पाये जायगे उपाय इसका मवाद को साफ करना और निकालना है ॥

जो आंख के ढीले हो जाने से यह रोग हो तो इसके चिन्ह और उपाय वही हैं जो इस्तिरखा में लिखे गये हैं ॥

और रीह के कारण आंख का कोई पर्दा या रतूबत जाती रही हो तो आंख फड़केगी उपाय उसका यह है कि मेलों से बलगम को निकालें, हब्ब अयारिज खिलावें और बदहज़मी को दूर करें

इतातिसा और इन्तशार का वर्णन।

असबे के चौड़ा हो जाने या अनविदा के छेद के पढ़ को इतितसा कहते हैं, और आंख में रोशनी फैल जाने इन्तशार कहते हैं॥

जानना चाहिये कि इतितसा असबे के साथ इन्तशार होता है, परन्तु ऐसा हो सकता है कि इतितसा अनवीया साथ इन्तशार न हो, और कभी २ इतितसा असबा और तिसा अनवीया दोनों साथ होते हैं, इतितसा या असबे अच्छा होना बहुत कठिन है, परन्तु इतितसा अनवीया उपाय कारण के अनुसार हो सक्ता है, कारण जान के उपा करें जैसे चोट लग जाने से हो तो फस्द सरारू करें और पि लियों पर पछने लगावें॥

और किसी मवाद की अधिकता या रतूबत बेजिया अधिकता से हो जैसा कि बच्चों को हुआ करता है, या अन बीया की सूजन से हो तो फस्द और हुकना करें और अनवीया की खुश्की से हो तो चिन्ह और उपाय इसका बो बसर पुतली के पाठ में लिखा जायगा।

अनवीया के छेद के सड़ जाने का विषय।

यह रोग जन्म से हो तो बहुत अच्छा है, इससे दृष्टि ती हो जाती है और जो किसी रोग से हो तो दृष्टि कम हो जाव है, पहिले देखें कि कारण इसका अनवीया की तरी है, य खुश्की या रतूबत बैजिया की कमी खुश्की और तरी के चिन्ह सरस में मालूम हो जायगे॥

और रतूबत बैजिया की कमी का चिन्ह यह है कि आंख छोटी हो जायगी और वस्तु भली भांति दिखाई न देगी औ कैमूस अनवीया के कड़े हो जाने और बिगड़ जाने से भी

रोग होता है उसका चिन्ह यह है पुतली न दिखाई दे अब कि अनबीपा की सुरकी या रतूबत बैजिया की कमी के कारण से यह रोग हो तो चाहिये कि आंख पर तरी पहुंचावें और जब रतूबत अनबीपा की अधिकता से हो तो उस तरी को दूर करें और फेमूस दिमाग भामे में मवाद को साफ करें और तरी भी पहुंचावें ॥

खयालात का वर्णन ।

इसमें आंख के आगे भुनगे से उड़ते मालूम होते हैं यह तीन प्रकार के हैं एक तो मोतियाबिन्द के होने से पहिले होते हैं, दूसरे पेट के बिगड़ने से और तीसरे दृष्टि क्षीण होने से ॥

मोतियाबिन्द होने से पहिले जो हों उनकी पहिचान यह है कि हर दम दिखलाई देंगे और प्रति दिन बढ़ते जायगे और बहुधा एक आंख में होंगे उपाय इसका मोतियाबिन्द में लिखा है, और जो यह रोग पेट के बिगड़ने से हो तो उसके खाली होने और भरे होने पर अधिक दिखलाई देंगे और आंख के परदों और रतूबतों के बिगड़ने से हो तो आंख रंगीन होगी और इसमें कोई रोग पहिले हुआ होगा, उपाय उसका यह है कि भेजे और पेट का मवाद से साफ करें और इसके पीछे आंख के परदों और रतूबतों का मवाद कारण के अनुसार निकालें और जो ऐसा दृष्टि के क्षीण होने से हो तो उसके चिन्ह यह हैं कि दृष्टि ठीक होगी और भेजे की इन्द्रीयां सब क्षीण होंगी यह कोई रोग नहीं है बदन से जो धुंआ और हवा में छोटी २ वस्तु उड़ती हुई दिखलाई देती हैं।

मोतिया बिन्द का वर्णन ।

यह नजला है कि थोड़ा २ या एक ही बार आंख में उतर आता है और अनबीपा के छिद्र में ठहरा रहता है जो यह माद्दा

हो तो दृष्टि माती रहती है जो पतला होगा तो धुधला दिखाई देगा इसको मुवशिरफ़ीक़ कहते हैं, जो नमला पूरा गया होगा तो आंख से कुछ भी न दिखाई देगा और धुंधली हुई दिखलाई देगी परन्तु मोतियाबिन्द से पहिले छाव का रोग अवश्य होगा उपाय इसका यह है कि कनपटी नस पर दाग दें जिससे वह रग जल जाय और दाग देने के पीछे तीन दिन तक उस पर मरहम लगावें फिर रोटी को तिलों के तेल में भिगो कर उस पर रक्खें, और दाग से जितना पानी बहे अच्छा है, और भारी वस्तु खाने से, और मैथुन से बचते रहें और पानी उतर आने के पीछे जब १ वर्ष व्यतीत हो जाय तब देखें कि आंख मलने से पानी फैल कर फट जाता है या नहीं जो फट जाय तो फस्द खोलें जुल्लाब न दें उसके पीछे दस्तकारी करें॥

उपाकाल के पीछे जब तीन महीने व्यतीत हो जाय और इस पर भी पानी न उतरे तो जानलो कि उसके पीछे मोतियाबिन्द न होगा॥

नीम के बीज को सुरमे की तरह पीसकर आंख में लगाने से पानी को आंख की ओर आने से रोकता है, और ऐसा ही कान के पीछे की रग की फस्द खोलने से और उस पर दाग देने से होता है॥

रस्सी, आसमानी, मुन्तशिररकीर, मजाजी, अम्बगर अवि-
न बरदी, असमर, अइमर नबीमरफ, असवद, और यह भी
क होने क पीछे दस्तकारी क योग्य हो सकते हैं परन्तु इनका
ीक होना कठिन है, और केवल उस पानी में जो सफेद और
ाफ हो और आंख मलने से कट जाय दस्तकारी हो सक्ती है।

असवे में सुद्दा पड़जाने का विषय ।

जो यह बिना मोतियाबिन्द के हो तो चिन्ह उसका यह है
कि पुतली पूरी अच्छी दिखलाई देगी और सूझन न होगी परतु
देखलाई न देगा उपाय इसका यह है कि भेजे से मवाद का
नकालें और कोय की रग की फस्द खोलें और कनपटी की रग
र जोंक लगावें और पिंडली पर पछने लगावें और पांव
को मलें।

आंख के कञ्जा होने का विषय ।

जो यह रोग जन्म से हो तो उपाय इसका नहीं होसक्ता
और जो किसी रोग से होजाय तो इसको मालूम कर कारते
[-उसका उपाय कारण के अनुसार करें ॥

जो तरी की अधिकता से हो तो देह को आंख को मवाद
से साफ करे और जो खुश्की से हो तो तरी पहुँचावें।

यह रोग जो खुश्की से होता है, उसमें सुझाई नहीं देता,
इसमें और मोतियाबिन्द में यह अन्तर है कि मोतियाबिन्द में
पहिले खयालात का रोग अवश्य होगा और इसमें यह बात
नहीं होती है, आंख दुबली हो जायगी और दस्तकारी से लाभ
न होगा यह रोग जो बच्चों की आंख में हो तो जवान होने पर
जाता रहता है ॥

जोफ बसर अर्थात् कम दृष्टि का विषय

जो कारण इसका रुधिर की अधिकता हो तो फस्द करें
और रुधिर के बदले जाने को रोग कहते हैं और तुबिया को

कच्चे और खट्टे अंगूर के रस में भिगोकर आंख में ... और जो यह कफ के कारण से हो तो उसके पकाने के पीछे कफ का जुल्लाब दें, और बासलीकून आंख में लगावें, और जो इसका कोई और कारण हो तो उपाय उसका करें, बुढ़ापे में यह रोग बहुत होता है उसका उपाय नहीं हो सकता परन्तु बचाव के लिये कफ का मवाद निकाले और मबाहरात का सुरमा लगावें।

वतशान बसारत का विषय।

अंधेरी जगह में बहुत बैठने से दृष्टि धुंधली होजाती है या रतूबत बैजिया काली पड़ जाती है, उस्से यह रोग उत्पन्न होता है।

आंख में बासलीकून लगावें, और हल्की हल्की औषधें और भोजन खावें, और जो अचानक अंधेरे के बाहर निकल आने के कारण से यह रोग उत्पन्न हो तो नीला आसमानी रंग का कपड़ा आंखों पर डालें रहें या आसमानी रंग की ऐनक लगावें, और हल्का भोजन खांय और भूखे रहने और मैथुन से बचते रहें और रात को कुछ न खावें॥

चुन्धा होजाने का विषय।

इस रोग में दिन को कम दिखाई देता है यह जन्म से हो तो इसका उपाय नहीं होसकता परन्तु पलकों और आंख के पर्दों के काला करने का उपाय करें वह इस प्रकार से है कि बनफशे और बादाम के तेल से काजल बनाकर आंखों पर लगाया करें इसमें दृष्टि पुष्ट हो जायगी॥

कुमूर अर्थात् दृष्टि के थकजाने का विषय।

यह रोग सफेद और चमकीली वस्तुओं पर जैसे सूर्य्य या बरफादिक हैं दृष्टि जमाने के कारण से उत्पन्न होजाता है॥

उपाय इसका यह है कि काला कपड़ा आंखों पर लपटावें और पहनने और बिछाने के कपड़े भी सब काले रक्खें और

में कपड़ा भिगोकर आंखों पर रक्खें या स्त्री का दूध आंखों पर दुहे ॥ और कड़वे बादाम पीसकर या कुचले को आंखों पर बांधे।

आंख के दुखता होने का विषय।

इसमें धूप और रोशनी की मार देखना बुरा लगता है। यह रोग गरमी से हो या ठंढ और सर्दी पहुंचाने और मार आदि के कारण से हो तो पहिले उसे दूर करे ॥

आंख के मिज़ाज पहिचानने की रीति।

आंख का मिज़ाज गर्म और तर है, और जो इसके विपरीत हो तो जान लो कि कोई रोग होगा ॥

ऊपर से छूने में आंख गर्म मालूम हो और डोरे रंगीन हों और आंख जल्दी २ फड़के तो यह चिन्ह गरमी का है और सरदी के चिन्ह इससे विपरीत है।

जो आंख से चीपड़ आंसू बहुत निकलें, और फूली हुई दिखाई दे, तो यह चिन्ह तरी के हैं, और खुश्की के चिन्ह इससे विपरीत हैं ॥

काली आंख सब प्रकार की आंखों से अधिक गर्म और तर होती है, इसलिये ऐसी आंख में मोतियाबिन्द और २ गरमी के रोग बहुधा होते हैं, परन्तु बहुत मनुष्य यह कहते हैं कि नीली आंख में मोतियाबिन्द बहुत होता है ॥

तीसरा अध्याय

पपोटे और पलक के रोगों का विषय

कमना का विषय

कमना उसको कहते हैं, कि मनुष्य जब जागे तो आंख में खटक हो जैसे रेत पड़ गई है और थोड़ी देर पीछे यह खटक

जाती रहै, पहिले इसमें जुल्लाब दें और, शियाफ अहरमलीन और शियाफ अहमर हाद लगावें और गरम पानी से स्नान करना भी लाभदायक है ॥

पपोटे के ढीला होजाने का विषय।

पहिले मवाद को निकालें इसके पीछे एलुआ. अकाकिया मुरमकी पीसकर हलक और पलक और माथे पर लगावें, और जो इससे लाभ न हो तो पलक काटनी पड़ैगी इसकी रीति दस्तकार जानते हैं और नाक के भीतर की रग की फस्द करना अच्छा है।

पलकों के आपस में चिमट जाने का विषय।

यह रमद के पीछे या पलक काटने के पीछे या सबब नाखूने में होता है, उपाय इसका यह है, कि सलाई से दोनों पलकों को छुड़ावें और फिर जीरा और नमक चबाकर पानी उसका आंख में डालें और रुई रोगन गुल में भिगो के पलकों के बीच में रक्खें और अंडे की जरदी में रोगनगुल मिलाकर आंख के ऊपर लगावें ॥

पलक के छोटे होजाने का विषय।

इस रोग में ऊपर की पलक सुकड़ जाती है और नीचे की पलक बाहर पलट आती है और दोनों पलकें बराबर बन्द नहीं होती इस रोग के कारण पपोटे के ढीला होजाने के कारणों से विपरीति हैं और अधिक मांस जो पपोटे में होजाता है उसे काट कर निकालने से भी यह रोग उत्पन्न होता है जो यह किसी मवाद से हो तो पहिले उस मवाद को निकाले फिर कारण के अनुसार इसका उपाय करे जो दस्तकारी हो सके तो उसे भी करे

शिरनाक का विषय।

इसमें पलक पर नर्म मांस होजाने से पलक मोटी होजाती है।

और आंखों में पानी भरा रहता है, उपाय इसका यह है, कि पहिले मवाद को निकालें और फिर आंसू लाने वाली औषधें आंख में डालें और जो इससे लाभ न हो तो दस्तकारी करें, और वह वस्तु न खावें जो हानि करती हैं ॥

पपोटे के ऊपर गांठ के पड़ जाने का विषय ।

उपाय इसका यह है, पहिले नर्म होने के लिये मोमरोगन लगावें और मरहम दाखलीयून लगावें, जो काटने के योग्य हो काटें और कोई मवाद निकालना हो तो उसे भी निकालें ॥

शेरमुनकालिब और शेरजायद का वर्णन ।

जो पलक के बाल उलटे होकर आंख में लगें में और चुभा करें उसे शेरमुनकलिब कहते हैं ।

और जो बाल पलक के सिवाय अपनी जगह की भीतर की ओर निकलें और उनके चुभने से आंख खटका करें उसको शेर जायद कहते हैं ॥

उपाय इसका यह है, कि पहले मवाद को साफ करें फिर वह बाल जो नये उगे हैं मोचने से उखाड़ें और उस जगह पर नौशादर रगड़ दें और चेंटी के अण्डे और अञ्जीर का दूध और उस कलीली का रुधिर जो कुत्ते या ऊंट के देह पर होती है या हरे मेंढक का रुधिर या हुद २ का पित्ता उस जगह पर मलें और समन्दरफेन ईसबगोल के लुआब में पीसकर लगाना बाल उत्पन्न होने की जगह को शून्य कर देता है ।

और शेरमुनकलिब का उपाय यह है कि दिबकका लासा लगाकर सीधे बाल के साथ चिमटा दें फिर बाल न चुभेंगे ॥

जब बाल को उखाड़ें तो बारीक सलाई से उस स्थान को दाग दें और जहां बाल हों उस जगह को काट डालना और सींव देना भी इसका एक बड़ा कड़ा उपाय है ॥

पलकों के झड़ जाने का वर्णन ।

जो यह रोग बुरा भोजन खाने से या पित्त या सौदा के अधिक होने से हो तो उस मवाद को निकालें और जो पलक की कमजोरी से हो तो जैसा करानीतुस, और गर्म तप के पीछे होता है तो उस जगह को पुष्ट करना और तरी पहुँचाना चाहिये और वासलीकून और रोशनाई सुरमा आंख में लगावें, और जो यह रोग कफ के अधिक होने से हो तो कफ को निकालें और पुष्ट करने वाली वस्तु काम में लावें ॥

और जो कोई ऐसा कारण हो कि भोजन उस जगह तक न पहुँच सके तो उस कारण को दूर करें ॥

पलकों के सफेद हो जाने के विषय में ।

उपाय इसका यह है, कि पहिले बलगम को दूर करें फिर जंगली लाले के पत्ते, जैत के तेल में मिलाकर मलें और सुरमा रोशनाई सफाई से आंख में लगावें ॥

पलक में खुजली और फुन्सियां होने का वर्णन ।

जैसा मवाद हो उसके अनुसार उपाय करना चाहिये, और वरूद बनफशी, आंख में सुरमे की जगह लगावें ॥

बरदा का वर्णन ।

बरदा एक मवाद गाढ़ा और सफेद ओले की सदृश पपोटे के ऊपर उत्पन्न हो जाता है उपाय इसका यह है, कि मोमरोगन और दाखलीयुन लगावे, इससे नर्म होकर बैठ जायगा और नहीं तो काट कर निकाल लें ॥

पलक के मोटे और कड़े हो जाने का वर्णन ।

जब पलक मोटी और कड़ी हो जाती है, तो आंख बन्द करना और खोलना कठिन हो जाता है, और यह रोग सौदा के मवाद से होता है, इसलिये उपाय उसका यह है कि पहिले सौदा को

पकावें और मवाद निकालें, और उस जगह को नर्म करें, और और अकलील उल मलक, बाबूना, बनफशा, खब्बी के पत्ते, पानी में औटा के आंख पर बफारा दें ॥

और जो बिना किसी मवाद के इस रोग में खुजली होती उसको यबू सतुलऐन कहते हैं ॥

पलक मोटे और लाल होजाने का वर्णन।

इस रोग में पलक के किनारे बहुधा मोटे होजाते हैं, उपाय इसका यह है कि पहले मेवों का नुकूआ पीवें और समाक को गुलाब में भिगोकर पानी उसका टपकावें, और फिटकरी और कुलफा और कासनी के पत्तों को रोगन गुल में मिलाकर लेप करना लाभदायक है ॥

जब यह रोग पुराना होजाय तो पहिले फस्द और जुल्लाब दें फिर शियाफ अहमर लीन आंख में लगावे ॥

पलकों में जूयें पड़ने का वर्णन।

यह रोग बलगम से होता है, पहिले बलगम का मवाद निकालें फिर पलक में से जूयें चुनें। और जो छोटा होने के कारण चुनना कठिन होवे फिटकरी और नमक को औटाके पलक को धोवें। और थोड़ी देर सलाई को पारे में रखकर होले से हाथ से पोछलें और आंख में फेरें। यह जूं मारने को अति लाभदायक है।

गुहांजनी का वर्णन।

यह एक सूजन है जो जौ के सदृश पलक पर उत्पन्न होती है जो अवश्य होवे मवाद निकालें नहीं वो रसौत और एलुवा और गिलेअरमनी हरी कासनी के पानी में पीस कर आंखपर लगावें फिर दाखलीयून और मोम गरम करके लगावे जो इस से लाभ न हो तो नाखून से कुरेद डालें और थोड़ी देर रुधिर

पड़ने दें जल्दी बन्द न करें फिर जरूर घसकर उसपर छिड़क दें।

तोसलुलअजफान का वर्णन ।

शहतूत के सदृश एक वस्तु नीचे के पलक के अन्दर उत्पन्न होती है उपाय उसका यह है कि फस्द और जुल्लाप के पीछे दस्तकारी करें और काट के नीला और नमक चबाकर उसपर टपकावें ॥

तहज्जुरजफन का वर्णन ।

इसमें पलक पत्थर के सदृश कड़ी होजाती है और यह सौदा के गाढ़े मवाद के जम जाने से होता है, और इसमें वरदे से अधिक पलक मोटी होजाती है उपाय इसका यह है कि पहले मवाद को निकालें और रोगन मोम को पिघलाकर लगावें और कभी यह रोग फोड़े की तुल्य होजाता है।

पलक में घाव पड़जाने का वर्णन ।

इसमें मसूर अनार और पिस्ते के छिलके सिरके में पकाकर लेप करें, और जब खुरंड गिरने लगे तो अंडे की जरदी केसर में मिलाकर लेप करें ।

पपोटों के फूलजाने का वर्णन ।

जो यह जिगर और मेदे की कमजोरी के कारण से हो तो पहिले उनको पुष्ट करें ॥

और जो कफ के अधिक होने से हो तो इतरीफल खिलावें और फस्द काफाल करें और शियाफ ममीरा और चन्दन हरे धनिये के पानी में पीसकर लेप करें ।

पपोटों में मस्से पड़जाने का वर्णन ।

इसमें पहिले सौदा का मवाद निकालें और कलौंजी और नमक को पीसकर सिरके में मिलाकर लगावें जो इससे लाभ न होय तो मोचने से दबाकर नाखनगीरी या नश्तर से काट

तें और रुधिर बहने दें फिर घाव पर फिटकरी छिड़कदें कि
ार बन्द होजाय ॥

पपोटों पर पित्ती उछलने का वर्णन ।

इसमें खुजली और सूजन होजाती है, जैसा कि पित्त के
ः से होता है उपाय इसका यह है कि फस्द करें और पित्त
जुल्लाब दें और शादने अदसी धोया हुआ आंख में लगावें

नमलय पलक का वर्णन ।

इस रोग में पलक पर फुंसियां होजाती हैं और थोड़ी सी
नन और जलन भी होती है, और घाव पलक फैलता जाता
पिसका मवाद निकाले, और रसोत और एलुआ घिसकर
लक में लगावें ॥

पलक पर से मूसी उड़ने का वर्णन ।

कभी इसमें घाव भी पड़जाता है और जो इस मूसी का मैला
तो सौदा का जुल्लाब दें और जो सफेद होतो बलगम का
कर खिजाफ असमर लगावें, और जो यह रोग पुराना होजाय तो
पने लगाकर शकर मलें और सुरमा रोशनाई आंख में लगावें ॥

सुला का वर्णन ।

यह एक वस्तु त्वचा और मांस से जुदी पलकपर पड़
ाती है, उपाय इसका यह है, कि मवाद निकालने के पीछे
सको काटकर अलग करदें ॥

ोट से पपोटे का नीला या हरा होजाने का वर्णन,

जो घाव भी होजाय तो फस्द और जुल्लाब दें, और
चन्दन और मुरदा सग को गुलाब में घिसकर मलें और जो
ाम न हो तो कोरी ठीकरी पानी में घिसकर लगावें, यह सब
जगह की नीलाहट को दूर कर देती है ॥

कोये के पास नाक की ओर नासूर होजाने का

फस्द और जुल्लाब के पीछे शियाफ गर्म टपकावे पहिले घाव को रुई से पोंछलें, और पीप को साफ करें और औषधि के प्रभाव के लिये मुर्दार मांस काट डालें जो इस से लाभ न हो तो दाग दें, और मरहम अस्फेदाज लगावें ॥

यह नासूर बन्द होकर फूल जाता है, ऐसे समय में कनो के बीज स्त्री के दूध में या गधैया के दूध में पकाके थोड़ी केसर मिलाकर लगावें इससे फूटकर फिर बहेगा ॥

कोये और पलक में बिना जलन और दोनों के खुजली होने का वर्णन ।

जो यह रोग रुधिर से होतो फस्द करें, और मवादो उन्हीं मवादों को निकालने वाली औषधी देकर वमन करावे और कासनी को कूट के गुल रोगन में मिलाकर लेप करें और जो कोये मवाद से साफ किया चाहैं तो पासलीकून और कहल अमीनी लगावें ॥

कोये में नाक की ओर अधिक मांस होजाने का वर्णन

उपाय इसका यह है कि पहिले मवाद को निकाले फिर शियाफ जंगार या मरहम जंगार लगावें कि अधिक मांस कट जावे जो इससे लाभ न होय तो दस्तकारी से काट डालें और अंजरूत अस्फर छिड़कें पीड़ा के दूर होने के लिये अंडे की जरदी रोगन गुल में मिलाके मलें इसके पीछे मरवफी मरहम लगावें ॥

चौथा अध्याय

कान के रोगों का विषय

जानना चाहिये कि कान भी इन्द्री है और सब इन्द्रियों से अधिक है इसके रोग जो मवाद से हों उनमें दवा कान में

डालनी चाहिये और जो दाजें भी तौ गुनगुनी करके क्योंकि ठंडी औषधें हानि करतीं हैं ॥

कान के दर्द का वर्णन ।

जो यह पीड़ा या सूजन घाव के कारण से हो तौ उसका उपाय आगे लिखेंगे और जो किसी मवाद से या केवल गरमी से हो तौ फस्द आदि से मवाद निकालें और जो केवल ठंड से हो तो उसका उपाय करें और मवाद की पीड़ा में मवाद निकालने के पीछे उसके अनुसार उपाय करें और कान में कीड़ा कीड़े के घुस जाने या पानी की बूंद रह जाने से हो तो उसे निकालना चाहिये और एक पांव पर खड़े होकर कूदना उस कान पर हाथ धर कर जिसमें पानी है और सिर को उसी ओर झुकाना पानी को निकाल देता है और जो इस्फंज (अर्थात् मरा हुआ बादल) की बत्ती बनाकर कान में रक्खें और उसी ओर देर तक लेटे रहें तौ सब पानी निकल आवेगा।

जो कान में कीड़े उत्पन्न हो जाने के कारण से यह पीड़ा हो तो चिन्ह उसका यह है कि कान में गुदगुदी मालूम होगी, और कभी कीड़ा आप से आप भी निकल आवैगा इस में शफतालू के पत्तों को कीटा के या उसका रस निचोड़ कर कान में टपकावे या एलुआ सिरका में घोलकर टपकावे इससे कीड़े मर जायगे फिर सूत की बत्ती बनाकर उसमें सरेस मलके कान में रक्खें कि कीड़े उस पर चिमट के निकल आवें फिर जब घाव साफ हो जाय तौ उस घाव का उपाय करै ॥

कान की सूजन का वर्णन ।

पहिले जुल्लाब दें इसके पीछे देखें, कि सूजन छिद्र के भीतर है या बाहर, भीतर होने का चिन्ह यह है तुमाई कप देगा और

कान से रुधिर निकलने का ... की औष
जो इसका कारण रुधिर की अधिकता हो तो ... भीवर लें
बहुत सा रुधिर निकालें और जो किसी चोट के लगने ... और जो
तो फस्द से रुधिर कम निकालें और फिर माजू को ... कि पक
औटा के कान में डालें जो बोहरान के दिन कान से रुधिर
तो उसे बन्द न करें जब तक कि रोगी को मूर्च्छा न आवे देगी
जो सांप के काटने से रुधिर निकलता हो उसका उपाय
इस पुस्तक के अन्त में लिखा जायगा ॥

कान के टूट जाने का वर्णन ।

फस्द खोल कर, नर्म करने वाली औषधें पिलावें, पलुआ, मुगाथ, अकाकीया, रावीमन और मेंहदी के सूखे पत्ते पीसकर उस जगह पर लगावें ॥

जड़ से कान के उखड़ जाने का वर्णन ।

पहिले फस्द करें फिर नर्म करने वाली औषधियां दें और कान को अपने स्थान पर जमा के गद्दी रखकर पट्टी बांध दें और जो पीड़ा रह जाय तो बतख की चरबी पिघला के उस में खतमी के पत्ते और घीये के छिलके मिलाकर मलें ॥

कनकटी का वर्णन ।

यह रोग बहुधा बच्चों को होता है ॥ इस रोग में कंधों के बीच में और कान के जड़ में पछने और जोंखें लगावें, और उस जगह को स्त्री के दूध से धोवें, और मुर्दा सग और कपीला नरम २ पीसकर छिड़के ॥

कान में खुजली होने का वर्णन ।

इफसन्तीन को सिरके में औटा कर और कड़वे बादाम का तेल उसमें मिलाकर कान के अन्दर डालें ॥

ने में चिल्लाहट का सा शब्द मालूम होना।
देसी औषधें और भोजन खावें और सूंघें जो भेजे को करें।

पांचवां अध्याय

नाक के रोगों के विषय में।

में दो मार्ग हैं एक भेजे की ओर और दूसरा गले की ओर है॥

खश्म का वर्णन।

यह वह रोग है कि इसमें सूंघने की शक्ति जाती रहती है र किसी वस्तु की गन्ध नहीं आती॥

जो नाक में बुरे मांस के उत्पन्न होजाने से यह रोग हो उसका उपाय इसी अध्याय में आगे लिखा जावेगा, और सूजन या सुद्दे के कारण से हो तो यह मालूम करे कि किस दोष से है और जो केवल गरमी या ठंड से हो तो उसके लक्षण सहज से मालूम हो जांयगे। कारण के अनुसार इसका उपाय करना चाहिये और जो यह रोग सुरकी और सरसाम के कारण से और गम रोगों के पीछे हो तो उपाय बहुत कम हो सकेगा।

घ्राणशक्ति के बिगड़ जाने का वर्णन।

इसमें कुछ कुछ बास मालूम होती है यह रोग तीन प्रकार का है (१) सब वस्तुओं की बास एकसी मालूम हो (२) एक वस्तु से कई प्रकार की बास सूंघी जाय (३) किसी वस्तु की बास आवे और किसी की न आवे। उपाय इसका यह है कि भेजे को मवाद से साफ करें और जो नाक के भीतर घाव हो तो उसे अच्छा करें जब केवल सुगन्ध मालूम हो तो जुन्दबेदस्तर की बासलें और जब केवल बुरीबास आवें तो मुश्क को नाक में टपकावें और जो यह रोग पुराना हो जावे तो दुर्गंध आने के मुश्क और बुरीबास मालूम होने में जुन्दबेदस्तर नाक में

उपाय यह है कि नली पर मरहम लगा के नाक में
से श्वास न रुके जब वह सीधी हो जाय तब एलुआ
या और गुर्मकी पीसकर बारतग के पानी में मिला
पर लगा के ऊपर चिपका दें ॥

छटा अध्याय ।

मुख और जीभ के रोगों का वर्णन ।

जीभ की सूजन का वर्णन ।

कारण के अनुसार मवाद को निकालें फिर कुल्ला करावें पित्त या पित्त से हो तो तीन दिन के अन्दर काहू, कासनी मकोय के पानी से कुल्ला करें और तीन दिन पीछे करम- और मकोय के पानी में असली के बीजों को मिला के करें और जब सूजन घटने लगे तो बाबूना, नाखूना, शा और अमलतास की कुल्ली करें और कफ की सूजन में से कुल्ली करें या उसमें सातर और अयारिज और भी में और बादी की सूजन में इन्जीर मेथी के बीज और तास को औटा के बनफशे का तेल मिला के कुल्ली करें, कमी हरा धनियां और हरी कासनी चबाया करें कि म का रोग न हो जाय, और जो विष खाने से सूजन हो का उपाय आगे आवेगा ॥

जीभ का खोखल होना ।

हिन्दी में इसे तोतलापन कहते हैं, इसमें ऐसा होता है कि इ से भली भांति नहीं निकलते, कारण जान के उसका करें और फस्द और जुल्लाब आदि दें, और जो जीभ होगई हो तो देखें कि सिर में कोई बिगाड़ है या नहीं जो भेजे को मवाद से साफ करें और बच और राई आदि जीभ पर मलें कि राल बहे, और जो सिर में कोई बिगाड़ तो फालिज का उपाय करें, और ठुड्डी के नीचे पछने और जो जीभ की रग टूट जाने से मवाद बहुत सा ने के कारण तशन्नुज हो जाने से हो तो इसका उपाय

नहीं हो सकता और जो सरसाम के पीछे हो या पुराना यह भी अच्छा न होगा परन्तु पुराना पड़ने से पहिले नमक और नौसादर मलें इससे लार टपकेगी।

जीभ का बढ़ जाना और निकल आना।

जो रुधिर की अधिकता से हो तो सराऊ और जी नीचे फस्द खोले और खट्टी वस्तु जैसे अनार मलें कि रा और जो कफ से हो तो अयारिज खिला कर कफ निकाले नोन सिरके में मिलाकर मलें॥

जीभ के ढीले हो जाने का वर्णन।

इसका उपाय जीभ के तोतलापन के वर्णन में लिख दि

जीभ के फट जाने का वर्णन।

जो खुश्की की अधिकता से जीभ फट गई हो तो तर काम में लावें और मोमरोगन और बनफशे का तेल भे भेजे को ठीक करें और खीरे के झाग जीभ पर लगावें के मेदे के धूंये से यह रोग हो तो पहिचान यह है कि खुश्की न होगी इसमें मेदे का मवाद निकालें और लिहसो में रक्खें॥

जीभ की खुश्की का वर्णन।

जो जीभ की खुश्की गरमी और खुश्की से हो तो ठं बीदाने का लुआब नीलोफर के पानी में निकाल कर मिलाकर कुल्ला करें और देर तक मुख में लिये रहें अ लेसदार कफ जीभ पर जम कर सूख गया हो तो वेद की शिकंजबीन में भिगोकर जीभ पर मले उससे वह कफ छू

ा इस रोग की पहिचान यह है कि थूक खसदार आया करेगा और जितनी ठढी वस्तु देंगे उतना ही व्हस अधिक होगा ॥

जीभ की जलन का वर्णन ।

ठढी औषधें दें और जो किसी मवाद से हो तो जुल्लाव भी दें और कपूर मलें और ईसबगोल रैहां के बीज बबूल का गोंद मुख में रक्खें जल्दी २ न बदलें किंतु देर तक मुख में रहने दें ॥

जीभ में खुजली होने का वर्णन ।

इस रोग का लक्षण यह है कि जीभ लाल होगी और रोगी दांतों से जीभ को खुजलाया करेगा (उपाय) पहिले मवाद निकालें फिर गरम पानी से कुल्ली करें फिर दूध और शकर से कुल्ली करें इसके पीछे सिरके में कोई तेल मिलाकर कुल्ली करें और पीली हरड़ जलाकर जीभ पर मलें ।

जिफ्दुडललिसान का वर्णन ।

इस रोग में गाढा कफ या रुधिर जीभ के नीचे जड़ में जम कर कड़ा पड़ जाता है (उपाय) मवाद को निकाल कर नौशादर फिटकरी भुनी हुई, अनार, हुरमची, सिरके में पीस कर मलें और जो इससे न जाय तो काटकर निकालें परन्तु सावधानी से काटें ऐसा न हो कि जीभ के नीचे जो रगें हैं वह कट जांय कभी मवाद इस रोग का पथरी बन जाता है जब ऊपर की खाल चीरते हैं तो वह पथरी निकल आती है और कभी सूजन हो जाती है उसके छेदने से गाढ़ा पानी निकलता है और फिर इकट्ठा हो जाता है उपाय उसका यह है कि पहिले छेदके पानी निकालें और फिर बहुत सावधानी से चमड़े को कैंची से कतर डालें ॥

फिसादज़ौक़ का वर्णन ।

इस रोग में एक नया स्वाद स्वभाव के विपरीति मालूम

होता है चाहे कुछ खावें या न खावें जिस मवाद से होगा उसका चिन्ह उसके मर्ज से मालूम हो जायगा उसी मवाद को फस्द और जुल्लाब देकर निकालें और शिकञ्जबीन से कुल्ला करें ॥

बतलानज़ोक का वर्णन ।

इस रोग में जीभ को न तो स्वाद आता है और न दर्द मालूम होती है इसका कारण यह है कि जीभ में तरी अधिक होती है पहिले मवाद का पक्का के मेजे से निकालें और अक़रकरा, मुनक्का, और राई को औटाकर कुल्ली करें और जो गरमी हो तो गुलाब के फूल, और सिमाक, औटाकर शिकञ्जबीन मिलाकर कुल्ली करें ॥

तकशशुरज़बान का वर्णन ।

इस रोग में जीभ और मुख से छिलके उतरते हैं और मलने से अधिक हो जाता है इसमें पहिले फस्द और जुल्लाब से पित्त को निकालें, आस और गुलाब के फूल और गुलनार सिरके में औटाकर उससे कुल्ला करें ॥

मुख के भीतर फुन्सियां हो जाना ।

इस रोग में फस्द खोलें और जुल्लाब दें और धनिया मसूर और मकोय के पत्ते सिरके में औटाकर कुल्ला करें ॥

मुंह आने का वर्णन ।

यह रोग भीतर के मवाद से होता है इसका कारण जानकर मवाद निकालें, जो पित्त या रुधिर अधिक हो तो उन औषधों से कुल्ली करें जो मुख की फुन्सियों पर लिखी गई और बसलोचन, गुलनार, माजू और कपूर सबको पीसकर मुंह के भीतर छिड़कें और जो घाव हो जाय तो सिरके और नमक से कुल्ली करें इससे मवाद ऊपर को निकल जायगा फिर जो सिरका की तेजी न सही जाय तो उसके बदले केसर

पानी में औटावें और जो यह रोग कफ की अधिकता से हों तो मामीरा, हरड़ और अकरकरा सिरके में औटा के कुल्ली करें, और जो वादी से हो तो महँदी की पत्ती चबावें, और माजू धनियाँ अनार के छिलके सिरके में औटा के कुल्ला करें ॥

बच्चों के मुंह आने में शीरखिश्त को मकोय के पानी में घोलकर कुल्ला करावें और माजू जलाकर छिड़कें ॥

आकिल तुलफ्म को वर्णन ।

यह रोग बहुत ही बुरा है इसमें घाव सारे मुंह में फैल जाता है इसका उपाय यह है कि सड़े हुये मवाद को निकालें और उन औषधों से कुल्ली करें जो मुंह आने के बयान में वर्णन हो चुकी हैं, और जो घाव फैलने से ठहर जाय तो, फिरुद फियुनया मुरतीजान घाव पर लगावें, और जो इनमें जलन हो तो लुआवों से या ताजा दूध में शकर मिलाकर कुल्ला करें ॥

जागते और सोते में मुंह से बहुतसी राल बहना

इसका कारण यह है कि मेदे में गरमी और तरी होगी, या ठंढ और तरी विशेष होगी, पहिचान गरमी तरी यह है कि खाली पेट में राल बहुत बहेगी और ठंढ और तरी की पहिचान यह है, कि पेट भरे पर राल अधिक आवेगी, और मुख का स्वाद खट्टा होगा और भोजन न पचेगा, जो मवाद अधिक हो उसे निकालें, और गरमी में हरी कासनी का नमक के साथ कूट कर चबावें और रस उसका निगलें, और ठंढ में कुन्दुर और मस्तगी चबावें ॥

मुख से दुर्गन्ध आने का वर्णन ।

जो इसका कारण केवल मुख ही में होवो उसे मवादसे करें, और जो मेदे से मवाद गिरता हो या मेदे में गरमी

मुख में रक्खें और दन्तधन किया करें, और लिखी का तेल रोगनग्रुल से कुल्ला प्रातःकाल कर लिया करें॥

तालू की सूजन का वर्णन।

यह रोग या तो रुधिर की अधिकता से होता है या कफ अधिकता से। जो रुधिर की अधिकता से होगा तो तालू पीड़ा और लाली होगी और जो कफ से होगा तो सफेदी होग पीड़ा न होगी इसमें पहिले मवाद को निकालें और जो कुछ ऊपर के पाठ में लिखी गई है मवाद के अनुसार करें॥

सातवां अध्याय।

होठों के रोगों का वर्णन।

होठों पर सफेदी हो जाने का वर्णन।

यह रोग कोढ़ से अलग है, इसमें कफ को निकालें, मा यस्तु न खावें, और खेरी का तेल नाक में डालें॥

होठकीखुश्की और फटने और छिलके उतरनेका वर्ण

इसमें भी वही उपाय करें जो मुख के रोगों में लिखा गर है तथा होठ को हवा न लगने दे मांजू, निशास्ता, कतीरा, छ छान कर लगावें और जो दवा लगावें उसके ऊपर अण्डे का पतव छिलका जो भीतर होता है चिपका दें इससे होठ हवा फटेगा नहीं॥

होठ के फड़कने का वर्णन।

जो रुधिर रगों से होठ में आकर गाढ़ बन जाय और उस से होठ फड़के तो सराक की फस्द खोलें और भोजन कमखावे और जो यह रोग बादल गाढ़ा हो तो सिरके फड़कने का जो उपाय है करें और जो मेदे का विगाड़ हो, तो भी मतलावेग और हिचकियां आवेंगी और वमन आने में नीचे का होठ फड़केगा, इसमें वमन पहले ही करा डालें॥

और जो मेजे के विगाड़ से हो तो, उसके पीछे लकवा और मिरगी होगी, (उपाय) तर वस्तु न खावें पानी थोड़ा पीवें और ऐसा उपाय करें कि लकवा और मिरगी न होने पावे ॥

होठ का छोटा होजाना और सुकड़ जाने का वर्णन

जो तशन्नुज तरी से हो तो मवाद को निकालें और गर्म तेल मलें, और जो तशन्नुज खुश्की से हो तो उसका उपाय कठिन ही है बच्चा को जो यह रोग होजाता है वह खेंचने और बांधने से अच्छा होजाता है ॥

नीचेके होठपर अधिक मांसउत्पन्न होजानेका वर्णन।

रुधिर और बादी का मवाद निकाले, और मबुर या मुरदासंग का मरहम लगावे, और मवाद निकालने के पीछे रंग इस मांस का काला हो तो पछने लगावें और सिरका मलें और जो रंग लाल हो तो कुछ उपाय न करें ॥

होठ की सूजन का वर्णन।

जो रुधिर की अधिकता से हो तो फस्द खोलें और लगावें और रसौत को हरी मकोय के रस में घोलकर लगावें यह उपाय गर्म सूजन में बहुत लाभदायक होगा परन्तु यह लेप इस रोग के होते ही लगावें और अन्त में बादाम के तेल का मरहम लगावें ॥

होठ पर फुन्सियां होजाने का वर्णन।

इस में मवाद निकालें और जो घाव पड़जाय तो लेप और मरहम लगावें ॥

होठ में घाव पड़के पीव बहना।

इसमें सफेदा का मरहम लगावें अथवा माजू और मुर्दा-

मुख में रक्खें और दन्तधन किया करें, और तिली का तेल रोगनगुल से कुल्ला प्रातःकाल कर लिया करें ॥

तालू की सूजन का वर्णन ।

यह रोग या तो रुधिर की अधिकता से होता है या कफ की अधिकता से। जो रुधिर की अधिकता से होगा तो तालू में पीड़ा और लाली होगी और जो कफ से होगा तो सफेदी होगी पीड़ा न होगी इसमें पहिले मवाद को निकालें और जो कुछ ऊपर के पाठ में लिखी गई है मवाद के अनुसार करें ॥

सातवां अध्याय ।

होठों के रोगों का वर्णन ।

होठों पर सफ़ेदी हो जाने का वर्णन ।

यह रोग कोढ़ से अलग है, इसमें कफ को निकालें, खट्टी वस्तु न खावें, और खेरी का तेल नाक में डालें ॥

होठकीखुश्की और फटने और छिलके उतरनेका व

इसमें भी वही उपाय करें जो मुख के रोगों में लिखा है तथा होठ को हवा न लगने दे माजू, निशास्ता, कतीरा, छान कर लगावें और जो दवा लगावें उसके ऊपर अंडे का पतला छिलका जो भीतर होता है चिपका दें इससे होठ हवा से फटेगा नहीं ॥

होठ के फड़कने का वर्णन ।

जो रुधिर रगों से होठ में आकर गीद बन जाय और उस से होठ फड़के तो राराल की फस्द खोलें और भोजन कम करें और जो यह गीद बहुत गाढ़ा हो तो सिरके फड़कने का उपाय ही करें और जो मेदे का बिगाड़ हो तो भी उबकाई और हिचकियां आवेंगी और वमन आने से नीचे का होठ फड़केगा, इसमें वमन करा दें और कय करा डालें ॥

जगह से दूसरी जगह फैलता और फिरता हो तो बाय से होगा पहिले इसमें मवाद को निकालें फिर सोंफ अनीसून और जीरा इनको औटाकर कुल्ला करे ॥ जो कीड़े पड़ने से दांत में पीड़ा हो तो दांत में पहिले छेद पड़ा होगा, इस में गन्दना के बीज, खुरासानी अजवायन और प्याज के बीज कूट छान कर मोम में मिला कर आग में जलाओ और धूंआ उसका नरकुल की राह से दांत को पहुंचाओ ॥

गन्धक का अर्क पीड़ा में दांत पर डालना लाभदायक है परन्तु और दांतों पर लगने न पावे क्योंकि यदि और किसी दांत पर लग जायगा हानिकारक होगा जो उपद से दर्द हो तो दाग देना अति लाभदायक है। चाहिये कि कई बार इस उपाय को करे, परन्तु ऐसा न हो कि दाग और किसी दांत पर लग जाय।

जो दांतों क हिलने से पीड़ा और दांत थोड़े हिलते हों तो उनको पुष्ट करे, और जो बहुत हिलते हों तो उनको निकलवा डालें, परन्तु पहिले जड़ को ढीला करलें, नहीं तो आंख को हानि पहुंचेगी और पीड़ा के यत्न के लिये अकरकरा, अफीम कुन्दर की झाड़न पीसकर स्त्री के दूध में मिला कर दांत पर लगाओ ॥

दांतों के कुन्द होजाने का वर्णन।

जो खट्टी या कसैली वस्तु खाने से दांत कुन्दर हो गये हों तो मिजाज में कुलफे का साग या बीज चबावें और गर्म रोटी दांतों में दाबें और जो केवल गरमी से हो तो कड़वी बादाम और जोजहिन्दी चबाओ और जो कोई भीतरी कारण हो तो खट्टी डकारें आवेंगी और मुख का स्वाद खट्टा होगा और थूक बहुत आवेगा इसमें कफ या बादी का मवाद वमन द्वारा निकालें, क्योंकि मवाद का मेदे से वमन के साथ

होठ में घाव पेड़क फैलत जाना ।

इसका यह उपाय करें जो मु ह के आने में वर्णन हु
जब होठ में कोई बिगाड़ हो तो उसको पहिचान कर
करना चाहिये जो गरमी से हो तो नर्म कपड़ा हरे धनि
पानी, हरेबारतग का पानी, हरी कासनी का पानी और
में भिगोकर बर्फ से ठंढा करके होठ पर रक्खें, कपूर
चन्दन को ईसबगोल का लुआब और गुलाब में पीसकर
सूखने न दें ॥ और जो ठंड से हो तो मुश्क, जुन्दबे
अकरकरा, चमेली और नरगिस का तेल लगावें ॥

और जो खुश्की से हो तो रोगन बदाम लुआब ईसब
आशानो, शकर मिलाकर पिलावें और रोगन बनफशा
कद्दू आदि में मिलाकर लगाया करें ।

और जो तरी से यह रोग हो तो लकवे का उपाय
और जो मवाद न हो तो भी फस्द और जुल्लाब दें ।

आठवां अध्याय

दांतों और मसूड़ों के रोगों का वर्णन ।

दांतो की पीड़ा का वर्णन ।

जो दांतों में पीड़ा गरमी से हो तो ठंढे पानी से
जायगी और जो सरदी से हो तो गरम पानी से और जो
बिगाड़ मिजाज में गरमी से बिना मवाद के हो तो सिरके
गुलाब से कुल्ला करें और ठंढे बिगाड़ में बायबिडग को
कर कुल्ली करें और जो किसी मवाद से हो तो उस मवाद
निकालना चाहिये और जो पेट भरे पर पीड़ा हो तो
मेदे में बिगाड़ होगा, उस समय मेदे का मवाद नि
हजम करने वाली औषधें दें, और भोजन में धनियां

जगह से दूसरी जगह फैलता और फिरता हो तो बात से होगा पहिले इसमें मवाद का निकालें फिर सौंफ अनीसून और जीरा इनको औटाकर कुल्ला करे ॥ जो कीड़े पड़ने से दांत में पीड़ा हो तो दांत में पहिले छेद पड़ा होगा, इस में गन्दना के बीज, खुरासानी अजवायन और प्याज के बीज कूट छान कर मोम में मिला कर आग में जलावे और धूंआ उसका नरकुल की राह से दांत को पहुंचावे ॥

गन्धक का अर्क पीड़ा में दांत पर डालना लाभदायक है परन्तु और दांतों पर लगने न पावे क्योंकि यदि और किसी दांत पर लग जायगा हानिकारक होगा जो वायु से दर्द हो तो दाग देना अति लाभदायक है। चाहिये कि कई बार इस उपाय को करें, परन्तु ऐसा न हो कि दाग और किसी दांत पर लग जाय।

जो दांतों के हिलने से पीड़ा और दांत थोड़े हिलते हों तो उनको पुष्ट करें, और जो बहुत हिलते हों तो उनको निकलवा डालें, परन्तु पहिले जड़ को ढीला करलें, नहीं तो आंख को हानि पहुंचेगी और पीड़ा के थमने के लिये, अकरकरा, अफीम कुन्दर की छाल पीसकर स्त्री के दूध में मिला कर दांत पर लगावें ॥

दांतों के कुन्द होजाने का वर्णन।

जो खट्टी या कसैली वस्तु खाने से दांत कुन्द हो गये हों तो मिजाज में कुलफे का साग या बीज चबावें और गर्म रोटी दांतों में दाबें और जो केवल गरमी से हो तो कच्ची बादाम और जौजहिन्दी चबावे और जो कोई भीतरी कारण हो तो खट्टी डकारें आवेंगी और मुख का स्वाद खट्टा होगा और थूक बहुत आवेगा इसमें कफ या बादी का मवाद वमन द्वारा निकालें; क्योंकि मवाद का मेदे से वमन के साथ

निकलना सहज है और दर्द न होने से कोई मवाद भी दांतों पर नहीं गिर सकता।

दांतों की आब जाती रहने का विषय।

इस रोग से हर प्रकार की वस्तु खाई और चबाई नहीं जाती इसमें पहिले मवाद को निकाले और बकरी की तिल्ली भून कर गरम गरम दांतों पर रक्खें, और जो मिजाज में कोई बिगाड़ गरमी से हो तो रोगनगुल और काफूर से कुल्ला करें।

दांतों के टूटने और खोखले होजाने का वर्णन।

इसमें भेजे को मवाद से साफ करें, और रसोत, माजूफल अकरकरा इनका मजन बनाकर दांत पर मलें। और जो यह रोग दांतों की तरी जाते रहने से हो तो दांत नीले पड़ जायगे इसका उपाय नहीं हो सका परन्तु दांतों के थांमने के लिये तर औषधें दें।

हफर का वर्णन।

इस रोग में दांत की जड़ में एक पीला हरा वा काला कपड़ा सा उत्पन्न होता है और छीलने से नहीं छिलता जो मवाद अधिक हो उसे निकालें फिर लोहे की नहरनी से उसे काट डालें और नमक समन्दरफेन दुरमना मिलाकर मलें इससे यह सदा जाता रहता है और फिर उत्पन्न नहीं होता॥

दांतों के रंग बदल जाने का वर्णन।

जो दांत का रंग पीला हो तो पित्त की अधिकता होगी और जो नीला हो तो बादी की और जो चूने का सा रंग हो तो कफ की अधिकता होगी मवाद के अनुसार उसे निकालें पीलापन में मसूर सिरके के साथ मिलाकर मलें और काले रंग में किबकी जड़ रोगनगुल के साथ मिलाकर मलें और सफेद में बतखी का तेल मलें।

जो बच्चों और बूढ़ों को हो तो उसका उपाय न करे क्योंकि उसका कारण उनकी अवस्था है परन्तु इसके सिवाय भीतरी या बाहरी कारण से हो तो उसका उपाय करना चाहिये॥

बहुधा दांत रुधिर की अधिकता और रुधिर के बिगाड़ से हलने लगते हैं इसके बिगाड़ में फस्द खोले और चार रग की तोलों और ठुड्डी पर पछने लगावें, और मसूढ़ों पर जोंक लगाना लाभदायक है और फिर दांतों के पुष्ट करने वाला मंजन मलें और जो इससे भी फायदा न हो तो दांतों को उखाड़ डाल ना चाहिये, परन्तु पहिले दांत की जड़ को नश्तर से चीर कर छीली करले और उस पर इन्जीर के पत्ते उसीके दूध में मिलाके दो तीन दिन मलें तो दांत ढीला होजायगा और उखाड़ने में सुगमता होगी॥

दांत का लम्बा और मोटा होजाना।

जो रुधिर की अधिकता हो तो पीड़ा भी होगी इसमें फस्द खोलें और मवाद को निकालें॥ जो कफ की अधिकता होगी तो पीड़ा न होगी, इसमें कफ को निकालें और उसीके अनुसार कोई उपाय करें॥ कभी ऐसा भी होता है कि और दांत घिस कर छोटे होजाते हैं और उनका एक दांत लम्बा दिखाई देता है, यह कोई रोग नहीं है का इसका उपाय करना हो तो उस बड़े दांत को भी सोहन या आरी से रगड़ कर और दांतों के बराबर करलें॥

दांतों में खुजली होने का वर्णन।

इस में रोगी को दांत रगड़ने या कोई वस्तु चबाये बिना चैन नहीं पड़ता, सब शरीर और विशेष कर भेजे का मवाद निकालें और खट्टी तथा तेज और खारी वस्तु न खावें और

चूके की जड़ को सिरके में औटाकर या सिकंजबीन को पानी में घोलकर कुल्ला करें ॥

सोते में दांत रगड़ने का वर्णन ।

जो तरी से हो तो भेजे से मवाद निकाल कर कूटका गरदन पर मलें नहीं तो केवल मिजाज के ठीक करने से आराम होजाता है ॥

लड़कों के दांत सुगमता से निकलने का यह उपाय है घी कन्न पर मलें और कड़ी वस्तु न चबाने दें और हरी मक का रस रोगन गुल में मिलाकर गुनगुना करके मलें अंगुली से मसूढ़ों पर लगावें इससे जो पीड़ा दांत निकलने होती है वह न होगी ।

मसूढ़ों की सूजन का विषय ।

जैसा मवाद हो उसी के अनुसार मवाद, को निकाल वैसी ही औषधों से कुल्ले करें ॥

मसूढ़ों से रुधिर बहने का वर्णन ।

जो यह मसूढ़ों की निर्बलता से हो तो माजू, मसूर व बंसलोचन पीसकर मलें, और जो रुधिर की अधिकता से तो फस्द खोले और ठंडी औषधों से कुल्ले करें ॥

मसूढ़ों में घाव और नासूर होजाने का वर्णन ।

मसूढ़ों मे पीब निकले तो घाव होगा और जो ऐसे चालीस दिन व्यतीत होजांय तो नासूर को सफाई से दाग ।

दांतों की जड़ में निर्बलता होने से दांतों के हिलने का वर्णन ।

इस रोग में दांत की जड़ का मांस कम और सुर्ख होजाता है गुलाब के फूल, ‑बतूल गुलनार, इज्खिरमास, हर एक चौदह चौदह माशे, खरनूबनिबती, सिमाक, अकरकरा, हर एक १७॥ माशे पीसकर मसूढ़ों पर जमादे ॥

मसूड़ों पर बुरा मांस उत्पन्न होने का वर्णन।

कभी कभी पिछली डाढ के पास सूजन हो के बुरा मांस
[illegible] होजाता है सुरमकी फिटकरी पीसकर उस मांस पर
[illegible] तो गल जावेगा ॥

नवां अध्याय

कंठ और श्वासनली के रोगों का वर्णन।

कव्वे [काक] की सूजन का वर्णन।

जो मवाद अधिक हो उसी को निकालें इसके पीछे रुधिर और पित्त की अधिकता में सिरके, गुलाब और हरी मकोय आदि से कुल्ला करें और कफ की सूजन में कांजी शिकञ्जबीन और राई पानी में औटाकर कुल्ला करें और बादी की अधिकता हो तो अमलतास को ताजे दूध में घोलकर कुल्ला करें ॥

कव्वे के लटक आने का वर्णन।

जो यह रुधिर की अधिकता से हो तो फस्द खोलकर और सिरके और गुलाब के फूल, चन्दन, गुलनार, कपूर को पीसकर कव्वे पर मलें ॥

और जो कफ की अधिकता से हो तो कफ को निकालें और शहद को पानी में औटाकर कुल्ली करें और जली हुई फिटकरी और बारहसिंगी नौशादर के साथ पीसकर किसी पतली वस्तु पर रख के कव्वे पर जमाके ऊपर को उठावे ॥ और माजू सिरके में पीसकर या मुलतानी मिट्टी जली हुई सिरके में गूंद के या सरेस सिरके में पिघलाकर और उसमें ईसबगोल मिलाकर सिर के ऊपर तालू की जगह लेप करें जब वह सूख जायगा तो तालू की खाल खिचेगी इससे कव्वा भी ऊपर को उठ आवेगा जो इन उपायों से कुछ लाभ न हो और

गलावन्द होजाने का डर हो तो दस्तकारी करनी पड़ेगी बहुत सावधानी से, जितना उचित हो काटलेवें परन्तु इसे काटने और गलाने में बहुत डर है अधिक कट जाने से का उच्चारण अच्छी प्रकार नहीं हो सकता।

खुनाक का वर्णन।

इस रोग में गले के भीतर सूजन होजाती है और श्वास रुकती है और खाना पीना बन्द होजाता है जो रुधिर और पित्त की अधिकता हो तो सरारू फस्द खोलें और जीभ के नीचे जो रग है उसकी फस्द करें और रुधिर कई बार थोड़ा निकालें और जो रोगी निर्बल न हो तो एक बार जितना चा रुधिर निकालें और जो पीछे फिर आवश्यकता पड़े तो थोड़ा रुधिर निकाले और कब्ज हो तो मवाद को नर्म कर निकाले फिर सिवाक और ठंडी औषधों से कुल्ला करें औ गर्मी निकालने के लिये ठंडे शर्बत पिलावें और भोजन की जग माउज्जो पिलावें और जो खासी न हो तो खट्टी वस्तु से कुल्ल करावें और पिलावें जो सूजन बाहर गरदन पर हो आवे उस पर पछने, या जोकें लगावें इससे भीतर का मवाद बा निकल जावेगा और रुधिर की अधिकता में पिंडली पर पछ लगावें यह लाभदायक है जब इस रोग को तीन दिन व्यती होजांय तो अमलतास, गाय के दूध में घोलकर कुल्ली करा जब रोगी बहुत निर्बल होकर हकीम के पास आवे बिना आवश्यकता के फस्द न खोलना चाहिये जब सूजन पकजाय और अपने आप न फूटे तो बुरा अरमा हींग और अनाबील की बीट दूध में घोलकर कुल्ली करा इससे फूट जायगा, फिर शहद और दूध को मिलाकर कुल्ल करें कि पीब साफ होजायगा, और भोजन की आ

यह हरीरा खाने को दें गेंहू की भूसी पानीमें भिगोकर छानलें और उसमें रोगन बादाम डालकर औटावें और थोड़ी सी शक्कर मिलाकर हरीरा बनालें।

गले की पीड़ा में ठंडी औषध गले पर न मलें परन्तु मवाद निकालने के लिये पीछे पूरे अजमनी किफत और राई पानी में पीसकर गले पर लगावें मवाद भीतर से बाहर निकल आवेगा, और ठुड्डी पर पछने भी लगावें ॥

जो यह रोग कफ की अधिकता से हो तो जुल्लाब पिलावे और मूली के पत्तों के रस में शिकंजबीन घोलकर कुल्ली करे और जो यह रोग बहुत बढ़ जाय तो जीभ के नीचे की रग की फस्द खोले और ठुड्डीके ऊपर और ठुड्डीके नीचे पछने लगावे

और जो सौदा की अधिकता से हो तो फस्द बासलीक खोलें और नश्तर लगावे और जुल्लाब दे और दूध और अमलतास की कुल्ली करे और मेथी और करमकल्ले के पत्ते कूट के उसके रस में रोगन नरगिस और बतख की चरबी मिला के गले के चारों ओर लगावें ॥

खुनाक कल्बी बहुत बुरा रोग है इस में रोगी अपना मुख कुत्ते की प्रकार खोल देता है और जीभ बाहर निकल आती है यह गले के उपजले की सूजन के कारण से होता है ॥

उपाय इसका फस्द और जुल्लाब से करें, और कभी गरदन के जोड़ों के हट जाने से भी ऐसा होता है चाहिये कि जोड़ों को ठीक करें ॥

एक प्रकार का खुनाक और होता है जिसे जेबहा कहते हैं [illegible] सबसे बुरा है इसमें रोगी के मुख से बात तक नहीं निकल [illegible]कती, न कुछ निगल सकता है और जो कुछ पिलाते हैं वो [illegible]ले में, फदा पाट के नाक से निकल आता है ऐसे [illegible]

में जो गले पर लाल रंग हो जाय तो बहुत अच्छा है, क्यों
इसका वही है जो ऊपर लिखा गया है ॥

जब रोगी कोई वस्तु निगल न सके तो गरदन के दूस
मोहरे पर सींगी लगा कर चूसें उस से खाना उतरने
जगह कुछ खुल जायगी और पतली वस्तु उतरने लगेगी
जब दम रुक जाय तो गले में छेद करदें उस की रीति
पुस्तक में लिखी गई है॥

गले और मरी और कुसवेरैया में फुन्सिया होजा का वर्णन

मरी में फुन्सियों का चिन्ह यह है कि निगलने के सम
पीड़ा बहुत होगी और खट्टी और तेज और कड़ी वस्तु खा
से और भी अधिकता होगी और कुसवेरैया की फुन्सियों
चिन्ह यह है कि बात करने में और चबाने में धुआं और
पहुंचने में अधिक पीड़ा होगी और निगलने में कुछ न मालू
होगा, फस्द खोले और ठंडे मेवों का पानी पिये और बहु
ठंडा पानी न पीना चाहिये और तेज तथा सूखे भोजनका सेव
न करे और पकने की दशा में मवाद को पकावें और फूटने
पीछे साफ करने का उपाय करें, जैसा कि खुनाक में लिखा ग
है और गले में जो फुन्सियां पड़े तो वही कुल्ली करें जो खुना
में लिखी गई है ॥

गले में जोंक चिपट रहने का वर्णन

बहुधा ऐसे पानी होते है जिनमें छोटी २ जोंक होती
जब बिना देखे कोई उस पानी को पीता है तो जोंक गले
अन्न नली या श्वासनली में चिपट जाती है कभी ताल्द
राह से नाक की ओर चढ़कर चिमट रहती है ॥

जो जोंक गले में नीची हो और दिखाई न दे तो आप से आप रुधिर बह निकलेगा और बेचैनी होगी ॥

और जो कुसनेरेया में चिपटे तो हरदम खांसी आवेगी और जो नाक के पास चिपटै तो नाक में रुधिर बहेगा और दिमाग बन्द होजायगा और कभी खखार के साथ मुंह से रुधिर निकलेगा ॥

जो गले में ऊपर को दिखलाई दे तो पहिले मोचने से सिर उसका दबाकर थोड़ी देर ठहरे फिर वह मुंह खोल देगी तब उसको निकाल लें, और जो दिखाई न देती हो तो काली मिट्टी एक पोटली में बांध के मुंह में गले के पास ले जाय यह मिट्टी की सुगन्ध से पाटली में चिपट जायगी फिर उस पोटली को निकाल ले ॥

और जो तालू में चिपटी हो तो करेला का रस और कुटकी सिरके में औटाके नाकमें डालें, जो इससे जोंक पेट में जा पड़े तो जल्दीसे वमन करादें, औरजोइससे भीन निकलेतोजुल्लावदें

पानी बहुत सावधानी के साथ देख कर और छान कर पीना चाहिये ॥

सुई निगल जाने का वर्णन

चुम्बक पत्थर को गुलाब में पीसकर बिनाकुछ खाये पिलाये और घड़ी भर पीछे जुल्लाब दें। और फिर मेदे को ठीक करें ॥

सरी के भिचजाने का वर्णन

इस में पतली वस्तु तो गले से नीचे नहीं उतर सकती, और कड़ी वस्तु उतर जाती है इसमें अयारिज खिलाकर बलगम को निकालें, और अनीसून कुन्दर, सुम्बल, लालबहमन, और सफेद बहमन औटा के और छानकर थोड़ा २ पिलावें और ठुड्डी के नीचे पछने लगाकर जुन्दबेदस्तर और शिफजबीन मलो

नरखरे के ढीले होजाने का वर्णन

चिन्ह इस का यह है कि सांस नहीं लीजाती या बन्द हो जाती है ॥

इसका उपाय वही है जो ऊपर के पाठ में लिखा गया है जब सांस बिलकुल न ली जाय तो जल्दी से गले में छेद कर लोहे या तांबे या पीतल की नली उस में अटका दें कि उस में से सांस लेवे और फिर उस का उपाय करें ॥

नरी में खुजली होने का वर्णन

वमन करावें और पुराने सिरके से कुल्ली करें और और शक्कर एक २ घूंट करके पीवें ॥

कुसवेरैया के फड़कने और कांपने का वर्णन

फड़कने का चिन्ह यह है कि बात करने में हर घड़ी रु कट मालूम होगी, और कांपने का चिन्ह यह है कि बात करने कपकपी मालूम होगी, जैसा कि बूढ़ों को होता है, इस का उप वही है जो एसी, और इस्तुलाम का उपाय है, और इस में कुर कराना भी लाभदायक है ॥

डूबे हुए के उपाय में

जब आदमी को पानीसे निकालें और उसे होश न होय दम आता हो तो उस को उलटा लटका कर पेट उसका दबा कि पानी निकल जाय और मिर्च और सोंठ सिरके में ओटा उस के मुंह में टपकावें कि होशमें आवे इसके पीछे हरीरा बे और दूध पिला दें कि फेफड़ा ठीक हो जाय और सांस आती नहीं है तो जाने कि वह मर गया ॥

गला घोंटे हुए और फांसी दिये हुए का उपा

जो दम आता जाता देखें तो जल्दी से फन्दे को काट

फिर देखें कि उसके मुख में कफ है या नहीं जो न हो तो सराख की फस्द खोलदें। और ढब्बों में राई मलें जब उस का होश आ जाय तो रोगन बनफसा और गर्म पानी से कुल्ला करावें और जो मुंह में कफ पाया जाय तो जीने की आशा नहीं।

उसरउलबला का वर्णन।

इस रोग में कठिनता से निगला जाता है, जो यह गले के तंग होजाने से हो तो खुनाक और मरी के भिच जाने का उपाय करे जैसा ऊपर लिखा गया है और जो मरी में कोई बिगाड़ होजाने से यह रोग हो तो कारण के अनुसार उस बिगाड़ को दूर करे और दोनों कंधों के बीच में लेप करें, इस लिये कि मरी पीठ से और श्वासकी नली छाती से मिली हुई है।

मरी की सूजन का वर्णन।

जैसा मवाद हो उसी के अनुसार उसे निकालें, और वैसे ही शरबत पिलावें॥

मरी में घाव पड़जाने का वर्णन।

इसका चिन्ह यह है कि मरी की जगह पीड़ा होगी और तेज और खट्टी वस्तु के खाने में दुःख होगा और चिकनी वस्तु भली भांति निगली जायगी और मरी की सूजन के चिन्ह इससे विपरीत हैं और घाव कभी २ फूटजाने के पीछे पड़ा करता है और कभी बिना सूजन के गर्म मवाद के कारण पड़जाता है उपाय इसका यह है कि सफेद मोम रोगन गुल में पिघला कर एक एक घूंट करके पिलावें परन्तु इससे पहिले दो तीन दिन शहद और दूध और शक्कर मिलाकर पिलावें कि घाव साफ होजाय॥

आवाज बन्द होजाने और धीमी पड़जाने का वर्णन।

इस में पहिले यह देखें कि अमलें से है या गले के किसी

बिगाड़ से। जो नजले से हो तो खशखश का शरबत पि
और पोस्त खशखश से कुल्ला करें इस से नजला रुक जाय
और जो गले के बिगाड़ से हो तो जैसा उचित हो वै
उपाय करें॥

कबाबचीनी चबाना, चाकला मुनक्का, छुहारा इमे
चिलगोजा, बादाम, गन्ना, शहद, अलसी के बीज इनमें
हरएक आमाशय को साफ करता है॥

नजले के लिये रूमाल गले में लपेटे रहै और सिरको
हवा से बचावें॥

दसवां अध्याय

छाती और फेंफड़े के रोगों का वर्णन

दम का वर्णन।

यह रोग बड़ी कठिनता से जाता है और दूर होकर
होजाता है, इसकी चिकित्सा में जितनी जल्दी होसके करें
कफ से हो तो खांसी के साथ कफ निकलेगा और छाती में
खराहट पाई जायगी इस में पहिले कफ की मुञ्जिश दें,
जुल्लाब देकर मवाद निकालें और बहुत गर्म दवा न दें
से खुश्की रहजाय या मवाद गाढ़ा पड़कर जम जाय औ
बाद निकालने के पीछे शरबत जूफा दो तोले गर्म पानी में
कर सवेरे और संध्या को सोने के समय पिलावें और क
मूली के बीज शहद के साथ औटाकर वमन कराया करें,
जिस समय कफ की अधिकता हो अलसी कुचली को
में औटाकर शहद मिला करें पिलावें, इसमे बहुत जल्दी
होजायगा और अलसी के तेल में मोम को पिघलाकर
पर मला करें॥

और जो यह रोग दिलकी गर्मी से होतो चिन्ह वसब
है कि नाड़ी और श्वास जल्दी जल्दी और भारी चलेगी

प्यास बहुत होगी और ठण्डी हवा अच्छी मालूम होगी इसमें
बांये हाथ से फस्द बासलीक खोले और नर्म करने वाली
औषधें पिलावें और हाथ पांव मलें ॥

और जो यह रोग फेंफड़े में अधिक गरमी होजाने से हो
तो नाड़ी जल्दी जल्दी चलेगी परन्तु भारी न होगी और प्यास
बहुत होगी और ठंडी हवा अच्छी मालूम होगी इसमें ठण्डी
औषधें पिलावें और बाहे छाती पर लगावें । जो यह रोग छाती
के परदों के ढीला पड़जाने से हो तो नाड़ी की चाल धीमी
होगी श्वास कुछरी आवेगी जैसी कि रोने में आती है और
छाती को सीधाकरे बिना पूरी श्वास न आवेगी इसमें फालिज
की सी चिकित्सा करें और मेथी के बीज और दालचीनी शहद
में औटाकर एक एक घूंट पीवें और नरगिस का तेल मलें ।

और जो फेंफड़े की खुश्की से हो तो प्यास अधिक होगी
और आवाज धीमी निकलेगी और तर वस्तुओं से लाभ होगा
इसमें फेंफड़े को तरी पहुंचावे और तर औषधें औटाकर उस
में रोगीको पिलावें और बकरीका दूध पीना अति लाभदायक है

और जो फेंफड़े की सरदी के कारण से हो तो ठण्डी व-
स्तुओं से हानि होगी और गरमी के चिन्ह न पाये जायगे, इस
में फेंफड़े को गरमी पहुंचावे और मेथी के बीज औटाकर
पिलावें, और गर्म तेलों को मलें ॥

और जो दम लेने की राह में हवा भर जाने से हो तो
सूखी खांसी होगी, और कफ न निकलेगा, और बादी की
वस्तु खाने से और बढ़ेगा, और छाती भारी न मालूम होगी
उपाय इसका यह है कि बाय को निकालें और जुल्लाब दें,
और सोया और बाबूना छाती और बगलों में मलें और माजून
फिलासफा खिलावें ॥ जो यह रोग फेंफड़े की सूजन से या

जिगर आदि के परदों की सूजन से हो तो इसका उपाय रोगों में लिखा जायगा ॥

जो जुलाब के कारण से हो तो इसका उपाय वही है जो ऊपर कहा है ॥ और जो मेदे की तरी से हो तो पेट भरे पर दम चढ़ने लगेगा और खाली पेट में कम होगा इस मेदे से मवाद निकालें और भोजन कम दें और पाचक औषध खिलावें ॥

एक प्रकार का श्वास रोग बहुत बुरा है, उसमें छाती सीधी करे बिना दम नहीं लिया जाता, और करवट से नहीं लेटा जाता कारण इसका या तो कोई गाढ़ा मवाद है या श्वास की राह में सूजन है या छाती के परदों का ढीला हो जाना उपाय हर एक का ऊपर लिख चुके हैं ॥ इसका नाम इनकसाबु नफस है ॥

खांसी का वर्णन ।

जो यह फेफड़े की गरमी ठंढ और तरी या खुश्की से हो पहिचान उसकी लिख चुके हैं उस कारण को दूर करें ॥

और जो रुधिर की अधिकता से हो तो नाड़ी भारी और श्वास की हवा गर्म होगी और मुख का रंग लाल होगा में बासलीक की फस्द खोलें, और ठंढी औषधें पिलावें ।

और जो जिगर की गरमी से हो तो ठंढी औषधें दें औ शुरूश मुलयन पिलावें ॥

और जो कोई पतला मवाद भेजे से गले में उतरे तो गले में सरसराहट होगी और खांसी में कफ न निकलेगा, और रात को सोने में अधिक हो जायगी, इसमें नजले को रोकें, औ पोस्त खशखश को औटा कर उससे कुल्ला करें, और बबूल गोंद मुख में रक्खें ॥

और जो भेजे से फेफड़े पेर मवाद गिरके गाढ़ा होजाय तो पड़े जोर की खासी से कफ निकलेगा, और छाती भारी मालूम होगी और इससे पहिले जुकाम हुआ होगा इसमें जूफा, अञ्जीर, मेथी के बीज और मुलहटी इनको पानी में औटाकर पीवे, और मुलहटी का सत, काली मिरच और शक्कर, बराबर लेकर गोलियां बनाकर मुख में रक्खें ॥ और जो फेफड़े और छाती में अधिक तरी होजाने से हो तो खांसी में लसदार कफ निकलेगा और छाती के भीतर खरखराहट होगी, यह बहुधा बूढ़ों और तर मिजाज वालों को होता है, इसका उपाय वही है जो कफज श्वास का है ॥ और जो फेफड़े में धूआं या गर्द पहुंचाने या चिल्लाने से खांसी हो तो उस कारण को दूर करे और तर और नर्म वस्तु खावें और टट्टी और गुरदा पर घी लगावे । और जो खांसी किसी और रोग के कारण से हो तो उस रोग की चिकित्सा करने से जाती रहेगी ।

जो फेफड़े में फुन्सियां पड़ जाने से खांसी हो तो नाड़ी जल्दी जल्दी चलैगी और पेशाब में जलन होगी और ठंडी वस्तुओं से आराम मिलेगा इसमें फस्द खोले और छाती पर पछने लगावें और विष का जुल्लाब दे फिर जो उपाय गले की फुन्सियों का है वही इसका करे ॥ जो मेदे की तरी से हो तो मेदे से मवाद निकालें और भोजन कम दें । जो फेफड़े में बादी आजाने से खांसी हो तो उसमें कफ काला और नीला निकलेगा और इसके अतिरिक्त अन्य चिन्ह बादी के पाये जायगे, इस में गेहूं की भूसी का हरीरा शक्कर या शहद डालकर पिलावें और मुन्जिस देकर बादी का जुल्लाब दें ।

और जो नरखरे में पानी या और कोई वस्तु जा पड़े और उस से खांसी हो तो जब तक वह वस्तु वहां से दूर न होगी

मुख से पीव निकलने का वर्णन।

जो यह फेंफड़े की सूजन के फूट जाने या सिल आदि से हो तो उपाय इस का आगे लिखा जायगा और जो गले और मुख के भीतर से आवे तो खुन्नाक का रोग पहिले हुआ होगा और इन स्थानों में सूजन होगी इसका उपाय पहिले लिख चुके हैं।

परन्तु जो सूजन के फूटने के कारण से पीव छाती से आवे तो मवाद को उन औषधों से पतला करें जो कफ की खांसी में लिखी गई है इससे मवाद पतला होके टपक जायगा और मोम को बाबूना के तेल में मिलाकर मलैं और कोई ठण्डी वस्तु और कब्ज करने वाली वस्तु कभी न खावें और मवाद के पतला करने के लिये, जूफा, हाशा, इन्जीर और मुलहटी औटाकर पीना अति लाभदायक है और यह औषध हर तरह की सूजन में चाहे वह छाती की हो या फेंफड़े की और फूट गई हो लाभ देगी॥

जानना चाहिये कि छाती का मवाद फेंफड़े में उतर कर नरखरे की राह मुख से निकलता है सिवाय इसके और कोई राह छाती के मवाद निकलने की नहीं है॥

फेंफडे का सूजन का वर्णन।

जो सूजन रुधिर या पित्त या खारी कफ से हो तो तप बहुत होगी श्वास न ली जायगी छाती भारी होगी पीड़ा होगी गालों पर लाली होगी और प्यास बहुत होगी किन्तु इन चिन्हों में मवाद के अनुसार कम्मी और अधिकता होती है इसमें फस्द बासलीक खोले और जो रुधिर की अधिकता हो तो पहिले फस्द खोले इसके पीछे मतबूख मुलय्यन से मवाद को नर्म

करें, और जो न मन्ते से मूजन हाती फस्द सराफ कर।

फेंफड़े और छाती और उसके पास में जो सूजन हो उस में तीन दिन से पहिले फस्द खोले, और जिधर सूजन हो उस की दूसरी ओर की फस्द खोलें और जब मवाद गिरने से ठहर जाय तो दूसरी ओर की खोलें अर्थात् जिधर सूजन हो उस ओर फस्द खोलें।

शरह असबाब नामक ग्रन्थ में लिखा है कि पित्त रुधिर में जिस तरफ मवाद हो उसी ओर की फस्द खोलनी चाहिये इससे बहुत लाभ होगा क्योंकि यहां सूजन पास होती है॥

फेंफड़े की सूजन में जब तप अधिक होगी तो सूजन की ओर का गाल लाल होजायगा, और भारीपन भी उसी ओर मालूम होगा, और सूजन की ओर लेटने से मुख से पानी बहुत निकलगा जो रोगी कमजोर न हो तो तीन तीन दिन पीछे फस्द खोला करें, और उसके पीछे मवाद को नर्म करें और मवाद को बाहर खेंचने के लिये छाती पर पछने लगावें।

और राग के आदि में ठण्डी औषधें जो मवाद को फेंफड़े पर गिरने से रोकें मलें और इसके पीछे सूजन की पकाने अर्थात् बिठाने वाली औषधें मलें और जिमाद शोथा पीड़ा को जल्दी से अच्छा करता है॥

विशेष द्रष्टव्य—जिन औषधों में कब्ज हो जैसे कासनी का रस और गाढा करने वाली औषधें जैसे खशखाश और ठंडा पानी इस राग में नहीं देना चाहिये परन्तु जो यह सूजन पित्त से हो तो उस में यह औषधें दे सकते हैं॥

इस रोग में छाती को मवाद से साफ करने का उपाय करें और जो तपके लिये ठंडाई पिलानी होतो माउल असल और शर्बत गुलाब और आशाओ दें और थोरे और लौकी

तथा तरबूज का पानी भी दे सकते हैं क्योंकि यह साफ करते हैं और इन में कब्ज नहीं है, और शिकंजबीन जो बहुत खट्टी न हो अति लाभदायक है और जब श्वास लेने में रोगी हांपने लगे तो लुआब ईसबगोल पतला करके कन्द और गुलाब के साथ एक एक घूंट पिलावें और गुन गुने छाती और पसली पर तरी दें जब तक श्वास [illegible] होजाय और ठहर जाय।

जो फेंफड़े की सूजन ठण्ड से हो अर्थात् कफ या बादी से तो कफज के चिन्ह यह हैं, कि मुख से थूक बहुत निकलेगा और भारीपना और श्वास का रुकना बहुत होगा और गर्म सूजन के चिन्ह कोई नहीं होंगे परन्तु हलका रहेगा और गर्म म ज्वर अधिक होगा।

सूजन जो बादी से हो तो सूखी खांसी होगी और श्वास कठिनता से लोजायगी और जो पहिले गर्म सूजन हो फिर कठो होजाय उसका लक्षण यह है कि कड़े पड़ने से पहिले गर्म सूजन के चिन्ह पाये जांयगे॥

कफज सूजन में पहिले मवाद को नर्म करें और ऐसी औषधें मलें जो ठण्डी हों और मवाद को फेंफड़े पर गिरने से रोकें और थोड़े दिन पीछे जब ज्वर कम होजाय तो कफ को छ्जिश पिलाकर जुल्लाब दें और जो बादी से हो तो खत्मी के बीज और अलसी के बीजों का लुआब बादाम के तेल में मिलाकर एक २ घूंट पिलावें और कद्दू की मींगों का दूध और नर्म करने वाली औषधें मलें परन्तु बादज सूजन का उपाय बहुत कम होसकता है फेंफड़े की सूजन में कभी पथरी होजाती है, खांसी रुक जाती है और कभी इससे सिलका रोग होजाता है॥

सिल का वर्णन।

फेंफड़े में घाव पड़जाने का नाम सिल है लक्षण इसका यह है कि इस में तपेदिक अवश्य होजाता है खांसी में पीव निकलती है पीव और कफ के पहिचानने में धोखा होजाता है इसलिये उसकी पहिचान याद रखनी चाहिये कि पीव पानी में बैठ जाती है और आगपर डालने से उसमें से गंध निकलती है, और कफ पानी पर तैरता है और आगपर रखने से गंध नहीं आता इस रोग का उपाय नहीं हो सकता परन्तु जो उचित उपाय

के साथ दैवयोग से दूर हो जाय तो कुछ अचम्भा नहीं
इस में शीघ्रता से फस्द बासलीक उस ओर खोले जिधर पीड़
न हो और जो फस्द न खोल सकें तो छाती पर पछने लगा
और जो इस में नजला भी हो तो फस्द सभारु भी खोलें औ
आशों में कंकड़े पकाकर खिलावें और तपेदिक का उपा
करें और हकीम यूसफी ने लिखा है कि इस रोग में जरी
नया गुलकन्द खिलाया जाय खिलावें यहां तक कि रोटी
साथ भी वही खिलाया जाय परन्तु इतना न खिलावें कि द
आने लगें क्योंकि इस रोग में दस्त बहुत बुरे हैं। इस में स
सरतान, शरबत उन्नाव या शरबत खशखाश के साथ बहा
उत्तम है॥

सफूफ सरतान के बनाने की विधि कंकड़े को जला
राख करलें और यह राख १० माशे बबूल का गोंद और
अरमनी हर एक ५ माशे, सफेद खशखास और काली खशख
हर एक २ माशे कतीरा ३ माशे पीस के सफूफ बनावें और
माशे सेवन करें॥

छाती के परदों, झिल्लियों और पट्ठों उन के आस पास के जोड़ोंकी सूजनों का वर्णन

(१) जो सूजन आगे की पसलियों के भीतर झिल्ल
या उस परदे में जो भोजन की नली मेदे और जिगर के
में तना हुआ है पड़े उसको जात उल जनब खालिस औ
जात उल जनब सही कहते हैं (२) जो सूजन भीतर के सब
में हो उसका नाम खानिका है (३) जो सूजन पसलि
बीच के पट्ठों में हो उसको जात उल जनब गैर स
गैर खालिस कहते हैं (४) जो ऊपर की पसलियों की

(५) जो पीठ की पसलियों के भीतर की झिल्ली में सूजन हो का नाम शासा है (६) जिगर और मेदे की बीच में जो परदा उसकी सूजन को बरसाम कहते हैं (७) जो झिल्ली छाती से ती हुई है उसकी सूजन को मात उलसदर कहते हैं (८) और झिल्ली के सामने पीठ से मिली हुई जो झिल्ली है उसकी न का नाम जातउलअर्ज है जो उपाय फेंफड़े की सूजन में जा गया है वही इसका भी करें सूजन की जगह पीड़ा से ख हो जायगी। अर्थात् जिस स्थान पर पीड़ा होगी वहीं न भी होगी। जातउल सदर में लेप छाती पर और जातउल में कन्धों के बीच में लेप करें। इन सूजनों और फेंफड़े की नों में यह अन्तर है कि फेंफड़े की सूजन में नाड़ी लहराती चलती है और श्वास बहुत रुकता है और इन सूजनों में ी ऐसी नहीं होती और श्वास भी कम रुकता है और सर-प में होश और ज्ञान जाता रहता है इसी कारण से इस में त मनुष्यों का सरसाम का धोखा हो जाता है॥

कभी ऐसा होता है कि जिगर की सूजन में श्वास रुकने ता है इस कारण से जातउलजनब का धोखा होता है परन्तु उलजनब और जिगर की सूजन में यह अन्तर है कि जिगर की न में रंग पीला हो जाता है और खांसी नहीं होती और गर की ओर पीड़ा होती है और पेशाब गाढ़ा आता है॥

जब मवाद इन सूजनों का पक जायगा तो जो थूक थूक निकलेगा उसमें पकने के कारण होंगे उस समय चाहिये कि ा उपाय करें जो पीब बनने से पहिले सब मवाद खखार ा निकल जाय इसलिये गर्म पानी, आशमी शक्कर और द धनधना करके पिलाना, चाहिये इससे मवाद थूक बन कर

निकल आवेगा और रोगी को उस करवट से सुलावें जिधर है इससे फेंफड़ा सूजन के पास आ जायगा और पके हुए को चूस के निकाल देगा ॥

जातउलजनव दो प्रकार का है एक हकीकी और गैर हकीकी। हकीकी तो यह है जो सूजन हो और गैर हकीकि गाढ़ी रीह पसलियों के आस पास और झिल्लियों में आय और पीड़ा होने लगे ॥

रीह फसने के कारण आगे नहीं बढ़ सकती इसलिये जातुलजनव रीह में पारीवन और ज्वर नहीं होता और जातुलजनव हकीकी में यह दोनों बातें पाई जाती हैं इसकी चिकित्सा यह है कि रीह में पटकाने वाली औषधें लगावें और फस्द का खोलना शीघ्र लाभ देता है ॥

छाती के आस पास पीव रुक जाने का वर्णन

यह इस प्रकार होता है कि फेंफड़े आदि की सूजन पक फूट जाती है और पीव छाती के आस पास फेंफड़े से बाहर गिरती है और गाढ़े होने के कारण वहीं फस कर रह जाती न फेंफड़ा उसे चूस कर निकालता है और न मूत्र और न मल द्वारा निकल सकती है लक्षण उसका यह है कि जिस अंग में पीव होगी उस में पहिले सूजन मालूम होगी और फिर आमाशय की ओर पीव आवेगी इसमें तपेदिक अवश्य होता है इन्जीर, मुलाजूफा, जिरसोंट, मुलहटी, हंसराज, मुनक्का, पानी में औटा कर रोगन बादाम और मिश्री मिला कर पिलावें कि यह पतला होकर पेशाब द्वारा निकल जाय और वह औषधि जो गुर्दे और मसाने को धोवें प्रयोग करें और जो पीव दस्त में निकले तो नर्म करने वाली औषध दें और जो दोनों हो तो कभी यह दें और कभी वह परन्तु ऐसा कम होता है ॥

छाती का ठण्ड पा जाना और जकड़ जाना ।

यह रोग यातो बाहर से अधिक ठण्ड पहुँचने से होगा या
ार से होगा और उस में दम रुक कर आवेगा (उपाय) सार
र हींग आदि के तेल में जुन्द बेदस्तर मिलाकर मलें और
औषधें औटा कर पावें और हींग मायशलअस्ल में मिला
एकर घूट पिलावें और हरीरा और माउलअस्ल मोमन
है ॥

कभी यह रोग अफीम पीने और सीसे के पिघलने के धूएं
पहुँचने से हो जाता है इसमें यह गर्म औषधे दें जो खांसी
लिये हैं और गर्म पानी के जोश से सेंकें ॥

जो अफीम पीने से हो उसमें केसर का तेल छाती पर मलें
र जो सीसे के धूए से हो तो कूट का तेल मलना अति
सहायक है ॥

ग्यारहवां अध्याय ।

दिलके रोगों का वर्णन ।

दिलके मिजाज का बिगड़ जाना ।

जो किसी मवाद से हो तो पहिले उस मवाद को निकाले
ार फिर मिजाज को समान करे और जो फस्द की आवश्य-
ता हो और कोई हानि भी न हो तो दोनों फस्दों के बीच में
ने लगावें, और मिजाज को ठीक करने और मवाद निकालने
कई बातों का ध्यान रखना उचित है । (१) तो यह देखलें कि
रण रोग का कम है या अधिक (२) रोग एक कारण से है
कई से (३) दिलको कमजोर न होने दें (४) जो तप हो तो
सका भी ध्यान रक्खें और उपाय करें इस रोग का उपाय
[illegible] से करें नहीं तो पछताना पड़ कर कठिनता से जाता है ॥

खफ़कान अर्थात् दिल घबड़ाने का वर्णन।

यह रोग जब बढ़ जाता है तो मूर्छा आने लगती है। ये दो प्रकार से उत्पन्न होता है अर्थात् या तो इसका कारण केवल दिलमें होता है या शरीर के और स्थान में जैसा भेजा जिगर, आँतें फेंफड़े, और गर्भाशय आदि या सारे शरीर में होता है और जो जहरीले जानवर के काटने से यह भी प्रकार में समझना चाहियें ॥

जो इसका कारण दिलके सिवाय किसी और स्थान में हो तो उस स्थान को ठीक करें परन्तु दिलको पुष्ट रक्खें और जो केवल दिलमें हो तो मवाद के अनुसार उसे ठीक करें और जुल्लाब दे ॥

जो यह रोग दिलके तीव्र होने से हो तो ठंडी खिलावें ॥

और जो बहुत वमन आने रुधिर निकलने अथवा दस्त आने से दिल कमजोर हो जाय और उससे यह रोग हो तो दिल को पुष्ट करने वाली औषधें और भोजन दें ॥ जिस किसी को यह रोग गरमी से हो उसको चाहिये कि गरम स्थान में और गरम हवामें और गर्म शहर में न रहे नहीं तो अवश्य उसकी कम हो जायगी या वमन बहुत हुआ करैगा ॥

बल्ली बबरा की कौड़ी के स्थान पर लटकाना इस रोग में अति लाभदायक है ॥

मूर्च्छा का वर्णन।

जब खफकान बढ़ जाता है तो मूर्च्छा आने लगती है और जब मूर्च्छा बहुत आती है तो मनुष्य मर जाता है मूर्च्छा तीन प्रकार की होती है ॥

घुट जाय ॥ (३) यह कि उत्पन्न कम हो और इन तीनों प्रकार में रोगी कमज़ोर होजाता है ॥ रूह के जाते रहने के भी कई कारण है। (१) यह कि दस्त बहुत आवें या रुधिर अधिक निकल जावे। (२) कोई खुशी अधिक और अचानक हो। (३) चैन और स्वाद अधिक होने से। (४) अधिक पीड़ा और बेचैनी से रूह जाती रहती है।

रूह के घुट जाने के कारण यह हैं ॥

[१] किसी मवाद के अधिक होजाने से अधिक मदिरा पीने से और अधिक मोटा होजाने से (२) अधिक दुख से (३) अचानक डर के होने से रूह घुट जाती है।

रूह के कम उत्पन्न होने के भी कई कारण हैं जैसे दिल में बिगाड़ होना वा बुरे भोजन खाना या बहुत बीमार रहना और भूखा रहना ॥

जो मवाद रगों से दिल में पहुंचता है वह या तो दिल की रगों में समाता है या दिल के ऊपर रहता है उसका वर्णन पाठ में आवेगा ॥

चाहिये कि मूर्छा में कारण के विपरीत उपाय करें अर्थात् जो मूर्छा गरमी से हो तो ठंडी औषधें दिल को पुष्ट करने वाली सुंघावें, जैसे चन्दन, कपूर, आदि और केवड़े का अरक गले में टपकावे, और जो ठंड से हो तो मुश्क और केसर आदि सुंघावे, और गले में टपकावे और मिजाज के अनुसार लेप करे, और गर्म मिजाज वाले को गुलाब और ठंडा पानी छाती और मुंह पर छिड़कना आवश्यक है परन्तु जो बहुत दस्त आने से शरीर ठंडा पड़ गया हो और उसके कारण से मूर्छा हो तो पानी और गुलाब न छिड़कना चाहिये, इस में गर्म रोटी बंधावे और माउल लहम मुंह में टपकावे और गरम तेल हाथ पैर के नीचे मले ॥

खफकान अर्थात् दिल घबड़ाने का वर्णन।

यह रोग जब बढ़ जाता है तो मूर्च्छा आने लगती है ये दो प्रकार से उत्पन्न होता है अर्थात् या तो इसका कारण केवल दिलमें होता है या शरीर के और स्थान में जैसा भेजा जिगर, आँतें फेंफड़े, और गर्भाशय आदि या सारे में होता है और जो जहरीले जानवर के काटने से यह भी प्रकार में समझना चाहिये ॥

जो इसका कारण दिलके सिवाय किसी और स्थान तो उस स्थान को ठीक करें परन्तु दिलको पुष्ट रक्खें जो केवल दिलमें हो तो मवाद के अनुसार उसे ठीक और जुल्लाब दें ॥

जो यह रोग दिलके तीव्र होने से हो तो खिलावें ॥

और जो बहुत वमन आने रुधिर निकलने अथवा आने से दिल कमजोर हो जाय और उससे यह रोग हो तो को पुष्ट करने वाली औषधें और भोजन दें ॥ जिस किसी यह रोग गरमी से हो उसको चाहिये कि गरम स्थान में गरम हवामें और गर्म शहर में न रहे नहीं तो अवश्य उस कम हो जायगी या वमन बहुत हुआ करैगा ॥

तरल्ली यषब की कौड़ी के स्थान पर लटकाना इस रोग अति लाभदायक है ॥

मूर्च्छा का वर्णन।

जब खफकान बढ़ जाता है तो मूर्च्छा आने लगती है जब मूर्च्छा बहुत आती है तो मनुष्य मर जाता है मूर्च्छा के प्रकार की होती है ॥

ट जाय ॥ (३) यह कि उत्पन्न कम हो और इन तीनों प्रकार रोगी कमजोर होजाता है ॥ रूह के जाते रहने के भी कई कारण हैं। (१) यह कि दस्त बहुत आवें या रुधिर अधिक निकल जावे। (२) कोई खुशी अधिक और अचानक हो। (३) चैन और स्वाद अधिक होने से। (४) अधिक पीड़ा और बेचैनी से रूह जाती रहती है।

रूह के घुट जाने के कारण यह हैं ॥

[१] किसी मवाद के अधिक होजाने से अधिक मदिरा पीने से और अधिक मोटा होजाने से (२) अधिक दुख से (३) अचानक डर के होने से रूह घुट जाती है।

रूह के कम उत्पन्न होने के भी कई कारण हैं जैसे दिल का बिगाड़ होना या बुरे भोजन खाना या बहुत बीमार रहना और भूखा रहना ॥

जो मवाद रगों से दिल में पहुंचता है वह या तो दिल की रगों में समाता है या दिल के ऊपर रहता है उसका वर्णन पाठ में आवेगा ॥

चाहिये कि मूर्छा में कारण के विपरीत उपाय करें अर्थात् जो मूर्छा गरमी से हो तो ठंडी औषधें दिल को पुष्ट करने वाली सुंघावें, जैसे चन्दन, कपूर, आदि और केवड़े का अरक मुंह में टपकावे, और जो ठंड से हो तो मुश्क और केसर आदि सुंघावे, और गले में टपकावे और मिजाज के अनुसार लेप करे, और गर्म मिजाज वाले को गुलाब और ठंडा पानी छाती और मुंह पर छिड़कना लाभदायक है परन्तु जो बहुत दस्त आने से शरीर ठंडा पड़ गया हो और उसके कारण से मूर्छा हो तो पानी और गुलाब न छिड़कना चाहिये, इस में गर्म रोटी सुंघावे और माउल अस्ल मुंह में टपकावे और गरम तेल हाथ पांव में मले ॥

जो गर्मी की अधिकता से बहुत सा पसीना आकर मूर्च्छा होजाय तो ठंडे पानी या गुलाब से हाथ पांव धुलावे और पसीना बन्द करने के लिये मूरद के सूखे पत्ते या माजू पीस कर शरीर पर मर्दन करे। जो बादी की अधिकता से मूर्च्छा हो तो माजून फलोनिया खिलावे, और कूलज की पीड़ा में भी ऐसा ही करे जो, यह रोग जी मचलाने या हिचकी से हो तो वमन करावे और बहुधा मूर्च्छा में वमन कराना अच्छा है, परन्तु जो बहुत पसीना आवे तो न करावे जो जहरीला जानवर के काटने या डंक मारने से हो तो तिरियाक और विषको दूर करने वाली औषधें दे और जो गर्भाशय के बिगाड़ से हो तो दुर्गन्धित वस्तु सुंघाना चाहिये और गर्भाशय के अन्दर सुगन्ध लगादे हर प्रकार की मूर्च्छा में हाथ पांव मलना लाभ दायक है और जब रोगी चैतन्य होजाय तो कारण के अनुसार उपाय करे॥

मूर्च्छा के लक्षण यह हैं रंग पीला होजाता है हाथ पांव ठंडे होजाते हैं नाड़ी होले २ चलती है और जो मूर्च्छा अधिक हो तो आंखें भी बन्द होजाती हैं मूर्च्छा और सकते में अन्तर यह है कि मूर्च्छा वाला पुकारने से सुनता है और सकते वाला नहीं सुनता जो चिन्ह, मूर्च्छा के ऊपर लिखे गये हैं यह सकते और सबात के रोग में नहीं होते॥

मौतदिल औषधें जो दिल को पुष्ट करती हैं यह हैं याकूत फीरोजा, सोने चांदी के गावजबां और गर्म औषधें यह हैं निर्बिसी, दरूनज मुश्क, अम्बर, नरकाचूर, कच्चा रेशम, केसर, दोनों बहमन, लोंगे, कबाबचीनी, बालछड़, पीपल और बच, छोटी और बड़ी इलायची, रेहां के फूल और फरंजमुश्क, तुरंज के छिलके, तेजपात, रसान ठंडी औषधें यह हैं कहरुवा, बिसद

पूर, चन्दन बंशलोचन, गिलेमख़तूम, मेव, धनियां, पाकूर्यां और दवाउलमिस्क भी दिल को पुष्ट करती है जो खुश्की और तरी दोनों प्रकार की औषधें देना चाहें तो उन्हीं में से ठंढी और गर्म औषधें समझ कर मिलादें ॥

जब अधिक गर्मी दिल में हो या मूर्च्छा हो तो भी बहुत गर्म औषधें न देना चाहिये ॥

दिल के दोनों कानों के सूजने का वर्णन ।

दिल के ऊपर दो वस्तु उभरी हुई हैं जिनमें छिद्र भी हैं और उनमें से हवा दिल को पहुँचती है उन्हें दिल के कान कहते हैं जब कोई रोग देर तक रहता है रूह जाती रहती है तो भोजन देह को नहीं लगता और इनमें सूजन होजाती है यह सूजन गाढ़े मवाद से होती है। क्योंकि गर्मी कम होने से भोजन अच्छी भांति नहीं पकता और वही इस सूजन का मवाद बन जाता है और गर्मी से हो या ठण्ढ से दिल के लिये बहुत बुरी है, और गर्मी की सूजन से तो मनुष्य मर ही जाता है और ठण्ढी सूजन में उपाय का अवसर मिलता है इसका जल्दी उपाय करना चाहिये नहीं तो रोगी दुबला हो के मर जायगा ॥

छाती भरी रहना, बहुधा मूर्च्छा रहना, उदासी, आंखों पर झुरझुराहट और मुख का रंग बहुत पीला होना यह ठंढ की सूजन के लक्षण हैं ॥

इसमें बाबूना, नाखूना, इसराज, गेहूं की भुसी, पानी में औटाकर छाती को टूढ़ी तक धारे और पटकाने वाली औषधों का लेप करें और दिल को पुष्ट करते रहें, दिल के ऊपर की झिल्ली में जो सूजन होती है उसमें इन कानों की सूजन से कम दुख और मूर्च्छा होती है ॥

दिल से धूआं उठने का वर्णन।

यह किसी मवाद के गल जाने से होता है और जब पुराना हो जाता है तो मूर्छा आने लगती है और बुरे २ बातों के ध्यान होते हैं, इसमें बादी का मवाद निकालें, और तरी पहुंचावें इस रोग में जो रग रग पे फासले दस्त आवें या नकसीर फूट या बवासीर हो जावे तो रोगी जल्दी अच्छा होजावेगा।

जगतल कल्ब का वर्णन।

इस रोग में ऐसा मालूम होता है कि दिल को कोई दबाता है और जब ऐसा होता है तो मूर्छा आजाती है और मुंह से झाग निकलते हैं और थोड़ी देर के पीछे रोगी अच्छा हो जाता है इसमें दिल को ठीक करें और दिल और भेजे को पुष्ट रक्खें, बादी का जुल्लाब दें, मुफर्रह सगीर और तिरयाक कबीर खिलावें॥

तकश्शुर कल्ब का वर्णन।

इसमें दिल हिलता है और पीड़ा भी होती है और जब पीड़ा अधिक होती है तो मूर्छा भी आजाती है, और थोड़े समय पीछे होश आजाता है और मूर्छा के समय पीड़ा की अधिकता से मुंह पर झुर्रियां सी पड़जाती हैं और सारे बदन से पसीना निकलता है॥ इसमें पहिले कारण को मालूम करें कि मवाद भेजे से आता है या किसी और स्थान से फिर वैसा ही उपाय करें। जो पित्त से हो [illegible] को निकालें, और जो नजला हो तो [illegible] निक[illegible] खशखाश का शर्बत [illegible] रोक[illegible] दें।

क[illegible]

ता है जो रुधिर की अधिकता होगी तो मुंह का रंग लाल गा और पित्त में पीला होगा इस में दाहिने हाथ से फस्द बा-सीक खोलें और पित्त का जुल्लाब दें और चन्दन का शर-। बेदमुश्क के अरक और गुलाब में घोल कर पिलाया करे ार भोजन अच्छा दें और दिल को प्रसन्न करने वाली औषधें खावें ॥

दिलके बैठने का वर्णन ।

यह रोग दिल में रुधिर या पित्त की अधिकता हो जाने से ता है और कभी इसके साथ पीड़ा और मूर्छा भी होती है । मुंह का रंग लाल हो तो रुधिर की अधिकता और पीला य तो पित्त की अधिकता होगी मवाद के अनुसार फस्द खोलें ार जुल्लाब दें ॥

दिल पर तरी छाजाने का वर्णन ।

इस रोग में ऐसा मान पड़ता है कि दिल पानी में डूबा ता है और फड़कता है यह रोग दिल घबराने के प्रकार में से इस में दिल के ऊपर की झिल्ली में कफ इकट्ठा हो जाता है पांच) अयारिज खिलावें और गुलाब के फूल बालंगू (बालछड़ ादि का लेप छाती पर करें और रोगी से मिहनत करावें और घ दिलावें इससे तरी दूर जाती है कभी यह तरी लसदार हो । दिलसे चिमट जाती है तो श्वास भली भांति नहीं आता ा जाता रहता है क्रोध आता है और दिल को खुशी नहीं ी, इस में नर्म करने वाली औषधें दें और खुश्की दूरकरने के ये छाती पर मोम रोगन का लेप मले फिर मवाद को निकाले र दिल को पुष्ट करे सारे शरीर में दिल बहुत उत्तम वस्तु है के उपाय में सुस्ती नहीं करना चाहिये ॥

आता है, या ठण्ड से जम जाता है और देर तक दूध के निकलने से भी ऐसा होता है कारण के अनुसार उपाय और जब देर तक दूध न निकलने से या बच्चे के न पीने या किसी और कारण से ऐसा हो तो छातियों पर गर्म पानी से सरेदा दें और धीरे२ दूध को चुसवावें कि सारा दूध निकलजावे और जो दूध के बन्द होने से छाती पक जाय और दूध का रंग और स्वाद बिगड़ जाय तो सूजन को पकाने के लिये बाबूना, अलसी के बीज, मेथी के बीज और खैरू के बीज बराबर लेकर चुकन्दर के पानी में अथवा केवल पानी में पीस कर दिन में दो तीन बार छाती पर लगावें और जो सूजन आप से आप पक कर फूट जाय तो अच्छा है नहीं तो नश्तर लगावें। कभी ऐसा होता है कि नश्तर गहरा नहीं लगता और पीब की जगह नहीं पहुंचता और उससे केवल ऊपरकारुधिर निकलजाता है ऐसे समय में दूसरी बार गहरा नश्तर लगा दें जिससे पीब निकले फिर घाव का उपाय वही है जो मुंह और जीभ के घावों में लिखा गया है क्योंकि छाती में भी पतली और नर्म रगें और मांस है जैसे कि जीभ और मुंह में, जो छाती में सख्ती हो जावे तो मोम रौगन बांधें॥

स्तनों का कुचल जाना।

इस मूंग को सर्व के पत्तों के पानी में पीस कर लेप करें और जो सूजन हो जाय तो उसका उपाय करें॥

फिटकरी को रोगन जैत मिला के शीशे के बासन में रक्खें और लगावें तो छातियां बढ़ने न पावेंगी और जो उपाय कि अण्डवृद्धि का है वही इसका भी है॥

तरहवां अध्याय ।

मेदे के रोगों का वर्णन ।

मेदे के मिजाज बिगड़ जाने का वर्णन ।

जो गरमी से मिजाज में बिगाड़ हो और कोई मवाद न ता थाड़ा और हलका भोजन पेट में जाकर बिगड़ जाता है र बहुतसा और भारी नहीं बिगड़ता और भली भांति पच ता है आरी कफ जब मेदे में होता है तो प्यास पड़ जाती है र इस में विशेषता यह है कि ठंडे पानी से अधिक होती है र गरम पानी से कम और जो मेदे में विष या गरमी हो भी प्यास बढ़ जाती है ।

और यह ठण्डे पानी से बुझती है और गर्म पानी से धिक होजाती है जो आमाशय में केवल गर्मी हो और कोई वाद न हो उसे ठीक करे और जो कोई गर्म मवाद हो तो उसे काले आमाशय का मवाद वमन द्वारा भली भांति निकलता और जो किसी स्थान से मेदे में मवाद आता हो तो वहां मवाद को निकालें बहुधा भेजे और तिल्ली और जिगर से दे में मवाद गिरा करता है लक्षण प्रत्येक के यह हैं जो भेजे गिरे तो नजला होगा और जिगर और तिल्ली से गिरने में न स्थानों में बिगाड़ पाया जायगा जो भेजे के कारण से हो फस्द सराल खालें और जिगर में दाहिने हाथ से फस्द बास लीक या असीलम खालें कभी ऐसा होता है कि आमाशय पुष्ट गैर साफ हो लेकिन देर में गमन करने के कारण निर्बल ोजावे और मवाद उस में गिरे यह बात बहुधा गर्म मेदे की हो ी है कि भोजन न मिलने में बेचैन होजाता है और कभी ख की अधिकता से मूर्छा आजाती है ऐसे मनुष्यों को चाहिये क प्रातःकाल ही कोई खट्टा पदार्थ खालिया करें और पेट

खाली न रक्खें और कभी आमाशय के पराव में मवाद फस जाने से यही रोग होता है उसमें अयारिज फैकरा खिला कर वमन करावे और जो उसमें शरबत इफसंतीन या पीली हई मिलावें तो मवाद आमाशय की तह से उखड़ कर निकल आवेगा ॥

पेट की पीड़ा का वर्णन ।

जो यह आमाशय के बिगाड़ से हो तो उसका वर्णन हो चुका है और मेदे में सूजन या घाव हो तो उसका वर्णन आगे आवेगा और जो वात की अधिकता से हो तो पीड़ा फिरती हुई मालूम होगी डकारें और हिचकियां आवेंगी और पेट बोलेगा और फूला हुआ होगा और जब भोजन मेदे में नीचे उतरेगा तो बाईं ओर पीड़ा होगी इस में पेट को सेकें और इलायची को गुलाब में औटाकर पिलावें और पोदीना चबावें कि डकार खुलकर आवें और कमूनी खिलावें और जो वात गाढ़ी हो तो कफ का जुल्लाब दें और पचाव कराने के लिये उपाय करें पेट पर पारे लगाने से पीड़ा जल्दी जाती रहती है किसी कारण से पीड़ा हो उस में शिकमबीन को गुलाब या पानी में मिला कर पिलाना अति लाभदायक है कभी ऐसा होता है कि पीड़ा पतले या खारी कफ से हो और कोई वस्तु ठंडी दी जावे और कफ से वादी कुछ कम न हो और इस कारण से पीड़ा में कुछ कमी हो तो जान पड़ता है कि गर्म मवाद है क्योंकि ठंडी वस्तु से कमी हुई और इसी तरह कभी ऐसा होता है कि मवाद गर्म हो और कोई औषधि गर्म दीजावे और वह धूऐं को पचावे और वादी को तोड़े तो धोखा होता है कि मवाद ठंडा है क्योंकि ठंडी दवा से लाभ हुआ इन

जो पोलों मे बड़ी हानि होती है इसी लिये चाहिये कि और कर्णों पर भी ध्यान रक्खें ॥

अधिक भोजन या भारी वस्तु खाने से पीड़ा हो तो वमन कर के उसे निकाल डालें और कई दिन तक भोजन कम खाय और जो तीव्र भोजन खाने से हो तो ऐसी वस्तु खावें जो इस प्रकार की न हों ॥

जो आमाशय के निर्बल होने से यह रोग हो तो लक्षण इसका यह है कि भोजन करने के पीछे पीड़ा की अधिकता होगी और जब तक वह वमन या दस्तों से निकल न जेगा पीड़ा नहीं ठहरेगी इस में वह औषधें दें जो मेदे को पुष्ट करें, और जौशदाक का खिलाना अति लाभदायक है ॥

और जो आमाशय मवाद इकट्ठा होजाने से दुर्बल होजाय तो उसका लक्षण यह है कि भूख बन्द होजायगी और गर्म मवाद में प्यास और मतली अधिक होगी, इस में आमाशय से मवाद निकालें और कुर्स कौकब और कुर्स अनीसून दें।

जो मेदे की हिस्स बढ़जाने से पीड़ा हो तो पहिचान उसकी यह है कि थोड़े कारण से पीड़ा उत्पन्न होजाती है, जैसे भोजन की भाप या पाक से या वादी गिरने से या मेदे के खाली होने के समय तिल्ली से गिरता है और उससे भूख मालूम होती है और ठंडे पानी पीने से। ऐसे समय में भारी भोजन या ऐसी दवा खिलावें जो मेदे को कुंद और सुन्न करदें जैसे पोस्त खशखाश को पानी में भिगोकर और छानकर पिलावें।

एक प्रकार की पीड़ा ऐसी है जो खाली पेट में बिना कुछ खाये होती है और खाने के पीछे जाती रहती है इसके तीन कारण हैं एक यह कि तरी मेदे में इकट्ठी होजाय और पेट के खाली होने के समय भूख की गर्मी से औटे और उससे भाप

भूख के बिगड़ने का वर्णन।

इस रोग में मनुष्य वह वस्तु खाने लगता है जो खाने के योग्य नहीं जैसे मिट्टी, कोयला, कागज, रुई, आदि और यह बहुधा पेट वाली स्त्रियों का होता है इसमें बुरे मवाद मेदे में इकट्ठे होजाते हैं और उनसे विपरीति खाने की चाहना होती है इससे मेदे से मवाद निकालें परन्तु पेटवाली स्त्रियों का कुछ उपाय न करें उनका ऐसा स्वभाव तीन चार महीने पीछे आपसे आप जाता रहता है और अजवायन जीरे का चबाना और उसका रस निगलना भी लाभदायक है॥

भोजन का होका हो जाने का वर्णन।

इस रोग में ठण्डे से मेदे में बिगाड़ हो जाता है और उस से मेदा ऐंठता है जैसे कि सौदा गिरने से भूख के समय होता है लक्षण उसका यह है कि खाने का होका हो और प्यास बिल्कुल न हो और पेट फूला रहै और नाड़ी धीमी चले इस में मेदे को गर्मी पहुँचावे और अनीसून अजवायन, जीरा, मस्तगी, आदि गर्म औषधें चबावें और मेदे पर दालचीनी, जायफल, आदि पीसकर मलें, और कफ से बिगाड़ हो तो उस मवाद को निकालें और तिल्ली से मेदे पर सौदा अधिक गिरे और उससे यह रोग हो तो लक्षण उसका यह है कि जब तक पेट खाली रहै मेदे में जलन पायी जायगी इसमें सौदा का मवाद निकालें और दाहिने हाथ से फस्द बासलीक और असीलम खोलें कि जिगर से सौदा निकल जाय और तिल्ली पर बारे लगावें, जो मेदे या सारे शरीर की अधिक गर्मी से भोजन जल्दी पच जाया करे, जैसे कि रसायन या कुश्ता खाने से होता है, उपाय इसका समझ के

सुधार करें जिससे वह कारण दूर होजाय, जो इस रोग का कारण भेजे से मेदे पर कफ का गिरना और खट्टा हो जाना हो तो खट्टी डकार आवैगी, और पहिले इससे नजला हुआ होगा, इस में नजले को रोकें और जो आंतों में केंचुए पड़ने से यह रोग हो तो इस कारण से कि केंचुए भोजन को खालें तो उसका वर्णन सोलहवें अध्याय के नवें पाठ में किया जायगा॥

जू उल बकर का वर्णन ।

इस रोग में भूख बिलकुल जाती रहती है और भोजन से ऐसा दिल हट जाता है कि एक टुकड़ा खाना कठिन होता है परन्तु सारा शरीर सूखा होता है, और दिन पर दिन दुबला होता है और और घट जाता है, और देखने में कोई कारण और रोग नहीं पाया जाता, जब यह बढ़ जाती है तो मूर्च्छा उत्पन्न होती है जब मूर्च्छा हो तो पहिले उसका उपाय करें और फिर कारण को पहिचान के उसे दूर करें और जब रोगी कमजोर हो तो कभी जुल्लाब न दें उत्तम उपाय यह है कि मेदे को पुष्ट और ठीक करै॥

भूख की असहनता का वर्णन ।

इसमें समय पर भोजन न मिलने से मूर्च्छा भी आजाती है चाहिये कि हर समय भोजन बना रक्खें और मेदे को पुष्ट करें और खट मीठे अनार के रस में रोटी भिगोकर खिलावें इस से मेदा पुष्ट होता है॥

अधिक प्यास होने का वर्णन ।

यह दो प्रकार का है एक तो सच्ची प्यास होना झूठी सच्ची प्यास वह है कि जिसमें गरमी के अ तरी घट जाने के कारण पानी की चाहना हो,

और खुश्की के लक्षण पाये जावेंगे और पानी से प्यास बुझेगी और झूठी प्यास यह है कि खारी या हिस्सी कफ या जली हुई बादी मेदे में चिपटे और उसके धोने के लिये पानी की चाहना हो, इसमें पहिले तो ठंडे पानी से प्यास बुझ जाती है परन्तु थोड़ी देर पीछे फिर लगती है और मुख का स्वाद पदार्थ के अनुसार होता है, और थोड़ी देर पानी न पीये तो प्यास धीमी हो जाती है जब यह रोग गरमी से हो तो यह देखना चाहिये कि यह गरमी मेदे, जिगर, छाती और फेंफड़े आदि जिस स्थान पर हो ठंड पहुंचावें, और छाती फेंफड़े और दिल की गरमी में ठंडी हवा खाना और ठंडी वस्तु सूंघना अति लाभदायक है तथा मेदे और जिगर की गर्मी को ठंडा पानी लाभदायक है, इसी से पहिचान सकते हैं कि गरमी किस स्थान पर है, और जब कोई ठंडा पदार्थ हो तो गर्म पानी में सिकंजबीन घोल कर पिलावें, और वमन करावें तथा सौंफ का अर्क दें और चनों को औटाकर उसका पानी पिलावें परन्तु खारी में सिवाय सौंफ के अर्क के और कोई वस्तु गरम न देनी चाहिये, और जब खुश्की हो तो तरी पहुंचावें, और बादाम का तेल और दूध पिलावें और जो प्यास ज्वर या जिगर की सूजन के कारण से हो तो ज्वर और सूजन का उपाय करें, कभी ऐसा होता है कि बहुत सा रुधिर निकलने से पित्त की अधिकता हो कर खुश्की बढ़ जाती है और उसके कारण से प्यास लगती है इसमें ठण्ड और तरी पहुंचावें। किसी लसदार भोजन के खाने से भी प्यास [illegible] है क्योंकि वह मेदे में जाकर चिपट जाता है और उस[illegible] धोने और छुड़ाने की चाह होती है इसका [illegible] तो कफ की प्यास [illegible] है और इसमें पा[illegible]

में मिलाके लेप करें कि वह पक कर फूट जावे और जो आप से न फूटे तो रोगी को गरम पानी पिलाकर सूजन को दबावें कि वह फूट जावे और फिर माउलअसल और गुलाब का शर्बत दूध में मिलाकर पिलावें इससे मेदे से मवाद निकल जावेगा और जब देखें कि मेदा होगया तो कुन्दर हब्बुलअल्फ़ौन गुलनार, कहरुबा, गिलेअरमनी पीस कर फकावें कि घाव पुर जाय और चावल या हरीरा भोजन की जगह खिलावें ॥

मेदे के घाव और फुन्सियों का वर्णन ।

इसमें पीड़ा और जलन खट्टी और तीव्र वस्तुओं को खाने से होगी और घाव आमाशय के मुख पर है या भीतर है इस की पहिचान यह है कि जिस स्थान पर पीड़ा होगी उसी के घाव और फुन्सियां होंगी इसमें फस्द खोलें और उसी के पीछे यह उपाय करें जो सूजन का है वा काली गायके मठे में थोड़े गुलाब के फूल, चूने के बीज और बंसलोचन पीस कर देना लाभदायक है और जब फुन्सियां फूटजांय तो पहिले वे औषधें दे जो घाव को साफ करें, फिर वह औषधें दें जो घाव को भरलावें, जैसे ऊपर के पाठ में लिखी गई हैं, और नर्म खमखास को हरी कासनी के पानी से लाभदायक है ।

पेट फूलने का वर्णन ।

इसका कारण या तो कोई उपद्रव और सादा बिगाड़ है या भोजन का बिगाड़ या किसी मवाद का मेदे में इकट्ठा होना है इसके चिन्ह और उपाय सोफहज्म और मेदे के बिगाड़ में लिखे गये हैं । छोटी इलायची कुचला के गुलाब में औटाकर पिलाना लाभदायक है ॥

र जंभाई और अंगड़ाई अधिक आने का वर्णन

यह तीनों रोग सब शरीर में या मेदे में वादी के कारण से और उसमें से अधिक धुआं उठने से होते हैं, इनमें से र वाद को निकाले और पचाव का ठीक करे, तथा सौंफ मीन, पीस कर गुलकंद में मिला कर खिलावें, तथा मुश्क मस्तगी शहद में मिला कर देना भी अति लाभदायक है, सारे शरीर से वादी को दूर करता है॥

वमन उबाकी जी मिचलाने का वर्णन।

वमन वह है जिसमें कुछ मेदे से मुंह की राह निकलता है ई वह है जो कुछ न निकले परन्तु ऐसा मालूम हो कि व- होगी, जी मिचलाना वमन से पहिले होता है, और बराबर होना बहुत्सा नुकसान करता है। पचाव के अनुसार जुलाब र गरम पानी में सिकञ्जबीन घोल कर पिलावें और जो कुछ न हो तो वमन कराना उत्तम है और जो मवाद किसी स्थान से मेदे में आकर गिरता हो तो उस स्थान का जुलाब र उसे ठीक करे, और जो ज्वर में बुहरान के दिन वमन उसे कभी न रोके॥

पित्त की वमन को दूर करने वाली औषधियां।

आमला, कहरुवा, वसलोचन, जौ का सत्तू इनको चाहे ज- र दें या मिला कर॥ (कफ की वमन और आमाशय को पुष्ट वाली औषधि) इन्द्रजौ, लौंग, मस्तगी और सूखा बराबर लेकर कूट छानले और उसमें से साढ़े तीन माशे पैंतीस माशे गुलकंद में मिला कर दे॥ (वादी की वमन प करे) सादन, नागुना, हदीला और पौदने के हरे पत्ते में पीस कर मेदे और तिल्ली पर लगावे, और कुर्स ऐसा अधिक कफ और वादी की वमन में कोई वस्तु लाभदायक

अधिक हिचकी आने का वर्णन।

जो बहुत खा जाने से हिचकी आवे तो खाने के होगा यदि ऐसा हो तो जल्दी वमन कराके भोजन को डालें और पचाव की औषधियां दें और कभी इलायची पोदीना चबाने से भी जम जाता है और कभी चोप से जो हिचकी का कारण बादी हो तो बातल वस्तु के खाने ऐसा होगा और पचाव न होगा जैसा बच्चों को बहुत हैं इस में वह वस्तु जो बादी को दूर कर दें और जो हि तीव्र मवाद या औषधि के खाने से हो तो पहले सिकंजबीन और गरम पानी पिलाकर वमन करावें और ठंडे और लुआब और शीरे दें और गर्म पानी में बादाम का तेल मिला कर एक घूंट पीना और भोजन में मक्खन डालकर खाना अति लाभदायक है। और जो मेदे में कफ के चिमटे रहने ऐसा हो तो लक्षण उसका यह है कि मुंह से पानी निकले पचाव न होगा और खट्टी डकारें आवेंगी, अयारिज का जुल्लाब देके उस मवाद को निकालें और जो यह किसी सादे बिगा से हो तो लक्षण उस बिगाड़ के पाये जावेंगे इसमें गर्म औष पीवें या खावें सब प्रकार की हिचकी को उत्तम उपाय दम रोकना और चिल्लाना है। और जो कारण इसका जिगर मेदे की सूजन हो तो लक्षण और उपाय उसका लिख इसको छींक लेना लाभदायक है और अर्क नाना और अनार का रस मिलाके पीना बहुत सा ठंडा पानी पीना को गले में लटकाना बजाना गस्तगी और दारचीनी औटा पिलाना लाभदायक है॥

इकिलाब मेदे का वर्णन।

इस रोग में भोजन उदर के मथन में निकल जाता है

मेदे के फडकने का वर्णन ।

इस रोग में दिल घबराने की सी दशा आमाशय में मालूम होती है मवाद के अनुसार जुल्लाब दें और जो केंचुए पड़ गये हों तो उन्हें निकालें ॥

वजउलफवाद का वर्णन

यह एक पीड़ा है जो आमाशय में होती है इसमें हाथ पांव ठंडे हो जाते हैं और मूर्छा हो जाती है और दिल तक इसका दुख पहुंचता है तथा जो यह रोग देर तक रहता है तो रोगी मर भी जाता है जो उपाय मेदे की पीड़ा का है वही इसका है।

पेट में जलन होने का वर्णन ।

जो यह रोग कच्ची रोटी या कच्चे फलों के खाने से या मेदे में कच्ची तरी के इकट्ठा हो जाने से हो तो लक्षण उसका यह है कि पहिले भारी वस्तु खाई होगी और भूख के समय जलन में कमी होगी और जो बादी के गिरने से हो तो भूख के समय जलन होगी और चिकनाई खाने से जलन जाती रहेगी जो भारी और तर भोजन के खाने से हो तो उस में वमन करावें और हल्का भोजन दें और आमाशय को-

करें और जो वादी से हो तो पाये हाथ से फस्द असलीम या तासलीक खोलें और इरद का मुरब्बा और सिकंजबीन खवादें ॥

मेदे के ढीला हो जाने का वर्णन ।

यह दो प्रकार से होता है एक तो आमाशय स्वयं ढीला हो जाय और दूसरे उस के बंधन जिन से कि वह बंधा हुआ है ढीले हो जांय पहिले का लक्षण यह है कि पचाव न हो और छाती उभर आवे दूसरे का लक्षण यह है कि आमाशय झुक पड़े और जिस ओर झुकेगा उसी ओर बोझ होगा इस में इतरीफल और फालिज का उपाय करें हल्का भोजन दें सुगंध वाली और कब्ज करने वाली औषधें दें और वह उपाय करें जो अगले पाठ में लिखा जायगा ॥

मेदे की बुनावट के ढीला हो जाने का वर्णन

यह रोग बहुत बुरा है इसमें चाहे जैसा उत्तम भोजन खाया भोजन कभी नहीं पचता तथा सूजन और बिगाड़ के लक्षण नहीं पाये जाते अबारिज ऊद खिलावें और मस्तगी का तेल आमाशय पर मलें और बाकतू मुर्ग का सगदान सुखाकर और पीस कर सवा दो माशे इतरीफल या शर्बत हब्बुल आस के साथ चटावें और हरा पत्थर पीस के पौने दो माशे ॥ दें

मेदे के खिचजाने का वर्णन

जो यह रोग मेदे में हो पचाव नहीं रहेगा और जो पीठ के बंधन में हो तो खाते ही भोजन आंत में उतर जावेगा और रोगी दहनी या बांई ओर झुक जायगा पेट सीधा न कर सकेगा और हसली के बंधन में हो तो रोगी आगे को झुका रहेगा और पीठ सीधी न हो सकेगी इस में वही उपाय करें जो तशन्नुज का है ॥

मेदे के कड़ा हो जाने का वर्णन

यह कड़ापन हाथ लगाने से मालूम होता है और जब बढ़ जाता है तो दिखाई भी देता है इस में मेदे का बिगाड़ अवश्य

होगा जो गरमी से हो तो फस्द बासलीक या कसीलम खोलें; और कच्चा बाम रोगन बनफशे या रोगन गुल में पकाकर लगावें और जो सर्दी से हो तो बाबूना, बालछड़ सरकंडे की जड़ मेथी के बीज, गूगल और कडुए बादाम कूट छानकर लेप करें, कभी ऐसा होता है कि तिल्ली के कड़े हो जाने से उसी ओर से आमाशय भी कड़ा हो जाता है इसमें तिल्ली का उपाय करना चाहिये॥

मेदे के ऊपर के पट्ठों के कड़ाहोजाने का वर्णन

इसकी पहिचान यह है कि कड़ापन एक ओरसे पतला और दूसरी से मोटा होगा और मेदे में कोई बिगाड़ नहीं पाया जायगा इसका वही उपाय करें जो ऊपर के पाठ में लिखा गया है॥

पेट चलने का वर्णन।

जो कोई सादा बिगाड़ या मवाद हो तो लक्षण और उपाय उसका ऊपर लिख चुके हैं और जो फुंसियों और घाव से हो तो उसका वर्णन कर चुके हैं जो जिगर में दुर्बलता न हो तो सफूफ पारहुलम और सफूफ इस्पुलगमा लाभदायक है और जो नजले के गिरने से हो उसमें सोने के पीछे दस्त आवेंगे, इससे नजले का उपाय करें दस्तों को न रोकें परन्तु मवाद को निकालें और मेदे को शुद्ध करें और जो भोजन से दस्त आवें तो पचाव और भोजन को ठीक करें और जो रगों के मवाद से ऐसा हो तो लक्षण उसका यह है कि शरीर मोटा होगा और दस्त पड़े आवेंगे इस में फस्द खोलें और बदन मलें और पसीना निकालें और भूखे रहें और जो जिगर के दुर्बलताके से हो तो दस्त सफेद या हरे आवेंगे इसमें जिगर और आमाशय को शुद्ध करें और मवारिशकस्तूरी खावें और जो दस्त

धारी बांध कर आवे तो मवाद के रंग से लक्षण मालूम होगा फस्द और जुल्लाब से उस मवाद को निकालें ।

और जो मासारीका में सुद्दा पड़ने से ऐसा हो तो उसका वर्णन जिगर के सुद्दे में होगा और जो आमाशय के सोतों के भाने से ऐसा हो त. कोई गलाने वाला मवाद गिरा होगा, या मेदे में गर्म सूजन हुई होगी, या विष खाया होगा कारण के दूर करने के पीछे सिमाक, गरबर्द मसलाचन, छालियां चदन अनार के छिलके, रसौत पीसकर, सिर्का या अंगूर के पानी में मिलाकर मेदे पर लेप करे, और सत्तू मव और सिर्का रोगन बादाम मिलाकर खिलावे औ खाने के पीछे देर तक दाहिनी करवट लेटे रहें और कहते हैं कि दूध और मेदे का रोग मेदे के सू ों का साफ करता है, और जा जुल्लाब के पीने से, अधिक दस्त आवें तो खट्टा मठा ठंडा करके पिलावें ।

आमाशयके छोटा होने का वर्णन

जो यह जन्म से हो तो अधिक भोजन चाहे हलका हो दुख देगा इसका उपाय सिवाय इसके और कुछ नहीं है कि नित्य थोड़ा और पुष्टि कारक भोजन दिया जाय और जो खिचाव या सूजन आदि से हो तो उसका उचित उपाय करे ॥

चौदहवां अध्याय

जिगर के रोगों का वर्णन

जिगर के बिगाड़ का वर्णन

य है यह रोग मवाद से हो या बिना मवाद के इसमें जिगर में बड़ा बिगाड़ होता और इसके साथ हर प्रकार के लक्षण पाये जाते इस में कारण के दूर करें जिगर के बिगाड़ को इसना अति लाभकारक है, यह अपवसतास के साथ हर

क बिगाड़ को लाभ देती है, परन्तु अमलतास उस समय जब कि मवाद को नर्म करना चाहें, अब यहां वह यें लिखते हैं जो असल जिगर को लाभ देती हैं, इन्हें के देने और कब्ज का ध्यान रख ठंडी औषधें, हरी का का रस जरिश्क का शीरा अस्पगोल का लुआब, चन्दन शर्बत, और सिरका बीज और मठा चाहे इनका अकेला दें मिलाके और जो कब्ज न हो तो कुर्स मवाशीर काफिम बिही बेल के सत्त में मिलाके या शर्बत हुम्माज के साथ दें, और कब्ज हो तो हड़ और अमलतास औटा के दें और जब र की अधिकता हो और कोई रोक न हो तो फस्द खोलें, पित्तों से हो तो उतार अधिक ट, और जो आवश्य हो तो लें और ठंडी औषधों क लिये रखना जिगर की को बुझाता है,परन्तु जब तक जिगर से मवाद न निकालें औषधें न लगावें ॥

और गर्म औषधें यह हैं सौंफ, क फम क बीज शहद का कन्द, असारूनिया, गुलकन्द, और कफ के निकालने लिये माउलअसल और इम्बुजफिय लाभदायक है, और सूखे को पानी में औटा क साढ़े चार माशे दवाएलकर के साथ देना जिगर का गर्म और पुष्ट करता है, और न फलामफा और धनिये का इतरीफल भी जिगर को करता है और मवाद अधिक न निकले कि इससे निर्बलता दुखदायक होता है और जो इस रोग में दस्त भी आते हों फा, रेवांके बीज, बबूल का गोंद प्रत्येक साढ़े चार माशे कर और अर्क गुलाब में भिगोकर दवें और जो बादी की रता हो तो तरी पहुंचावें और बादी के निकालने के लिये बीमूम औटाकर या इफतीमून की गोलियां माजूना-

घन के साथ दें और फैफदीमुरव्वम जिगर पर लगावें, खुश्की और कड़ापन जाता रहता है परन्तु जो पहुंचावें नहीं तो जलवर होजाने का डर है और वाचत देव और जो उसके साथ कोई रोग भी हो तो भी उपाय करें ॥

जिगर के निर्वल हो जाने का वर्णन

चाहे जिस कारण से हो उसका लक्षण यह है कि और मूत्र मांस के धोवन का सा होगा और शरीर दुबला और भूख बिलकुल न होगी और दाहिनी ओर बगल में से नीचे की पसली तक लम्बाई में पीड़ा होगी परन्तु पीछे जब भोजन जिगर में जाने लगेगा तो अधिक पीड़ा और रोगी का रंग सफेद और हरा होगा और कभी पीला कभी काला जानना चाहिये कि देह के प्रत्येक स्थान में शक्ति हैं पचाव दूर करने वाली शक्ति खेंच लेने वाली और जानने वाली शक्ति जिगर की चारों शक्तियों में निर्वल हो जायगी उसे जिगर की निर्बलता कहेंगे। और इन चारों की निर्बलता के अलग अलग हैं जिगर के पचा निर्बलता के लक्षण यह हैं कि दस्त और मूत्र धोवन होगा और सूजन और उदासी आदि पाई जायगी और शक्ति के लक्षण यह हैं कि दस्त और मूत्र थोड़े२ होंगे में रंग भी थोड़ा होगा और भूख न लगेगी और तीसरी श लक्षण यह है कि दस्त बड़े सफेद और पतले आवेंगे और दुबला होगा और चौथी शक्ति के लक्षण यह है कि दस्त मूत्र मांस के धोवन से होंगे और रुधिर के पतला होने से ढीला होजायगा और मुख पर सूजन और उदासी होगी जो जिगर के बिगाड़ से हो उसका उपाय लिख चुके हैं

यो सूजन या जिगर के फट जाने से या किसी और कारण हो उसका उपाय आगे आवेगा और जो किसी और स्थान में तो उस स्थान का उपाय करें और जिगर और रूह को पुष्ट रहें और फस्द असीलम भी लाभदायक है ॥

जिगर के सुद्दे का वर्णन ।

इस रोग में जिगर के अन्दर या उसकी रगों में कोई गाढ़ा फंस रहता है चिन्ह उसका यह है कि शरीर में रुधिर कम हो और रंग पीला हो, और दस्त भोजन से आवें, और भारी हो, और जो सुद्दा जिगर के ऊपर होगा तो बोझ होगा, और मूत्र थोड़ा और पतला आवेगा और जो सुद्दा हो तो बड़े और पतले आवेंगे इस रोग में और जिगर की में यह अन्तर है कि सूजन में ताप होती है, और अधिक हो तो सुद्दे में बोझ अधिक होगा जो सुद्दा जिगर से ऊपर मिजाज के अनुसार मूत्र लाने वाली औषधें पिलावें और जिगर के भीतर हो तो नर्म करने वाली औषधें और जुल्लाब उपायों में प्रकृति का ध्यान रक्खें, और जो कब्ज करने वस्तु खाने से सुद्दा पड़े तो रोगन बादाम और दूध और का हरीरा पिलावें और अनार का रस भी लाभदायक और जो जिगर की रगों के सकड़ा हो जाने से सुद्दा हो तो रोग जन्म से ही होगा, इसका उपाय कुछ नहीं है सिवाय कि भारी भोजन खाने से बचते रहें, और कभी २ मूत्र वाली औषधें पिया करें ॥

मासरीका के सुद्दे का वर्णन ।

लक्षण उसका यह है कि मेदे के बीच में भीतर की लिखा बोझ मालूम हो और आमाशय और जिगर दोनों

चंगे हो और दस्त कच्चे आवें, और शरीर दुबला होता ॥ इसका ठीक उपाय यही है जो जिगर के भीतर के सुद्दे ॥ और वह औषधें दें जो सुद्दे का दूर करें ॥

जिगर के फूल का जाने वर्णन ।

इसका लक्षण यह है कि दहिनी पसली के तले पीड़ा खिचाव हो और बोझ न हो और तप और पचाव के पीछे अधिक फूल जाय, इसमें कासूनी खिलावें, और शर्बत दी पिलावें और गर्म पानी से बिना कुछ खाये पीये स्नान परन्तु हवा न लगे, और नमक बाजरे और राख से सेंके और आवश्यकता हो तो जुल्लाब दें, और मूत्र लाने पानी पिलावें और हल्का भोजन जिसमें वातनाशक पथ्य हो खिलावें ॥

जिगर की पीड़ा का वर्णन ।

जो इसका कारण कोई बिगाड़ या सुद्दा आदि हो तो का उपाय लिख चुके हैं, और जो शिरका या सूजन जिगर के फटने या पथरी या रेत पड़ने से हो उसका आगे लिखेंगे ॥

शिरका का वर्णन ।

जब बिना कुछ खाये या मिहनत करने के पीछे या शी जल्दी में ठंडा पानी पीलें उसकी ठंड जिगर को लगे पीड़ा हो तो गरम पानी में कपड़ा भिगो के गरम २ जिगर रक्खें और बालछड़ और मस्तगी गुलाब और सौंफ के में पीसकर गर्म करके जिगर पर लेप करें और गरम से धारें, और जो इसमें हकीम से कोई भूल हो जायगी जलन्धर या जिगर की सूजन हो जायगी ॥

जिगर की सूजन का वर्णन ।

जो यह रुधिर या पित्त की अधिकता से हो तो लक्षण इस का यह है कि तप और प्यास होगी और जिगर में बोझ पीड़ा और जलन होगी और उसके सिवाय रुधिर और पित्त की अधिकता के लक्षण पाये जायगे और जिगर की सूजन के भीतर या बाहर होने के लक्षण तीसरे पाठ में लिख चुके हैं और सिवाय उसके जिगर की भीतर की सूजन में वमन मूर्च्छा और हाथ पांव ठण्डे होंगे और बाहर की सूजन में खांसी और दम का रुकाव होगा और हसली नीचे को खिचेगी और मूत्र थोड़ा होगा और सूजन टेढ़ी दिखाई देगी जब सूजन रुधिर की अधिकता से हो तो फस्द बासलीक या हफ़ अंदाम खोलें और कई बार करके रुधिर निकालें कि निर्बलता न हो और कासनी और खट्टे मीठे अनारों का रस सिकञ्जबीन मिलाकर पिलावे और जो सूजन अंदर हो तो मूत्र लाने वाली औषधें न दें परन्तु फलों के अर्क से मवाद को नर्म करें और जो अधिक नर्म करना हो तो अमलतास हरी कासनी मकोय के पानी में मलकर पिलावें।

और जो सूजन जिगर के ऊपर हो तो मूत्र लाने वाली औषधें पिलावें परन्तु कब्ज के दूर करने का भी ध्यान रक्खें और नरम करने वाली औषधें दें जैसे लुआब बीदाना या ईसबगोल आदि, और जो सूजन जिगर में रुधिर की अधिकता से हो तो उसके आदि और अंत में जो लेप करें उस में ठंडी औषधें जो मवाद को इधर गिरने से रोकें और जो सूजन के पकाने वाली औषधें हों उन दोनों को मिलाना चाहिये आदि में पहिली प्रकार की औषधें अधिक हों और अन्त में दूसरी प्रकार की और मध्य में दोनों बराबर हों और

की सूजन में भी यही उपाय करें, परन्तु फस्द न खोलें और उसके आदि में केवल ठंडी औषधों का लेप कर सकते हैं जो मवाद को इधर गिरने से रोकें जैसे जौ के आटे को सुआब और सिरके में पीस कर लेप करे और जो अवश्य हो तो गरमी के बुझाने के लिये थोड़ासा कपूर भी मिलावें और जो खारी कफ न हो तो बोझ अधिक होगा और तप न होगी, और पीड़ा कम होगी और मुंह जीभ और दस्तों का रंग सफेद होगा जो सूजन भीतर हो तो मवाद को नर्म करने वाली औषधें और जुल्लाब दें ॥

और जो सूजन ऊपर हो तो मूत्र लाने वाली औषधें पिलावें और इस के पीछे प्रकृति को ठीक करें और जो सूजन बादी से हो तो जिगर के स्थान पर कड़ा पन होगा इस में बादी की मुंजिस दें और मोम रोगन लगावें और जब नरम हो जावे तब यह औषधें जो बादी को दस्त और मूत्र में निकालें और उचित हो तो फस्द भी खोलें इससे जल्दी लाभ होगा और एक प्याला भर के बर्फ दिन की जमी हुई ऊंटनी का दूध मीठा डालकर पिलाना इसमें अति लाभदायक है परन्तु इस का ध्यान रक्खें कि गरमी न हो जो जिगर पर चोट लगने से सूजन हो तो फस्द खोलें और ईसबगोल के लुआब में गिले-अरमनी साढ़ेतीन माशे पीस कर पिलावें और रावन्द गिले-अरमनी इस्पुलआस इसके लिये लाभदायक है और गिले-पने और रेवतचीनी प्रत्येक साढ़े दश माशे और मोमियाई सात माशे पीसकर रोगन बनफशा या किसी और तेल में मिला कर लेप करें इसके पीछे वही उपाय है जो ऊपर लिखा गया है।

पेट के पट्टों की सूजन का वर्णन।

यह सूजन एक ओर से मोटी और दूसरी ओर से पतली

ऐसा लम्बाई में हो या चौड़ाई में। इसमें और जिगर का सूजन में यह अन्तर है कि जिगर की सूजन टेढ़ी धनुषाकृति होती है और यह नहीं होती इसमें फस्द खोलें और जुल्लाब दें और आदि में केवल वह औषधें लगावें जो मवाद को इधर गिरने से रोकें और मवाद के कड़ा हो जाने से न डरें और अंत में केवल वह औषधें लगावें जो सूजन को पकादें और निर्बलता हो जाने का डर न करें और जब सूजन पकजावे और पीब पड़े तो नश्तर लगावे और देर न करें कहीं ऐसा न हो कि कोई और रोग उत्पन्न होजाय ॥

जिगर के फोड़े का वर्णन ।

जो उपाय मेदे के फोड़े का और फेफड़े की सूजन का है वही इसका है जो मवाद आंतों की ओर गिरने लगे तो हलका सा जुल्लाब दें और जो गुर्दे की ओर गिरे तो मूत्र लाने वाली औषधें पिलावें और जो पेट में जावे तो जलधर होजाने का डर है उसमें जिनकी जलधर का उपाय करें और जो मवाद आपसे आप पक कर बहजावे तो रोगों में कमी होगी और मूत्र दस्तों और मूत्र में पीब न निकलेगी ॥

जिगर की फुन्सियों का वर्णन ।

लक्षण उसका यह है कि जिगर में कोई गरमी से बिगाड़ हो और जिगर के स्थान पर जलन हो और कभी रोमांच खड़े हो जाय और प्यास लगे इसका यह उपाय करें जो गरम मवाद के बिगाड़ से पहिले पाठ में लिखा गया है ॥

जिगर के फड़कने का वर्णन ।

इसमें ऐसा मालूम होता है कि कोई फूकता है, और यह बात थोड़ी देर तक रह कर बंद हो जाती है कारण इस का जिगर का दुखना है और बादी का फिरना और रह

इसमें वह औषधें दे जो सुद्दे को दूर करे और दाहिने हाथ से फस्द असीलम खोले ॥

जिगर की पथरी का वर्णन

लक्षण उसका यह है कि भोजन पचने के पीछे वमन आवे और कोई वस्तु चुभे जिससे जिगर में पीड़ा हो और कभी हाथ लगाने से जिगर पर सूजन और कड़ापन मालूम हो और देखने में भी आवे ॥ और जब दाहिने हाथ से फस्द बासलीक खोलें और नश्तर गहरा लगे तो रुधिर के नीचे रेत हो इसका उपाय वही है जो अठारहवें अध्याय में मूत्र में रेत आने के वर्णन में लिखा गया है ॥

जिगर के छोटा होने का वर्णन ।

इसका लक्षण और उपाय वह है जो आमाशय के छोटा होने में लिखा गया है परन्तु इस में जिगर से मवाद निकालना चाहिये चाहे गरम करने वाली औषधें दें चाहे मूत्र लाने वाली ॥

जिगर से दस्त आने का वर्णन ।

यह रोग छः प्रकार का है, (१) कीही जिस में दस्तों में पीव आती है, कारण इस का जिगर के फोड़े का फूटना है उपाय इस का लिख चुके हैं ॥ (२) गरमाली जिस में मांस के धोवन के से दस्त आते हैं इसका कारण जिगर की निर्बलता है उपाय इसका भी लिख चुके हैं इसमें मुनक्के बीज समेत खाना अति उत्तम है ॥

(३) दमनी जिस में रुधिर के दस्त आते हैं, कारण इस का जो केवल रुधिर की अधिकता हो और घाव न हो तो लक्षण उसका यह है कि एक बार बहुत सा रुधिर निकल कर ठहर जावे और फिर थोड़ी देर पीछे निकले और चिन्ह

की अधिकता के उत्पन्न हों, और जो जिगर पर घाव या
लगने से हो तो मेदे और आतों के खाली होने पर थोड़ा
रुधिर बराबर चला आवेगा और जिन्द घाव के उत्पन्न
। जो यह रोग रुधिर की अधिकता से होतो जब तक निर्ब-
ल बढ़ने लगे दस्तों को न बन्द करें और शुरू में फस्द खोलें
मवाद को दूसरी ओर गिरावें, उपाय इसका यह है
ाथ पांव और छातियों को कस कर बांधें और फस्द में
२ रुधिर ठहर ठहर के निकालें और कब्ज की आवश्य-
हो तो कुर्स कहरुवा कुलफे के बीजों का शीरा और बारतंग
ानी मिला कर दें और भोजन थोड़ा खावें और, जो घाव
ारण से हो उसका उपाय यही है, और जो यह रोग रुधिर
अधिकता न हो तो कारण को दूर करें और कुर्स नफमुलदम
ारावन्द बढ़ा कर देना कब्ज और घाव भरने के लिये अति
दायक है ॥ (४) सफरावी इसमें जिगर पर गरमी होगी,
का उपाय भी जिगर के बिगाड़ में लिख चुके हैं, परन्तु म
निकालने और ठीक करने से पहिले दस्तों को न रोके ॥
) सदीदी कारण इसका जिगर में रुधिर या किसी और मवाद
जल जाना है, इसका लक्षण और उपाय भी यही है, जो
पे प्रकार में लिखा गया है। चंदन को गुलाब में घिस कर
गर पर लगावे, और दाहिने हाथ से फस्द असीलम खोलें ॥
) मासरी इसमें दस्त गाढ़े कीचड़ से आते हैं, इसका कारण
जिगर के फोड़े का फूटना है या जिगर के मुद्दे का खुल
ना और बुरे मवाद का बहना या जिगर के मवाद का जल
ना है इसमें लक्षण और कारण जान कर उचित उपाय करें,
ौर जब तक दुर्बलता न बढ़ने लगे दस्तों को कभी न रोकें,इन
स्तों और आमाशय के दस्तों का अन्तर जिगर और आमाशय

के लक्षणों से जाना जाता है जिगर के दस्तों में ग्री होगी, दस्त पारी करके आवेंगे, खाली पेट में दस्त कम पीड़ा न होगी और प्रति दिन रोगी दुबला होता जायगा आमाशय के दस्तों में यह बातें न होंगी, परन्तु जब दस्त देर तक रहते हैं तो मेदे से भी दस्त आने लगता समय मरोड़ और जिगर के चिन्ह इकट्ठे हो जावेंगे, ऐसे पर दोनों के अनुसार उपाय करें ॥

सूउल किनीआ का वर्णन ।

यह रोग भी जिगर का बिगाड़ है और जलंधर से होता है। लक्षण इसका यह है कि मुख और हाथ पांव पर सुजाहट होती है और जिगर की निर्बलता के लक्षण उत्पन्न हैं ॥ उपाय इसका जलधर में लिखा जायगा क्योंकि जब तक रोग पुष्ट नहीं होता है इसलिये ठण्डी निर्बल औषधें और फर करें और पैदल चलें, जो यह रोग बढ़ जावे और होता जान पड़े तो एक रत्ती ऊटनी के ताजा दूध में दो सिकञ्जबीन मिला कर दें अथवा अनार का रस पिलावें, पानी बिलकुल न पीवे उसके बदले कासनी और सौंफ और कोय का अर्क पिलावें और जो हो सके तो भूखे रहें नहीं मूंग या चनों को औटा कर उनका पानी दें और जो बवासीर या मासिक रुधिर के रुकने से हो तो मन्त्र जारी औषधें देकर और लेप लगा कर उन्हें जारी करें और जो इस लाभ न हो तो फस्द साफिन खोलें और रुधिर थोड़ा फस्द से पहिले मुन्ज़ाब पिलाना उत्तम है ॥

जलंधर का वर्णन ।

यह रोग तीन प्रकार का होता है (१) लहमी रस में

र पर सुरसुराहट होती है और मवाद मांस के भीतर होता (२) जिकी इस में पेट मशक सा हो जाता है, और हाथ पांव कभी सूजन होती है और कभी नहीं होती, और पेट के पर- वें तरी समा जाती है (३) तबली इसमें गाढ़ी वाही पेट के प में समा जाती है और पेट पर हाथ मारने से तबले की सी ाज निकलती है इसमें पहिले कारण को दूर करे और फिर र को ठीक करे और गरमी पहुंचावे और जो गरमी हो सो शान्त करे फिर इस रोग का उपाय करे अर्थात् दस्त मूत्र और पसीना लाने वाली औषधें दे जैसे शरीर को चालू ाइ देन, और खुश्क औषधें मलना जैसे नरकचूर और और सूपकला और महुवे का आटा आदि और खुश्क वाली औषधों का लेप करे ठण्डा पानी न पीवे और गर्म ें भी अधिक न दे और जो बिना ठण्डा पानी पिये चैन तो छोटा लोटा जिसकी टोंटी सकड़ी हो उससे पकड़ बूंद गले में टपकावें और वह पानी भी पका हुआ और ठण्डा हुआ हो और थोड़ा सिरका भी उसमें मिलादें और मो क बदले कासनी और सौंफ का अर्क दें तो उत्तम है और थोड़ा हो । उचित है कि दिन भर में भोजन से तिगुना पैकावें और स्वस्थ दशा में जितना भोजन खाते हों उस १ हिस्सा इस रोग में खावें इसमें अनार अति लाभदायक ना खा सके खावे और जहां तक हो सके अन्न न दे और सौंफ अनीसून मिलादें और सूखी रोटी खिलावे, बकरी का भी अति लाभदायक है ॥ इसके भोजन और पानी के खावें, यह दूध पिलानेकी रीति यहहै कि पहिले दिन १४० खावें, फिर हर रोज १४० माशे बढ़ा दिया करें, परन्तु

इसका ध्यान रक्खें कि आमाशय में दूध जमने न पावे इसके पोदीना और इत्र सिकञ्जबीन कभी२ दिया करें तो दूध न ... गा और लहबी जरावन्द,का जुल्लाब दें, और जो गरमी हो हरड़ को औटा के दर्द मुकर्रर के साथ दें और जिकी में गरमी न हो तो फलफलानमहार दें, और जो गरमी हो तो फलफलानमवारिद और पीली हरड़ का जुल्लाब,अति लाभदायक है और तपली में मिजाज के अनुसार जुल्लाब दें, और सब प्रकारों से मवाद निकालने के पीछे जिगर पुष्ट करने के लिये कुर्स अम्बर बारीस,आदि खिलावें और मूत्र लाने के लिये कुर्स माजरीयूत दें और एक ही औषध मूत्र लाने वाली नित्य न दें उसे बदलते रहें और जो औषधें दें उसे भली भांति पीसलिया करें कि वह जिगर में तुरन्त पहुंचे। इस रोग में पसीना लाना भी अति लाभदायक है॥

रीति उसकी यह है कि खारनिमक को बाबूना के तेल में मिला कर शरीर पर मलें और पसीना को पोंछते जावें और दूसरी रीति यह है कि गरम रेत में रोगी को बिठावें या लिटावें उसके चारों ओर शरीर को रेत से तोप दें केवल मुख खुला रहै जब रेत ठण्डी हो जावे तो और गरम तेल डालें इससे सूजन जल्दी पचक जाती है और जो सूजन किसी एक स्थान पर हो, जैसे हाथ पांव में तो उसी को रेत में गाड़े और ऐसे ही धूप में बिठावे और समुद्र के पानी से स्नान करावे। जो नमक को पानी में घोलकर कई दिन तक धूप मे रक्खें वह भी समुद्र के समान हो जाता है। यह लेप तरी को सुखाता है यथाः मेथी का चून, जंगली कबूतर की बीठ, बकस का पेड़ का

गोंद और पुरानी चरबी इन सब को मिलाकर मरहम बनालें ढोलकी जलन्धर में सारे शरीर पर लेप करें और तबली में हाथ पांव पर और जिक्की में केवल पेट पर लेप करें तबली जलन्धर में मवाद निकालने के पीछे बादी के तोड़ने का उपाय करें और सूखा सुदाब, इसपद, सौंफ और उसका पानी इनकी बत्ती बनाकर गुदा में रक्खें। जिक्की जलन्धर में कोई हकीम चीरा देते हैं उससे पीला पानी निकलता है परन्तु इसमें डर है। इस रोग में जो पानी रोगी को पिलाते हैं उसके पकाने की यह रीति है कि सौ हिस्से पानी और एक हिस्से सिरका मिलाकर औटावें और जब तिहाई रह जाय तो ठंडा करके पानी के बदले पिलाया करें। इससे जलन्धर की प्यास बहुत बुझती है, प्यास के बुझाने और जिगर के सुद्दा खोलने के लिये सिरका अति लाभदायक है अनिरक भी अच्छा है किन्तु जो खांसी हो तो अनिरक न दें। जो इस रोग के साथ कोई और रोग हो तो उसका भी ध्यान रक्खें। जिक्की जलन्धर पेट पर लेप करें, नमक अरमनी, गुलइटो फर्दमाना, और मुनक्का, प्रत्येक दश माशे, करफ्स के बीज, साढे चौबीस माशे, बकरी की मेंगनी १७५ माशे, जौ का आटा और गौ का गोबर प्रत्येक २१० माशे, सब को पीसकर सौंफ या कासनी के पानी में मिलाकर पेट पर लगावें

तबली जलन्धर में जब बहुत दिन हो जावें और पेट कड़ा होजावे तो उस समय पेट पका होने के सिवाय और कुछ डर नहीं है और उपाय उसका यह है कि इन औषधों का लेप करें जिनसे पेट नर्म हो उसके पीछे बाबूना, नाखूना, दोनाफरमा, सातरा, सुदाब के बीज, जुन्दबेदस्तर, झाऊ की राख और नतरून, कूट छानकर सुदाब के पानी में पीस कर पेट पर लेप करें, और जब जलन्धर में कोई औषध लाभदायक न हो तो

पांच स्थान पर दाग दें एक मेदे पर दूसरा जिगर पर, तीसरा तिल्ली पर और चौथा मेदे पर नीचे को पांचवा टूटी पर। जो रोगी पुष्ट हो तो सब दाग इकट्ठा दें नहीं तो ठहर ठहर कर दें।

पंद्रहवां अध्याय।

यरकान तिल्ली और पित्तों के रोगों का वर्णन।

पीलिया रोग का वर्णन।

इस रोग में शरीर का और आंखोंका रंग पीला या काला हो जाता है, पीला यरकान पित्तों के फैलने और काला यरकान वादी के फैलने से होता है॥

पीला यरकान (पीलिया) कई प्रकार का होता है, एक वह बुहरान के दिन पित्तों के चमड़े की ओर आजाने से होता है, इसमें जो रोगी पुष्ट हो तो कुछ उपाय न करें और जो दुर्बल हो तो उसे गर्म पानी में बिठावें कि शरीर के छिद्र खुलें और मवाद भली भांति त्वचा में आ जाय और केवल सिकन्जबीन को या उस को कासनी के शीरे के साथ पिलावें। जो पीलापन आप से आप जाता रहे तो अच्छा है नहीं तो खोलने वाली और जला देने वाली औषधें पिलावें (२) जिगर में गरमी से कोई बिगाड़ उत्पन्न होने के कारण हो बहुधा रुधिर की तप में होता है इसकी पहिचान जिगर के बिगाड़ से होगी इसमें वही उपाय करें जो जिगर के बिगाड़ में लिखा गया है॥ (३) पित्ते के बिगाड़ से उत्पन्न हो लक्षण उसके यह हैं कि अचानक उत्पन्न होगा और उससे पहिले सफेद मूत्र आवेगा फिर पीला होकर गाढ़ा और काला हो जायगा

ौ न कोई विगाड़ और सुद्दा जिगर में होगा और मूत्र ी की वैसी ही रहैगी इसमें सिकजवीन कासनी के शीरे के ाथ पिलावें और जो उपाय जिगर गरमी का है वही इस ा है (४) पित्ते में गरम सूजन उत्पन्न हो और उससे पित्त ल कर फैले, लक्षण उसका यह है कि तप रहैगी और ांभ में कांटे पड़ेंगे और उबकाई और वमन होगी जो उपाय ागर की गरम सूजन का है वही इसका है ॥ (५) जो सब रीर और रगों की गरमी से उत्पन्न हो उसका लक्षण यह कि देह जलेगा और कब्ज रहेगा और अंग में सुमसी और ा लक्षण गरमी के जानोंगे। जो कोई सादा विगाड़ हो तो ाई पिलावें और जो मवाद हो तो उसे निकाले और सारे ीर को ठीक करें और तरी पहुंचाने वाले तेल मलें और उसी ार के भोजन में विठावें ॥

(६) जो शरीर के छिद्र बंद होने से उत्पन्न होता है उसका ण यह है कि गरमी ऋतु में बहुत चलने से रेत शरीर पर ाती है और छिद्र बद हो जाते हैं इससे पित्त उबल कर ते हैं इसमें खैरू के फूल और गेहूं की भूसी औटाकर उसके पानी से न्हावें ॥

(७) जो जिगर की गर्म सूजन से हो तो लक्षण और उपाय का उसी सूजन में लिखा गया है ॥ (८) जो जिगर के सुद्दे ो तो इसका उपाय भी जिगर के सुद्दे में मिलेगा ॥ (९) विषैले जानवर के काटने और विषखाने से उत्पन्न हो, ें विष का अवगुण दूर करे और वह औषधें दें जो उचित हों जो गरम विष खाया हो तो कुर्स काफूर और ठंडी औषधें ौर जो ठंडा विष हो तो तिरयाक फारूक खिलावें (१०) पित्त ैल हो जावे और पित्तों को जिगर से न खेंचे, और

सब देह में फैल जावे, लक्षण उसका जीभपलाना, पित्तों वमन होना कब्ज रहना और दस्त बिना रंग के होता है इसका उपाय वही है जो जिगर की निर्बलता का है, (११) जिगर और पित्त के बीच में जो रास्ता है उसमें सुद्दा पड़े लक्षण इस का वही है जो पित्त की निर्बलता में लिखा गया है और दस्त भी धीरे धीरे सफेद आने लगेंगे इसमें जिगर के सुद्दे को खोलें

(१२) पित्तों और आंतों के बीच में जो रास्ता है उसमें सुद्दा पड़े, इसमें अचानक दस्त सफेद आवेंगे, और कब्ज होगा इसमें भी सुद्दे को खोलें और इन दोनों प्रकारों में शपद लास को गरम कल्ले के पानी में घोल कर कड़ुये बादाम का रोगन मिलाकर पिलाना अति लाभदायक है ॥ (१३) इन दोनों रास्तों में बुरा मांस या मस्सा उत्पन्न हो, लक्षण इस का वही है जो ऊपर के प्रकारों में लिखा गया है, परन्तु उपाय इसका नहीं हो सकता है ॥

(१४) जो कफ की कूलन्ज से उत्पन्न हो, इसका कारण यह है कि लसदार कफ उसका रग के मुख पर चिपट जावे जिससे पित्त गिरते हों, उपाय इसका वही है जो कूलन्ज का है ॥

इस रोग में कारण दूर करने के पीछे जो पीलापन आंख में रह जाय तो गरम स्थान में बैठ कर पुराना सिरका नाक में डालें और सिरका और गुलाब मिलाकर आंख में टपकावें और इसबगोल को औटाकर कुल्ला करे ॥

काला यरकान (कमलबाय) भी कई प्रकार का होता है, (१) जो बुहरान के दिन हो, तिल्ली के रोगों में इसके पीछे तिल्ली का यह रोग घट जावेगा, इसका उपाय वही है जो पित्तों के प्रकार में लिखा गया है, और बाबूना और सोये का तेल मलना अति

[आ]रामदायक है । (२) जिगर और तिल्ली के बीच में रास्ता है [उ]समें सुद्दा पड़े, लक्षण उसके यह हैं कि भूख धीरे २ घटेगी और जिगर में बाफ होगा और यरकान भी धीरे २ बढ़ेगा, इसमें सुद्दे खोलें, और जुल्लाब दें, और बायें हाथ से फस्द बासलीक अथवा असीलम खोलें ॥ (३) मेदे और तिल्ली के बीच में जो रास्ता है उसमें सुद्दा पड़े इसमें भूख अचानक जाती रहेगी और तिल्ली में बाफ होगा इसका उपाय भी ऊपर की प्रकार का सा करें ॥ (४) जो रुधिर के जल जाने से उत्पन्न हो, यह जिगर की गरमी के कारण से होता है इस का लक्षण और उपाय जिगर के बिगाड़ में देखो । (५) जो तिल्ली की निर्बलता से उत्पन्न हो इसका उपाय आगे लिखा जायगा ॥

(६) जो तिल्ली की सूजन से उत्पन्न हो इसका वर्णन भी आगे करेंगे ॥ (७) जिगर में अधिक ठंड से बिगाड़ हो और उससे यह रोग उत्पन्न हो उपाय इसका जिगर के रोगों में लिखा गया है ॥

जब यरकान पीले और काले दोनों साथ हों तो दोनों [हा]थ से फस्द खोलें, तीन दिन बीच देकर और ऐसी औषधें [औ]टा कर पिलावें जो बादी और पित्तों को निकालें, और [बा]द अधिक हो उसके अनुसार उपाय करें और जिगर और [ति]ल्ली को ठीक करें ॥

तिल्ली के रोगों का वर्णन ।

[ग]र्मी का लक्षण तिल्ली का जलना (मूत्र और दस्तों का रंग [ला]ल और काला होना गरमी के लक्षण पाये जायगे) ठंड [क]ा लक्षण यह है कि तिल्ली के स्थान पर गड़ बड़ होना भूख [क]ा घटना और दर्द के दूसरे लक्षण सुरदी के लक्षण

तिल्ली की सूजन के पकजाने का वर्णन।

लक्षण पांव पड़ने का यह है कि पीड़ा होती है, जैसे कोई वस्तु चुभती हो और मूत्र में तलछट निकलती है और दुर्गंध आती है और कभी ऐसा होता है कि यह सूजन अंदर को फटती है और उलटी और दस्तों में निकलती है उपाय, इसका यह है जो जिगर के फोड़े का है परन्तु मूत्र लाने वाली औषधें प्रकृति के अनुसार दें और जो पीब निकल जाने के पीछे भी कड़ापन रहे तो बादी की सूजन के लेप लगावें और कब्ज करने वाली औषधों से बचें और जब सूजन कड़ी होके पुरानी हो जाय और कोई औषध लाभकारक न हो तो दाग दें इसकी रीति यह है कि चाम को तिल्ली की जगह से मोचन से पकड़ के ऊंचा उठालें और लोहे के औजार से जिसकी दो नोकें हों भले भांति गरम करके दाग दें, और उसी दाग के इधर उधर दो दाग और दें कि तीन बार में छै दाग हो जांय और जो शस्त्र छः पहल का हो तो और भी अच्छा है उससे एक ही बार में छः दाग हो जावेंगे।

तिल्ली की निर्बलता का वर्णन

जो तिल्ली की आकर्षण शक्ति में निर्बलता हो लक्षण उसका यह है कि भूख बिलकुल जाती रहेगी, और बादी के रोग उत्पन्न होंगे और जो उसकी थाम की शक्ति निर्बलता हो तो सौदा की उलटी और दस्त होंगे, और जो उसके पचाव में निर्बलता होगी तो भूख बहुत होगी, या बादी के दस्त होंगे और दूर करने वाली शक्ति में निर्बलता हो तो तिल्ली बढ़ जायगी और भूख जाती रहेगी तिल्ली के पुष्ट करने के लिये इफ़तमीन रूमी माकड़ भाऊ का फल कदंपाना और सरफ़ह

की मद की कुल्ली करें, और किम की मद और गुलाब के फल, गूगल सब को कूट कर भाऊ के पत्तों के पानी में या गुलाब के पानी में मिलाकर सिरके के साथ तिल्ली पर लेप करें और तिल्ली को खुरखुरे कपड़े से मले और उस पर खाली सींगी लगावें।

तिल्ली के सुद्दे का वर्णन।

इस में तिल्ली में बोझ होगा और सूजन के लक्षण बिलकुल न होंगे जिगर के सुद्दे में जो पुष्ट करने वाली औषधें लिखी गई हैं दें, और सिकञ्जबीन बुजूरी तथा कुर्स किम अति लाभदायक है॥

तिल्ली की वातज सूजन का वर्णन।

यह तिल्ली के पचाव और दूर करने वाली शक्ति की निर्बलता से होती है इस में तिल्ली को पुष्ट करे और गेंहू की भूसी बाजरा और नमक कूट कर सेके और खारी नमक, पोदीना, सुदाब सिरके और शहद में पीसकर लेप करें और वारे लगावें और तरातेजक का चूर्ण खिलावें॥

तिल्ली में पथरी पड़ने का वर्णन।

इस में मूत्र में रेत आती है और तिल्ली में चुभती है इसके सिवाय और कोई रोग नहीं होता इञ्जीर को सिरके में भिगो कर खिलावें और उसी का लेप करें और मूत्र लाने वाली तथा वह औषधें दें जो गुरदे और मसाने की पथरी को तोड़ती है।

सोलहवां अध्याय।

आंतों के रोगों का वर्णन।

जलकुल अमआ का वर्णन।

इस रोग में भोजन बिना पचे हुए दस्त होकर

जाता है, जो आंतों में फुन्सियां हों तो जलन और पीड़ा होवै और पतला और पीला पानी निकलेगा इस में पित्तों का जुल्लाब दें फस्द खोलें ठंढी औषधें पिलावै और सफूफ जद ... अमला खिलावै ॥

और जो फुन्सियां आंतों के बाहर हों तो खुजली और चुभना भीतर होगा पीड़ा कभी टूंडी के ऊपर कभी नीचे और कभी आस पास होगी इसमें हुकना करें और ठंढी औषधें टूं के नीचे लगावें। जो कफ की अधिकता से हों तो जुल्लाब दे और उलटी करावें और हब्ब अयारिज से मवाद निकालें और सुखानेवाली औषधें दें ॥

जो तरी से बिगाड़ हो तो सुखानेवाला सफूफ खिलावै और रोगनगुल पेट पर मलें ॥ जो पित्तों की अधिकता हो तो पित्तों को निकालें और पीली हरड़ दें ॥ जो कफ और पित्त दोनों हो तो दोनों को निकालें और पीली हरड़ सात माशे हब्बु ल आस, माजू प्रत्येक पौने सात माशे सब को कूट छान कर उस में हाजों पौने सात माशे मिला के यह सफूफ सात माशे फकावें ॥ जो फालिज से यह रोग हो तो उसी का उपाय करे और जो जुल्लाब से यह रोग हो तो चार तुख्म भून कर रोगनगुल में चिकना करके फकावें, और हाजों को मठे में इतना औटावें कि वह जम जावें तो उसका खिलाना अति लाभदायक है ॥

आंतों से दस्तों में रुधिर आने का वर्णन ।

यह रोग दो प्रकार का है एक तो यह कि आंतें छिल जा दूसरे यह कि रुधिर की अधिकता से आंतों की किसी रग क मुंह खुल जावे ॥

(१) आंतों के छिल जाने के कारण जो पित्त हों तो पित

के दस्त आवेंगे, फिर दस्तों में छिलके निकलेंगे, और फिर रुधिर छिलकों समेत और आम निकलेगी, और गर्मी के लक्षण पाये जावेंगे, आदि में कच्चे अंगूरों का रस, अनार का रस और जो औषधें खट्टी और कब्ज करने वाली हों खिलावें, और जब मवाद अधिक हो जावे तो उसे निकालें, और लुआब असपगोल, लुआब बीहदाना, और लसदार औषधें जो दाह को बंद करें पिलावें, और कुलफे का शीरा, गिले अरमनी के साथ पिलाना और सुफूफ मिकलियासा अति लाभदायक है, और जब तुरन्त दस्तों को रोकना हो तो बीजों को भून डालें और केवल बारतंग लाभदायक है और जब पीड़ा अधिक हो तो चार तुख्म का लुआब रोगनगुल में मिलाकर पिलावें ॥

और जो कफ से हो तो पहिले कफ के दस्त आवेंगे और भूखा लुकाम नजले के पीछे ऐसा होता है पहिले कारण को दूर करें और यह औषधें दें जो घाव पर दी जाती हैं जैसे रेहां के बीज बारतंग और जंगली तुलसी आदि और काली हरड़ घी से चिकना कर भूनकर और कूट छानकर तीन माशे लें और उसके बराबर सफेद कंद मिलाकर खिलावें ॥

जो यह रोग बादी से तो हर समय मरोड़ रहेगी और दस्तों में बादी और रुधिर और छिलके निकलेंगे इसमें पहिले कारण को दूर करें फिर तिल्ली को पुष्ट करें, और मवाद के नर्म करने वाले बीज और सफूफ खिलावें ॥

जो तिल्ली के कड़ेपन और मवाद की खुश्की से हो तो पेट में कब्ज होगा और ऐसी ही वस्तु खाई होगी और मवाद भी कड़ा निकलेगा इसमें तर और नर्म करने वाली औषधों को जैसे बीहदाने ईसबगोल का लुआब शर्बत बनफशा और राग

न बादाम आदि और मरोड़ बाकी रहे तो क़ब्ज़ दूर करने वाली औषधें को उचित हों दें परन्तु जब तक मवाद को न और आंतों से सूखा मवाद न निकल चुके कभी क़ब्ज़ करने वाली औषधें न दें ॥

और जो विषेली वस्तु खाने से मरोड़ हो जैसे हरताल नौसादर और चूना आदि तो उस में वमन करावें और बाद दूध और हरीरे पिलावें ॥

और जो जुल्लाब पीने से मरोड़ हो तो ठंडी औषधें दे और सुफ़ूफ़ बीज और बीज खिलावें, और मठे में लोहा बुझाकर अकेला पिलावें या चांवल के साथ खिलावें ॥

जब आंतों की रग खुलजाने से रुधिर के दस्त आवें तो मरोड़ बवासीर और जिगर के दस्तों के लक्षण न होंगे और पीड़ा भी न होगी, परन्तु पेचिश में पीड़ा अवश्य होती है रुधिर अधिक निकल जाय और रोगी में बल रहे तो फ़स्द बासलीक़ खोलें, फिर बंद करने के लिये क़ुर्स, कहरबा और ऐसी ही औषधें दे और गिले अरमनी पौने दो माशे, शर्बत हब्बुलआस या शरबत अंजबार के साथ देना अति लाभदायक है और अनार के छिलके, माऊ और गिले अरमनी बराबर लेकर कूट छानकर गोलियां बनावें, उसमें से सात माशे खाने अति लाभदायक है, और पेड़ पर बारे लगाना भी अच्छा है।

जब तक हो सके इस रोग में अफ़ीम के प्रकार की औषध न खिलावें और जो आवश्यकता हो तो शाफ़े में दें या उनके साथ उनको ठीक करने वाली औषधें मिलादे ॥

आंतों से पीब आने का वर्णन ।

कारण इसका या तो मरोड़ से घाव पड़ जाना है या पककर सूजन का फूटना, इसमें पहिले पेचिश होगी या सूजन

रोगी। पहिले उन ओषधों से हुकना करें जो घाव को साफ करें और फिर उनसे जो घाव को भर लावे, हुकना करे ॥

साफ करने वाली ओषधें यह हैं, अनार के छिलके, सिमाक घास, चावल, जौ, सब को कुचल के पानी में औटावे, और मल कर थोड़ा सा बिना बुझा चूना मिला कर हुकना करे। और भर लानेवाली ओषधें यह हैं, बबूल का गोंद, गिले अरमनी, दम्मुल अखवेन, बरगद के रेशे का रस, जला हुआ कागज सब को पीस कर हरे बारतग के पानी में और कच्चे शहतूत के रस में मिला कर हुकना करें। जब मरोड़ से पीप आवे तो पहिले कारण को दूर करें और फिर घाव के भरने का उपाय करे।

कूंथ कर दस्त आने का वर्णन।

इस में आंव निकलती है और कभी उसके साथ रुधिर भी होता है, यह सूखे मवाद के आंतो में फस रहने से होता है और उसके बने में आंव निकलती है इसको जहीर काबिज कहते हैं लक्षण उसका यह है कि ईसबगोल आदि के खिलाने से आंव नहीं आती इस में मवाद को नर्म करें और वैसा ही हुकना काम में लावें और कभी केवल गरम पानी लाभ देता है और इसमें कब्ज करने वाली ओषधें कभी न दें कि उस से मरने का डर है। और जो कफ या पित्त या बादी से हो गई हो तो उपाय उसका मरोड़ में लिखा गया है इस रोग में हुकना और शाफा अति फायदावन्द है ॥

और जो नीचे की आंत में गरम सूजन होने से यह रोग हो तो उस स्थान पर बोझ होगा और कभी तप और मूत्र कठिनता से होगा इस में फस्द खोलें और कमर के नीचे पछने लगावें और भोजन थोड़ा दें और ठण्डी ओषधें जो रुधिर की गरमी दूर करें खिलावें और जब मवाद का गिरना बन्द होवे तो सेक,

मेथी, बनफशा, बाबूना करमकल्लों के पत्ते औटा कर पेट और गुदा को धारें जो और उलटी हो सकती हो तो अच्छा है और जो गुदा में अधिक ठण्ड पहुंचने से यह हो तो सेकें और गरम पानी से धार और कडूवा तेल गरम करके मलें और ईंट गरम करके उस पर बैठें और ६ माशे हालों भून के बिना कुछ खाये फांकें। जो सवारी या किसी कड़ी वस्तु पर बैठने से हो तो मोम रोगन मलें॥

खाली पेट में खटाई खाने से भी ऐसा रोग हो जाता है उस में मिश्री का शर्बत पिलावें॥

मरोड़ का वर्णन।

इसका उपाय कारण के अनुसार करें जो ऊपर लिखा है और कुलंज में और केंचुए पड़ने के रोग में लिखा जाता है और जो जुल्लाब के पीछे यह रोग हो तो थोड़ा थोड़ा गरम पानी पिलावें और रोगन गुल मलें॥

आंतों के फूलने और बोलने का वर्णन।

यह रोग वायु उत्पन्न करने वाली वस्तुओं के खाने से बुरा भोजन खाने से होता है इस में अच्छा भोजन खावें और गुलकंद और गुलाब पीवें और जो कारण निर्बल हो और उस से आंत को ठंढ पहुंचे तो आंतें बोलेंगी इस में भोजन थोड़ा खावे और माजून फलाफली और कमूनी देना चाहिये और जो इसके साथ दस्त भी आते हों तो जवारिश खोजी अति लाभ दायक है॥

कूलंज का वर्णन।

यह पीड़ा है जो कूलून नाम एक आंत में होती है, और इस के साथ बिलकुल कब्ज हो जाता है, मगर जो कुछ निकलता

ो है तो बड़ी कठिनता से, कारण इस का गाढ़े कफ का आंत में अटक रहना है तो भोजन बुरा खाया होगा और कब्ज अधिक होगा, और खट्टी और नमकीन वस्तु अच्छी लगेगी। पहिले शाफे और हुकनों से मवाद को नरम करें फिर जुल्लाव पिलावें, और वह जुल्लाव ऐसा हो कि मतली को दूर करे, और मेदे को पुष्ट करे, जैसे सफरजली और जवारिश शहरयारा का जुल्लाव दें॥

जुल्लाव देने से पहिले आवजन और सेक, और लेप न करें और कब्ज दूर हो जाने के पीछे एक रात दिन बिलकुल भोजन न दें, और चनों को औटाकर उनका पानी गरम मसाला डाल के दें, और पानी थोड़ा पिलावें, और जो पानी के बदले गुलाब या सौंफ का अर्क या माउलअस्ल दें तो अच्छा है॥

जो गाढ़ी वायु के कारण से पीड़ा हो तो सकले से बुमेंगे और पेट फूलने वाली वस्तु खाई होगी, और पेट बोलेगा और पीड़ा एक स्थान पर न रहेगी इसका उपाय भी ऐसा ही करें और जुल्लाव देने से पहिले इस में लेप आदि कर सकते हैं और सोये का तेल मलें और कमूनी खिलावें और वह उपाय करें जो मेदे के फूलने में लिखा गया है, उरद के आटे की रोटी एक ओर से पका कर कच्ची ओर से गरम गरम पेट पर बांधना और बारे लगाना अति लाभदायक है॥

पेट पर बादी के गिरने से भी कुछ मनुष्यों को ऐसी पीड़ा होती है, चिन्ह उसका यह है कि अचानक पीड़ा हो और पेट फूल जावे और खट्टी डकारें, आवें परन्तु पीड़ा अधिक न हो इस में बादी का मवाद निकालें और फस्द असीलम खोलें और तेल मलें, और आंतों की सूजन के कारण से पीड़ा हो तो मवाद

के अनुसार जुल्लाब दें और फस्द खोलें, और यह उपाय जो मेदे की सूजन में लिखा गया है, धीली और कफ की बहुत कम होती है, और बादी की सूजन में उन ओषधों हुकना करे जो बायु को तोड़ें, और उनमें रोगन मिले हों ॥

और जो आंत के टल जाने से यह पीड़ा हो तो कूदने वा लाने से ऐसा हुआ होगा, इसमें पेट मलवावे इसी को लोग नाप टलना कहते हैं ॥

और जो आंत अपनी जगह से उधर आवे और मवाद आं में फंसा हुआ हो तो उस मवाद को निकालें और फिसला वाली ओषधें दें, और ऐसा उपाय करे कि फिर यह रोग न हो

और जो आंतों के भीतर पित्त इकट्ठा हो के यह रोग तो केवल मवाद ही निकाल लेने से लाभ हो जायगा परन्तु ऐ बहुत कम होता है क्योंकि पित्त पतले होते हैं और शरीर उत्पन्न भी कम होते हैं ॥

और जो मसाने, गुरदे, जिगर, तिल्ली और रहम सूजन से हो तो उनका उपाय करें ॥

एक प्रकार का कूलंज बहुत बुरा है, उसको एलाऊ कहते हैं और उबकाई, और उलटी भी इस में होती हैं ॥

और जब यह रोग बढ़ जाता है तो दस्त मुख से निकल है इसका उपाय वही है जो ऊपर लिखा गया है ॥

इस रोग के आदि में फ़स्द अति लाभदायक है, जब आं में सूजन हो या उसका डर हो ॥

हर प्रकार की कूलंज में यह ओषधें अति लाभदायक इंदर का मांस, सुखाये हुये केंचुए, भुना हुआ बिच्छू जह

या हुआ बारहसिंगा, और यही औषधें मरोड़ के रोग को एक दम में खो देती हैं ॥

बिना पीड़ा के कब्ज होने का वर्णन ।

इस में क़ूलंज का उपाय करें और शर्बत बनफ़शा रोग़न बादाम के साथ पिलावें ॥

पेट में केंचुए पड़ने का वर्णन ।

यह चार प्रकार के होते हैं एक लम्बे बारह अंगुल के या गज भर के उन को केंचुए कहते हैं दूसरे चौड़े जैसे कद्दू के बीज होते हैं उनको कद्दूदाने कहते हैं। तीसरे गोल होते हैं। चौथे पतले और छोटे इनको चिचने कहते हैं ॥

लक्षण इनका यह है कि दिन को हाथ सूखे रहें और रात को राल बहा करे और मेदे के मुख पर कुरेद मालूम हो और भूख के समय केंचुए ऊपर चढ़ते हों और ऊपर ही की आंत में पड़ते हों और कद्दूदाने से और तीसरी प्रकार के केंचुओं से भूख अधिक होजाती है और वो कभी कभी दस्तों में भी निकला करते हैं और क़ूलून और अऊर, नामक आंतों में उत्पन्न होते हैं और चिचने बच्चों के बहुत पड़ते हैं और नीचे की आंतों में होते हैं उनसे गुदा में खुजली होती है ॥

इन्हें इस प्रकार से मार कर निकालें कि तीन दिन बराबर ताज़ा दूध मीठा डालके पिलावे और चौथे दिन दूध के साथ यह औषधें दें छिला हुआ जिरा, कायफल सरेखस, तुरबद, कबीला प्रत्येक १७॥ माशे बाकला मिश्री कडुवा कूट प्रत्येक २४॥ माशे खांड ३४ माशे, नमक ३ माशे, कूट छान कर १० माशे दें और पीने के समय नाक बन्द करलो नहीं तो चीज़ों की इनकी बास पहुंच जायगी गरम प्रकृति वालों को गरम औषधें कभी न दें उस के लिये यह औषध हैं खट्टे अनार के पेड़ की छाल और इस

की जड़ पानी में औटा कर छान कर पिलावे, इस से कीड़े मर जाते हैं और दस्तों के साथ निकल आते हैं, और जो दवा पीना बुरा मालूम हो तो हुकना या शाफा करें, और ये भी न हो सके तो सिपाक, अकाकिया और गिले मख्तूम शराब में पीस कर पेट पर लेप करें, या कडुये बादाम, कमीला, तुरमुस, किम और करम्ब को सिरके में पीस कर लेप करें ॥

और बच्चों के लिये यह उपाय अति लाभदायक है कि मेंहदी और मोम मिला कर बत्ती बनावें और उस का शाफा करें, फिर थोड़े देर पीछे दीये से देख के जो कीड़ा किनारे हो उसे मोचने से पकड़ कर खेंचले । जैतून का कच्चा तेल भी सब प्रकार के कीड़ों को लाभदायक है चाहे खिलावें या गुदा में लगावें ॥

सत्रहवां अध्याय ।

गुदा के रोगों का वर्णन

बवासीर का वर्णन ।

इस में गुदा पर मस्से फूल जाते हैं । जो उनसे रुधिर और पीला पानी बहे तो उसे खूनी बवासीर कहते हैं और जो कुछ न बहे तो बादी की बवासीर कहलाती है इस रोग में बादी के मिलने से रुधिर गाढ़ा हो जाता है या जल जाता है और कभी पित्तों के मिलने से भी होता है, रुधिर के गाढ़ा होने के लक्षण यह हैं शरीर भारी होगा पीड़ा और खटक अधिक होगी, और पित्तों के मिलने के चिन्ह यह हैं कि मस्सों में जलन और पीड़ा होगी इस में फस्द खोलें और जो न हो सके तो पछने लगावें और कब्ज को दूर करें और रुधिर को ठीक करें और जो वह अधिक निकलता हो तो कुरस कहरुबा खिलावें, और

जब काला रुधिर निकलने लगे और निर्बलता का डर न हो तो कभी बन्द न करें क्योंकि इस से और रोग नहीं होने पाते और जो मस्से फूले हों और पीड़ा हो परन्तु उन में रुधिर न बहता हो तो खतमी और सोये से सेकें, और रोगन शफ़ताल मलें, और मरहम सफेदे का अति लाभदायक है, परन्तु मस्सों के काटने में डर है, जो काटें तो एक मस्सा रहने दें और गूगल गूर बकायन के छिलके, काचली सांप की और टुंडी बैंगन की गाहे सब को चाहे एक२ को जला कर धूनी लेना मस्सों को सुखा देता है, और गिरा देता है ॥

बादी की बवासीर का वर्णन ।

इस रोग में गाढी बात आंतों में उत्पन्न होती है यह कभी नीचे को उतरती है और कभी पीठ की ओर जाती है कभी पाँव पावों में आजाती है और कभी रुधिर बहता है कभी पेट फूलता है और कभी पीड़ा भी होती है, इस में बादी का मवाद निकालें और बात नाशक औषधें दें, किंग की जड़ की छाल के हिस्से और सातर फारसी उससे आधी पीस कर सात माशे खावे और बदन का मलना, घोड़े की सवारी, महनत करना और फस्द बासलीक अति लाभदायक है ॥

गुदा पर नासूर हो जाने का वर्णन ।

उस से पीला पानी बहा करता है यह बड़ी कठिनाई से अच्छा होता है, इस रोग में शियाफ गर्म पानी में घिस कर सवेरे और शाम को दो तीन बूंदें रोगी को चित लिटा कर टपकाया करें और जब तक दवा सूख न जाय वैसे ही पड़े रहें और जो नासूर में बत्ती जा सके तो बत्ती शियाफ की औषधों के गोंद के पानी लगाके रक्खें और सलाई में रुई लपेट कर बत्ती की तरह रखना उत्तम है, और जब नासूर आंत के पार हो जाता है तो अच्छा नहीं हो सका ।

गुदा पर सूजन हो जाने का वर्णन ।

जो सूजन गरमी से हो तो पीड़ा और जलन होगी इस में फस्द खोलें और पछने लगावें, उलटी करावें जब सूजन पकने पर आवे तो तुरन्त चीर दें क्योंकि देर होने से नासूर पड़ने का डर है और जो सूजन ठण्ड और कफ की अधिकता से हो तो यह नरम होगी और गरमी के लक्षण बिलकुल न होंगे, उस में उलटी करावें और पकाने वाली मरहम लगावें ॥

गुदा के फट जाने का वर्णन ।

इस का उपाय वही है जो होटों के फटने में लिखा गया है, बहुत ठण्डे पानी से बचें खट्टी वस्तु न खावें और कब्ज न होने दें इस के लिये सवेरे शर्बत बनफशा और रोगन बादाम पिला कर देते हैं और नरम भोजन खिलाते हैं ॥

शिरज के ढीला हो जाने का वर्णन ।

शिरज एक पट्ठा है जो दस्त और वात को रोकता है जब यह ढीला हो जाता है तो दस्त और वात नहीं रुक सक्ती अचानक निकल जाती है । यह बात तरी और ठंड पहुंचने से होती है इस रोग में उस मवाद को निकालें जिससे पट्ठा ढीला हो गया हो और उस उपाय से मिजाज को ठीक करें जो फालिज में लिखा गया है, और जो सूजन हो तो उसका उपाय करें और जो चोट लगने या बवासीर के मस्से काटने से यह रोग हो तो असाध्य है ।

कांच के निकलने का वर्णन ।

जो कारण इस का सूजन हो तो उसका यह उपाय करें कि खतमी और बनफशा औटा कर रोगी को उसमें बिठावें

र मोम का तेल मलें तो वह अन्दर बैठ जाती है और जो
ी से पट्ठा ढीला हो जाने के कारण यह रोग हो तो जरा
कंपने में निकल आया करेगी, और सहज से अन्दर को
लो जावेगी, उपाय उसका यह है कि रोगन गुल मल कर
स पर सफेदा, गुलनार, माजू, फिटकरी, सुरमा और अनार
ा छिलके पीस और छान कर छिड़कें और गद्दी रखकर
स दें ॥

गुदा में गहरा घाव हो जाने का वर्णन ।

इस में काला मरहम लगावें और सुखाने वाली औषधें
रकें, और जो पीड़ा अधिक होवे अफीम मलें और वही
पाय करें जो घावों का है ॥

गुदा में खुजली होने का वर्णन ।

जो कीड़े उत्पन्न होने से खुजली हो तो लक्षण और
पाय उसका लिख चुके हैं, और जो कोई मवाद हो तो उसे
िकालें और हर प्रकार के मवाद में ठुड्डी पर पछने लगाना
और सिर का और रोगन गुल मलना अति लाभदायक है ॥

अठारहवा अध्याय

गुरदों के रोगों का वर्णन

गुरदे के विगाड़ का वर्णन ।

इस में गरमी, ठण्ड और मवाद के लक्षण जैसे ही पाये
ायगे जैसे कि जिगर के विगाड़ में लिखे गये हैं और उपाय
ी उसी प्रकार का करें जो गरमी से बिगाड़ हो तो काफूर
िलना लाभदायक है परन्तु अधिक न मलें कि इस से पथरी
 जाने का डर है और विषयशक्ति घट जाती है ॥

गुरदे के दुबला हो जाने का वर्णन।

इस रोग का लक्षण यह है कि मूत्र अधिक और आवेगा, शरीर दुबला होगा, विषय की इच्छा कम होगी, सिर में पीछे की ओर हलकी पीड़ा बराबर रहेगी। जिस से यह रोग हो उस कारण को दूर करें और फिर गुरदे मोटा करने के लिये पिस्ते, बादाम, फुंदुक और तारी शक्कर के साथ और दवा उलतुरजबीन और विषय की इ उत्पन्न करने वाली औषधें खिलावें॥

गुरदे की निर्बलता का वर्णन।

इस का लक्षण यह है कि टेढ़ा और सूधा होने में करवट बदलने के समय कमर में पीड़ा होगी विषय की इ और मूत्र घट जायगा और मांस के धावन का सा मूत्र आवे जो कोई खाद्य बिगाड़ हो तो उसी के अनुसार उसे ठीक और गुरदे के दुबला होने से ऐसा रोग हो तो उसका करें। जो गुरदे की खाल ढीला हो जाने से और उस क के खुलजाने से यह रोग हो तो कारण उसका विषय की कसा अथवा चोट लगना अथवा मूत्र लाने वाली औषधों अधिक पीना होगा इस में कारण को दूर करें और जिगर को पुष्ट करती है वह गुरदे को भी पुष्ट करती माजून लबूब और विषय की चाहना उत्पन्न करने वाली अति लाभदायक हैं॥

गुरदे में वायु की पीड़ा का वर्णन।

इस रोग में कमर के आस पास पीड़ा और खिचाव और बोझ न होगा पथरी के लक्षण न पाये जावेंगे, और के समय पीड़ा घट जाया करेगी, इसमें जीरा, सोया, सुदाब

बाबूना पीसकर गुरदे के स्थान पर लेप कर, और शर्बत बुजुर गो और बादी को तोड़ने वाली औषधें खाना और शरीर मलना और पचाव का ठीक करना अति लाभदायक है॥

गुरदे की पीडा का वर्णन।

इस का कारण गुरदे की बात या निर्बलता या सूजन या पथरी या घाव होगा उस कारण को दूर करें, और बाबूना सोया और खतमी और करम्ब के पत्ते औटा कर भाप लेना हर प्रकार की पीडा को लाभदायक है।

गुरदे की सूजन का वर्णन।

लक्षण और उपाय उसका मवाद के अनुसार वह हैं जो जिगर की सूजन में लिखा गया है, परन्तु कमर में पीडा होगी दाहिने गुरदे में सूजन हो तो कुछ ऊपर को जिगर के पास होगी और जो बायें गुरदे में हो तो नीचे को मसाने के पास पीडा होगी यह इसलिये है कि दाहिना गुरदा बायें गुरदे से ऊंचा है॥ और जो पीडा अधिक हो तो परदों के पास गरम मवाद से होगी।

और जो सूजन गुरदे के रस्तों में हो तो मूत्र रुकेगा, और आंतों के पास हो तो भीतर की ओर होगी, और अचम्भा नहीं कि कूलंज का रोग भी उत्पन्न हो जावे और जब गुरदे की सूजन पुरानी हो जावे तो फस्द बासिल लाभदायक होगी॥

गुरदे के घाव का वर्णन।

लक्षण इस का यह है कि मूत्र में पीब और रुधिर और टुकड़े निकलेंगे, और गुरदे के स्थान पर पीडा होगी इसमें घाव को ठीक करें और जिस ओर के गुरदे में घाव हो उसी ओर फस्द बासलीक खोलें, और पुष्ट मुल्लाब कमीत दें

परन्तु इसका जुल्लाब दे सकते हैं इसके पीछे गर्मी और ठंढ
अनुसार मूत्र लानेवाली औषधें पिलावें, और फिर
भरने वाली औषधें दें, जैसे गिलेअरमनी, दम्मुल अख
जला हुआ कागज, छुंदर आदि और कुर्स काफ़ूर और
कुल मुजूर खिलाना लाभदायक है ॥

गुरदे में खुजली होने का वर्णन ।

सात दिन में दो बार मवाद को निकालें, और ठंढी
और शर्बत बनफ़शा पिलावें, और शियाफ़ अबियज़ को
बादाम में घिस कर मूत्र के छिद्र में टपकावें, और बगाद
मुजूर खिलावें ॥

जिया बितुस का वर्णन ।

यह वह रोग है कि पानी जैसा पीवें वैसा ही तुरंत मूत्र
निकल आवे इसका उपाय गर्मी और ठंढ देखकर क
चाहिये गरम में कुर्स काफ़ूर और कुर्स तबाशीर और कुर्स जिया बि
दें, और ठंढ में मसरोदीतुस और माजून मासिकुल
खिलावें ॥

गुरदे में पथरी पड़ने और पेशाब में रेत आने का व

इस रोग की बारियां होती हैं कभी एक महीने के प
कभी वर्ष दिन में और कभी कमबढ़ में ज़ोर करता है । इस
लक्षण यह है कि टुंड्डी की जगह खिचाव और बोझ हो
और मूत्र पीला और लाल आवेगा कभी उस में पथरी भी नि
कलेगी और जब आंतें भरेंगी तो पीड़ा अधिक होगी और पथरी
अधिक दुख होता है और रेत पड़ने में दुख और रोग उस से
होवे है ॥

और जब मूत्र में रेत निकले तो जानो कि रेत पड़ी

पहिले वमन करावे और मूत्र लाने वाली और साफ करने वाली औषधें और जुल्लाब पिलावे, और जब पीड़ा अधिक हो तो वह आरम्भ करें जो गुर्दे की पीड़ा में लिखा गया है और पथरी के तोड़ने के लिये माजून अकरब और माजून इ-भरूलयहूद अति लाभदायक है। और उन वस्तुओं से बचें जो रुधिर को गाढ़ा और मैला करें, और पचाव का उपाय करें और जब पेट खाली हो तो मेहनत करें और दण्ड पेलें, और विषय कम करें और कड़ा के कपड़े पर सोना और भोजन के बीच में और कभी २ बिना कुछ खाये ठंडा पानी पीना पथरी को नहीं पड़ने देता है।

उन्नीसवां अध्याय

मसाने के रोगों का वर्णन।

मसाने की सूजन का वर्णन।

जो गर्मी से सूजन हो तो पीड़ा अधिक होगी सुई सी चुभेगी, पेड़ू फूला होगा और गरम ज्वर होगा इसमें फस्द बास-लीक खोलें और तीन दिन पीछे साफिन की फस्द खोलें और मुलैय्यन मुबारिक पिलावें हरी मकोय के अर्क के साथ आदि में वह गुप्त औषधें जो मूत्र लावें बिलकुल न दें, और अकेली वह औषधें जो ठण्डी हों और मवाद को इधर गिरने से रोकें कभी न दें क्योंकि ऐसा करने से मवाद के कड़ा होजाने का डर है और रुधिर की सूजन में तो कभी ऐसा न करना चाहिये। जब सूजन का मवाद पकने पर हो तो पकाने के लेप पीछे उसके फोड़ने का उपाय करें और पीव निकलने के पश्चात् घाव को भरें और जो ठण्डी सूजन हो तो अगर उसमें नरमी हो तो कफ का चिन्ह है और कड़ापन बादी का चिन्ह है बाकी और

लक्षण हर मवाद के जो उसके लिये हैं पाये जावेंगे । कफ
सूजन में वमन करावें और गरम औषधों से हुकना करें
पटकाने वाले आबजन में बिठलावें, और मूत्र लाने वा
औषधें माउल अस्ल के साथ और अमलतास दें बादी की सू
में नरम करने वाली औषधों का लेप, और तरेडा करें, क
कच्चे और चनों का पानी पिलावें, और खीरे ककड़ी के
हिलयून, हंसराज और अमलतास का जुल्लाब बनाकर रो
बादाम के साथ दें, और मूत्र अधिक न लावें और जब
नरम होजावे तो फस्द साफिन या बासलीक खोलें ॥

मसाने के घाव का वर्णन ।

मसाने के घावका यह चिन्ह है कि मूत्र में छिलके, दुर्ग
न्धि और जलन होगी और मूत्र रुक रुक कर आवेगा । उपाय इस
यही है जो गुरदे के घाव का है, और जब पीड़ा अधिक हो
शियाफ अबियज स्त्री के दूध में घोल कर मूत्र के छिद्र में
लावें, और जब पीप अधिक आती हो तो केवल माउल अ
टपकावें यह घाव के साफ करने में अति उत्तम है, और म
के रोगों में मूत्र के छिद्र से दवा का पहुंचाना बहुत लाभ
है, और स्त्रियों को पिचकारी से दवा पहुंचा सकते हैं ॥

मसाने की खुजली का वर्णन ।

इस रोग में पेडू में खुजली जलन और पीड़ा होगी,
मूत्र में दुर्गन्धि होगी और कभी २ उसके साथ रुधिर भी नि
लेगा, इसमें मवाद को निकालें और ठीक करें, और लुआ
बीदाना और स्त्री का दूध और रोगन बादाम मूत्र के छि
टपकावे, और इन्हीं औषधों से हुकना करें और भोजन
जगह आश जौ और दूध और चावल खिलावें ॥

मसाने में रुधिर जमजाने का वर्णन ।

यह रोग मूत्र में रुधिर निकलने से, मसाने में चोट पड़ने से और किसी रग के फटजाने या मुंह खुलजाने से उत्पन्न होता है इस रोग में हाथ पांव ठण्ड होंगे, और कभी जाड़ा भी आवेगा और मूर्च्छा होगी, केवल सिकञ्जबीन अनसिली या उसमें थोड़ी अगूर की लकड़ी की राख मिलाकर पानी में घोल कर पिलावें और खरगोश का पनीर अगूर की लकड़ी की राख के पानी के साथ खिलावें, और पेड़ू का उस पानी से धारें तथा मूत्र के छिद्र में टपकावे, कदाचित इस उपाय से जमा हुआ रुधिर न पिघले तो पथरी का तोड़ने वाली और मूत्र लाने वाली औषधें तथा पुराने चनों का जुहाव के पानी में औटाकर पिलावें और जब कोई औषधें लाभदायक न हों तो जमे हुए रुधिर को चीर कर निकालें और भोजन की जगह पुराने चनों को औटाकर उसका पानी दालचीनी डालकर पिलावें ।

मसाने की पीड़ा का वर्णन ।

यह रोग सूजन, घाव, खुजली, पथरी पड़ने अथवा मसाने में बात उत्पन्न होने से होता है इस सबका उपाय लिख चुके हैं, एक प्रकार की पीड़ा जो मसाने के बिगाड़ से होती है जो यह गरमी से हो तो प्यास होगी और मूत्र में जलन होगी और पहिले इससे गर्म वस्तु खाई होगी, इसमें ठण्डाई पिलावे और ठण्डी वस्तु लगावें और ठंडी बनादकुल मुजूर खिलावें और ठण्ड से हो तो मूत्र सफेद आवेगा और इससे पहिले ठंडा वस्तु काम में लाये होंगे जैसे कपूर आदि और ठण्डी हवा लगने से भी पीड़ा हो जाती है इसमें गरम भोजन और औषधें दें और गुनगुने पानी से पेड़ू को धारें ॥

और दूसरी प्रकार इस पीड़ा की यह है कि बहरान के

उसस यह पीड़ा हो इस में अधिक मूत्र निकालने का उपाय करें॥

मसाने के टलजाने का वर्णन।

पीठ पर चोट लगने से यह रोग होता है सुगंधि वाली औषधों का लेप पेडू पर करें, और जो चोट लगने से पट्ठा खिंच गया हो तो मूत्र रुक जाता है और कभी पट्ठा खुलजाता है तो अचानक मूत्र आने लगता है। इन दोनों में फस्द साफिन खोलें और कभी इस रोग के साथ और कोई रोग भी होता है ऐसी दशा में पहिले उस रोग का और फिर इसका उपाय करें।

मसाने के फूलने का वर्णन।

इस रोग में मसाने में बादी भर जाती है, और पेडू पर खिंचाव रहता है इसमें वायु एक स्थान पर नहीं रहती और न बोझ होता है और जो बोझ और खिंचाव एक स्थान पर हो तो जानो कि बादी के साथ तरी भी है इस रोग में कुछ दिनों तक माउल असूल गरम पिलावें या उसमें रोगन बेद इंजीर मिला कर पिलावें और रोगन गरम जो बादी को तोड़े मलें और मूत्र के छिद्र में टपकावें जैसे रोगन केसर को खिलावें और मलें और जब मूत्र निकलने में कठिनता हो तो खरबूजे के सूखे हुए छिलके कुचलकर कद के साथ दें और रोगी को आबज़न बिठावें, और जब बात के साथ तरी भी हो तो बार बार वमन करावें, और तरियाक और मसरुदीतूस और इंजीर खिलावें॥

मसाने में पथरी पड़ने का वर्णन।

इस रोगका लक्षण यह है कि लिंगकी जड़में खुजली होगी और थोड़ीर देर पीछे मूत्र आवेगा और विषय की इच्छा पहिलेतो एक बार अधिक होगी और फिर तुरत ही जाती रहेगी॥ इस

में मूत्र का रुक रुक कर आना या बिलकुल न आना और
ने में पीड़ा होना कुछ नहीं होता परन्तु जिस समय पथरी
ने के मुख पर आनकर अड़ जाती है तो ऐसा होता है और
पथरी का उत्पन्न होना इस प्रकार से जान सकते हैं कि
की जगह और नान में पहिले पीड़ा होगी ॥

इसमें वह उपाय करें जो गुरदे की पथरी में लिखा गया है
अधिक पुष्ट औषधें दें । बिच्छू और खिसक का तेल
पेड़ू पर मलें और मूत्र के छिद्र में टपकावें और जो अवश्य
चीर कर पथरी को निकालें और जो रोगी की अवस्था
४ या १६ वर्ष से कम हो तो कभी ऐसा न करें क्यों
समें रोगी के मरने का डर है और जब पथरी मूत्र के रास्ते
कर फंस रहे और उससे पीड़ा हो तो रोगी को चित्त
रें, और दोनों पांव उठाकर गरम पानी से पेडू को चारें
नीचे से ऊपर तक मलें इससे पथरी वहां से हटकर मसाने
ें चली जावेगी और मूत्र का रास्ता खुल जावेगा।
बमहूर असली पथरी के तोड़ने में अति उत्तम है ॥

मूत्र में जलन होने का वर्णन ।

मूत्र में जलन गुरदे या मसाने की खुजली या इनही स्थानों
के की पीब से होती है खुजली और घाव का उपाय करें
जो लिंग के भीतर घाव हो तो उपाय उसका आगे लिखा
। और जो जिगर की गरमी और पित्तों की अधिकता
तो उनके लक्षण पाये जावेंगे इसमें वह ठंडी औषधें दें
गरदे के बिगाड़ में लिख चुके हैं और जो मवाद की
ता के कारण उनसे लाभ न हो तो मवाद का निकाल
ाे स्याफ अबिजय रूमी के दूध में घोलकर रोगनगुल
ामने बादाम मिला कर मूत्र के छिद्र में टपकावें, और
ो असगोल के लुआब में रक्खें ।

विशेष दृष्टान्त--लिंग के छिद्र में एक तरी चिपटी हो उसके छिल जाने से भी यह रोग होता है, लक्षण उसका है कि इस रोग से पहिले गरम औषधें मूत्र लाने वाली होगी, और विषय की अधिकता की होगी इसमें पहिले क को दूर करें और स्याफ अवियज को स्त्री के दूध में घोल मूत्र के छिद्र में टपकावे, और लुआवों और बीजों को पीवे और चाहे टपकावें ॥

मूत्र बंद होजाने का वर्णन ।

जो यह रोग गुरदे अथवा मसाने की सूजन से या मेथरी पड़ने या मसाने में रुधिर के जमने या पीव अटकने या बात के फंसने से हो तो उसका उपाय ऊपर लिख हैं ॥ और जो मूत्र के स्थान पर मांस उत्पन्न होने से यह हो तो और किसी रोग के लक्षण नहीं होंगे । इसका नहीं हो सकता, परन्तु थोड़ा सा लाभ होने के लिये और नरम करने वाली औषधों का आसेवन करें, कि कुल रुकाव न रहे ॥

मसाने की गर्दन पर एक पट्ठा है जो मूत्र को निचो है, उसके ढीला होने से भी यह रोग हो जाता है, ल उसका यह है कि मसाने के दबाने से मूत्र खुल के निक है, इसमें गरमी पहुंचावै चाहे पीने की औषधों से या की से और यह तेल मलें जो फालिज में लिखे गये हैं ।

और जो मसाने और गुप्तेन्द्रिय में लासदार मवाद रहे और उससे मूत्र रुके तो पेडू बोझल होगा, और पहिले गाढ़ा करने वाली वस्तु खाई होगी और किसी रोग के लक्षण न होंगे इसमें पुष्ट औषधें मूत्र लाने

पिलावें और आबजन करें और खिसक और बिच्छू का तेल इसी छिद्र में टपकावें ॥

और जो मसाने की दूर करने वाली शक्ति के जाते रहने से यह रोग हो तो उससे पहिले रोगी ने देर तक मूत्र रोका होगा इसमें आबजन करें, और पेडू को हाथ से दबावें, और रोगन बिसखान और रोगन कुस्त पेडू पर मलें और जो इस से लाभ न हो तो एक पोली सलाई चांदी शीशे या रांग की लेकर छिद्र में डालें, रीत उसकी यह है कि थोड़ा सा फूसड़ा रेशम का लेकर धागे में बांधें, और सिरा उस धागे का उस सलाई में डाल कर निकालें और जिस ओर वह फूसड़ा हो उसी ओर से सलाई उस छिद्र में डाले जब वह सलाई मसाने के मुंह तक पहुंच जावे तो तागे को जोर से खींचले तो मूत्र का रास्ता बिलकुल खुल जावेगा ॥

और जो मूत्र के रास्ते में घाव या फुंसी होने से मूत्र रुके तो उनके लक्षण पाये जावेंगे इसका उपाय शुजाक में देखना चाहिये ॥

और जब पीठ या पेडू पर चोट लगने से यह रोग हो तो देखना चाहिये कि सूजन है या मसाना ढीला और खिंच गया है जो सूजन हो तो उपाय उसका करें और जो खिंचाव आदि हो तो फ़स्द बासलीक खोलें और रोगनगुल मलें ॥

और जो मूत्र के मार्ग में खुश्की और कब्ज हो जो गर्मी के लक्षण पाये जावेंगे और तर औषधों से लाभ होगा और जब बहुत सा मसाने से थोड़ा सा मूत्र न निकल सकेगा और जब बहुत सा इकट्ठा हो जायगा तो भली भांति निकला करेगा, इसमें तरी और ठंढ पहुंचावे ॥

और जो पट्ठों और नसों पर कफ के गिरने से मसाने

जब गुरदा निर्बल होगा तो मूत्र सफेद और गाढ़ा होगा और जब जिगर निर्बल होगा तो मूत्र लाल और पतला होगा इस में जिगर और गुरदे को पुष्ट करें॥

और जो मूत्र की रगों में घाव हो तो पीव आदि से जान पड़ेगा, इसका उपाय लिख चुके हैं और इस में कुर्स काकनज लाभदायक है॥

वीसवां अध्याय।

इस अध्याय में उन रोगों का वर्णन है जो केवल पुरुषों को होते हैं

मैथुनेच्छा घट जाने का वर्णन।

स्त्री संग की चाहना शरीर के बड़े बड़े स्थानों के आरोग्य होने से पूरी होती है यह दो प्रकार से घट जाती है एक तो यह है कि यह आप ही घट जावे, दूसरे पुरुषेन्द्रिय के ढीला हो जाने से इन दोनों का वर्णन अलग अलग किया जाता है, पहिले प्रकार के कई कारण हैं, एक तो यह कि शरीर भोजन की कमी से निर्बल हो जावे और उससे रूह वायु और रुधिर जो स्त्री संग के मवाद हैं कम उत्पन्न हों लक्षण उसका यह है कि निर्बलता और दुबलापन होगा, और पहिले से भूखे रहे होंगे इसका उपाय यह है कि अच्छे अच्छे भोजनों और पुष्ट औषधों से शरीर को पुष्ट करें और खेल कूद नाच रंग में लगे रहें॥

दूसरे यह है कि वीर्य थोड़ा उत्पन्न हो चाहे भोजन भली भांति खावें, लक्षण उसका यह है कि वीर्य थोड़ा निकलेगा कारण यह है कि कोई बिगाड़ वीर्य उत्पन्न होने की जगह पड़ जायगा, और उन वस्तुओं से हानि होगी, जो उस बिगाड़ के अनुसार हो और उनके विपरीत से आराम होगा इसी

सकी दशा जान पड़ेगी, कि गर्म है या ठंढी आदि इसमें प्रकृति को ठीक करे ॥

तीसरे यह कि वीर्य अधिक हो परन्तु उसकी तेजी और गरमाहट आती रहे लक्षण उसका यह है कि वीर्य अधिक निकले और गाढ़ा हो और संगम करने के समय आदि में बल म हो और फिर अधिक हो जाय इस में माजून मरजौनी और माजून समूर और माजून बुजूर आदि खिलाकर र्मी पहुंचावें ॥

चौथे यह कि बहुत दिनों से संगम करना छूट गया हो और उससे यह रोग उत्पन्न हो तो चाहिये कि इसकी बातों में गे रहें और उसी प्रकार की औषधें काम में लावें और अकर- ॥ बिनौले के तेल में घिस कर पेडू गुह्येन्द्रिय आदि पर गावें, पांचवें, यह कि दिल पर किसी बात का डर या चिन पन्न होने से यह रोग हो तो उस कारण को दूर करे ॥

छटे यह कि दिल या मेदे या जिगर या भेजे या गुरदे पर सी दोष के होने से ऐसा हो तो पहिले उस दोष का उपाय । दूसरा प्रकार यह है कि शरीर में निर्बलता होने से या त दिनों तक संगम के छोड़ देने से लिंग सुस्त हो जाय य इसका ऊपर लिख चुके हैं और गर्म पानी से धारें, फिर ी का दूध मलें, और जिफ्त लगावें। जो नीचे के पट्ठ में । हो तो देखे कि ठंढ से है या गर्मी से या खुश्की से उसीके सार काम करें ॥ जो पट्ठों पर कफ के गिरने या ठण्ढ पने से हो तो लक्षण उसका यह है कि पहिले ये सब बातें जावेंगी और वीर्य पतला होगा, और बिना बल करने क छा करेगा, इसमें वही उपाय करे जो फालिज का है और गरम झाके और हुकने और गरम औषधें मलें, और लिंग को

बहुत ठण्डे पानी से धारे, जो वह उसकी ठण्ड से न सिमटे तो उस रोग का उपाय नहीं हो सकता। अब ऐसी औषधें लिखी जाती हैं जो लिंग को बड़ा करें। पहिले उसे खुरखुरे और कड़े कपड़े से उतना मलें कि लाल हो जावे फिर रोगन मोर्चा और इसी प्रकार की और औषधें मलें और उस पर जिफत का लेप करें॥ दूसरे कर्फस के पानी से कई बार धोवें॥ बकरी के घी से कई बार चिकना करें॥ चौथे केंचुए या जौंक सुखाकर रोगन सोशन में मिला के मलें॥

वीर्य जल्दी निकलने का वर्णन।

यह रोग ठंड या तरी से हो तो लक्षण उसका यह है कि वीर्य बहुत सफेद और पतला होगा और गर्मी न होगी गरम जुल्लाबों से मवाद को निकालें, और वमन करावें और माजून खुब सुल, हलीद खिलावें और उसकी शराब पिलावें और शहदाने को औटाकर शहद मिला के पिलावें॥ और जो यह रोग वीर्य और रुधिर की अधिकता से हो तो फस्द खोलें, और विषय थोड़ा करें और भोजन कम खावें और वह वस्तु खावें जिनसे वीर्य और रुधिर कम उत्पन्न हो॥ और जो वीर्य में तेजी आगई हो तो लक्षण उसका यह है कि वह पतला और पीला निकलेगा और उसमें जलन होगी, इसमें ठंडाई और काहू के बीज औटाकर पिलावें। और जो कमजोर होने के कारण से यह रोग हो तो उस कारण को दूर करें॥

स्त्री संग की चाहना अधिक हो जाने का वर्णन।

यह रोग भी रुधिर और वीर्य की अधिकता से होता है उन्हें कम करें, परन्तु ऐसा न चाहिये कि कोई हानि हो और जो बहुत ही अवश्य हो तो फस्द और जुल्लाब दें, और वह वस्तु खावें जो वीर्य को कम करें और भोजन भी कम खावें और जो वीर्य में तेजी हो तो ठंडाई दें, और ठंडे पानी से

में और जो निर्बलता हो और रुधिर कम हो जावें और
यों की वीर्य्य की अधिकता हो सो वह पतला और सफेद
, इसमें कलौंजी और सुद्दाब और सभालू के बीज देना
ये, और मशारिशा कमूनी अति लाभदायक है और जो
के स्थान पुष्ट हों, परन्तु शरीर में और स्थानों पर निर्ब-
हो तो उसके लक्षण पाये जावेंगे, उपाय इसका यह है
वीर्य्य के स्थानों को कमजोर करदें और दूसरे स्थानो
पुष्ट करें ॥

और जो वीर्य्य के रास्ते में फुन्सियां या घाव या खुश्की
होने से यह रोग हो तो लक्षण उसका यह है कि विषय
के समय वीर्य्य आनन्द से निकले, परन्तु घाव में पीड़ा
, और पीब भी निकलेगी, इसका उपाय वही है जो मसाने
घाव का है, फस्द और जुल्लाब आदि दें॥

और जो शरीर के फूलने से यह रोग हो तो गर्मी की
कता में ठंडी औषधें दें और जो तरी अधिक हो तो वह
में दें जो वायु को तोड़े और खुश्की करे और जो सादी की
कता हो तो फस्द बासलीक खोलें और सोदा का जुल्लाब दें।

वीर्य्य निकला करने का वर्णन।

जो यह रोग वीर्य की अधिकता या तेजी या उसके स्थान
ला होने से हो तो लक्षण उसका यह है कि तुरन्त ही
की चाहना उत्पन्न हो जाय करेगी और हर बार में
निकला करेगा, इसका उपाय दूसरे पाठ में लिखा
है, जो यह रोग उस पट्ठे के खिंच जाने से हो जो वीर्य
थान पर है तो खिंचाव का उपाय करें, और पेडू आदि
गन मलें जो गुर्दे की कमजोरी हो और उसकी
विपक कर निकला करे तो लक्षण उसका यह है कि

जुल्लाब दें, और बालछे के बीज पीसकर बेसन और... में मिलाकर लेप करें ॥

और जो सूजन में कड़ापन और कालापन हो तो ... की अधिकता होगी इसमें नर्म करने वाली औषधें बाबून ... नाखूना के साथ लेप करें, और फिर सौदा का जुल्लाब ... मुंजिश दें ॥

और जो किसी मवाद के लक्षण न हों और जो सूजन फूली हुई हो तो बायु से होगी, इसमें पटकाने वाली औष... से सेक करे, और कमूनी खावे और जो इससे लाभ न हो ... वमन करावें और जुल्लाब दें, जो रोग नीचे के धड़ में होवे, उनमें वमन कराना अति लाभदायक है, और उसमें डर ... नहीं है जो सूजन केवल थैला अर्थात् ऊपर खाल की में हो ... दुःख कम होगा, और सूजन दिखाई देगी, और भीतर की ... दुःख और तप और प्यास अधिक होती है ॥

अंडकोषा के चढ़जाने का वर्णन।

यह रोग सूजन की प्रकार से नहीं है, इसमें मोटा पन ... जाता है, इसमें खुरासानी अजवायन और शूकरान और तफा... और पोस्त खशखाश और सान के पत्थर की रेत हरे धनिये के पानी में पीसकर लेप करें, और जो गिलेअरमनी और सिरका भी मिलावें तो अति लाभदायक होगा, और इसी लेप को स्त्री की छाती पर लगाने से छातियां बढ़ने नहीं पाती, परन्तु इस रोग में भोजन भी थोड़ा खाना अवश्य है ॥

लिंग में रहम के मुंह के फड़कने का वर्णन।

मवाद को निकालें और रुधिर को ठंडा करें और उसी जगह पर जोकें लगाना अति लाभदायक है, और भोजन भी अच्छा खावें ॥

अंडकोषों की पीड़ा का वर्णन ।

जो सूजन के कारण से हो तो उसका वर्णन कर चुके हैं और जो वायु से हो तो पीड़ा एक जगह न ठहरेगी, उसपर सेकें और गरम तेल मलें, और जो गरमी और ठंढ से बिगाड़ होतो उस का उपाय भी लिख चुके हैं, और जो चोट पड़ने से पीड़ा हो तो फस्द खोलें और बनफशा, खैरू, मकोय, कद्दू, नीलोफर का लेप करें ॥

अंडकोष के छोटा हो जाने का वर्णन ।

यह ठंढ के पहुंचने से होता है, इसमें गरम पानी से न्हावें और गरम दवायें लगावें ॥

अंडकोष के चढ़जाने का वर्णन ।

कभी ऐसा होता है कि बिलकुल ऊपर चढ़ आते हैं नीचे कुछ भी नहीं रहता उस समय मूत्र रुक के और टपक २ कर निकलता है और चला फिरा नहीं जाता और जो थोड़ा चढ़े तो थोड़ी २ पीड़ा होती है और कुछ हानि नहीं होती और कभी पीड़ा भी नहीं होती परन्तु जो देर तक यह रोग रहे सो अच्छा नहीं है इस में गरम पानी से स्नान करें और फरफियून का तेल मलें और आबजन करें और उसी जगह सींगियां लगावें ।

इसी प्रकार से कभी लिंग भी चढ़ जाता है उसका उपाय भी यही है ॥

रगें उभर आने का वर्णन ।

इसका उपाय यही है जो पैर की रगें उभर आने का लिखा जावैगा और जो कदाचित भी आ जावे तो उसका यह उपाय करें जो सूजन का है ।

ऊपर की खाल ढीली होजाने का वर्णन ।

माजू, आस, गुलाब के फूल, गुलनार, मसूर के फल आदि कब्ज करने वाली औषधियों का लेप करें और जड़ों को औटा के डारें ।

लिंग आदि के घाव का वर्णन ।

जो यह घाव तामी हो तो मुर्दासंग और तूतिया सिरके और लगावें चाहें सूखा पीस के या मरहम बना के और जो रुधिर की अधिकता से हो तो पहिले मवाद को निकालें और जो घाव भुभना हो तो यह मरहम लगावें दम्मुल, अखवेंन, और मुर प्रत्येक नौ माशे एलुआ, मुर्दासंग, इसलत प्रत्येक ७ माशे पीस के रोगन गुल मिलाके लगावें ॥

जो घाव लिंग के अंदर हो तो मूत्र आने में जलन होगी, उस का उपाय मसाने के घाव का करें ॥

लिंग के सूज जाने का वर्णन ।

इसका उपाय वही है जो अंडकोष की सूजन में लिखा गया है ।

लिंग आदि की खुजली का वर्णन ।

इसमें फस्द खोले, और रान और जांघ पर पछने लगावें और पित्तों का जुल्लाब दें, फिर गरम पानी और सिरके से डारें, और रोगन गुल मलें, और अंडे की सफेदी का लेप करें ।

लिंग के फटजाने का वर्णन ।

इसका उपाय वही है जो गुदा के फटजाने का है ।

लिंग पर कड़ी फुन्सियां और मस्से होजाने का वर्णन

काला दाना सिरके में मिलाकर लगावें, और वही उपाय करें जो मस्सों का है ॥

मूत्र के छिद्र बंद होजाने का वर्णन ।

जो फुन्सी निकली हो तो मूत्र कठिनता से जलन के साथ

होगा इस में फस्द खोलें, और कुलफे और खरपूजे के बीजों का शीरा निकाल कर शर्बत खसखाश के साथ दें, और अस्पगोल रोगन बनफशे और बादाम में मिलाकर लिंग पर रक्खें जब वह पक कर फूटे और पीब निकले तो स्याफ, अबियज रोगन गुल और स्त्री के दूध में घोल कर छिद्र में टपकावें और जो पीड़ा अधिक हो तो थोड़ी सी अफीम भी मिलावें ॥

और जो कोई वहमदार मवाद छिद्र में फंसा हो तो मूत्र कठिनता से निकलेगा और जलन न होगी और मूत्र में उस मवाद का लक्षण पाया जावेगा इसमें मूत्र लानेवाली औषधें दें और पिघलाने वाली औषधों को औटा के घारें और उसी औटे हुए पानी में थोड़ा सा रोगन बाबूना मिला के पिचकारी दें और जो मस्सा हो तो मूत्र कठिनता से होगा और जलन न होगी, न कफ निकलेगा जो वह मस्सा सिरे पर हो तो पलुआ और सफेदा रोगन गुल में पीसकर टपकावें और जो पीड़ा अधिक हावे फस्द साफिन खोले और पिंडली पर पछने लगावें ॥

लिंग के टेढा होजाने का वर्णन।

इसका कारण पट्ठे का खिंचाव या सूजन है पहिले उस कारण को दूर करें और रोगन आदि मल के उस स्थान को नर्म करें और फिर हाथ से भली भांति उसे सीधा कर लेवें ॥

इक्कीसवां अध्याय

मिराक सिफाक और सर्व का वर्णन।

जानना चाहिये कि पेट के चमड़े को मिराक कहते हैं और जो झिल्ली उसके नीचे है वह सिफाक कहलाती है और एक परदा मोटा चिकना जो सिफाक के तले है सर्व कहलाता है।

काल का वर्णन ।

यह वह रोग है कि सिफाक की रीह जो पट्ठों की ओर है अंडकोष के पास से खुलजावे या सिफाक आपही यहां से फट जावे और सर्ण या आंत या वायु या तरी अंडकोष की थैली में उतर आवे इसको फितक भी कहते हैं ॥

और जब कोई गाढ़ा मवाद उतरे तो उसे फरदुल खसी कहते हैं। इन पांचो का वर्णन अलग२ करते हैं पहिले आंत के उतरने का लक्षण यह है कि थोड़ी २ उतरे और कठिनता से ऊपर को चढ़े और चढ़ने के समय गड़बड़ हो और कभी कूलंज की पीड़ा भी इसमें होती है, उपाय इसका यह है कि धीरे २ मल के ऊपर चढ़ावें, और जो तुरत न चढ़े तो गरम पानी से धारें और आबजन में बिठावें, और जब चढ़ जावे तो यह लेप पेडू और पट्ठों और अंडकोष पर लगावें, मस्तगी ईंजक, कुंदरमरी के फल और पत्ते, अकाकिया, गुलनार, हुर, दम्मुल अखवैन, फिटकरी, रसौत, अमल, एलुआ, सब को बराबर लेकर कूट छान कर सरेशमाही को हरी मकोय के पानी में पिघला कर यह औषधें उसमें मिलाकर एक कपड़े पर मरहम की तरह लगा कर अंडकोष पर चिपटा दें, और ऊपर से पट्टी खेंच कर बांध दे और तीन दिन तक बंधा रक्खे और रोगी को चाहिये कि तीन दिन तक चित पड़ा रहे और तीन दिन पीछे बहुत ढीले से उठे और चले फिरे और जो वस्तु हानिदायक हो उसे न खावे पीवें और हिलने झुलने से बचे और नित जवारिश्न और कमूनी खावें और आंकड़ा जो इस काम के लिये बनाया गया है बांधे रहे ॥

दूसरे सर्ण के उतरने का लक्षण भी कठिनता से चढ़ना है परंतु उसमें गड़बड़ नहीं होती और यही इसमें और आंत के

रने में अन्तर है, इसका उपाय भी वही है जो ऊपर लिखा
ा है। तीसरे वायु के उतरने का लक्षण यह है कि सहज से
र को चढ़े और गड़बड़ अधिक हो, इसमें वातनाशक औषधें
में लावें, और वायु के उत्पन्न करने वाली वस्तु से बचें और
बांधे रहे। चौथे पानी उतरने का लक्षण यह है कि अंड-
की खाल भारी और पानी से भरी मालूम हो और किसी
र से ऊपर न चढ़े, इसमें उस पानी को सुखावें जैसा कि
जलन्धर में लिखा है और जब उससे काम न हो तो छेदा
ानी निकाल डालें पांचवे फर दुलकहमी में गाढ़ापन और
व और कड़ापन थैली के अन्दर होता है नकि उसकी
में यही अन्तर है इस रोग में और यहां की सूजन में मल-
हीमुन से मवाद निकाले और बाकी वही उपाय है जो
य की सूजन का है।

पेट और चढ्ढों की फितक का वर्णन।

ापी सिफाक टुंडी के पास ऊपर या नीचे को उससे फट
है, और मिराक जैसे का तैसा रहता है और जो कुछ
ं के तले है उभर कर मिराक को ऊंचा करता है और
कार से चढ्ढों में सिफाक फट जाता है और उस जगह
ो जाता है, और यह दोनों रोग बहुत करके स्त्रियों
हैं, उस जगह को भारी गद्दियों और पट्टियों से कसके
र उन वस्तुओं से बचे जो ऊपर लिखी गई हैं, परन्तु
है कि यह रोग अच्छे नहीं होते उपाय करने से
ह लाभ है कि रोग बढ़ने नहीं पाता कहते हैं कि इन रोगों
की उंगलियों पर शलाका को गरम करके दाग देना
क है, और इसी प्रकार से उस मोटी रग पर जो अंगूठे
हाथ की मुट्ठी पर है दूसरी ओर दाग दें॥

टूंडी के उभर आने का वर्णन ।

जो उत्पत्ति के दिन बुरी तरह से काटने से या किसी रोग से उभर आवे तो उसी समय तुरन्त ही उसे ठीक करे नहीं तो पुराना होने पर कुछ काम नहीं होगा उसी समय यही भांति से ठीक करे ॥

जो यह रोग सिफाक के फटने या कफ इकट्ठा होने से होवे जैसा कि ज़िक्की जलंधर में होता है या वायु के इकट्ठा होने से जैसा कि तबली जलंधर में होता है या टूंडी की खाल के नीचे मांस बढ़ जाने से या किसी रग के फट जाने से और रुधिर इकट्ठा होने से हो इनमें से जो रोग फितक की प्रकार का है उसमें दबाने से टूंडी नीची हो जाती है चाहे गड़बड़ हो या न हो ॥ और कफ में बोझ जान पड़ेगा, और वायु में नरमी होगी और वायु की उत्पन्न करने वाली वस्तु खाने से उभार अधिक होगा और उनकी विपरीत दवाओं से घटेगा मांस उत्पन्न में उपड़ी कड़ी होगी और दबाने से नहीं दबेगी और रुधिर के इकट्ठा होने में ऊपर का रंग नीला या काला होगा, जो यह रोग फितक की प्रकार से हो तो उसका उपाय लिख चुके हैं और जो कफ या वायु से हो तो उसका उपाय जलंधर के वर्णन में देखलो, और मांस उत्पन्न हो जाने में कुछ उपाय न करें वह अच्छा न होगा ॥ और जो रुधिर इकट्ठा हो जावे तो जोंक लगाके बन्द करने वाली औषधों का लेप करे जो नकसीर के वर्णन में लिखी गई हैं कि रगों का मुंह जिससे रुधिर निकलता हो बन्द हो जावे ॥

बाईसवां अध्याय ।

उन रोगों का वर्णन जो केवल स्त्रियों को होते हैं

बांझ होने का वर्णन ।

जो रहम में कोई बिगाड़ गर्मी या तरी या खुश्की या

गर्मी और सर्दी या मवाद से हो तो उस का कारण जान के उपाय करना चाहिये ॥

गरमी की पहिचान यह है कि हैज का रुधिर काला और गाढ़ा होगा, और उसमें गरमी भी पाई जावेगी, ठण्ड की पहिचान यह है कि हैज का रुधिर देर करके और बिना जलन के आवेगा, और खुश्की की पहिचान यह है कि पेशाब की जगह खुश्की रहेगी और हैज कम होगा, तरी की पहिचान यह है कि योनि से तरी निकला करेगी, और ऐसी स्त्री के तीन महीने से अधिक पेट न रहेगा, और जो बिगाड़ किसी मवाद से हो तो पहिचान उस मवाद की तरी के रंग से जानी जावेगी, जो कि योनि से बहे।

जो बुढ़ापेके कारण गर्भ न रहे तो दुबला होनेका उपाय करें, और जो अधिक दुबला होने से हो यहां तक कि इतना रुधिर न बचे कि बच्चे को बढ़ावे तो मोटा होने का उपाय करें जो इस किताब के अन्त में लिखा गया है और जो हैज के बन्द होजाने से हो तो ऐसी औषधें काम में लावें और हैज को निकालें।

और जो रहम की सूजन या बवासीर या घाव या कड़ेपन से हो तो उस कारण को दूर करें और इन का वर्णन अलग बयान किया जावेगा।

और जो रहम में गाढ़ी वायु इकट्ठा होने से हो तो लक्षण उसका यह है कि पेड़ फूला हुआ होगा और विषय के समय योनि की जगह से वायु आवाज के साथ निकलेगी इसमें वह औषधें काम लावें जो वायु को तोड़ें और पेड़ू पर बारे लगावें और रोगन बेदइओर साढ़े दश माशे माऊल असल में मिला पिलावें ॥

और जो रहम के मुंह में कोई बिगाड़ हो जैसे सूजन या
मांस या मस्सा आदि जिसमें मुंह बन्द हो जावे तो उस कारण
को दूर करें उसका वर्णन आगे किया जावेगा और जो रहम
का मुंह सामने से हट गया हो और जो उससे वीर्य भीतर न
जा सके तो विषय करने के समय पीड़ा होगी और उसका
उपाय आगे लिखा जावेगा और जो विषय के पीछे स्त्री तुरन्त
ही उठ खड़ी हो या कोई और इसी प्रकार की हो जिससे वीर्य
फिसल कर निकल जावे तो उस कारण को रोकें कभी पुरुष
भी बांझ होता है जैसे कि वीर्य के बिगड़ जाने से हो तो उस
का उपाय करना चाहिये और वीर्य को ठीक करें। और कभी
ऐसा होता है कि मनुष्य के जन्म से हो तो उसका उपाय नहीं
हो सकता है ॥

अब इस बात को जानना चाहिये कि स्त्री बांझ है या
पुरुष, इस प्रकार से हो सकता है कि दोनों के वीर्य अलग
अलग लें और उन्हें गरम पानी में डालें जो ऊपर तैरता
तो जानों कि वही बांझ है ॥ जो औषधें कि गर्भ रहने
लिये लाभदायक हैं यह हैं हाथीदांत का बुरादा ४॥ मा
खिलावें या पनीर लगावें ॥

बहुधा गर्भ गिरने का वर्णन ।

जो इसका कारण चोट या क्रोध या दुख आदि या बड़
या भूख या कोई रोग हो तो उस कारण को रोकें, बांझ
के कारण और इसके एक हैं इस लिये ऊपर के वर्णन में देख
चाहिये ॥

जनने में कठिनता होने का वर्णन ।

इसका उपाय ठण्डी और गरम हवा और समय के अनु
सार करना चाहिये और जो स्त्री कठिनता से जना करे

...वें महीने से दूध पिलाया करें जितना उसे पच सके, और ... के जनने को हो तो उसे गरम जगह में ले जावे और गरम ... बदन पर धारे और आबजन में बिठावे, और तेल मले और तरलावे और ठण्डे पानी और ठंडी वस्तुओं और खटाई ... बचे, और स्त्री को चाहिये कि अपने दम को रोके और ... पर जोर करे और कूथे और दाई रोगन बादाम या ... का तेल, अलसी का लुआब मिला कर गुन गुना करके ... के मुंह पर बहुत सा मले इससे बच्चा सुगमता से उत्पन्न होता है ॥

... यह औषधें इस रोग को अति लाभदायक हैं चुम्बक पत्थर ... बड़ा टुकड़ा बांये हाथ में बांधें और मूंगे की जड़ दाहिनी रान ... बांधे, और दाल चीनी खिलावे, और जो शुद्ध वेदस्तर या ... भी पिलावे तो तुरन्त लाभ होगा, परन्तु गरमी न हो और ... अमलतास के छिलके डेढ़ तोला कुचल के औटावे और शर्बत ... या चनों का पानी मिलाकर पिलावे, इससे तुरन्त ... बच्चा हो सकता है, और मशीमा भी निकल जाती है और ... स्त्री को सुगन्धि कभी न सुंघाना चाहिये और जनने ... समय तो कभी नहीं सुंघावे ॥

...सीमाके रुकने और पेटमें बच्चा मरजाने का वर्णन

... पेट में बच्चा मरजाने का लक्षण यह है कि जितना उसका ... हो जाता है, और स्त्री के हाथ पांव ठंडे होजाते हैं, और ... लगती है, और सांस पेट में नहीं समाती इसमें तुरत ही ... या मशीमा को निकाले, चाहिये कि पहाड़ी पोदीना, ... अबहल, प्रत्येक साढ़े १०॥ माशे, तुखमुस और पोदीना ... पाव पानी औटाकर और तीन तोले मिश्री मिलाकर ... और नकछिकनी या पिसी हुई कलौंजी या इमाहू की

नास सुंघाकर छींक लिवावे, और जब छींक आवे तब मुंह और नाक बन्द करावें, कि जार छींक का अन्दर को थमे और बच्चा मरा हुआ निकल पड़े, और सांप की कांचली और कबूतर की बीठ जलाकर रहम में धूनी दें तो तुरन्त लाभ होता है और जो इनसे कुछ लाभ न हो तो बच्चे को काटकर निकाले।

जो रुधिर जनने के पीछे निकलता है उस के रुक रहने का वर्णन।

इसका उपाय वही है जो हैज के बंद होने का है कुछ स्त्रियों को जनने के पीछे पीड़ा होती है उसकी औषधें यह हैं अलसी के बीज औटाकर रहम को बफारा दें, और नमी का दूध गुनगुना करके मूत्र की जगह को धोवें और गधे या खिचर के सुम जलाकर धूनी लें और सातर का पानी पिलावें।

और खुब्बाजी औटा के पिलावें, और रहम में भी पहुचावें और जो कोई दवा लाभदायक न हो तो पोस्त को पानी में भिगोकर उसका पानी थोड़ा सा पिलावें कभी गर्भ गिराना पड़ता है, यह महा निषेध काम है, और जो अत्यन्त आवश्यकता हो तो उसका उपाय यह है कि कागज की बत्ती बनाकर रहम के मुंह में रक्खे और जो उसको कुतरान में अथवा इन्द्रायन के पानी में या उसके जुशांदे में भिगोवें तो अधिक पुष्ट होवेगा, और हींग दो माशे सूखा हुआ सुदाब दश माशे, मक्की तीन माशे कूट छानकर खिलावें और ऊपर से अबहल औटाकर पिलावें, सन्ध्या और सवेरे यह सब एक खुराक है और सन के पत्तों का पानी दें तिरियाक अरबी भी लाभदायक है, और जो औषध मरे हुए बच्चे को पेट से निकालती हैं वो गर्भ के गिराने में काम आती हैं॥

र्भ गिराने के समय पहिले गरम स्थान में बैठकर रोगन
रि ईंर मलें और चिकनाई पिलावें, और गिर जावे तो
गन्ध और राई जलाकर रहम को धूनी दें कि रुधिर
ारा न होने पावे और निकलता रहे ।

जब चाहें कि गर्भ न रहने पावे तो उपाय उसका यह है
के विषय के पीछे सात बार या नौ बार कूदें और वीर्य निकलने
छे तुरन्त ही उठ खड़ी हों और छींक लें और पुरुष विषय
समय लिंग पर तिल्ली का तेल मला करे उसकी चिकनाई
वीर्य फिसल जावेगा और कालीमिर्चें विषय करने के पीछे
ग के छिद्र में रक्खें और चूहे की मेंगनी पीस के गद्दा
नाकर रक्खें ।

रिजा का वर्णन ।

यह वह रोग है कि जिसमें सब लक्षण गर्भ रहने के से
पे जाते हैं परन्तु वह गर्भ नहीं है क्योंकि इस रोग में और
र्भवती होने में यह अन्तर है कि बच्चे के हिलने झुलने के जो
मय हैं उनमें बच्चा हिलता नहीं है और लक्षण जो गर्भ के हैं
नहीं पाये जाते ॥ और ऐसा ही जलधर में और इस रोग में
मने वालों को अन्तर मालूम होजाता है अर्थात् जैसा
ापन इस रोग में है वह जलंधर में नहीं होता । कारण इस
रहम की सूजन हो तो उसका उपाय आगे लिखा जावेगा
र जो किसी मवाद के गिरने या वायु के उत्पन्न होने से हो
उसका उपाय बांझ होने के वर्णन में लिखा गया है ।

और जो केवल स्त्री के वीर्य से और रहम से कोई वस्तु
न्न होगई हो तो गर्भ को गिरादें ।

हैज की अधिकता का वर्णन ।

जो रुधिर की अधिकता से हो तो फस्द से उसे कम करें ।

और छातियों को पट्टी से कस के बांध दें और उनके नी
पछने लागवे और फस्द के पीछे कुर्स कहरुवा रुधिर बंद करने
लिये खिलावें और शाफा मुमसिक रहम में रक्खे ॥ और
रुधिर पित्तों की अधिकता से पतला और तेज होगया हो
पित्त के लक्षण पाये जावेंगे इसमें पित्त को निकालें और
ऊपर वाले कुर्स और शाफा दें और चंदन पेड़ू पर लगावें
रुधिर में तरी बढ़ जावे तो कफ के लक्षण पाये जावेंगे इस
तरी को सुखावें और निकालें ॥

जो सौदा के मिलने से रुधिर में तेजी आगई हो तो रुधि
काला या नीला या हरा होगा उसमें सौदा का फस्द औ
जुल्लाब से निकालें ।

और इसका कारण रहम की बवासीर या घाव हो
उसका उपाय आगे आवेगा ॥

और जो जनने की कठिनता से रहम की रगें फट गई
तो उसका उपाय आगे के बयान में लिखा जावेगा ।

और जो कभी फुटने से यह रोग हो तो काबिज शराब
पिलावें और कब्ज करने वाली औषधें जैसे माजू और गुलना
और गुलाब के फूल औटाकर आगे से धोवें और उस स्था
को चिकना रक्खें, और अंगूर की लकड़ी और पत्तों की रा
कपड़े पर रखकर गद्दी बांधें और जहर मुहरा मठे में घिस
पिलावे, और जो उपाय घाव का है वही मरहम लगावे।

रहम के घाव का वर्णन ।

लक्षण उसका यह है कि पीड़ा बनी रहेगी और पीब या
रुधिर अकेले या दोनों मिले हुए निकलेंगे ... घावमें पीब
न बढे और कोई हानि न ... ठीक

और कुर्स कारुवा खिलावें और कब्ज करने वाले हुकने और गद्दी काम में लावें और जब घाव में पीब पड़े या सूजन होकर फूटे तो रोगन गुल शकर और रोगन बनफशा पानी साथ कर रहम में हुकना करें और जब मवाद साफ होजाय तो मरहम बासलीकून रोगन गुल में मिलाकर रहम में हुकना करें कि घाव अच्छा हो जाय।

और जो रहम की गर्दन में घाव हो तो इन्हीं औषधों की बत्ती रक्खें कुछ हुकने की आवश्यकता नहीं और अकेला शहद या औटा हुआ दूध रुई में भिगो के घाव में रक्खें और रहम से मवाद निकालना अति लाभदायक है।

और जब पीड़ा अधिक हो तो अफीम और केशर स्त्री के दूध में घोलकर उसमें रुई भिगोकर रहम के भीतर रक्खें।

रहम के फटजाने का वर्णन।

इसमें विषय के समय अधिक पीड़ा होगी और लिंग रुधिर भरा हुआ निकलेगा जो मरहम गुदा के लिये लिखे हैं वही लगावें और मरहम बासलीकून और रोगन बनफशा अति लाभ दायक है कभी गुदा और मूत्रेन्द्रिय के बीच में जो पर्दा है वह जनने की कठिनता आदि से फटजाता है इसमें मछली का गूदा सफेद मोम और बकरी के गुर्दे की लेकर बहुतसा संगजिराहत मिलाके मरहम बनावें और उसको गद्दी पर लगाकर इस प्रकार बांधें कि घाव की जगह जमजावे और हानि कारक वस्तुओं से बचें।

रहम की खुजली का वर्णन।

यह रोग पित्त खारी बलगम या सौदा या वीर्य्य में तेजी आजाने से होता है उपाय इसका यह है कि हैज का रुधिर पीला या सफेद या काला होगा पहिले मवाद को निकालें फिर

पोदीना अनार के छिलके और दली हुई मसूर कूट छान कर मुमव्वस या शराब या सिरके में घोल कर रुई उसमें भिगोकर अन्दर रक्खें और रोगन गुल और रोगन बनफशा मलें और जो मूत्र के स्थान पर खुजली हो तो उसका भी यही उपाय है।

रहम की बवासीर का वर्णन।

इसका उपाय भी वही है जो बवासीर का सत्रहवें अध्याय में लिख चुके हैं।

रहम की फुंसियों का वर्णन।

यह रुधिर के बिगाड़ या पित्त से होता है फुन्सियां छूने में आती हैं और खुजली होती है फस्द से मवाद को निकालें और सिकंजबीन पिलावें और सफेदे का मरहम लगावें और जो रहम की गरदन में फुन्सियां हों और जो भीतर को हों तो हुकना करें।

रहम के मस्सों का वर्णन।

यह भी छूने से मालूम होते हैं फस्द खोलें और सौदा का जुल्लाब दें और बाबूना नाखूना मेथी और अलसी के बीज औटाकर आबज़न करें और पेशाब करने के पीछे बत्ती से धोवें।

रहम के नासूर का वर्णन।

जब घाव चालीस दिन का हो जाता है तो उसे नासूर कहते हैं लक्षण उसका यह है कि पीला पानी बहा करे और उपाय उसका वही है जो आठवें पाठ में लिखा गया है।

रहम से पानी बहने का वर्णन।

इसमें फस्द और जुल्लाब से मवाद को निकालें, और मिज़ाज को ठंड और गर्मी के अनुसार सुखाने का उपाय करें।

रहम से वीर्य्य बहने का वर्णन।

इसमें और पानी पड़ने में यह अन्तर है कि पानी में दुर्गन्ध अधिक होती और वीर्य में गाढ़ापन और सफेदी अधिक होगी, इसका उपाय वही है जो पुरुषों के वीर्य बहने का है।

हैज के बन्द होजाने का वर्णन।

जो यह रुधिर की कमी से हो तो शरीर दुबला होगा और रुधिर की न्यूनता के लक्षण पाये जावेंगे, पुष्ट भोजन खाकर रुधिर बढ़ाने का उपाय करें, और जो ठंढ पहुंचने या किसी मवाद मिलने से रुधिर भी गाढ़ा हो गया हो तो इस पन के कारण पाये जावेंगे, और ठंढ के लक्षण होंगे, गाढ़े मवाद को निकालें, और वह औषधें जिनसे रुधिर जारी हो चाहे पिलावें या बफारा दें, और जो रहम की रगों के पर हो गये हों तो देखना चाहिये कि कारण उसका गर्मी या ठंढ या खुश्की फिर वैसा उपाय करें, जो पहिले पाठ में लिखा गया है॥

जो रहम का घाव भरने से रुधिर रुक रहा हो तो उसका उपाय नहीं हो सकता परन्तु अधिक हानि से बचने के लिये कभी फस्द खोला करें, और मिहनत अधिक करें और भोजन कम खावें॥

और जो रतक के कारण से हो तो उसका उपाय आगे लिखा है और जो अधिक मुटापे से रुधिर निकलने के रास्ते बन्द हो गये हों तो दुबला होने का उपाय करें, और जो रहम के फिर जाने से होतो उपाय उसका आगे के पाठ में आवेगा

रतक का वर्णन।

यह यह रोग है कि भग के मुंह पर या उसके और रहम के मुंह के बीच में या रहम के मुंह पर कोई वस्तु पैदा हुई हो, पहिले में लिंग अन्दर न जा सके और दूसरे में

पुरा जावेगा, और तीसरे में आ सकेगा परन्तु हैज का रुधिर निकलने न पावेगा चाहिये कि इसको किसी से काट डालें।

रहम के उभरने का वर्णन।

इसका लक्षण यह है कि पेडू और कमर के स्थान पर अधिक पीड़ा मालूम होगी और कुजाम और राशे के रोग उत्पन्न होंगे और भीतर कोई वस्तु नरम पाई जावेगी, आँतों को झुकने से और मसाने को मूत्र लानेवाली औषधों से साफ करे, चमेली का तेल या रोगन गुल लेकर उसमें थोड़ासा केसर का तेल और आगजा मिलावे और गुनगुना करके रहम में टपकावे और मले और दाई से कह दे कि स्त्री को चित लिटा कर दोनों रानें उठावे इस प्रकार से कि आपस में मिलने न पावें अलग २ रहें और भेड़ के नरम बाल जो खाल के पास बालों की जड़ में होते हैं उनको लेकर उस शराब में जिसमें कि कब्ज करने वाली औषधें औटाई गई हों भिगोकर अकाकिया और सुक और रामक कूट छानकर उससे उन बालों को लपेटे और पोटलीसी बनाकर रहम को उससे उठाकर भीतर करे और उस पोटली को उसी जगह रहने दे और दूसरी गद्दी से भग को भर दे और कसकर पट्टी बांधे और पेडू पर उसके आसपास काबिज औषधों का लेप करें और तीन दिन तक इसी प्रकार से रहे, और हानिकारक वस्तुओं और हिलने झुलने से बचे तीसरे दिन पट्टी खोल के उस औषधि को निकाले और नई दवा रखदे, और जब तक भली भांति आराम न हो चलने फिरने में पट्टी बांधे रहे और बराबर सुगंधि सुंघावे ॥

रहम के झुक पड़ने का वर्णन।

यह दाई का हाथ लगने से मालूम हो सकता है और

ाव के समय पीड़ा होती है और कभी कभी बेविधा भी होती और मूत्र और दस्त बंद हो जाता है ॥

जो रुधिर की अधिकता से रगें तन गई हों तो जिगर की ाव हो वसी और फस्द साफिन खोलें ॥ और जो ठंड ाने से हो तो तर आबज़न में बिठावें और रोगन बाबूने ाबन की चर्बी पिघलाकर मलें ।

और जो कफ गिरने से हो तो अयारिजें खिलाकर मवाद निकालें ॥

और जो कारण दूर करने के पीछे भी यह रोग न जावे ांधनी में मोमरोगन लगा के दाई सीधा करदें ॥

रहम की सूजन का वर्णन ।

जो गरम से हो तो लक्षण उसका यह है कि गरम ज्वर ा और नाड़ी और श्वास जल्दी २ चलेगी । और गर्द र मेदे में बिगाड़ होगा और जो आगे को रहम में सूजन ा पेडू में पीड़ा होगी और जो पीछे हो तो, कमर की ओर र जो दोनों जगह हो तो दोनों कोख में पीड़ा होगी इसका ाय वही है जो मसाने की सूजन का है ॥ और जब सूजन पकजावे और फूटे तो रहम के घाव का ाय करें ॥

और जो कफ की सूजन हो तो पेडू के आसपास पीड़ा भी और बोझ भी होगा इलटी और मसाने की ठंडी सूजन ा उपाय करें, । और जो बादी से हो तो कड़ापन होगा और ा किसी ओर झुका होगा और पीड़ा कम और बोझ अधिक ाा फस्द और जुल्लाब से बादी को निकालें और मरहम ार चरबी और रोगनों से चाहे पिचकारी दें या गदी रक्खें

या लेप लगावें, और सोये और खेरू को औटाकर तावदि दो बार आबजन करें ॥

रहम के दुबेले का वर्णन।

जब सूजन पकजावे और न फटे तो उसको दुबला कहते हैं जो यह रहम के मुंह में हो तो छेदा देकर पीव को निकाल डाले।

जो रहम के भीतर तह में हो तो मूत्र लाने वाली औ पिलावें, और नरम करने वाली औषधों का लेप करें कि आप फूट जावे और जो फूटने में देर होती हो तो इंजीर राई औटाकर रहम में हुकना करें, और फोक उनका सूजन की जगह पेडू पर लेप करें और जब फूटे तो पीव साफ करें और घाव को भरें ॥

सरतान रहम का वर्णन।

यह रोग बहुधा गरम सूजन के पीछे हो जाता है कड़ापन और गरमी और तपक होती पीड़ा छाती तक हो और पांव पर सूजन होती इसका उपाय नहीं हो सकता, थामने के लिये ऐसे मरहम लगाया करें जिनसे पीमी हो, और आबजन और हुकना आदि किया करें मरहम रसूल अति लाभदायक है और सौदा के निकालने लिये कभी २ फस्द और जुल्लाब दें परन्तु तरी पहुंचने ध्यान बहुत रक्खें।

खातिनाक रहम का वर्णन।

इस रोग में मृगी और मूर्च्छा का सा हाल होता है कफ मुंह से नहीं निकलता और तड़पन नहीं होती और मू ऐसी अधिक होती है कि पुकारने से भी कुछ खबर नहीं मूर्च्छा में वह उपाय करें जो मूर्च्छा और मृगी का है परन्तु

गंधि कभी न सुंघावें दुर्गंधि सुंघानी लाभदायक है और ड और गूगल आदि जिसमें दुर्गंधि हो नाक के आगे जलावें सुगंधि रहम के भीतर पहुंचे और मुश्क और अम्बर की और रहम में पहुंचावे और जब विषय के छूट जाने या की अधिकता से यह रोग हो तो हो सके तो विषय करे और जब हैज के रुधिर रुकने से हो तो फरफियून और ी मिरचें गद्दी में भीतर रक्खें और जब रोगी चैतन्य हो मूत्र लाने वाली औषधें पिलावें और फस्द खोलें और द निकालें और रहम को पुष्ट करें ॥

रहम में पानी भरजाने का वर्णन ।

इस रोग में जिसकी जलधर की भांति पेट फूल जाता है कभी पानी ऊपर बह जाता है इसमें रहम और सारे र का मवाद निकालें और मूत्र लाने वाली औषधें खिलावें यह उपाय करें जो जलंधर और पंद्रहवें पाठ में लिखागया र भूखा रहना, और मिहनत करना अति लाभदायक है कहते हैं कि सफेद कुटकी भीतर लगाना अच्छा है ॥

रहम में पानी भरजाने का वर्णन ।

इस में पेडू फूल जाता है और पीड़ा भी होती है और ने से तबले की सी आवाज निकलती है अयारिज खिला सारे शरीर का मवाद निकालें और वायु को तोड़ने वाली वों से हुकना लेप, सेक, आबज़न आदिक और जो उपाय ी जलंधर का है वही इसका है ॥

जो रोग बीसवें अध्याय के आठवें, नवें और बारहवें में लिखे गये हैं वह स्त्रियों को भी होते हैं उनका उपाय है जो पुरुषों के लिये है ॥

या लेप लगावें, और सोये और खरू को औटाकर रातदिन दो बार आबजन करें ॥

रहम के दुबेले का वर्णन।

जब सूजन पकजावे और न फटे तो उसको दुबेला कहते हैं जो यह रहम के मुंह में हो तो छेदा देकर पीब को निकाल डाले।

जो रहम के भीतर तह में हो तो मूत्र जाने वाली औषध पिलावें, और नरम करने वाली औषधों का लेप करें कि आप आप फूट जावे और जो फूटने में देर होती हो तो इंजीर व राई औटाकर रहम में हुकना करें, और फ़ोक उनका ऊपर सूजन की जगह पेडू पर लेप करें और जब फूटे तो पीब साफ करें और घाव को भरें ॥

सरतान रहम का वर्णन।

यह रोग बहुधा गरम सूजन के पीछे हो जाता है कड़ापन और गरमी और तपक होगी पीड़ा जांघों तक व और पांव पर सूजन होगी इसका उपाय नहीं हो सकता, पर थामने के लिये ऐसे मरहम लगाया करें जिनसे पीड़ा धीमी हो, और आबजन और हुकना आदि किया करें मरहम रसूल अति लाभदायक है और सौदा के निकालने के लिये कभी २ फस्द और जुल्लाब दें परन्तु तरी पहुंचने का ध्यान बहुत रक्खें।

खतिनाक रहम का वर्णन।

इस रोग में मृगी और मूर्च्छा का सा हाल होता है फफ मुंह से नहीं निकलता और तड़पन नहीं होती और मू ऐसी अधिक होती है कि पुकारने से भी कुछ खबर नहीं मूर्च्छा में वह उपाय करें जो मूर्च्छा और मृगी का है परन्तु

गंधि कमी न हु यार्ते दुर्गंधि हु यानी लाभदायक है और
क और गूगल आदि जिसमें दुर्गंधि हो नाक के आगे जलावै
सुगंधि रहम के भीतर मलै और मुश्क और अम्बर की
और रहम में पहुंचावे और जब विषय के छुट जाने या
की अधिकता से यह रोग हो तो हो सके तो विषय करे
और जब हैज के रुधिर रुकने से हो तो फरफियून और
मिरचें गद्दी में भोकर रक्खें और जब रोगी चेतन्य हो
व लाने वाली औषधें पिलावें और फस्द खोलें और
निकालें और रहम को पुष्ट करें ॥

रहम में पानी भरजाने का वर्णन।

इस रोग में जिसकी जलधर की भांति पेट फूल जाता है
जभी पानी ऊपर चढ़ आता है इसमें रहम और सारे
का मवाद निकालें और मूत्र लाने वाली औषधें पिलावें
ह उपाय करें जो जलंधर और पंद्रहवें पाठ में लिखागया
भूखा रहना और मिहनत करना अति लाभदायक है
कहते हैं कि सफेद कुटकी भीतर लगाना अच्छा है ॥

रहम में पानी भरजाने का वर्णन।

स में पेट फूल जाता है और पीड़ा भी होती है और
से तबले की सी आवाज निकलती है अयारिज खिला
रे शरीर का मवाद निकालें और वायु को तोड़ने वाली
से हुकना लेप, सेक, आबजन आदिक और जो उपाय
जलधर का है वही इसका है ॥
रोग बीसवें अध्याय के आठवें, नवें और बारहवें
लिखे गये है वह स्त्रियों को भी होते हैं उनका उपाय
जो पुरुषों के लिये है ॥

तईसवां अध्याय

पीठ और हाथ और पांव के रोगों का वर्णन

कुभ निकल आने का वर्णन

इस में पीठ की गुरियां अपनी जगह से आगे पीछे वा बांये खिसक जाती हैं इस रोग के कारण पांच हैं एक पट्ठे की सूजन जो गुरियों के आस पास हैं, दूसरे गुरियों नीचे गाढ़ी धात का आना तीसरे यह कि पतली तरी गुरि की नसों में आवे और उसे ढीला करदे चौथे नसों का खिंच पांचवें यह कि गुरियों पर चोट पड़े पहिली प्रकार का लक्षण यह है कि पहिले पीठ में पीड़ा होती है और नाड़ी भारी हो है और तप अधिक होती है और दूसरी प्रकार का लक्षण य है कि पीड़ा अधिक होती है बिना तप के तीसरे में मूत्र सप निकलता है और इससे पहिले तर वस्तु खाई होगी और खिंच और चोट पड़ने का लक्षण तो सब जानते हैं पहिली प्रकार फस्द खोलें और मुलायम करने वाली औषधें दें और लगावें और सूजन का उपाय करें दूसरी और तीसरी प्रक में यह उपाय करें जो गुर्दे की चोट का है और खिंचाव तशन्नुज का उपाय करें और चोट लगने में पीठ के मुहरे ठिकाने से बिठावें जो भीतर को घुस गये हों तो ऊपर से सींगियों से या यारे लगाकर या जिफ्त और गूगल थोड़ा अकरकरा मिला करे लेप करें कि सूजन से तनाव पड़े ऊपर खिंचें जो मुहरे बाहर उभर आये हों तो हाथ से मल भीतर अपने ठिकाने पर फेर दें फिर काबिज औषधों का करें कि फिर न उभरें ॥

पीठ की पीड़ा का वर्णन ।

जो कारण इसका केवल कोई बिगाड़ बिना मवाद के होवे

ठंड लगेगी और पीड़ा बिना बोझ के होगी और गरमी से आराम मिलेगा इसमें निगलने और जगाने से गरमी पहुंचावें और जो कफ उत्पन्न होने या गिरने से हो तो कफ उत्पन्न होने में पीड़ा बोझ के साथ होगी, और पहिले से कफ उत्पन्न करने वाली वस्तु खाई हो गी ॥

और कफ गिरने के लक्षण इनके सिवाय, क्रोध, दौड़, ए मिहनत आदि है। मवाद को निकालें और साफ करें।

और कफ गिरने में पचाने वाली औषधों का लेप भी लाभदायक है बिना मवाद निकाले हुए। और जो पीठ में य फसी हो तो लक्षण उसका वही है जो कफ के गिरने का परन्तु इस में बोझ न होगा या हलका होगा, और पीड़ा र उधर फिरेगी, इसका उपाय भी लिख चुके हैं, क्योंकि यह की भी कफ है ॥

और जो विषय की अधिकता हो तो विषय करना छोड़ और जो रोगन गुल और रोगन सुरजान पीठ पर मले और इससे काम न हो तो कफ का मवाद निकाले। और जो गुर्दे कमजोरी हो तो लक्षण और उपाय उस के वही हैं, जो के रोगों में लिखे गये हैं। जो पीठ में बड़ी रग है उस में र की अधिकता से हो तो पीठ के मुहरों में गर्दन से कमर तक बराबर लम्बाई में पीड़ा और तपकन में फस्द बासलीक और माबिज खोलें और ठंडाई खिलावें ठंडी औषधें लगावें ॥

जो यह रोग रहम के बिगाड़ से हो जैसे कि स्त्रियों को जने के समय हुआ करता है जब कि भली भांति सुल- आवे इस में दस्त लाने वाली औषधें दें और उस के रुने का उपाय करें और रोगन गुल पीठ पर मलें ॥

कोख का पीड़ा का वर्णन ।

इसके कारण, लक्षण और उपाय पीठकी पीड़ा में देखें

गठिया का वर्णन ।

यह पीड़ा शरीर के जोड़ों में होती है, इसमें कभी सूज होती है और कभी नहीं होती जो चूतड़ों के जोड़ में पीड़ा । उसे वजुल वर्क कहते हैं, और जो कूले से नीचे पांवतक पड़े तो अरकुन्निसा कहलाती है ॥

और जो टखने के जोड़ से ऊपर को चढ़े या पांव की उं लियों में हो तो उसका नाम नुकरस है, बहुधा यह पांव अगूठे में होती है ।

और जो हाथ पांव के सब जोड़ों में हो तो उसका मफ सिल है सब प्रकारों के कारण और उपाय एक से हैं, इस का एक उपाय लिखा जाता है और जो वस्तु केवल एक ही प्रक के लिये है वह भी बताई जाती है जो केवल गरमी ठंढ खुश्की से हो तो पीरे उत्पन्न होगा और बोझ और पीड़ा होगी और इन बिगाड़ों के लक्षण पाये जावेंगे पीने और लग की औषधों से मिजाज को ठीक करें, और तरी से यह रो नहीं होता ॥

जो रुधिर की अधिकता से हो तो उस स्थानपर ला और तपक और तनाव होगा, जो पीड़ा होतो दूसरी ओर फ खोलें और जो दोनों ओर हो तो दोनों ओर से खोलें हाथ के जोड़ों में हो तो फस्द हफ्त अंदाम खोलें, और पांवों के जोड़ों में होतो बासलीक परन्तु रुधिर अधिक निकालें और जो मवाद के नरम करने की आवश्यकता हो तो वैसी औषधें और मिजाज के ठीक करने के लिये शर्बत पिलावें और न के आदि और बढ़ती में, फस्द के पीछे उन ठंढी

औषधों का लेप करें वा मवाद को इधर गिरने से रोकें और पीड़ा की अधिकता में सुन करने वाली औषधें भी मिलावें और रोग के अंत में बनफसा और खेरू आदि फिर पचाने वाली औषधें जैसे नाखूना और बाबूने के फूल काम में लावें चाहे तरेडा करें या लेप करें।

और जो पित्त के मिलने से रुधिर बिगड़ जावे तो पित्त के लक्षण पाये जावेंगे अर्थात् पीड़ा की अधिकता और जलन आदि होगी फस्द खोलें और मवाद का नरम करे परन्तु रुधिर अधिक न निकाले फिर मूत्र लाने वाली औषधें जो ठंडी हों अति लाभदायक हैं और पचाने वाली औषधों का लेप कभी चाहिये और इन दोनों प्रकारों में सिकञ्जबी जो बहुत तेज हो लाभदायक है॥

और जो पित्त से पीड़ा हो तो केवल उन्हीं के लक्षण होंगे और मवाद को नरम करें और मिजाज को ठीक करें और वमन अति लाभकारक है और फस्द न खोलें यह रोग केवल पित्त से बहुत कम होता है।

जो कफ से हो तो जोड़ बोझल होंगे और ठंढ के लक्षण पाओगे इसमें वमन करावें और मुलियन देके कई बार जुलाब दें जब मवाद निकल चुके मूत्र लानेवाली गरम औषधें लावें।

और इसमें भूल कर भी केवल यह ठंढी औषधें जो मवाद को इधर गिरने से रोकें या जो केवल पचाने वाली हों न लगावें और जो बादी से हो तो रंग काला होगा और पीड़ा कम और सूजन में कड़ापन और तनाव होगा इसमें फस्द खोलें जब मवाद भली भांति पकजावे तो बादी के जुल्लाब दें इसमें मरहम लगावें जो कड़ेपन को नरम करें॥ फस्द में

नश्तर चौड़ा लगावे जो रुधिर गाढ़ा और काला निकले तो बहुतसा निकाले और बन्द न करें और जो लाल और साफ निकले तो तुरत बन्द करदे और, पश्चात मवाद को बादी को बुंमिसों से पतला करलें फिर फस्द खोलें ॥ जो बाय से हो तो पीड़ा फिरेगी और तनाव होगा इसमें गुलकन्द गुलाब और सौंफ का अर्क और शर्बत बजूर पिलावें और रोगन गुल मले और कफ को निकालें और मवाद को दौर करें एक प्रकार की बाय की बाय की पीड़ा ऐसी है कि सदा पन और तेजी उसकी हड्डियों तक पहुंचती है और उसे तोड़ती है और बिगाड़ती है इसमें रुधिर और पित्त को निकालें ॥ जो पीड़ा मिले हुए मवाद से हो उसका उपाय भी वैसा ही करे और सुरंजान सब प्रकारों में लाभकारक है खाने में भी और लगाने में भी, परन्तु कफ के मवाद को अति लाभदायक है और इसमें जीरा और सोंठ मिला लेना चाहिये फिर भेदे हानि न करेगी और जब इसे खावे जोड़ों पर रोगन गुल मलते भी रहें तो इसकी खुश्की से फिर हानि न होगी यह औषधि इस रोग में लाभकारक है सुरंजान और मिश्री मिलाकर, कूट छान कर साढ़े दश माशे ठंडे पानी के साथ फांके ॥

सूखा धनियां और बराबर शक्कर मिलाकर साढ़े दश माशे खिलावें सफेद खशखाश पीस के बराबर शक्कर मिला के सात माशे फकावे । असगंधोला गरम पानी में घोलकर, और रोगन गुल मिलाकर लेप करे ॥

और मेथी के बीजों का लुआब और सिरका मिलाकर लेप करे नुकसर आदि में सुन्न करने वाली औषधों और ठंडी औषधों से अब-भेजे में कोई बिगाड़ उत्पन्न हो तो औषधि को तुरंत ही छुड़ावें और बाबूना, खैरू का औटाकर, सिर हो धारे कि मवाद भेजे से उतर आवे ॥

जबबगउलवर्क और अरकुंनिसा में औषधिसे लाभ न हो तो पहले रोग में फूले पर दागदें और दूसरे में टखने पर। अरकुनिसा जो रग है उसकी फस्द भी लाभकारक है पर रग पतीली होती है चाहिये कि लोहे की सींक भली भांति गरम करके टखने से आठ अंगुल ऊपर दाग दें। चौड़ाई में और एक दाग पांव की छुगलियां और दूसरे उगली पर जो उसके पास है भद में उपर को सलाई गरम करके लगावें कि एक लकीर सी पड़ जावे चोबचीनी सावधानी के साथ जोड़ों की सब पीड़ाओं को अति लाभदायक है।

पिंडली की रगों का बड़ी और मोटी होकर उभर आना

इसमें बादी और कफ का मवाद निकालें और फस्द बासलीक और जुल्लाब और उसरी के पीछे उन्हीं रगोंकी फस्द खोलें कि उनके भीतर का मवाद निकल जावे और जब रोग कमी हो जावे तो भली भांति नरमी से उन्हें बांधें कि मवाद उलट न आवे।

पांव सूजकर हाथी के से हो जाने का वर्णन।

इस का उपाय वही है जो ऊपर के पाठ में लिखा गया है और जो अधिक हो जावे तो अच्छा हो नहीं सकता।

एड़ी की पीड़ा का वर्णन।

जो घाव में से हो तो मरहम लगावें जो चोट लगी होतो ममीरा और अर्मनी पानी या गुलाब में पीसकर लगावें और उंडे पानी से धोवें और पछने भी लगा सकते हैं और जो जूते के दबाने से होतो भी यही उपाय है और जो मवाद के गिरने से हो तो रुधिरके मवाद में फस्द खोलें और जो कोई मवाद हो तो उसकी करावें और जुल्लाब दें और गरम पीड़ा में रोगन और ठंडी में ने और करफियून और कूठ का तेल मलें

तलुये की पीडा का वर्णन।

इस पीडा में धरती पर पैर नहीं रक्खा जाता मसूर को सिरके में पका कर लेप करें और जो रुधिर का मवाद अधिक हो तो सब से पहिले फस्द खोलें।

चौबीसवां अध्याय।

तप का वर्णन।

तप तीन प्रकार की होती है हुम्मायौमी, हुम्माखिलती, हुम्मादिक्की,

हुम्मायौमी का वर्णन।

यह वह तप है कि इसका सम्बन्ध रूह से होता है और एक दिन में बहुधा जाती रहती है इसके कारण बहुत हैं जैसे दुख क्रोध, भूख, प्यास, धूप, आग, भोजन आदि जब कोई कारण इन कारणों से बढ़ जाता है तो रूह गर्म हो जाती है और ज्वर हो जाता है और रूहें तीन हैं नफसानी, हैवानी, तबई इन तीनों में से जिस रूह के कामों में हानि हो जानों कि उसी रूह में तप है।

हुम्मायौमी का लक्षण यह है कि गर्मी बिना नबज़ के बराबर रहेगी, जैसे कि बहुत मिहनत करने में होती है, और सदीतप और दिक के लक्षण न होंगे, और बहुधा एक रात दिन रह कर ज्वर जाती है जब कि दूसरी प्रकार की तप न हो जावे इस में कारण को दूर करें जैसे उचित हो।

इस तप में भोजन बंद न करें सिवाय उस तप के जो हज़्मे से हो और जल्दी भोजन करावें, और न फस्द आदि खोलें परंतु जो तप दुखे से हो और कारण उसका मवाद की अधिकता

हो और जब मेदे में पचाव न हो और गरम नमले में फस्द आदि कर सकते हैं और इसतहसाफी तप में भी।

ईसतहसाफी और सुद्दे की तप में शरीर का मलना और मेहनत करना और गरम पानी से न्हाना अति लाभदायक है इसतहसाफी वह तप है जिसमें शरीर के छिद्र बंद हो जाते हैं और खाल मैली और मोटी हो जाती है, जैसे कि ठण्ड की अधिकता से खाल सुकड़ जाती है।

और सुद्दे की यह है कि पतली रगों में गाढ़ा मवाद फस जावे। कश्फी तप उसको कहते हैं कि मेहनत या न्हाना छोड़ देने से गर्मी रुके और उस से रूह गर्म हो जावे चाहे भूखा पड़े या न पड़े।

और जहीरी तप वह है कि मेदिरा की अधिकता आदिसे तप हो जावे।

हुम्माखिलती का वर्णन।

शरीर में चार मवाद हैं कफ, रुधिर, पित्त, बादी, इसलिये इस तपमें भी चार प्रकारें लिखी जाती हैं, पहिली प्रकार रुधिर का ज्वर एक तो यह है कि रुधिर केवल गरम होकर ज्वर उत्पन्न करे और सड़े नहीं दूसरे यह कि सड़जावे पहिले तपको सूनाखस दूसरी को मुतबिका कहते हैं पहिलेके लक्षण यहहैं कि रुधिरकी अधिकता होगी और शरीर एकसा गरम रहेगा और पसीना न आवेगा और मुतबिका में मूत्र और दस्तमें दुर्गंधि होगी और जितने लक्षण रुधिर औटने के हैं इस में सौनाखस से अधिक होंगे जैसे हो सके और सुगमता से रुधिर को निकालें आवश्यकता के अनुसार रुधिर की गरमी को बुझावें और रुधिर को साफ करें परन्तु बहुत ठंढाई देना इसमें बुरा है कि इससे कफ का सरसाम हो जाता है सौनाखस में जितना अधिक रुधिर

निकालें तो अच्छा है और मुक़ाबिला में आवश्यकता के अनुसार जब रुधिर पतला होजावे तो शर्बत उन्नाव पिलाके उसे गाढ़ा करें और जो गाढ़ा हो तो सिरके की सिकंजबीन देने से पतला हो जावेगा और ऐसी औषधें दें जो मवाद को नर्म करें और जब मवाद बुहरान के पीछे रगों में रहजावे तो हरी कासनी का अर्क ७० माशे फाड़कर और साफ करके ४२॥ माशे शिकंजबीन मिलाकर दें जो खांसी का लगाव होतो खट्टी वस्तु कभी न दें। बीदाने और असपगोल का लुआब पिलावें और शर्बतबनफ़्शा चटावें और जो खटाई के बदले कोई और ऐसी औषधि दें कि खांसी को भी लाभदायक हो और तप को भी, तो बहुत अच्छा है इस तप में उन्नाव भिगोकर या औटाकर पानी उसका कई दिन तक पिलाना अच्छा है विशेष करके जब कि रुधिर को गाढ़ा करना हो और केवल असपगोल रुधिर के साफ करने को अच्छा है और आलूबुखारे का पानी भी लाभदायक है और खांसी को भी हानि नहीं करता ॥

दूसरी प्रकार पित्तों का ज्वर है चाहे अकेला हो या कोई और मवाद मिला हो लक्षण पित्त आदि का आरम्भ में इस पुस्तक के लिखा गया है यहां इतना जानना चाहिये कि जो पित्त का मवाद रगों के भीतर सड़गया हो तो ज्वर बराबर रहेगा और एक दिन बीच करके अधिक होगा इसका नाम गिब्बेलाज़िम है और जो यह मवाद दिल और मेदे के पास की रगों में सड़जावे तो रोगों की अधिकता होगी इसका नाम तपेमुहरिक़ा है।

और जो मवाद पित्तों का रगों से बाहर स[illegible] गिब्बेदायर कहते हैं ॥

फिर यह मवाद जो निरे पित्त का बिना किसी

गिब्बेखालिश कहेंगे ॥ और कफ मिला हो और ऐसा मि
के दोनों मिल कर एक हो जावें तो गिब्बे गैर खालिश या
गा ॥

और जो कफ और पित्त का भली भांति मेल नहीं हुआ
और अलग अलग हो तो शतुरुलगिब्ब कहेंगे ॥ गिब्बेखालि
तप एक दिन आवेगी, और एक दिन नहीं, परन्तु जो दो
ल्ले इकट्ठा हों इस प्रकार से कि एक २ दिन आवें औ
री दूसरे दिन आवे तो पारी से आना मालूम न होगा ॥

और गैर खालिश में एक दिन अधिकता होगी औ
सरे दिन थोड़ा अन्तर हो जावेगा ॥

शतुरुल गिब्ब में पित्त और कफ रगों से बाहर सड़े होतं
लक्षण यह है कि एक दिन केवल कफ के लक्षण पाये जावेंग
और दूसरे दिन दोनों के क्योंकि कफ की तप रोज आर्त
रहती है और पित्त की एक दिन बीच करके तो जिस दिन
पित्त की बारी न होगी उस दिन केवल कफ के लक्षण पाये
जावेंगे, और पित्त की बारी के साथ दोनों के ॥

जो दोनों मवाद रगों के भीतर होंतो दोनोंके लक्षण बराबर
होंगे परंतु एक दिन बीच करके अधिक अन्तर हो जायगा ।
और जो पित्त रगों के भीतर हो और कफ बाहर होतो पित्त
की तप बराबर रहेगी और कफ की भी अपने समय पर रोज
आवेगी और एक दिन बीच करके अधिकता होगी इन तीनों
का नाम शतुरुल गिब्ब गैर खालिस है ।

और जो पित्त रगों से बाहर हो और कफ भीतर हो तो कफ
की तप ... रहेगी और पित्त की एक दिन बीच करके

जाती है उसको हुम्मागशिया कहते हैं इसका उपाय वही है उस हुम्मायोमी का है जो मूर्च्छा सी आजाती है और बारी समय रोटी निम्बू के अर्क में भिगोकर थोड़ी सी खिलादो तीस कफ का तप है, जो इसमें कफ का मवाद रगों के भीतर स जावे तो उसको खस्का कहते हैं ॥

यह मवाद जो ग्वारी कफ हो और दिल तथा मेदे के पा रगों के अन्दर सड़जावे तो मुहरिका कहलावेगा इसमें अ पित्त की मुहरिका में अंतर उनके लक्षणों से मालूम होजाव और जो कफ रगों के बाहर सड़े तो नाइबा और मुआभिवा व होगा, परन्तु खस्का बराबर रहती है बिना जाड़े और कभी थोड़ी देर के लिये कुछ कमी भी होजाती है और नाइब म दिन में एक दो बार उतर जाती है।

कफ की तप में कफ के लक्षण पाये जावेंगे, परन्तु खा कफ में वह लक्षण नहीं होते, क्योंकि उसमें गरमी अधिक हो है इस पर भी खारी कफकी गरमी पित्तों की गरमी को नहीं प सकती ॥

खारी कफ का लक्षण यह है रोंगटे शरीर पर खड़े ह और ठंड और कपकपी थोड़ी हो।

और नजाली कफ में कपकपी अधिक होती है और खट्टे क में ठंड बहुत मालूम होती है, मीठे से कम और बहुधा कई बारि तक रोंगटे खड़े होना, और ठंड कपकपी कुछ नहीं होती सीत वि तक शहद की सिकंजबीन और शहद का पानी जिसमें थो सा जूफा औटा हुआ हो और आस जो जिसमें थोड़ी सौंफ औ पने औटे हों देते रहें और सिकंजबीन और गुलकंद गुलाब साथ देना अच्छा है इसके पीछे सिकंजबीन और गरम पानी

वमन करावें विशेष करके उस समय जब कि बारी आने को हो और बहुत सो पिलावें, और जितनी वमन सुगमता से आवे अच्छा है और कभी २ गुलकन्द के साथ अतीमून दें, और पोदीना और मस्तगी बराबर चबाया करें जब मवाद भली भांति पक आवे तो जुल्लाब दें।

जो क़ब्ज़ हो तो रात को दवाय तुरन्जुद जितनी उचित हो खिलाया करें, और सवेरे गुलकंद १७॥ माशे खिलाकर ऊपर से शहद की सिकञ्जबीन पिलाया करें, जब कि कब्ज दूर करना हो, और जो मूत्र गाढ़ा और रंगीन हो तो फस्द खोल सकते हैं और जब भेजा निर्बल हो तो सिकञ्जबीन न दें और मवाद निकालने के पीछे कुर्स गुल अति लाभदायक है॥

जो कफ की तप पुरानी हो और कपकपी अधिक आती हो और शरीर देरमें गरम होता हो तो अमलतास कूट छानकर शहद में मिलाकर १०॥ माशे खिलावें और गारीकून ३॥ माशे शहद ४॥ माशे मिलाकर खिलाना भी ऐसा ही है।

इसका में पकाने वाली और पतली करने वाली औषधें देने में इतनी जल्दी न करना चाहिये जैसी नायबा में करते हैं क्योंकि कहीं ऐसा न हो कि मवाद पिघलकर सिरमें चढ़ जावे और सरसाम होजावे और सिर की पीड़ा और भेजे की निर्बलता में तो ऐसा कभी न करना चाहिये।

कफ के तप का एक ऐसा भेद है जिस में भीतर ठंड और बाहर गर्मी होती है उसको इलक्यालूस बोलते हैं और एक और भेद है जिसमें भीतर गरमी और बाहर ठंड होती है उसका नाम लैकूरिया है उसका वर्णन और उपाय ऊपर हो चुका है।

कफ की तप का एक भेद ऐसा है जिससे गरमी और ठंड

इकट्ठी भीतर और बाहर होती है और एक प्रकार में भीतर ठंढ होती है और बाहर असली हालत और कंपकपी कई बार बिना गर्मी के आवे इन दोनों का कुछ नाम नहीं है।

एक प्रकार की तप दिन को आती है और रात को उतर जाती है उसको नहारी कहते हैं और एक प्रकार का ज्वर रात को आता है और दिन को उतर जाता है उसको लैली कहते इन सब में मवाद को पतला करें ॥

चौथा भेद बादी का तप है इसका मवाद भी जो रगों के भीतर होती रुबाला जिस कहते हैं और लक्षण उसका यह कि तप बराबर रहेगी और दो दिन बीच करके अधिकता होगी जो मवाद रगों के बाहर सड़जावे उसको रुबदायक कहते हैं और यह दो दिन पीछे दौरा करता है इस तप के आने का दिन उतर जाने के दिन समेत चौथा दिन होता है, इसलिये इसका नाम रुबा रक्खा गया है इस प्रकार से पांचवें दिन वाला और छठे दिन वाला आदि जानों परन्तु चौथे दिन वाला बहुत आया करता है यह तपें या तो प्राकृतिक बादी के सड़ने से होंगी लक्षण उनका यह है कि पहिले वह वस्तु खाई होंगी जो बादी को उत्पन्न करें और नाड़ी हल्की होगी दूसरे यह अप्राकृतिक बादी से हो और यह बात हम पहिले लिख चुके हैं कि जो मवाद जलता है वह अप्राकृतिक बादी हो जाता है तो मालूम हुआ कि यह तपें रुधिर या पित्त या कफ या बादी से होगी और लक्षण हर मवाद के पाये जावेंगे परन्तु पित्त की तप में गरमी और तपों से अधिक होगी और जल्दी जाती रहेगी।

तपे रुबा देरतक रहती है और कभी पांच छः बारी होके जाती है और फिर आने लगती है इस में बारी के दिन और

बहुत करके इस रोग के आदि में खाना पीना बन्द करदें और ज़ियादा पानी पेवे और वायु उत्पन्न करने वाली वस्तु गरम खुश्क और जल्दी सड़ने वाली वस्तु से बचें और तर औषधों तथा भोजनों से जहां तक होसके मवाद को पकावें फिर मवाद को कई बार करके निकालें और रुधिर की रगों में फस्द खोलें परन्तु दो तीन बारियों के पीछे और २ प्रकारों में भी फस्द खोलें परन्तु मवाद के भली भांति पकजाने के पीछे। और पित्तों की तप में मवाद का पकाना अवश्य नहीं है और जब फस्द से रुधिर लाल और साफ निकले तो रोक दें और जो यह तप देर तक रहे तो रोगी में बल रहने का ध्यान रखे और कड़ा परहेज न करावें और महीने के आरम्भ में फस्द बसीलक खोलना और थोड़ा सा रुधिर निकालना अच्छा है और बारी के दिन ३ घड़ी पहिले खाली सींगियां लगा कर बहुत देर तक चूसना लाभदायक है।

मिली हुई तपों की कई प्रकारें हैं नाम उनके अलग२ नहीं हैं सिवाय शतुरुल गिब्ब, और गिब्बे गैरलाज़िमा के और और जिसकी इनमें से बारी का ठीक न हो उसको मुख्तलित कहते हैं और तपों के मिलने के तीन भेद हैं।

एक यह कि एक तप उतरने नहीं पाती कि दूसरी चढ़ आती है उस को मुदाख़िला कहते हैं।

दूसरी यह कि एक उतरे और दूसरी चढ़े उसको मुबा-दिला कहते हैं।

तीसरी यह कि इकट्ठी दो तपें चढ़ें, चाहे साथ उतरें या नहीं उसको मुशारिका और मुशाबिका कहते हैं उपाय इसका सोच समझ के करें जो अधिक हो उस के दूर करने को अधिक जानो।

दिक का वर्णन।

यह तप है जिस में बुरी गरमी शरीर के बड़े २ स्थानों और दिल में बैठ जाती है, और अच्छी तरी पहिले जाने लगती है और आदि में उसको दिक कहते हैं।

और जब दूसरा दर्जा होता है तो शरीर पिघलने लगता है उसको जबूल कहते हैं।

और जब इससे भी बढ़जावे और बाल गिरने लगे तब उसको मुफतित कहते हैं उस समय उपाय कठिन होजाता है॥

अकेली दिक की पहिचान यह है कि हलका तप बराबर रहता है और भोजन करने के पीछे गरमी अधिक हो जाती है, और नाड़ी निर्बल होती है, परन्तु खाने के पीछे नाड़ी में बल पाया जाता है मूत्र में छिलके से निकलते है इस में शरीर को तरी और ठंढ पहुंचावें और भोजन और मकान और हवा ठीक करें, और ठंढी औषधें और गधी का दूध और मठा पिलावें, जो सड़ी हुई तप न होतो इसके देने की क्रिया बड़े ग्रन्थों में लिखी गई है, इस तप में जहां तक हो सके शरीर के बड़े बड़े स्थानों को पुष्ट रक्खें और तरी पहुंचावे और दस्त न आने दें और जब निर्बलता बढ़ने लगे तो माउल लहम पिलावें।

एक और रोग है जो दिक से मिलता हुआ है उसको दिक शैखूखत और दिकुल हरम कहते हैं, वह यह है कि जवान सूखकर बुड्ढों जैसा होजाता है, और बुड्ढे को होतो वह और भी बुरा होजाता है, बिना गरमी के और बहुधा बुड्ढों को यह रोग होता है, और जवानों को कम और बच्चों को बहुत कम तपों में ठंढी वस्तु अधिक खाने से दिल में ठंढ से बिगाड़ हो ता है, या मेहनत करने के पीछे ठंढा पानी पीलेने से या

और ऐसे ही कारण से यह रोग होता है, इसमें प्रकृति
[illegible] और तर वस्तुओं से ठीक करें, परन्तु बहुत न दें,
[illegible] २ शहद चाटें, और जब यह रोग जगह पकड़
तो अच्छा होना बहुत कठिन है, परन्तु उपाय से हाथ
कि जल्दी मरने से बचें, और सोने का वर्क शहद में
[illegible] शरबत में मिलाकर खिलाना और माउल लहम
[illegible] की गरदी देना अति लाभ कारक है ॥

सीतला का वर्णन ।

[illegible] रोग में जो तप होती है उसमें बेचेनी और पीठ में
[illegible] है, नाक खुजलाती है आंख बहते हैं और सोते में
[illegible] है ।
[illegible] में मोतिया से बेचैनी अधिक और कमर की
[illegible] होती है ।
[illegible] निकलने से पहिले रुधिर कम करें, अनारों के
[illegible] और लड़कों के ओके लगावें, और नरम करने
[illegible] पिलावें और शरबत उन्नाब पिलाया करें ॥
[illegible] जब निकल आवे तो कभी मवाद न निकालें, पर-
[illegible] भांति निकालने का उपाय करें, इस प्रकार से कि
नरम कपड़े से ढाके रक्खें और ठंडा पानी एक २
[illegible] और खूब कला बिछोने पर बिछादें, और ओटाकर
[illegible] दें ।

हुम्मावाई का लक्षण ।

[illegible] बहुत बुरी है वबा के दिनों में होती है ताऊन एक
[illegible] तक यह न निकले मवाद को निकालें और गरमी
[illegible] दिल और भेजे को पुष्ट करते रहें और जब
[illegible] आवे तो उसका उपाय करें जैसा कि आगे
[illegible] गा ॥

लगावें, और जो मिले अरमनी या सिर धोने की मिट्टी मिलावे तो अच्छा है ॥

नमला—एक दाना या बहुत दाने होते हैं, जलन और खुजली उसमें बहुत होती है, और अपनी जगह से बढ़ती है जो केवल पित्त हो तो खाल के ऊपर ही होगा और जो रुधिर भी मिला हो तो खाल के ऊपर और मांस के भीतर पैठा हुआ होता है, कारण के अनुसार उपाय करें, और जमरे वाला लाभदायक है और दवाय नरद आस पास लगावें और घाव का उपाय सफेदे के मरहम से करें।

नारसिया. छोटे २ दाने खाल पर बाजरे के से होजाते हैं। नोक उनकी सफ़ेद और जड़ लाल होती है और अक्सर निकलते हैं इस में पित्त और कफ का मवाद निकालें, अनार के छिलके थोड़े से सिरके, और गुलाब में पीसकर मलें और जो आवश्यकता हो फस्द भी खोलें ॥

नारफारसी एक दाना है उसके भीतर पतला पानी भरा होता है, और खुजली अधिक होती है, जलन और खुजली अधिक होती है और जब निकलता है और जल्दी खुश्क हो जाता है ॥ निकलने से पहिले उस जगह लाल और मोर के रंग की लकीरें पड़ जाती हैं फस्द खोलें और पित्त का मवाद निकालें और माजू गुलाब में या सिरके में पीसकर लगावें ॥

निफ़तात. छाले पड़ने को कहते हैं इसके भीतर बहुधा पतला पानी भरा होता है और कभी केवल गाढ़ी वायु होती है। और कुछ नहीं होता फस्द खोलें और रुधिर को गाढ़ा करें और जब छाला पैदा होकर फूल जावे तो सोने की सुई से फोड़ दें जिस से पानी बहजावे, और ठंडी औषधें मलें ॥

पित्त—ददोड़े होते हैं, लाल और चपटे छोटे हों या बड़े

और बहुधा अचानक होजाते हैं, खुजली और बेचैनी होती है जो उससे पानी बहै तो दुलुम कहते हैं मवाद इसका बहुत करके रुधिर या कफ होता है और लक्षण हर एक के पाये जावेंगे रुधिर में फस्द खोलें और कब्ज दूर करें और सिरका गुलाब और रोगनगुल मलें और कफ में मवाद को निकालें ॥

माशरा–यह सूजन पित्त और रुधिर से मुंह पर होती है इस में मुंह लाल और पीला और तपक होती है और सिर कान, नाक, गाल, और माथा ये सब सूजाते हैं इसमें बहुत सा रुधिर निकालें फिर मिजाज को नरम करें और उस समय गले और छाती पर ठंडी औषधें लगावें कि मवाद मुंह से उ-तर कर छाती पर न गिरे और ३० दाने उन्नाब के पानी में औटा कर सिकंजबीन मिलाकर पिलाना अति लाभदायक है।

वार्कन–सूजन है जो बहुधा वर्षा के दिनों में होती है इस में जलन बराबर रहती है और रंग इसका लाल या पीला या नीला या हरा या काला होजाता है इन रंगों में हर दूसरा रंग पहिले से बुरा होता है इसमें दिल और भेजे को उपद्रव और जोर अधिक पहुंचावें और सूजन के आस पास ठंडी औषधें लगावें और उस पर गहरे पछने लगावें और गरम पानी से धोडालें कि रुधिर भली भांति बह जावे और जो रुधिर की अधिकता होतो फस्द भी खोलें परन्तु पहिले सूजन पर पछने लगावें ॥

औराम मगाबिन–यह वह सूजन है जो बगल में या कान के पीछे या चड्ढों में उत्पन्न हो बिना बिष के और जो किसी और जगह के घाव के या गुठली के कारण से हो तो केवल जिमाद मिलकर लगावें मवाद निकालने की आवश्यकता नहीं और जो शरीर के बड़े बड़े स्थानों के मवाद दूर होने देवो रोका करने वाली औषधें लगावें और ठंडी औषधें

मवाद को इधर गिरने से रोके न लगावें और मवाद को पका कर चीरने का उपाय करें ॥

आकिला—मवाद इसका मांस में चारों ओर जल्दी२ फैलता है और सवेरे से सांझ तक अमलतास के बीज के बराबर हो जाता है, इस में दाग दें, और गिलेअर्मनी सिरके में पीस कर आस पास लगावे और बदन से मवाद भली भांत निकालें और घाव को सिरके और पानी से धोवे जो इस से लाभ न हो तो दाग दें, इस प्रकार से कि तेल कड़ कड़ा कर आकिले के आस पास आटे से घेरा बना कर यह तेल उस के बीच में छोड़ दे कि जितनी जगह झुलस जावें ॥

दुम्मल—इस सूजन को सब जानते हैं, इस में रुधिर को फस्द आदि से निकालें और मवादों को जुल्लाबों से निकालें और सिकंजबीन पिलावें और आदि से तीन दिन तक ठंडी औषधें लगावें, और चौथे दिन असपगोल आटे की सफेदी में मिला कर लेप करे, और जब पकने पर हो तो पकाकर चीरें और पीब आदि से साफ करें, घाव के भरने का उपाय करें पकाने वाली औषधें यह हैं, खमीर इलक कूट कर मल गेहूं का आटा गूंध कर थोड़ा सा नमक और अलसी का तेल और शहद मिलाकर सूजन पर बांधें ॥

फोड़ने वाली औषधें यह हैं खट्टा खमीर, कनोरे के बीज, कबूतर की बीट, बिना बुझा चूना, अंडे की जर्दी शहद में मिला कर लेप करे और नश्तर से चीर देना सब से उत्तम है ॥

दुबेला, यह सूजन दुम्मल से बड़ी बिना पीड़ा के शरीर के ऊपर या भीतर होती है इस का मवाद भी कई रंग का होता है, जैसे काली मिट्टी और ठीकरी और मालूम दरसावें चूने आसा, पहिले मवाद को निकालें, और भोजन मोला दें

और मरहम दाखलियून लगावें जब मवाद पकजावे तो चीर दें, चाहिये कि मवाद को कई बार करके निकालें क्योंकि एक बारगी निकालने से इस में मूर्छा आजाती है और जब सब मवाद निकल चुके तो पुरानी रुई घाव में भरदें कि सारी पीप को चूसले फिर घाव के भरने का उपाय करें जो दुबेला भीतर होता है उसका वर्णन अपनी २ जगह लिख चुके हैं जब तक सूजन पकी भांति न पकले उसे चीरें नहीं और चीरने का स्थान उभरी हुई जगह है जो पिलपिली हो और चाहिये कि छेद को नीचे की ओर झुका रक्खें जिससे मवाद रेसे से निकल जावे ॥

कमीमा, सूजन है सफेद बिना गरमी और पीड़ा के इसमें मिजाज को ठीक करें, और कफ का मवाद निकालें, और और मसरूग की खारमें जो अंगूर के पेड़ की राख से बनाई गई हो और थोड़े सिरके में मिलाकर लेप करें, और एलुआ सिरके और गुलाब में घालकर जमाना लाभदायक है ॥

नफखा—बाय की सूजन को कहते हैं यह रुई और उं-गली से दबाने के पीछे फिर वैसा ही होजाती है, जैसे मशक में हवा भरी हो, बाय उत्पन्न करने वाली वस्तुओं से बचें और बायकी तोड़ने वाली वस्तु खावें और बाजरे के आटे से सेकें और नमक और अंगूर की राख और गौ का गोबर और फिट-करी और एलुआ सबको पीसकर सिरके में मिलाकर लेप करें।

सलआ—सूजन है मोटी बिना कड़ेपन के कि नीचे चमड़े रिकाने से हिलती है अपनी जगह पर इसमें कफ का मवाद निकालें और मरहम दाखलियून नित्य लगाते रहें।

और जो इससे काम न हो तो यह औषधें लगावें, जो उसका मुंह बढ़ाकर फोड़दें या नश्तर से चीरकर भीतर से सावधानी के साथ इस गुठली को निकाल डालें।

गद्द—और 'गांठ' शरीर के ऊपर होती है इस में और सलम्मा में यह अन्तर है कि यह बड़े नहीं होते और कड़े होते हैं और जो मवाद अधिक हो तो एक के पास दूसरा भी निकल आता है इस में मरहम दाखलीयून लगावें और भारी टुकड़ा सीसे को उसपर बांधें।

फूनिशला—उस सूजन को कहते हैं जो गद्द के स्थानों में उत्पन्न हो परन्तु यह ताऊन की प्रकार से नहीं है, उपाय उस का वही है जो औराम मगाबिनका है।

खनाजीर—बुरी सूजन है और सलअे की प्रकार उभरी हुई होती है और बहुधा नरम मांस से उत्पन्न होती है, बहुत करके गर्दन और बगल में उपागम को निकाले, और दाखिलीयून लगावे, और मवाद निकालने के लिये इब्ब सीबगेन और इब्बे वासली और इतरीफल ग़ुददी सेव से उत्तम है।

इकेरूस—कड़ी सूजन को कहते हैं, बहुधा बादी के मवाद से होता है, बादी को निकालें और दाखलीयून लगावें और कभी कफ या कफ और बादी से मिल कर होता परन्तु इस में कड़ापन कम होता है, मवाद के अनुसार उसे निकालें, यह सूजन दो प्रकार की होती है एक में पीड़ा होती है और दूसरी में नहीं होती, पहिली प्रकार का उपाय हो सकता है और दूसरी का नहीं।

सरतान—यह सौदा की सूजन है, अधिक कड़ी काला पन लिये हुये बुरे रंग की और बीच में मोटी और भीतर को बैठी हुई और उसके किनारे लाल और हरी रगें होती हैं, सब मिलाकर केंकड़े का सा होजाता है।

इस में होते होते कई बार करके सौदा का मवाद निकालें और जिगर के मिजाज को ठीक करें आदि में ऐसी उरी ओषधें

में जो मवाद को इधर गिरने से रोकें मवाद कि पीप
उस के पीछे घाव भरने वाली और ठंडक डालने वाली
ने रोकने वाली औषधों का लेप करें, जैसे कलई का
रेता, धोया हुआ तुतिया आदि तेल में मिलाकर लगावें।
नहरुआ, एक दाना होता है, उसमें छेद हो जाता है, जिस
एक वस्तु रग की सी निकलती है लाल और कालापन
लिये हुए और बढ़ते २ एक एक बालिश्त या उस से भी अधिक
जाती है और कभी खाल के नीचे कीड़े की तरह रेंगा करती
आदि में फस्द खोलें फिर जोंकें लगावें, और बादी का
रस मिलावें तरी पहुंचाने के साथ। एलुआ हरे धनिये और
कासनी के पानी में पीस कर लगावें, एलुआ इस रोग में
त लाभदायक है, चाहिये पहिले दिन १॥ माशे एलुआ हरी
सनी के पानी में रात को भिगो दें और सवेरे अकेला या
के साथ मिलाकर पिलावें और दूसरे दिन ३॥ माशे एलुआ
और तीसरे दिन ५। माशे। और जब नहरुआ बाहर निक-
लने तो सीसे के टुकड़े पर लपेटें कि बोझ से बाहर को
खिंचता जावे, और आस पास सूमन के रोगन मलें, और
पानी फुकने में भरकर सेकें और ध्यान रक्खें कि नहरुआ
न पावे, और टूट भी जावे तो लम्बाई में चीर दें, कि
मवाद निकल जावे, फिर घाव को भरदें, कपीलो की
न इस रोग को नहीं होने देती।
जुधाम—इस में शरीर का रूप बिगड़ जाता है और नाक
हो जाती है और आवाज बैठ जाती है, और मुंह कुल
शेर का सा हो जाता है, इस में फस्द और जुल्लाबों से
का मवाद निकालें, और नित्य गर्म पानी से न्हावें और
पीने और नाक में डालने और शरीर पर मलने से हरी

पहुंचावें और बकरी का दूध अकेला या उसमें रोग़न मिलाके खाना अति लाभ कारक है और जो वस्तु सौदा उत्पन्न करे उस से बचें, और इस के उपाय से घबरावें नहीं यह रोग अच्छा होता है।

साफा—घाव को कहते हैं, जो सिर और मुंह पर होता है जो तरी के साथ हो तो फस्द खोलें, और हरड़ और शाहतरा को औटाकर पिलावें इस से मवाद निकलेगा और रुधिर को शीघ्र करें और इसकी प्रकार के छिलके मुरदासंग, और पारा पीसकर सिरका और रोगन गुल मिला कर लेप करें जो सूखा हो और सफेद छिलके खाल पर से उतरें तो पहुंचावें एक प्रकार इसकी ऐसी है, जिस में शहद कासा मवाद निकलता है और एक में दाने पड़ते हैं जिन की आंखें सी होती हैं और दूसरा वैसी है जिसमें कभी दुखता हो जाता है और पीव नहीं पड़ती और एक ख़मीर कासा होता है और एक में हजामत बनवाने से सिर की खाल साफ हो जाती है इन सब प्रकारों में मवाद को निकालें और मिजाज ठीक करें।

खुजली जो सूखी हो तो तर वस्तु लगावें फिर कई बार करके मवाद निकालें और गरम पानी से स्नान करके रोगन और सिरका मिलाकर मलें और जो तर हो और पीला पानी उस में से बहै तो पहिले फस्द खोलें और जो मवाद अधिक हो उसका जुल्लाब दें और गरेष्ठ दवा कभी न लगावें।

दिका—उस खुजली को कहते हैं जिस में दाने न पड़ें इस का उपाय भी वही है जो ऊपर लिखा गया है, और जो खुजली गुप्त स्थान और गुदा में हो उस में बेरी और अखरोट के बीज शहद के साथ औटा कर, उस में मिलाकर खांसा बनाकर रक्खें॥

मकी—और (पित्ती) जो बच्चों को होती है, उस में ...ा जोकें लगावें, गुलाब के फूल और धनकला और ...ए और छिले हुए जौ और सोदा के शरीर को धोवें और ... रोगन मलें और दूध पिलाने वाली अर्थात् बच्चे की ... औषधि पिलावें ॥

...सफ—छोटे छोटे लाल दाने शरीर पर निकलते हैं उनमें ...ी अधिक होती है फस्द और जुल्लाब से पित्त का मवाद ...लें, और नमक और मट्टी सिरके में मिलाकर मलें।

...दाद—खुरखुराहट फैली हुई खुजली के साथ होती है आदि ... कि मांस के भीतर सकता न होतो रसौत सिरके में पाक ...ा हरड़ सिरके में पीस कर मलें, और जो कुछ मांस के ... पहुंच चुका होतो उस जगह पर जोकें लगावें और ... या मुर सिरके में पीसकर ऊपर से मलें, और जो मक्खी ... मांस के भीतर बैठ गया हो और खाल मोटी पड़ गई ...ो पहिले फस्द और सौदा के जुल्लाब से मवाद को निकालें ... गरम पानी से स्नान करें, फिर उस जगह का रुधिर ...लें, और तीव्र औषधें जैसे हरताल, उशक और राई, ...क, और फिटकरी गेहूं के तेल में और सिरके में मिलाकर ...वें जब दाद जाता रहे तो ठंडी औषधें कई दिन तक ...वें, कि फिर न होने पावे, और बच्चों के दाद में बासी थूक ...वें और जब दाद औषध से अच्छा न हो और संभव हो तो ...दें, फिर तीव्र औषधें लगावें कि बुरा मांस गल जावे फिर ... औषधें लगावें जो घाव को भरें॥

... मस्से—सफेद फुंसियां होती हैं नाक और माथे पर निक

जाती हैं इन में शरीर से कफ का मवाद निकालें और अ
राल सिरके में मिलाकर लेप लगावें।

बनातुल लैल—छोटी २ फुन्सियां रात को ठंड के स
निकलती हैं और उनमें खुजली भी होती है फस्द और जु
से मवाद को निकालें और गरम पानी से स्नान करने
मल के शरीर के छिद्र खोलें जैसे कि खुजली में लिखा
है और कर्फ़स के पानी में सिरके की तलछट मिलाकर म
लाभकारक है॥

मस्से—अधिक कड़ी फुंसियां कई प्रकार की होती
पहिले मवाद को निकालें और नमक और सिरका मलें
रोगनगुल से चिकना रक्खें॥

बलसीयां इन फुंसियों में से फूट के पानी बहता है
ऊपर सुरख चमकाता है और इनके साथ बहुधा दिक
होता है और मूर्च्छा आती है पहिले मवाद निकाले और
अर्मनी सिरके में पीसकर नित्य लगाया करे जब तक
सूख के नया मांस न जमे॥

चलम—यह काली फुन्सियां होती हैं, जो पिंडली
निकलती हैं इन में से काला पानी बहता है पहिले फस्द
शीक खोलो और कई बार उलटी कराओ फिर जोंकों या
से उस जगह का रुधिर निकालो और जली हुई मेंहदी
पीसकर सिरके और रोगन जैत में मिलाकर लगाया करे।

वीसा—फुंसी है घाव वाली कि मांस के भीतर
की सी होती है, मवाद निकालकर मरहम जंगार लगावें
हुए मांस गल जावे फिर भरने वाले मरहम लगावें॥

दाहस—गरम सूजन है, जो नखूनों की जड़ में होती है,

पीड़ा तपक और खिचाव अधिक होता है और कभी जो आजाता है फस्द और जुल्लाब के पीछे मिजाज को द करें और आदि में अस्पगोल सिरके में घोलकर बर्फ में करके लगावें और जो पीड़ा अधिक हो तो खुरासानी अज-न और अफीम सिरके में पीस कर लगावें और जो इस से भ न हो तो रोगन जैतू गरम करके उगली उसमें रक्खें फिर पचआवें और जो इससे भी लाभ न हों तो अलसी कलौंजी के बीज मलें और जब सूजन पकजावे तो चीर दें पीब साफ होजावे तो भरजाने का उपाय करें ॥

अयूरसमा..... चोट लगने या कुपथ्य खाने से आंख के रग फट जाती है रुधिर और बाव उसकी खाल के नीचे कर रहजाती है लक्षण उसका यह है कि रग के खुलने सूजन दब जावेगी और बंद होने पर उभर आवेगी क्योंकि ने में रुधिर रग के अन्दर खिंचजावेगा और बन्द होने में बाहर निकलेगा और उतनी खाल का रंग बैंगनी और ाहट लिये होगा कब्ज करने वाली औषधें लगावें, जैसे फुलूल और माजू आदि और जो औषधें रुधिर को हिलावें े बचते रहें ।

कई प्रकार की फुंसियां और दाने होते हैं एक यह कि २ दाने जिनकी जड़ें सफेद और कड़ी हों और देर में और सिरों से उनकी थोड़ी २ पीब बहे तो उनको जालुस व कहते हैं (२) यह कि कड़ी हों और मुंह पर निकलें और त पास से लाल हों उनको सेलम कहते हैं (३) यह जो कन-पर कान की जड़ में होती हैं और उनके चीरने से गाढ़ा र निकलता है (४) जो सिर और गरदन के नीचे निक-ी हैं यह बहुत सी निकलती हैं और पीड़ा उनमें अधिक

होती है (५) जो छोटी और कड़ी और पीड़ा रहित हों और देर तक रहें और एक जगह से जाकर दूसरी जगह निकल आवे, इन सब में मवाद के अनुसार मवाद को निकाले और लेप लगा और सिर तथा गर्दन की फुन्सियों में रोगन कद्दू कशा स्त्री के दूध में मिलाकर नाक में टपकावे और सिर पर मले ॥

आंवला फरंग..यह रग परंग के दाने होते हैं जिस मवाद की अधिकता हो उसी को निकालें ॥

खाल के रोगों का वर्णन।

सफेद दाग यह गाढ़ी सफेदी होती है, जो खाल पर होती है और सम्पूर्ण शरीर पर भी हो जाती है ॥

छीप..इसकी सफेदी खाल पर होती है अन्तर इन दोनों में यह है कि पहिली में चमक होती है और दिन प्रति दिन खाल के भीतर फैलती जाती है और सुई चुभोने से रुधिर नहीं निकलता और छीप बहुधा गोल होती है और अचानक उत्पन्न होजाती है और सुई से रुधिर निकलता है ॥

काली छीप—और दाद में खाल उधड़ती है परन्तु छीप की पतली होती है और दाग की मोटी जैसे मछली के छिलके सफेद छीप और दाग में कफका मवाद निकालें, और काले सौदा काफिर सुरख़्स और मूली के बीज सिरके में पीसकर सफेद छीप में लगावें और काली छीप और दाग में काली कुटकी सिरके में पीस कर लगावें ॥

सफेद दाग..अर्थात् कोढ में काले सांप का रुधिर लगाना लाभकारक है ॥

झांई जो मुंह पर पड़ती है इसमें और काली छीप में यह भेद है कि छीप खुरदरी होती है और यह साफ होती है।

नमश—मुंह पर और शरीर लाल बूंदें होजाती हैं ॥

दाग—जैसा ही काली बूंदे हैं, इनमें रेवंदचीनी शहद में पीसकर लेप करें, और पीला हरताल हरे धनिये के पानी में पीसकर लगावें, जो इससे भी लाभ न हो तो सब शरीर का मवाद निकालें, फिर लेप लगावें और औषधि लगाने से पहिले उस स्थान को गरम पानी से सेकें, और औषधि गरम करके लगावें ॥

तिल—काले और नीले होते हैं, इनका यह उपाय है जो झाँई का है चोट पड़ने या दबने से रग फट कर खाल के नीचे रुधिर ठंडा हो केनीला हो जाता है अब पीला जातो रहे तो करम्ब के पत्तों वा पोदीने का लेप करें ॥

नीलागोदा—जो स्त्रियों के होता है उसके मिटाने का उपाय यह है कि नतरून और गरम पानी से उस जगह को मलें, और फिर इक्कुलमलम शहद में पीसकर कई बार लगावें जो इससे न मिटे तो अस्क बलादर लगाकर सुई की नोंक कोंचें कि घाव पड़कर नीलाहट बह जावे।

दादशनाम—इसमें हाथ, पाँव और मुँह पर सुर्खी पड़ जाती है विशेष करके ठण्ड में इसमें फस्द खोलें और हरड़ों औटाकर जुल्लाब दें और जो घाव हो तो लाल मरहम लगावें और उसी जगह का रुधिर निकालें और साबन लगावें जब यह सूख जावे तो गरम पानी से धोकर फिर लगावें और इसी प्रकार से कई बार करें।

धूप में फिरने या निर्बलता या गर्म औषधें खाने या ... का रंग बदल जावे तो ... की ... और ... के

सिर से भूसी झड़े तो रोगन मलें और चुकन्दर के पा
में नमक डालके सिर धोवें जो इससे लाभ न हो तो कफ औ
रुधिर और बादी का मवाद निकालें ॥

हाथ पांव आदि जो हवा की गरमी या ठंड से फटें त
मोम रोगन मलें और जो भीतर के बिगाड़ से फट जाय त
तर औषधें काम में लावें जैसे दूध आदि और मवाद क
निकलें जो खाल कड़ी होजावे या उधरने लगे तो मवाद क
निकालें और तर रोगन मलें जो सूजन का डर हो तो फस्द औ
और कपड़ा पानी में भिगोकर रक्खें परन्तु जो पट्ठे के ठिका
पर हो तो भीगा कपड़ा न रक्खें ॥

बालों के रोगों का वर्णन ।

कभी बाल झड़जाते हैं और खाल नहीं उतरती और कभ
दोनों बातें होती हैं यह खाल का बिगाड़ है इसमें मवाद क
निकालें जो बिना बिगाड़ के बाल झड़ें और टूटें तो कारण क
अनुसार उपाय करें ।

जो सिर के बाल झड़के खाल नरम हो जावे तो जल्दी
सिर मुंडाया करें आस और आंवले का तेल नित्य सिरपर म
करें जो बदिया के बाल उतर आवें तो उसका भी यही उपा
है परन्तु जो बुढ़ापे से हो तो अच्छा कदापि नहीं हो सकता
जो बाल खुश्की से फटने लगें तो तर औषधें और रोगन लगा
जो सिरकी खाल चिकनी हो जावे तो इतरीफलों से मवाद के
निकालें ।

जो बुढ़ापे से पहिले बाल सफेद हो जावें तो सबेरे नित
एक हरड़ का मुरब्बा खावें और महीने में सात दिन तक इतरी
फल सगीर खाया करें और दो महीने पीछे कफ का जुल्ला

सेवा करें, और खट्टी वस्तुओं और फस्द और विषय की अधिकता से बचें।

जो चाहें कि बाल काले रहें तो लादन और आस का तेल मला करें और बालों को लम्बा करने के लिये आंवले को पानी में भिगोकर आस और गुलाब के फूल छान कर उस पानी में मिलाकर सिर धोवें बालों को बलवान करने के लिये पुराना रोगन जैत लेकर उस में कैसूम की राख और सुन्दर फेन मिलाकर मलें और जो उपाय बाल झड़ने का वही करें और बालों को उतारना चाहें तो चूना और हरताल लगावें इसको नूरा कहते हैं परन्तु पेडू के बाल उस्तरे से मूंडना अच्छा है, इससे विषय की चाहना अधिक होती है और वहां नूरा लगाने से हानि है और जो चाहें कि बाल न निकलें तो बनज और अफीम और शूकरान सिरके में पीसकर लगावें और माजू और कछुये का रुधिर और चेंठी के अण्डे लगाना भी यही काम देता है, और घूंघर वाले और घने बाल होने के लिये बेरी के पत्ते और माजू और मेथी के बीज पानी में डालकर उस पानी से सिर को धोवें और बालों को पतला करने के लिये हलदी की राख नूरे में मिला कर गोली बनावें उससे बालों पर दिन भर में कई बार सूखी गोली फेरा करें परन्तु एक जगह पर न ठहरावें नहीं तो बाल झड़ जावेंगे बालों को सीधा करने के लिये कि उलझें नहीं तेल को पानी में मिला कर गुन गुना मलें।

खिजाब के लिये मुर्दासंग बुझा हुआ चूना मुरदासंग पेड़ी तीनों बराबर लेकर पानी में पीसकर बालों पर लगावें और अरंड का पत्ता ऊपर बांधें पहर भर पीछे खोल कर पानी में धोडाले और लगाने से पहिले भी धोलें कि मैल

और न कोई रोगन सिवाय रोगनगुल के लगावें और बालों को लाल पीलापन लिये हुये करने के लिये महदी शराब की तलछट और रासीनज मिलाकर पानी में पीसे, और फिटकरी और हरताल मिला कर मलें।

और बालों के लाल करने के लिये पोथा और कुंदुश को औटाकर दोनों बनूपाश को पीसकर सिरके में मिलाकर लगाना बालों को सफेद करता है।

नाखूनों के रोगों का वर्णन।

नाखून सफेद हो जावें तो मेथी अलसी के बीज कूटकर शहद में मिलाकर लेप करे और जो इससे लाभ न हो तो मवाद निकाले। जो पीले पड़ जावें तो जरमीर के बीज सिरके में पीसकर लगावें और पित्त का मवाद निकाले जो उनमें पीप हो तो आसके पत्ते और सरू के पत्ते कूट के मलें जो नाखूनों की जड़ें मोटी और कुरूप हो जावें तो बादी का मवाद निकालें, और मरहम दाखलियुन और मोमरोगन लगावें।

जो नाखून फटते हों तो तरी पहुँचाना चाहिये और बादी का मवाद निकालें और बतख की और मुर्ग की चरबी मेथी के लुआब में मिलाकर मलें॥

जो नाखून कफ के कारण ढीले होकर गिरते हों वे पीड़ा न होगी कफ का मवाद निकालें और जो रुधिर की तेजी से हो तो फस्द साफिन खोलें और पिछली ५८, पछने लगावें जो हाथ के नाखूनों में हो तो फस्द बासलीक और जो पांव के नाखूनों में हो तो शरबत उन्नाव पिलावें॥

जो नाखूनों में खुजली हो तो नदी के पानी से धोवे इंजीर कूटकर लगावे जो नाखून कुचल जावे तो आ

में आम और अनार के पत्ते कूटकर बांधे फिर गेंहू का आटा जैत के तेल में मिलाकर बांधें जो नाखून अभ्रक की प्रकार सफेद और चमकीले और भुर भुरे होजावें तो माहल अहूल और गुलकद और सिकंजबीन रोगन बादाम में मिला कर दें जब मवाद पक चुके तो इफ्तीमून औटाकर पिलावें और बकरी की पीठ का मैल चर्बी और बादाम मिलाकर लगावें ॥

नाखून पर चोट लगने से रुधिर नीचे जमजावै तो जिफ्त लगावें, और जरजीर के बीज का सिरके में पीसकर मलें और दिन में कई बार मुंह में अगली डाल कर चूसे यह अति लाभदायक है ॥

जो नाखून को उखेड़ना हो तो हरताल और जवशीर कड़ुये बादाम के तेल में मिलाकर मलें, और जो पहिले मरहम दाखलीयून लगावें तो शीघ्र लाभ करेगा ॥

और न कोई रोगन सिवाय रोगनगुल के लगावें और बालों को लाल पीलापन लिये हुये करने के लिये महदी शराब की तलछट और रसौत मिलाकर पानी में पीसे, और फिटकरी और हरताल मिला कर मलें।

और बालों के लाल करने के लिये मोथा और कुंदुरु को औटाकर धोवें वनूफशा को पीसकर सिरके में मिलाकर लगाना बालों को सफेद करता है।

नाखूनों के रोगों का वर्णन।

नाखून सफेद हो जावें तो मेथी अलसी के बीज कूटकर शहद में मिलाकर लेप करे और जो इससे लाभ न हो तो मवाद निकाले। जो पीले पड जावें तो जरजीर के बीज सिरके में पीसकर लगावें और पित्त का मवाद निकाले जो उनमें पीडा हो तो आसके पत्ते और सरू के पत्ते कूट के मलें जो नाखूनों की जडे मोटी और कुरूप हो जावें तो बादी का मवाद निकाले, और मरहम दाखलियुन और मोमरोगन लगावें।

जो नाखून फटते हों तो तरी पहुंचाना चाहिये और बादी का मवाद निकालें और बतख की और मुर्ग की चरबी मेथी के लुआब में मिलाकर मले॥

जो नाखून कफ के कारण ढीले होकर गिरते हों तो पीडा न होगी कफ का मवाद निकालें और जो रुधिर की तेजी से हो तो फस्द साफिन खोलें और पिंडली पर पछने लगावें जो हाथ के नाखूनों में हो तो फस्द बासलीक और जो पांव के नाखूनों में हो तो शरबत उन्नाब पिलावें॥

जो नाखूनों में खुजली हो तो नदी के पानी से धोकर और इंजीर कूटकर लगावें जो नाखून कुबड जावें तो बादि

में आस और अनार के पत्ते कूटकर बांधे फिर गेंहू का आटा जैत के तेल में मिलाकर बांधें जो नाखून अभ्रक की प्रकार सफेद और चमकीले और भुर भुरे होजावें तो माज्ज असूल और गुलकंद और सिकन्जबीन रोगन बादाम में मिला कर दें जब जवाब पक चुके तो इफ्तीमून औटाकर पिलावें और बकरी की पीठ का मैल चर्बी और बादाम मिलाकर लगावें॥

नाखून पर चोट लगने से रुधिर नीचे जमजावे तो मिश्क लगावै, और जरजीर के बीज को सिरके में पीसकर मलें और दिन में कई बार मुंह में उगली डाल कर चूसे यह अति लाभदायक है॥

जो नाखून को उखेड़ना हो तो हरताल और जवशीर कड़ुये बादाम के तेल में मिलाकर मलें, और जो पहिले मरहम दाखलीयून लगावे तो शीघ्र लाभ करेगा॥

अलग अलग रोगों का वर्णन।

जूये और लीखें और जब चाहे सिर में या कहीं और जगह पड़ें तो खारी पानी से स्नान करें और जल्दी जल्दी उजले कपड़े बदला करें, और गोह की बीट और नौशादर सिरके में घोलकर मलें, जो अधिक खाने से पसीना बहुत आवें तो भूखा रक्खें, और कमजोरी से हो तो पुष्ट करें और मासू पीसकर मलें और आस के पत्ते जलाकर धूनी दें और ऐसे भोजन खिलावें जिनसे गाढ़ा रुधिर उत्पन्न हो और पसीना रुक जावे, और नगा रहना और हलके कपड़े पहनना, और हवा में बैठना, और पसीने का न पोछना लाभकारक है।

और यह रोगन पसीना को रोकता है और दिल को पुष्ट करता है और मूर्च्छा को लाभकारक है सेब और बिही का

पानी और गुलाब, रोगनगुल में मिलाकर आग पर जलावें कि रोगन रह जावे, फिर इसको लगावो।

बुहरान के दिन जो पसीना विशेष निकले तो उसे बन्द न करें जब तब तक कि मूर्छा और निर्बलता का डर न हो जो पसीने में रुधिर निकले तो फस्द खोलें और जुल्लाब दें और यह औषधें पिलावें जो रुधिर की गरमी को बुझाती है फिर ऐसी औषधें शरीर पर मलें जो उसके छिद्रों को बंद करे, जैसे आनार के छिलके और आस के पत्ते या इनके पानी से स्नान करें॥

अधिक दुबलापन और मुटापा भी एक रोग है, मोटा करने का उपाय यह है कि पहिले उसके कारण को दूर करे फिर वह वे भोजन और औषधें समय के अनुसार दे जो शरीर को ताजा करें, और यह औषधि अति लाभकारक है तोदरी सफेद, तोदरी लाल, खशखाश, सफेद बादाम, हब्ब सनोबर, हब्ब सवना, फिन्दक, हब्ब उल खिजरा सब बराबर लेकर कूट छान कर गाय के घी में चिकना करके हलुआ बनावो और सवेरे और सांझ को जितना उचित है खिलावो और भोजन ऐसा दे जो अच्छा और गाढ़ और तर हो उत्पन्न करे और दुबला करने का उपाय यह है कि जुल्लाब दे और मूत्र लाने वाली औषधें पिलावो और भोजन और पानी थोड़ा दे और सोये और कूट का तेल मले और इतरी फल और कमूनी खिलावो, और कड़ी जगह पर सुलावो, और यह औषधि शरीर को दुबला करती है थोई हुई लाख ३ माशे सिरके में पीस कर नहार मुंह खिलावो॥

सिर और माथे की खाल खिंचने में बनफशा या कद्दू के

बाबू का तेल, और स्त्री का दूध मले, और भेजे का मवाद निकाले, और जो जन्म से हो तो अच्छा नहीं हो सकता जो सिर बड़ा हो जावै तो चमड़े की टोपी बनाकर पहनावे, जो बहुत तंग हो, और पांव और पिंडलीयां मले और भोजन थोड़ा दे ॥

जो सर्दी के समय उंगलियां फूलें और सुजजावें तो खारी पानी या चुकन्दर के औटे हुए पानी से धोवें जो ठुड्डी सख्त और लाल हो जावै तो आदि में बैठने और बिस्तर बैठने से रोकें और रसौत गिलेअरमनी, अकाकिया और गुल-नार आदि लगावें और घावों पर सफेदे का मरहम लगावें जो शरीर से दुर्गंधि आती हो तो मवाद निकालें, मुरदासंग घिस कर लगावें और नौशादरू खिलावें ॥ जो ठंढ से हाथ पांव काले और बिगड़ जावें तो सूजन होने से पहिले रोगन बेद या कोई और गरम रोगन मलें और जब सूजन हो तो आदि में नाखूना और मेथी, अलसी आदि को औटा के हाथ पांव उसमें रक्खें और जब उससे निकालें तो रोगन गुल मलें और पिसी हुई मसूर को औटाके लगावें, और जब फालक आजावें तो गहरे पछने लगावें और गरम पानी में रक्खें और रुधिर को बहने दें, कि आप बंद होजावे तो गिलेअरमनी पानी और शहद और सिरके में पीसकर लगावें, और थोड़ी देर पीछे पानी और सिरके से कई बार धोवें ॥

जो आग से जल जावे और फफोला न पड़ा हो तो कपड़ा सिरके पर ठण्डा करके जली हुई जगह पर रक्खें, और हर घड़ी बदलें, और गिलेअरमनी पानी और सिरके में मल के और मसूर उसमें पका के लेप करें, और काजल गोंद में घोट कर लगाना, और अंडे की सफेदी लगाना और दही और दूध

जलना लाभकारक है, और जब छाला पड़े तो फस्द खोलें और सफेदे और चूने का मरहम लगावें ॥

जलते हुए तेल से जल जाने में वही उपाय करें जो आग से जल जाने का है परन्तु अंडे की सफेदी तेल में घोलकर सफेदा मिलाकर लगाना अति लाभकारक है, खौलते हुए पानी से जल जाने में जौ की राख अंडे की जर्दी मिलाकर लगावें बिजली से जल जाने का उपाय वही है जो आग का है धूप से जलने में काफूर और सिरके का मरहम मलें, भिलावे के तेल लगने से जलन हो तो पछने लगावें जो पान खाने से चूने के कारण जीभ फट जावे तो लुआब अस्पगोल आदि से कुल्ली करें और बादाम और जायफल को तेल मलें और खोपरा चबावें ॥

घाव का वर्णन ।

मांस के फटने को घाव कहते हैं, जब उसमें पीप पड़े तो उसका नाम क़ुरहा है उसकी प्रकारें बहुत हैं, उनका वर्णन तिब्ब अकबर आदि बड़ी पुस्तकों में देखें यह जर्राही से सम्बन्ध रखता है, परन्तु थोड़ासा जान लेना चाहिये दिल को घाव की सहार नहीं उससे मनुष्य तुरंत मरजाता है, और भेजा भी नहीं सहार सकता, लक्षण उसके घाव का बुद्धि का बिगड़ जाना है और गुरदे और मसाने और आंत का घाव भी ऐसा ही जानों, और पहचान मसाने के घाव की यह है कि मूत्र उसी में से निकलेगा और जो आंत में हो तो पैखाना निकलेगा, जिगर का घाव भी बुरा है, परंतु अच्छा हो सकता है, और पट्ठे आदि का घाव भी बुरा है, उसमें रग बदलता है और मूर्छा और तिषाव होता है, और रान का घाव आगे की

और हो तो बचने की आस कम है तर पेट का घाव जो भली भाँति लगा हो भयानक है और उबकाई और हिचकी उसमें बराबर रहती हैं छाती का घाव भी ऐसा ही है उससे हवा निकलती है छाती के परदों का घाव बुरा है उसमें दम रुकता है और मेदे का घाव भी बुरा है पेट का खाना उसमें से निकल आता है सिवाय इनके और कहीं घाव हो तो कुछ डर न करे सीधा हो तो टांक लगावे और कोई हड्डी का टुकड़ा हो उसे निकाल डाले जर्राह बुद्धिमान और दस्तकार चाहिये॥

जो कोई वस्तु चुभजावे तो पहिले उसें निकालें फिर मुर और कुन्दर घाव पर छिड़कें॥

कुरह का वर्णन।

इसकी प्रकारें भी बहुत हैं यह भी जर्राही से संबंध रखता है जो थोड़ा हो तो आपसे आप अच्छा हो जाता है जो बहुत हो तो वह मरहम लगावे जो बड़ी पुस्तकों में लिखे गये हैं और नीम के पत्ते कूट के शहद में मिला के बांधे और परहेज और मवाद निकालना अति लाभदायक है और नासूर को पहिले भली गुलाब से जिस में अंगूर की लकड़ी की राख पड़ी हो भली भाँति धोवे और समुद्र पानी से या साबन पानी से जिसमें थोड़ी हरताल और नोशादर मिला हो उससे धोना अति लाभदायक है और फिर पुरानी रुई को गुलाब या माउलअसल में भिगोकर उसमें ईलरूव, एलुआ, मुर, दम्मुल अखवैन कुन्दुर अफीम केशर पीसकर मिलावे और घाव पे रक्खे जब तक अच्छा न हो और जो इससे लाभ न हो तो जहां तक होसके बुरा मांस काट डाले फिर उसके भरने का उपाय करे॥

मारने और गिर पड़ने से चोट लगने का वर्णन

जो सूजन और तप न हो तो गिले अरमनी और अंडे की सफेदी आदि का लेप करै- और जो सूजन और तप हो तो फस्द और पछने लगाकर ऐसी ठंडी औषधें लगावे जो मवाद को इधर गिरने से रोकें और जो शरीर के किसी बड़े स्थान पर लगी हो तो उसे पुष्ट करे, और उमलते की चोट में पहिले पीड़ा को दूर करना चाहिये ॥

कोड़े की चोट का वर्णन ।

जो खाल के नीचे मांस टुकड़े २ हो गया हो तो उसे दबा कर और मलकर इकट्ठा करे, और फिर बकरी की खाल जल्दी से गरम २ उधेड़ कर बांधें, और जब वह सूख जावे तो उसे खोले, इस उपाय से एक रात दिन में अच्छा होजाता है और खाल के नीचे रुधिर सिमट आया हो तो रोटी का गूदा और मूली मलें ॥

हड्डी के टूटने उखड़ने और खिसल ने का वर्णन

इसका उपाय कमानगर जानते हैं, और खिसकने में आस के पत्ते कुचलकर बांधें और मुरदासंग और अंडे की जर्दी मिलाकर मलें

विषका उपाय ।

गुनगुना पानी या तिली का तेल या मक्खन बहुत सा पिलाकर तुरंत उलटी करावे और जो इससे उलटी भली भांति न होतो सोये के बीज और नमक पानी में औटाकर और तिली का तेल बहुतसा मिलावें और उलटी के लिये जो कुछ दें बहुत सा दें जब भली भांति उलटी हो चुके तो गौ का ताजा दूध जितना पिया जावे पिलावें और जो यह भी उलटी में निकल जावे तो बहुत अच्छा है और मक्खन और घी विषका

दूध की जगह दे सकते हैं, और तिरियाक कबीर लाभ कारक है और विष खानेवाले को कभी सोने न दें, और जो भूखा हो तो चिकना भोजन पेट भर कर खिलावे और जब उस विष का नाम मालूम हो जावें तो वह औषधें दें जो उसे दूर करती हैं जब विष खानेवाले को मूर्छा आजावे और आंखों की पुतलियां फिर जावें या आंखें लाल हों और नाड़ी बंद हो जावे और जीभ बाहर निकल आवे और ठंढा पसीना निकलने लगे तो जानो कि अब न बचेगा ॥

विषेले जानवरों के काटने या डंक मारने का उपाय

इसका उपाय छः प्रकार से हो सकता है, जैसा उचित समझें वैसा करें, पहिले वह औषधें दें कि असली गर्मी को उभारें और भीतर के स्थानों को पुष्ट करें और विष को दूर करें, जैसा तिरियाक कबीर, लोबान बरबरी और जिदवार आदि, दूसरे वह औषध दें जो शरीर से वदी को निकालें, उलटी या जुल्लाब से परन्तु फस्द न खोलें और जर्रारा बिच्छू के डंक मारने में या ऐसे सांप के काटने में जिनसे कि शरीर के हर छिद्र से रुधिर निकलने लगता है, फस्द खोल सकते हैं।

तीसरे जहर मुहरा और तिरियाक जो उसी विष के दूर करने को हो दें जैसे घड़ियाल के काटने में उसी का मांस और सांप के काटने में उसी सांप का मांस खिला देना अति लाभदायक है।

चौथे वह औषधें जो उस विषैले जानवर के मिजाज से विपरीत हो जैसे हींग बिच्छू के लिये, और इसी प्रकार से हैं, पांच में वह उपाय करें, जो मवाद को खिंचा कर विष खाल की ओर बहादे, जैसे दवा या दौड़ने से पसीना निकलना परन्तु इसमें

छूटे विष को फैलने न दें इस प्रकार से कि जिस जगह कांटा या डंक मारा है जो हो सके तो उस स्थान को तुरन्त ही काट डालें, और दागदें, या ऊपर को इट के कसकर बांधे कि विष आगे बढ़ने न पावे और ठंडी व सुन्न करने वाली औषधें लगावें और उस जगह सींगी लगाना और मुंह से चूसना लाभदायक है, परन्तु चूसने वाले का पेट भारा हो और रोगनग्गुल से उसे कुल्ला करादें जो उसे हानि न हो॥

लागिया एक पेड़ है जिसमें से दूध निकलता है उसका दूध सांप के काटे हुये को लाभकारक है, और तुरंज के बीज ६ माशे सब जानवरों के विष को लाभ देते हैं और खिनर का खाना फल भी अतिलाभकारक है, न्यौले का मेदा और पेट खूब साफ करके धनिया लगाकर भूनना और सुखा कर खिलाना और बकरी की मेंगनी जलाकर खिलाना और लेप करना और साबर खाना और लेप करना अति लाभदायक हैं और पका या कच्चा दूध घी के साथ उस स्थान पर लगाना भी अच्छा है।

भिड़ और चेंटी और शहद की मक्खी के काटने में तीन हतेली भर धनियां फांके।

बावले कुत्ते के काटे को चालीस दिन तक अच्छा न होने दें जो घाव भरने लगे तो ऐसी औषधि लगादे जिससे घा बढ़े और सौदा का मवाद निकालनेमें बहुत लगे रहें इसका वि बरषों के पीछे जोर करता है और जिस किसी को कुत्ते ने काटा हो उसके काटने में वही अवगुण होता है जो कुत्ते के काटने में होता है चाहिये कि उससे भी बचे कुत्ते का काटा हुआ पानी से बहुत डरता है और पानी पीना छोड़ देता है इसी है मर जाता है उसे पानी पिलाने का उपाय यह है कि एक

नरकुल बहुत लम्बा लेके एक सिरा उसका मुंह में डालें और बहुत दूर से दूसरे सिरे में पानी छोड़े कि वह पानी को देखने न पावै और कहते हैं कि जब कुत्ता काटे उसी समय रुधिर उसका लेके थोड़ा सा पानी में मिलाकर पिलादें या छः महीने तक रोज एक माशे मुश्क खिलावें और तीन महीने तक घाव को बहने दें और जिस कुत्ते ने काटा हो उसी का कलेजा भून कर खिलाना अति लाभदायक है।

समाप्तोयं ग्रन्थः ।



नाड़ी परीक्षा

दिल की रग के चलने को नाड़ी कहते हैं।

वह दिल के खुलने और बन्द होने से चलती है खुलने से हवा खिंच के भीतर जाती है जिससे रूह हैवानी जो दिल में है आराम पाती है और गरम हवा के दूर करने के लिये दिल बंद होता है इन दोनों से मनुष्य के शरीर का और उसके रोग और आराम मालूम होते हैं दश प्रकार से शरीर का हाल जाना जाता है।

एक तो यह कितनी खुलती है और कितनी बंद होजाती है इसकी नौ सूरतें हैं क्यों कि नाड़ी में लम्बाई और चौड़ाई और गहराई है और हर एक इन तीन में से या बहुत अधिक है या कम है या मध्यम है जब उन तीन से इन तीन को गुणा करोगे तो नौ होंगे वह नौ यह हैं तबील अर्थात् अधिक लम्बी २ कसीर बहुत कम लम्बी ३ मोतदिल अर्थात् न लम्बी न छोटी उतनी लम्बी जितनी कि चाहिये ४ अरीज अधिक चौड़ी ५ जैयक कम चौड़ी ६ मोतदिल उतनी चौड़ी जितनी कि चाहिये ७ मुशरिफ अधिक उभरी हुई ८ मुनखफिज दबी हुई ९ मोतदिल न बहुत उभरी न दबी।

तबील में जितना कि चाहिये वह रोग अधिक मालूम होता है कारण इसका गरमी की अधिकता है (२) कसीर में कम मालूम होता है उस से जितना कि चाहिये कारण इसका गरमी की कमी है (३) मोतादिल में रग उतनी मालूम होती है जितनी कि चाहिये इसमें मिजाज की गरमी ठीक २ होती

(४) मरीज़ में उसका चौड़ाना जितना कि चाहिये उस से अधिक होता है इस में तरी की अधिकता होगी।

(५) जैयक में चौड़ाना कम होता है इस में तरी कम होगी (६) मोतदिल में जितनी चाहिये उतनी चौड़ाई होगी उसमें तरी ठीक २ होती है (७) मुशरिफ में यह रग अधिक उभरती यह भी गरमी का कारण है (८) मुनखफिज़ में हद से कम उभरती है गरमी की कमी होगी॥

(९) मोतदिल में उतना उभार होगा जितना कि चाहिये इस में गर्मी भी ठीक २ होगी यह नौ प्रकारें एक २ कुतरकी लम्बाई और चौड़ा और गहराई को यहां पर कुतर कहते यदि दो या तीन कुतरों को मिलाओ तो दो प्रकारें सत्ताईस२ निकलेंगी जैसा कि आगे के दो नकशों में लिखा गया है दो कुतरों के लेने की रीति जिसको सनाई कहते हैं यह कि लम्बाई की तीन प्रकारों को चौड़ाई की तीन प्रकारों साथ लें तो नौ होंगी फिर लम्बाई की तीन प्रकारों को गहराई की तीन प्रकारों के साथ लें यह भी नौ होंगी, फिर चौड़ाई की तीन प्रकारों को गहराई की तीन प्रकारों के साथ यह भी नौ होंगी, यह सब मिलकर सत्ताईस हुई॥

नकशा सनाई।

त. अ.	त. अ.	त. मो.	क. अ.	क. अ.	क. मो	मो. अ	मो. अ.	मो. मो.
त. मुश.	त मुन.	त. मो	क मुश.	क. मुन.	क. मो.	मो मुश.	मो. मुन.	मो मो.
अ. मुश.	अ मुन.	अ. मो.	अ मुश.	अ मुन	अ. मो	मो. मुश	मो. मुन	मो. मो

और तीन कुवर के जोने की रीति जिसको सलासी क
हैं। यह है कि दो प्रकारों को एक ही रक्खें और तीसरी प्र
बदलती रहे ॥

नकशा सलासी ।

स. अ. मुश.	स अ. मुन.	स. अ. मो.	स. ज. मुश.	स. ज. मुन.	स. ज. मो.	स. मो. मुश.	स. मो. मुन	स मो मो
क. अ. मुश.	क. अ. मुन.	क. अ. मो.	क. ज. मुश.	क. ज. मुन	क. ज. मो.	क. मो मुश.	क. मो मुन.	क मो मो
मो. अ. मुश.	मो. अ. मुन.	मो. अ. मो.	मो. ज. मुश.	मो. ज मुन.	मो. ज. मो.	मो. मो मुश.	मो. मो. मुन.	मो मो मो

प्रकट होकि ऊपर के दोनों नकशों में स. से सगीर और
अ. से अरीज और क, से कबीर और मो, से मोतदिल और
और ज, से जैयक, मुश से मुशफिर और मुनसे मुनकफि
जानों ।

दूसरी प्रकार जोर और कमजोरी जानना है, यह वह
जो नाड़ी देखने वाले की उंगलियों के मांस ओर से लगे परन्
उस को पुष्ट कहते हैं उस में दिल भी पुष्ट होता है और
होवे से लगे तो वह कमजोर कहलावेगी यह परिणाम दिल
कमजोरी की है ॥

और तीसरी मोतदिल है जिससे जोर रेवानी का दिल
ठीक होना पाया जाता है ॥

तीसरी प्रकार नाड़ी की चाल का समय देखना है, जो
जल्दी से आवे जावे तो उसे सरी कहते हैं उसमें दवा के
जाने की अधिक आवश्यकता होगी और

होगी। चौथी प्रकार नाड़ी के ठहरने का समय देखना ... पर उंगलियों पर लगकर तुरन्त अलग होजावे तो उस ... मुतवातिर कहते हैं इस में जोर ईवानी कम होगा और जो ... के देर में अलग हो तो उसे मुतफावुत कहते हैं इसमें यह ... हुआ होगा मोतदिल में यह दोनों बातें ठीक २ होंगी ॥

पांचवी प्रकार नाड़ी की नरमी और कड़ापन देखना है ॥ ... अधिक नर्म हो तो लीन कहते हैं इसमें तरी होगी जो कड़ी ... तो सख्त कहते हैं इसमें खुश्की होगी मोतदिल में तरी और ... खुश्की मध्यम होगी ॥

छठी प्रकार गरमी और ठंड देखना है जो अधिक गरम हो ... हार कहते हैं इसमें गर्मी अधिक होती है और जो ठंडा हो ... बारिद कहते हैं इसमें गरमी कम होगी उससे जितनी कि ... चाहिये मोतदिल में गरमी और ठंड मध्यम होगी।

सातवीं प्रकार उस वस्तु का जानना है जो रग के भीतर ... है यह रुधिर और रूह है ॥ जो नाड़ी भरी हुई हो तो उसे मुम... ... कहते हैं यह चिन्ह है मवाद की अधिकता का, और जो ... खाली हो तो उसे खाली कहते हैं इस में जितना चाहिये उस ... से कम मवाद होता है और मोतदिल में मवाद ठीक २ होता है।

आठवीं प्रकार नाड़ी का हाल जानना है हाल नाड़ी के ... यही हैं जो ऊपर लिखे गये हैं जो हर प्रकार एकसा पाया ... जावे उन सब हालों में तो उसको मुस्तवी मुतलक कहते हैं इस ... में शरीर का हाल एकसा होता है और जो सब हाल अलग २ ... पाये जावें तो उसको मुखतलिफ कहते हैं जो कुछ हाल एक ... से हों और कुछ अलग २ हों तो उसको मुस्तवी फिलवाज और ... मुखतलिफ फिलवाज कहते हैं इस में हाल बुरा होगा जो हर ... ... के टुकड़े सब हालों में एकसे पाये जावें और जो सब

अवस्थे अलग २ हों तो उसे मुस्तवी मुतलक टुकड़ों की रा
कहेंगे और जो अलग२ हों तो मुख्तलिफ मुतलक टुकड़ों
राह से कहेंगे यह दोनों बुरे हाल के चिन्ह हैं मुस्तवी में
और मुख्तलिफ में अधिक और जो नब्ज के हर टुकड़े के
टुकड़े में मुस्तवी और मुख्तलिफ देखें अर्थात् जो टुकड़ा न
का एक उंगली तले हो उसको आदि और अंत और मुख
लिफ मुतलक कहेंगे और इसी प्रकार से मुस्तवी फिजवे
और मुख्तलिफ फिजवा जानों यह भी हाल के बुरा
और कमजोरी की अधिकता और मवाद के भारी होने
लक्षण है परन्तु मुस्तवी में थोड़ा और मुख्तलिफ में अधिक

नवीं प्रकार मुख्तलिफ नाड़ी में एक सा होना देखना
जो होता नब्ज का एक प्रकार का अंतर रक्खे तो उस
मुख्तलिफ मुन्तजम कहते हैं और जो एकसा न रहे तो मु
तलिफ गैरमुन्तजम कहते हैं यह बहुत बुरे हाल का लक्षण

दसवीं प्रकार नाड़ी की तोल देखना है तोल कहते हैं
वस्तु को दूसरी वस्तु से अंदाजा करने को इसलिये अच्छे
में जो नाड़ी होती है उसको जैयदुलवजन कहेंगे और जो इस
विपरीत हो उसे रदीयुल वजन कहेंगे इसकी तीन सूरतें
पहिली मुनाफिजुलवजन यह है कि एक अवस्था वाले
नाड़ी मिलती हो उसके पास वाली अवस्था की नाड़ी से जै
कि लड़के की नाड़ी जवानकी सीया जवान की बुड्ढे की सी
दूसरी मुबाइजुलवजन यह है कि जो नाड़ी दूरकी अवस्थावा
से मिलती हो जैसे लड़के की नाड़ी बुड्ढे की सी हो तीस
खारिजुलवजन यह है कि किसी अवस्था कीसी न हो जैसे कां
पी हुई नाड़ी जो बहुत बुरी है और इससे ऊपर की दो

भी बुरी है परन्तु इससे कम नाड़ी कद और मक़सी गर्मी को आराम देती है जब गर्मी की अधिकता हो और नाड़ी में किसी प्रकार का कड़ापन हो और ज़ोर भी होतो नाड़ी अमीम होगी अर्थात् तीनों क़ुतरों पर बढ़ी हुई अर जो इससे कुछ भी लाभ हो तो सगी हो जावेगी और इससे गर्मी बढ़े और लाभ न हो तो मुतवातिर हो जावेगी और जो नाड़ी में कड़ापन हो तो सगीर होगी अर्थात् तीनों क़ुतरों में घटी हुई और जो नाड़ी नरम हो परन्तु उसमें ज़ोर न हो तो सगी होगी और जो उससे लाभ न हो तो मुतवातिर हो जावेगी और जो कमज़ोरी बहुत हो तो काम जल्दी न कर सकेगी और सगीर हो जावेगी।

जब मवाद या भोजन के ज़ोर के बोझ के नाड़ी दब जावे और उभर न सके तो कुछ सगीर हो जाती है जैसा कि तप के आदि में बारियों के अन्दर होता है चाहे ज़ोर हो तरी से नाड़ी नरम हो जाती है और खुश्की से कड़ी परन्तु बुह-रानों में कुछ कड़ी पाई जाती है।

मवाद के बोझ से या कमज़ोरी की अधिकता से नाड़ी में भेद पड़ जाता है और जब कमज़ोरी बहुत बढ़ जाती है तो इन्तिज़ाम नाड़ी का जाता रहता है उचित वज़न भी नहीं होता।

नाड़ी की मिली हुई प्रकारें।

अज़ीम उस नाड़ी को कहते हैं जो तीनों क़ुतरों में बढ़ी हुई हो सगीर वह है जो तीनों क़ुतरों में घटी हुई हो ग़लीज़ वह है जो चौड़ाई और गहराई में बढ़ी हो और लक्षण है मवाद की अधिकता का, दक़ीक़ जो चौड़ाई और गहराई में घटी हुई हो, यह मवाद से ख़ाली होने का लक्षण है।

मूत्र परीक्षा ॥

जानना चाहिये कि मूत्र पिया हुआ पानी है यह पहिले मेदे में भोजन के साथ मिलता है कि उसे पतला कैलूस बनावे, फिर मासारीका में होता आ जिगर में पकता है वहां से गुरदे में होके मसाने में इकट्ठा होता है और जो कुछ रुधि से मिला हुआ जिगर में रह जाता है वह रगों की राह से सारे शरीर में पहुंचकर कुछ पसीने में निकल जाता है और कुछ फिर गुरदे में होता हुआ मसाने में गिरता है इसीलिये मूत्र रंगीन हो जाता है जिसको पसीना बहुत आता है उसे पेशाब कम होता है। और पसीना कम आने वाले को पेशाब अधिक होता है जब मसाने में इकट्ठा हो जाता है तो पेशाब लगता है इसीलिये सारे शरीर का हाल इससे जाना जाता है यहां से दो बातें मालूम हुई, एक यह कि पेशाब में दो वस्तु हैं, एक पानी दूसरा भारीपन दूसरे पेशाब से जिगर और मसाने का हाल भली भांति जाना जाता है।

मूत्र के रंग का वर्णन।

असल रंग पांच हैं पीला लाल हरा काला और सफेद और सिवाय इनके जो हों वह इन्हीं के साथ हैं।

पीले रंग की पांच प्रकारें हैं।

तिपनी- उस पानी का सा रंग होता है जिसमें भूसा भिगोया हो अर्थात् पीला होता है सफेदी लिये हुए यह लक्षण है मिजाज की ठंढ का क्योंकि या तो पानी की अधिकता होगी

पा पित्तों की कमी यह दोनों ठंढ से होते हैं परन्तु पित्तों के सरसाम में भी मूत्र का रंग ऐसा हो जाता है।

जरदमी—अर्थात् हलकापीला रंग जैसे तुरन्ज के छिलकेका होता है इसमें पीलापन तिवनी से अधिकता से होता है यह लक्षण है मिजाज के ठीक होने का और भली भाँति पचाव होने का।

अशकर—यह पीला रंग है लाली लिये हुए मिजाज में गरमी लाने का लक्षण है।

नारी—यह रंग वह है जिसमें पीलेपन में लाली अधिक होती है और चमक आग की सी होती है इसमें अशकर से अधिक गरमी होती है।

जाफरानी—इसमें नारी से लाली अधिक होती है, और गरमी भी अधिक होगी।

दूसरा रंग लाल है वह चार प्रकार का होता है।

असहब, थोड़ी लाली हो और सफेदी भरे पतले रुधिर वाला गुलाबी रंग को कहते हैं इसमें लाली असहब से अधिक होती है और गाढ़े रुधिर से पीया जाता है।

कानी—यह बहुत लाल होता है उस रुधिर से जिसमें गरमी बढ़ी हो।

अकतम—लाल हो कालापन लिये हुए सौदा के गाढ़े पन की गरमी से यह चारों रुधिर और गरमी की अधिकता लक्षण हैं एक दूसरे से अधिक और कभी ठंढे रोगों में भी यह रंग हो जाता है जैसे फालिज और सुस्तकिनीआ में कि जिगर की निर्बलता से रुधिर पानी से भली भाँति अलग नहीं हो सकता और रुधिर पेशाब में मिला आता है तीसरा रंग हरा है, यह भी चार प्रकार का है १ फिस्तकी अर्थात् पिसतई रंग यह ठंढ का चिन्ह है क्योंकि पित्तों और

मूत्र परीक्षा ॥

जानना चाहिये कि मूत्र पिया हुआ पानी है यह पहिले मेदे में भोजन के साथ मिलता है कि उसे पतला, कैलूस बनावे, फिर मासारीका में होता आ जिगर में पकता है वहां से गुरदे में होके मसाने में इकट्ठा होता है और जो कुछ रुधि से मिला हुआ जिगर में रह जाता है यह रगों की राह से सारे शरीर में पहुंचकर कुछ पसीने में निकल जाता है और कुछ फिर गुरदे में होता हुआ मसाने में गिरता है इसीलिये मूत्र रंगीन हो जाता है जिसको पसीना बहुत आता है उसे पेशाब कम होता है। और पसीना कम आने वाले को पेशाब अधिक होता है जब मसाने में इकट्ठा हो जाता है तो पेशाब लगता है इसीलिये सारे शरीर का हाल इससे जाना जाता है यहां से दो बातें मालूम हुई, एक यह कि पेशाब में दो वस्तु हैं, एक पानी दूसरा मारीपन दूसरे पेशाब से जिगर और मसाने का हाल भली भांति जाना जाता है।

मूत्र के रंग का वर्णन।

असल रंग पांच हैं पीला लाल हरा काला और सफेद और सिवाय इनके जो हों यह इन्हीं के साथ हैं।

पीले रंग की पांच प्रकारें हैं।

तिपनी- उस पानी का सा रंग होता है जिसमें भूसा भिगोया हो अर्थात् पीला होता है सफेदी लिये हुए यह लक्षण है मिजाज की ठंड का क्योंकि या तो पानी की अधिकता होगी

या पित्तों की कभी यह दोनों तरह से होते हैं परन्तु पित्तों के सरसाम में भी मूत्र का रंग ऐसा हो जाता है।

बतरूजी—अर्थात् हलकापीला रंग जैसे तुरन्ज के छिलकेका होता है इसमें पीलापन तिबनी से अधिकता से होता है यह लक्षण है मिजाज के ठीक होने का और भली भांति पचाव होने का।

असफर—यह पीला रंग है लाली लिये हुए मिजाज में गरमी होने का लक्षण है।

नारी—यह रंग वह है जिसमें पीलेपन में लाली अधिक होती है और चमक आग की सी होती है इसमें अशक से अधिक गरमी होती है।

अहमरनासे—इसमें नारी से लाली अधिक होती है, और गरमी भी अधिक होगी।

दूसरा रंग लाल है वह चार प्रकार का होता है।

असहब, थोड़ी लाली हो और सफेदी भरे पतले रुधिर के बराबर गुलाबी रंग को कहते हैं इसमें लाली असहब से अधिक होती है और गाढ़े रुधिर से पीया जाता है।

कानी—यह बहुत लाल होता है उस रुधिर से जिसमें गरमी बढ़ी हो।

अकतम—लाल हो कालापन लिये हुए सौदा के गाढ़े होने की गरमी से यह चारों रुधिर और गरमी की अधिकता के लक्षण हैं एक दूसरे से अधिक और कभी ठंडे रोगों में भी लाल रंग हो जाता है जैसे फालिज और मुस्तकिनीया में क्योंकि जिगर की निर्बलता से रुधिर पानी से भली भांति अलग नहीं हो सकता और रुधिर पेशाब में मिल जाता है तीसरा रंग हरा है, यह भी चार प्रकार का है १ फिस्त की तरह पिसताई रंग [illegible] जिगर है क्योंकि पित्तों और

बादी के मिलने से होता है परन्तु यह बादी जो ठह से इतरा हो कुर्शी ने कहा है कि यह रंग पित्तों के जलने का लक्षण क्यों कि इसमें पीलेपन की झलक होती है जो ठहे सौदा होता तो कालापन होता है।

नीलमनी—जैसे नील पानी में घुला हो इसमें फिस्त से भी अधिक ठह होती है यह दोनों रंग जो बच्चों के मूत्र में तो फालिज या तशन्नुज होने का डर है।

३ जनजारी अर्थात् अगार का सा, इसका कारण गर्म की अधिकता और पित्तों का जलना है।

४ कुर्ती सी गन्दने का सा रंग यह भी पित्तों के जल का लक्षण है परन्तु जनजारी से कम है। चौथा रंग काला इसके कई कारण हैं एक इस प्रकार से जिससे कि पहिले शरी में गरम पित्त हो और वह मूत्र के मवाद को जलादे जिससे उसका काला हो जावे परन्तु उसमें पीलेपन की झलक हो और पहिले से मूत्र में गंध होगी या लाल आवेगा। (२) कार जमना है इसी प्रकार से शरीर में ठंढा मवाद हो जो मूत्र मवाद को जमादे और काला करदे इसमें पहिले से हरा बिना गंध के या खट्टी गंध लिये हुए आवेगा।

तीसरा कारण बादी का मूत्र में निकालना है यह सं की तप में और बुहरान के दिन आवेगा इससे मवाद के प के लक्षण पाये जावेंगे और पीछे रोग में कमी होगी।

चौथा कारण किसी रंगीन वस्तु का खाना है जैसे क शराब आदि जो यह वस्तु जैसी की तैसी मूत्र में निकले जान लो कि जिगर का जोर जाता रहा और डरावना है जो अधिक खालेने से होतो कुछ डर नहीं पांचवां रंग स

यह दो प्रकार का होता है एक दूध का सा गाढा यह कफ
की अधिकता और मिजाज की ठंड या हड्डियों और पट्ठों के
और चर्बी के पिघलने का लक्षण है जैसा कि दिक के अन्त में
होता है कारण इसका अधिक गर्मी है इसमें चिकनाई सफेदी
साथ होगी और शरीर दुबला और प्रति दिन पिघलता
होगा ।

दूसरे पानी का सा रंग यह लक्षण है जिगर के पचाव
के रहने का ठण्ड की अधिकता से या मूत्र के रस्ते में सुद्दा
होने से कि रंगीन वस्तु नहीं निकलती है और निरा पानी
निकल आता है ।

मूत्र का गाढा और पतला होना ।

मोतदिल यह है जो न बहुत गाढा हो न पतला जैसा कि
... में होता है और लक्षण है पचाव और भली भांति
... का । गाढा होना लक्षण है न पकने का क्यों कि बिना
... फोक मूत्र में मिलाकर उसे गाढा करदेती है और कभी
होता है गाढे मवाद के पकने का पहिचान उसकी यह है
... से पहिले मूत्र बहुत गाढा आवेगा और पकने के पीछे
... आवेगा ।

कभी बहुत पानी पीने से मूत्र पतला आता है और कभी
... में सुद्दा पड़ने से भी पतला आता है पहिचान उसकी
... सुद्दे की जगह बोझ और तनाव पाया जावेगा और कभी
... न पकने से भी पतला हो जाता है, जब कि मवाद ऐसा
... कि निकल न सके जैसा कि कफ की तपों में होता है ।

मूत्र का साफ और गदला होना ।

... यह है कि ... बार बार उसमें

जो टुकड़े पड़े और चौड़े न हों तो वाख को इरसनी कहेंगे और नहीं तो नखाली ॥

तलछट जो तरी से हो उनमें से जो लाली लिये हुए हो वह चिन्ह है रुधिर के जलन का और कभी कफ के जलने का और जो पीली हो तो पत्तों की अधिकता का और काली सौदा के जलन का चिन्ह है ॥

जो मूत्र बिना तलछट के हो उसके कई कारण हैं, एक मवाद का पड़ना, दूसरे सुद्दा, तीसरे मवाद की कमी। चंगे मनुष्यों के मूत्र में तलछट बहुत थोड़ी होती है, और जो होती भी है सो बिना पचे हुए भोजन के फोक से, दुबले मनुष्य और मिहनत करने वाले के मूत्र में तलछट बहुत कम होती है और जो रोगी मोटा और आराम चाहने वाला हो उसके मूत्र में बहुत आती है, जिस तलछट का फोक पीप हो उसे मर्द कहते हैं और जिसका फोक गाढ़ा और कच्चा मवाद हो वा मुखाली है, यह बहुत करके मरकुन्निसा और बड़े मुफासिल के रोगों में आती है इन दोनों की सूरत एक सी होती है परन्तु अंतर यह है कि मद्दी में दुरगंधि होती है और सूजन या घाव के फूटने के पीछे निकलती है, और जल्दी इकट्ठी हो जाती है और मुखाली में यह बातें नहीं होती ॥

मूत्र का थोड़ा और घना होना।

मूत्र के घने के होने के बहुत कारण हैं एक पानी बहुत पीना अकेला या कोई वस्तु मिलाकर या दस्तों का लाना दूसरे शरीर का पिघलना जैसा कि गरम तपों में होता है, तीसरे रुके हुए मवाद का निकलना जैसा कि दुहरान बहरान होता है ॥

बुहरानी और जूबानी में यह अंतर है कि बुहरानी होता है और मवाद के निकलने के पीछे रोगी को

है और जवानी में कमजोरी होती है उसमें पुष्टगर्मी पाई जाती है और गधिलेज होती है और बुहरान के दिन नहीं होता। बुरा मूत्र जैसे काला और गाढा इसमें अच्छा यह है कि बहुत आवे और रुक २ के न आवे इसमें जोर होता है और जो कमजोरी होगी तो रुक के आवेगा, मूत्र के थोड़ा होने के कारण भी बहुत हैं, एक तरी का अधिक पचना दूसरे शरीर में तरीका न रहना गरमी की अधिकता से तीसरे बुरा पटना उन रस्तों में जिनसे कि तरी मसाने में जाती है चौथे अधिक दस्त या पसीना आना, इससे जो तरी मूत्र में आती थी वह दस्त और पसीने में निकल जावेगी पचाव के कम होने पर भी जो मूत्र बहुत थोडा आवे तो जलधर हो जाने का डर है ॥ इति

बुहरान का वर्णन ।

रोग की लड़ाई जो मिजाज के साथ होती है उसे बुहरान कहते हैं ।

जो मिजाज जीते और रोग एक बारगी जाता रहै उसे बुहरान महमूद या कामिल कहते हैं और जो रोग जीते और रोगी एक बारगी मर जावे तो बुहरान रदी नाम है यह दोनों रम रोगों में होते हैं ॥

जो रोग अच्छा होने को हो परन्तु देर में इसे तहल्लुल कहते हैं यह बहुधा पुराने रोगों और ठंढे मवाद में होता है ॥ और जो इसी प्रकार से रोग मार डालने को हो तो जूबान और रमजूवा कहते हैं यगा होने के कारण या तो एक बारगी रूप होवेंगे परन्तु देर में अच्छा हो और मवाद थोडा २ ... या पहिले मिजाज का जोर कुछ न मालूम हो परन्तु ... को कुछ २ निकाल के एक बारगी जीत जावे तो बुह-

बुहरान जैयद की पहिचान यह है कि मवाद अच्छा पका होगा और वह भली भांति निकलेगा और नाड़ी ठीक और पुष्ट होगी बुहरान रदी इसके विपरीत हैं बुहरान के दिन कोई ऐसी औषध न दें जो मवाद को निकाले इस वास्ते जुल्लाब आदि न देना चाहिये, जो हो सके तो भोजन भी न दें और नहीं तो, हलका भोजन देना चाहिये, और लक्षणों को देखकर मिजाज की मदद करें, जो मवाद नकसीर से निकला चाहता हो और मिजाज कमजोरी के कारण उसे न निकाल सकता हो तो मदद दें इस प्रकार से कि सिरको गरम रक्खें और गरम पानी से तरेड़ा दें जो वमन आने का हो तो वमन करावें और जो प्रकृति जुल्लाब चाहती हो तो मुछैय्यन दें इसी प्रकार और भी जानों जब मालूम हो कि बुहरान इन्तकाली है और मवाद किसी जगह गिरकर उसे बिगाड़ेगा तो मवाद को उधर गिरावें जिधर से कुछ हानि न हो जैसे कि जो जगह उसके बराबर हो उसे कसकर बांधें या सीगियां या जोंकें लगावें या कोई गरम लेप लगावें जो मवाद दहने हाथ में हो तो बांये हाथ से कोई कड़ा काम न करें या बोझ न उठावें जो मवाद सिर या आंख में हो तो पहिले पीड़ा को दूर करें और पांव मलें या, गरम पानी में रक्खें या पिंडलियां टखनों तक कसें और जो मेदे में हो और छाती की ओर आवे तो बाहें और रान कसें मूत्र में पसीना निकालें और पसीने में मूत्र और उलटी में दस्त और दस्त में उलटी जबतक अधिक आवश्यता न हो बुहरान में मवाद निकालना बंद न करें और उसे शरीर की किसी उत्तम और कमजोर जगह पर न गिरावें रोग के आदि से बुहरान बहुत बुरा है बहुत से हकीम जो रोग दो पहर से पहिले उत्पन्न हुआ हो उस दिन को हिसाब में गिनते हैं और

जो दोपहर के पीछे हो उसे छोड़ देते हैं गनने के पीछे जो सब हा उसी समय से गिनी जावेगी, राग में कुछ दिन पुहरान क दिन हैं उन्हें बाहुरिया कहते हैं और कुछ योमुल अनजार अर्थात् खबर देने वाले और कुछ न पुहरान के हैं न खबर देने वाले परन्तु कभी २ पुहरान उनमें हा जाता है, उन्हें वाकैफित वस्त कहते हैं जैसा कि आगे के नकशे में लिखा जावेगा पुहरान का जोर और कदापन आठवें दिन तक रहता है फिर घट जाता है।

जिन दिनों में पुहरान बहुत करके होता है और अच्छा होता है वह ग्यारह दिन हैं उनकी जगह हमने एक का अंक नकशे में लिखा है, और जिन दिनों में पुहरान रद्दी और बुरा होता है वह आठ दिन हैं उनकी जगह दो का अंक लिखा है और जिन दिनों में पुहरान नहीं होता वह तेरह दिन हैं उनकी जगह तीन का अंक लिखा है और उनमें पुल्लाव भी वे खट होकर दे सकते हैं और छः दिन बाके फिजायस्व हैं, उनकी जगह चार का अंक लिखा है॥

दिन	हाल	दिन	हाल	दिन	हाल	दिन	हाल
१	पुहरान	११	४	२१	१	३१	१
२	मिक्साफी	१२	२	२२	३	३२	३
३	४	१३	४	२३	३	३३	३
४	[illegible]	१४	१	२४	१	३४	१
५	४	१५	२	२५	३	३५	३
६	२	१६	२	२६	३	३६	३
७	२	१७	४	२७	१	३७	१
८	२	१८	२	२८	३	३८	३
९	४	१९	२	२९	३	३९	३
१०	२	२०	१	३०	३	४०	१

हब्बे रावन्द ।

रावन्द १॥ माशे गारीकून ३॥ माशे तुर्बद ७ माशे मस्तगी
चन्द दो दांग गूगल १॥। माशे, अनीसून १ दांग, कूट छान कर
गोलियां बनावें और यह दो बार के खाने को है ।

हब्बआसिक बीनज ।

सिकबीनज, एलुआ, गारीकून, गूगल, बराबर लेकर
गोलियां बनावें और ७ माशे से १०॥ माशे तक खावें ॥

हब्ब खीजरान ।

भुना हुआ सकमूनियां, जावशीर, प्रत्येक ४॥ माशे बका
यन ५। माशे नोशादार, ७ माशे गारीकून ८॥ माशे अयारिज
फीकरा १०॥ माशे इनरूल १४ माशे तुर्बद, २४॥ माशे कूट
छान कर गदने पानी में गोलियां बनावें और ३॥ माशे खावें

हब्ब बासली ।

बालछड़, तम हब्र और कदं बिलसान आसारोन, मस्त
गी, दालचीनी केसर प्रत्येक ३॥ माशे नमक ७ माशे भुनी हुई
सकमूनियां १४ माशे वस्तखुद्दूस, बकायन प्रत्येक १७॥ माशे
तुर्बद २४॥ माशे एलुआ ५६ माशे कूट छान, कर पानी में
गोलियां बनावें और १४ माशे खावें ।

हब्ब सिब्र ।

भुनी हुई सकमूनियां ७ रत्ती उसारागाफिस ६ रत्ती गा
रीकून १८॥ रत्ती सिब्र ३॥ माशे कूट छान कर हरी कासनी के
पानी में गोलिया बनालें यह एक बार खोवें ।

हब्ब इफ्तीमून ।

वस्तखुद्दूस ४ दांग कालीकुटकी नमक प्रत्येक १॥। माशे

बिसफायज, गारीकून, प्रत्येक ३॥ माशे अयारिज फीकरा ३॥ माशे गोलियाँ बनालें यह सब दो बार या ३ बार खाने को हैं॥

दिवाल मिश्क।

मस्तगी, कबाबचीनी, तुरन्ज के छिलके, दालचीनी, लोंग, बालछड़, सुक, जायफल कबाबा बड़ी इलायची के दाने मोथा, सरकंडे की जड़, जंगलीतुलसी, फिरजमुश्क नममाय, बालंगू के बीज, दौनामरुवा, बिनाबिषमोवी, पुदुद, फरंजाशमई कच्चा रेशम कटा हुआ सफेद और लाल बहमन प्रत्येक ३५ माशे मुश्क १७॥ माशे हरड़ के मुरब्बे के शीरे में गूंथ के माजून बनाले।

दवायतुर्बुद।

तुरबुद सफेद छिला हुआ साफ किया हुआ ३५॥ माशे, सोंठ मस्तगी, प्रत्येक १७॥ माशे कन्द इन सब को बराबर कूट छान कर फकी बनावें और ४॥ माशे खावें।

दवाउलकरकम।

केसर ५४ माशे आसारोन, सुक, अनीसुन, फितरासालयून, रेवन्द मुश्मकी प्रत्येक १४ माशे बालछड़ २१ माशे मीठा कूठ तजकाकाई सरकंडे की जड़ हब्बबिलसान, प्रत्येक ७ माशे मुलैठी गोंद, मस्तगी, गाफिस प्रत्येक १०॥ माशे बिलसान का तेल १७॥ माशे कूठ छान कर शहद में मिलाकर माजून बनावें और मावलमस्तु के साथ ३॥ माशे खावें॥

दवाउलतुरंजबीन।

तुरंजबीन सफेद साफ करके १०५ माशे डेढ़ सेर दूध में औटावें जब गाढ़ी होजावे तो १३॥ माशे खावें।

जरूर असफर।

अनजरूत एलुआ, रसौत प्रत्येक ७ माशे, केसर, मुर, प्रत्येक ३॥ माशे पीस कर छानकर आंख में लगावें।

मस्तगी का तेल।

मस्तगी ३५ माशे रोगन गुल १७५ माशे एक शीशी में डाल कर गरम पानी में उसे रक्खें और उसके नीचे आग जलावें यहां तक कि वह मस्तगी तेल में पिघलजावे फिर उसे निकाललें।

कूठका तेल।

कूठ ३५ माशे कालीमिरचें, फरफियून, प्रत्येक १६॥ माशे अकरकरा १४ माशे, जुन्दवेदस्तर ८॥ माशे जैत का तेल १७ माशे कूट और अकरकरे और मिरचों को ३५० माशे पानी में १ रात दिन भिगोकर औटावें कि आधा जलजावे फिर जैत का तेल मिलाकर औटावें कि निरा तेल रह जावे फिर जुन्देदस्तर और फरफियून को कूट छानकर आग पर से उतार कर डाल दें॥

केसर का तेल।

मुरमकी १॥ माशे चिरायता १७॥ माशे केशर, कर्दमाना प्रत्येक २१ माशे चिरायते और केसर को अलग और मुरमकी को अलग सिरके में भिगोवें पांच दिन तक और छटे दिन कर्द-माना को भी सिरके में भिगोवें एक दिन सातवें रोज सब को कर-तिल्ली का तेल मिलाकर औटावें कि सिरका जलजावे और तेल रहजावे उसे काम में लावें।

बिच्छू का तेल।

जरावंद मुदहरज बिल्वयाना सीधा करने की जड़ की छाल प्रत्येक २ तोले कूट कर शीशे में भरें, और ४०५ माशे कडुआ बादाम या तिली का तेल उसमें डाल दें और मुहबंद कर धूप में रख दें, गरमी में सात दिन और जाड़ों में चौदह दिन फिर उस दवा को उस तेल में भली भांति घोलें और दो बिच्छू जीते उसमें छोड़ दें फिर मुंह बंद करके, चौदह दिन और धूप में रक्खें फिर छान लें॥

सुद्दाब का तेल।

हरे सुदाब का अर्क ६ तोले, तिली या जैत के तेल में जो तीन तोले हो औटावे कि पानी जलजावे।

नारदीन का तेल।

चिरायता, घरकुलगार, कपूरकचरी, ऊदबिलसान, आस, तेजपात, आस के पत्ते नारदीन, मरकन्दे की जड़, रासन, असारून करदमाना, दौनामरुवा बराबर लेकर कुचल के १ रात दिन गुलाब और पानी में भिगोवे फिर छानकर तिली का तेल मिलाकर औटावे कि निरा तेल रहजावे॥

रोगनमोची।

काले चेंटे जो कबरों में होते हैं १०० पकड़ें और एक शीशे में जिसमें चमेली का तेल पड़ा हो जीते डालें और मुह उसका बंद करके गरमी की धूप में सात दिन तक रक्खें फिर साफ करलें।

आसका तेल।

हब्बुलआस कूटकर तिली के तेलमें औटावें, फिर निचोड़लें।

रोगन आमला।

छिले हुए आमले, आस के पत्ते, सनोवर के लकड़ी आस बराबर लेकर कूट के पानी में औटावे कि गलजावे फिर छान के उतना तेल मिलाकर पानी को जलावे कि निरा तेल रह जावे॥

सोये का तेल।

सोये के बीज छाया में सुलाके तीन तोले लें और तिली का तेल ५७॥ तोले शीशे में भरके धूप में २० दिन तक रक्खें फिर छानलें॥

गोखरू का तेल ।

हरे गोखरू को कूट के पानी उसका तिली के तेल मिलाकर आग पर जलावे कि निरा तेल रह जावे ॥

गेहूं का तेल ।

इसके बनाने की दो रीति हैं एक यह कि गेहूं को आति शीशे में भरकर ऊपर से कपड़ोटी करें और उसके मुंह में किसी छाल के या तिनके गाड़ें कि गेहूं गिरने न पावें फि उसको किसी बर्तन में कि नीचे उसके छेद हो उलटा रख ऊपर इसके अरने उपले चुनें और आग लगादें और तेल एक बरतन रखदें कि तेल उसमें टपका करे ॥

दूसरी रीति यह है कि गेहूं को किसी साफ पत्थर रखकर ऊपर से कोई लोहे की वस्तु गरम करके और दबाने से तेल निकल आता है ॥

सुर्मा रोशनाई ।

तुहासे जला हुआ शादना प्रत्येक १७॥ माशे गोल मि दार फिलफिल, केशर, बकायन १॥ माशे जंगाल, पलु नमक अर्मनी प्रत्येक ३॥ माशे इकलीमिया ७ माशे पीस सुर्मा बनालें ।

म.जूनजरूनी ।

काली मिरचें, दारफिलफिल, सोंठ, तज, दारचीनी ए एलीमि प्रत्येक तोले भर दोनों तोदरी और बहमने, मुनीत मिसालुन अमाकीन, मीठा कूठ, मोथा, बालछड़, प्रत्येक तोले कूट छानकर माजून बनालें ॥

सिरके की सिकंजबीन ।

सिरका और शक्कर दोनों बराबर लेकर बना लें ।

सिकंजबीन बजूरी गर्म ।

बसारागाफिस, रेवन्दचीनी, प्रत्येक ७ माशे, कफ

चासनी और कुसुम के बीज, सौंफ, अनीसून प्रत्येक, १७॥ माशे किश और सौंफ और कफस के जड़ की छाल २४। माशे सबको कुचल कर १२१५ माशे पानी में भिगोवें और पानी से चौथाई सिरका उसमें डालें एक रात दिन उसे भीगा रक्खें फिर औटाकर साफ करलें और ६७॥ तोले कंद में चासनी करलें ॥

सिकंजवीन अनसिली ।

अनसिल ३ छटांक लकड़ी की छुरी बनाकर काटें छोटे २ टुकड़े और पुराना सिरका २०२५ माशे डालें और औटावें कि बिलकुल गलजावे और सिरका पांचवां हिस्सा रह जावे, फिर उसमें १॥ गुणा कंद मिलाकर धीमी आग में पकावें, और उसके झाग निकालते जावें यहां तक कि चासनी पर आजावे ॥

सिकंजवीन अफतीमून ।

वसुद्दस, सौंफ, शाहतरा प्रत्येक १७॥ माशे, अफतीमून अफायम, सनाय, काबिली हरड़ प्रत्येक ३५ माशे इन सब १२५ माशे सिरके में भिगो कर औटाकर छानलें और आध सेर कंद में चासनी बनावे ॥

सिंकजवीन सफरजली

खट्टी बिही आमी कूटकर पानी १ सेरले और पाव भर का मिला कर औटाये फिर सेर भर कंद डालकर कवाम व चासनी बनालें और जो सिरके के बदले नीबूका अर्क लें तो अति लाभकारक होगा

सुफूफचारतुखम

ईसबगोल, तुखमरेहां, कनौचे और बारतंग के बीज बराबर किसी मिट्टी के बरतन में भूने और गरम पानी का

डाल के छत करें और थोड़ा सा रोगन गुल या बादाम डाल कर खिलावें ।

सुफूफ हब्बुलरुम्मां ।

खट्टे अनार के दाने भुने हुए ७० माशे झाऊ करोया धनियां प्रत्येक १४ माशे झाऊ खरनूबनिबती प्रत्येक ७ माशे गुलनार गर्द सिमाक प्रत्येक १०॥ माशे करोया और धनिये को सरके में भिगोकर सूखा के भूने फिर सबको कूट छानकर फक्की बनावें और ७ माशे खावें ।

सुफूफ मिक़लियासा ।

ईसबगोल ७० माशे रेहां बारतग मरू के बीज बबूल का गोंद गिले अर्मनी खशखाश प्रत्येक २४ माशे बीजों को भून के और बाकी सबको कूट के मिलादें और ठंडे पानी के साथ फकावें।

सुफूफतीन ।

ईसबगोल मरू और रेहां के बीज निशास्ता भुने हुए चूके के बीज गिले अर्मनी वंसलोचन बबूल का गोंद सबको सिवाय अस्पगोल के कूटकर मिलाकर १० माशे रोगन गुल या बादाम चिकना करके गुलाब के साथ फकावे ।

सुफूफतरातेजक ।

तरातेजक को एक रात दिन अंगूर के सिरके में भिगोवे और थोड़ा सा जौका आटा उसमें मिला कर गूंधे और धीमी आग के तनूर में रोटी पकावे कि जल न जावे और सूख जावे फिर उस रोटी में से १४० माशे ले और संभालु के बीज इस फलूफन्दरीयून किम्र के जड़ की छाल बनबा प्रत्येक १७॥ माशे गन्द ने के बीज जीरा किरमानी कि एक रात सिरके में भिगोकर भूनलिया हो प्रत्येक २२॥ माशे सबको कूटछानकर फकी बनावें ॥

मञ्जन दांतों का पुष्ट करने वाला ।

गुलनार फिटकिरी आंवला अकाकिया बराबर लेकर मञ्जन
बनावें ।

दूसरा मञ्जन यह है मुर दूतिया फिटकिरी गई सिमाक
माष केफूल खट्टे अनार के छिलके आमले का बसारा माजू
गुलनार झाऊ बराबर लेके कूट छान कर मञ्जन बनावें ।

कूठ के तेल की दूसरी रीति ।

तम २१ माशे मुरमकी मारचोबा प्रत्येक १४० माशे हडुआ
रूद ३५० माशे सब को कुचल के गुलाब में एक रात दिन
भिगोवे फिर औटावें और छान कर तिली या जैत के तेल में
जो पानी से तिगुना हो मिलाके औटावे कि निरा तेल रहजावें ।

सुरती जान ।

खट्टे और मीठे अनार के छिलके प्रत्येक १०४ माशे माजू
गुलनार फिटकिरी जला हुआ कागज अकरकरा प्रत्येक ३५
माशे सिमाक ५२॥ माशे नमक नौशादर प्रत्येक १७॥ माशे कूट
छान कर हब्बुल आस के सिरके में गूंध के टिकियां बना कर
सुखा रक्खें ।

शर्बत वर्द मुकर्रर ।

गुलाब के फूल ताजे खुशबूदार जीरा और सबजी निकाल
के १ सेर भरलें और पांच सेर पानी में औटावें यहां तक कि
रंग और स्वाद और गंध उसकी पानी में आ जावे फिर मल के
उसका फोक निकाल डालें और उतने ही नये फूल डाल के
औटावें और उसका भी फोक निकाल डालें इसी प्रकार से जितनी
बार चाहें नये फूल बदलते जावें फिर छान के पानी के बराबर
शक्कर मिला कर कवाम करलें और १ या २ तोले पीवें ।

शर्बत इफसंतीन ।

इफसंतीन रूमी १७॥ माशे गुलाब के फूल २८ माशे ३ पहर पानी में भिगो कर औटावे जब चौथाई रह जावे तो मल कर छान कर शक्कर मिलाके कवाम करै ।

शर्बत जूफा ।

सूखा जूफा डंठल निकाल के २०३ माशे लें, और उससे दुगने पानी में भिगोवें, फिर औटाके १०२ माशे कंद और४०५ माशे शहद डाल कर कवाम करलें।

शर्बत खशखाश ।

पोस्त खशखाश दानों समेत १०० ले उन्हें कुचल के दो सेर पानी में औटावे फिर १॥ सेर कंद कवाम करलें ॥

शर्बत पोदीना ।

खट्टे अनार का रस एक हिस्सा लें और हरे पोदीने का रस कूटकर आधा हिस्सा लें फिर दोनों को मिलाकर औटावे और उसके बराबर कंद डालकर कवाम करलें ॥

शर्बत दीनार ।

रेवन्द १८ माशे, कूशूम के बीज १७॥ माशे, गुलाब के फूल ५२॥ माशे, कासनी के बीज ६० माशे, कासनी की जड़ १०५ माशे रेवन्द को कपड़े के पोटली में बांधकर और औषधों के साथ भिगादें और हल्की आंच पर औटावे फिर छान कर कंद सफेद ४०४ माशे डाल कर कवाम करले और ३५ माशे, से ४५, और ५२॥ माशे तक पीवे ॥

शर्बत हब्बुलआस

हब्बुलआस ४०५ माशे ...
बराबर कुचल कर मिलाकर ...
औटा कर बराबर कंद ...

अनार की जड़ और छिलके और डाली ५ तोले ७॥ तोले तक ले और कुचलकर एक रात दिन गरम पानी में भिगोवे और हलकी आंच में औटावे मलकर छानकर ४०५ माशे कन्द मिलाकर कवाम करे और चाहें तो १॥ तोले खट्टे अनार के दानें भी मिलालें।

शर्बत गावजुवां।

हरी गावजुवां का रस निकाल कर और कन्द सफेद प्रत्येक १ सेर पर लेकर और मिलाकर औटावें और झाग निकाल डालें फिर गुलाब ४० माशे डालकर कवाम करलें।

शर्बत बालगू।

बालू गू के हरे पत्ते कूट कर रस निकालें एक हिस्सा लेकर दुगनी कन्द डालकर कवाम करलें।

शर्बत नीलोफर।

नीलोफर के हरे फूल २०२ माशे चौगुने पानी में १ रात दिन भिगोकर औटावें जब तिहाई रहजावें तो मलकर साफ करें और २०२ माशे कन्द मिलाकर कवाम करलें।

यही रीति शर्बत बनफशा बनाने की है।

शर्बत सन्दल।

सफेद चन्दन का चूरा खुशबूदार ६० माशे लेकर ४०५ माशे गुलाब में दो रात दिन भिगावें फिर गुलाब को अलग निकालें और चन्दन में थोड़ा पानी डालकर औटावें फिर यह पानी और गुलाब मिलाकर ८१० माशे कन्द में कवाम करलें।

शर्बत उन्नाव।

उन्नाव एक हिस्से चार हिस्से पानी में भिगोकर औटावें।

शर्बत इफसंतीन ।

इफसंतीन रूमी १७॥ माशे, गुलाब के फूल २८ माशे ६ पहर पानी में भिगो कर औटावै जब चौथाई रह जाने तो मल कर छान कर शक्कर मिलाके कवाम करें ।

शर्बत जूफा ।

सूखा जूफा डंठल निकाल के २०३ माशे लें, और उससे दुगने पानी में भिगोवें, फिर औटाके १०२ माशे कंद और४०५ माशे शहद डाल कर कवाम करलें ।

शर्बत खशखाश ।

पोस्त खशखाश दानों समेत १०० ले उन्हें कुचल के दो सेर पानी में औटावे फिर १॥ सेर कद कवाम करलें ॥

शर्बत पोदीना ।

खट्टे अनार का रस एक हिस्सा लें और हरे पोदीने का रस कूटकर आधा हिस्सा लें फिर दोनों को मिलाकर औटावे और उसके बराबर कंद डालकर कवाम करलें ॥

शर्बत दीनार ।

रेवन्द १८ माशे, कुसुम के बीज १७॥ माशे, गुलाब के फूल ५२॥ माशे, कासनी के बीज ६० माशे, कासनी की जड़ १०५ माशे रेवन्द को कुचल के पोटली में बांधकर और औषधों के साथ भिगादे और हलकी आंच पर औटावे फिर छान कर कद सफेद ४०४ माशे डाल कर कवाम करले और ३५ माशे, से ४५, और ५२॥ माशे तक पीवे ॥

शर्बत हब्बुलआस ।

हब्बुलआस ४०५ माशे कुचल कर और हरा माजू, उसके बराबर कुचल कर मिलाकर सात दिन तक पानी में भिगोवें, औटा कर बराबर कंद डाल कर कवाम करलें ।

शियाफदीनार ।

मर्दसंग धोया हुआ, धोया हुआ शादना, एलुआ, शियाफ, मामीसा बराबर लेकर पीसकर बनावें ॥

शियाफ़ अहमर ।

धुला हुआ शादना २१ माशे बबूलका गोंद१७॥ माशे धोया हुआ सीसा, अनार, जला हुआ जाम, प्रत्येक ७ माशे अफीम, एलुआ, प्रत्येक १॥ माशे केसर, ग़ुरमक्की प्रत्येक १॥ सबको पीसकर बनावें ॥

शियाफ रुधिर का रोकने वाला ।

सुरमा, गुलनार, फिटकरी, सनकारसनाई, मर्दसंग, माजू अकाकिया, बराबर लेकर कूट छान पानी में गूंधकर बत्ती बनावें ।

जिमाद शोसा ।

बनफसे और बाबूने के फूल, सोये, कर्रा और इसबे के बीज, जौ का आटा सबको पीसकर थोड़े से पानी में पका कर तिली का तेल मिलाकर गुन गुना पीड़ा की जगह लगावें ॥

फरजजाहाविसा ।

कुन्दुर, इसकुल, दम्मुलअखवेन, गुरमक्की, फिटकिरी, अनार के छिलके, सरसों के फूल कूट छान कर मारतंग या आरा के पानी में घोल कर कपड़ा उसमें लपेट के रक्खें ।

फलदिफियून ।

बिना बुझा चूना सोंठ मर, पीली और लाल हरताल कली, अकाकिया प्रत्येक ६ माशे, सब को पीसकर अंगूर के सिरके में गूंध के कुर्स बनावें ॥

माजूनफलाफली ।

काली और सफेद मिरचें, दार फिलफिल प्रत्येक ६ माशे

जब चौथाई जल जावे तो दुगनी शक्कर डालकर कवाम करलें शर्वत केवड़े की भी यही रीति है उसकी बालको औटाना चाहिये

शर्वत फिंजनोश ।

कच्चे अंगूर का रस ४३० माशे सिमाकमाजू, गुलनार, गुलाब के फूल, कुन्दरशाखरा, मोथ प्रत्येक ३५ माशे केसर फिटकरी प्रत्येक ३॥ माशे लोहे की मैल १२५ माशे दवाओं को कूट कर अंगूर के रस में औटावें जब-तिहाई रहजावे तो साफ करके रखछोड़ें ।

शियाफ कुन्दर ।

कुन्दुर २५ माशे वशूक इजरूत प्रत्येक १७॥ माशे केसर ७ माशे मेथी के लुआब में शियाफ बनावें । और जब आवश्यक हो तब उसे टपकावें और जो घाव और फुंसियों के पकाना हो तो पट्टी भी बांधें ।

शियाफ अवियजकुन्दुरी ।

कतीरा बबूल का गोंद प्रत्येक १०॥ माशे निशास्ता ३॥ माशे कुन्दर ८ जौ पीस छानकर ईसबगोल के लुआब में बनावें

शियाफ अहमरलीन ।

धुला हुआ शादना ३५ माशे जलाहुआ तांबा २८ माशे बबूल का गोंद कतीरा मुरमकी प्रत्येक ७ माशे मुरदा कहरुबा मोती संगपाल प्रत्येक १४ माशे दम्मुल अखवैन केसर प्रत्येक ३॥ माशे उसी प्रकार से बनावें ।

शियाफ जंगार ।

जंगार बबूल का गोंद सफेदा प्रत्येक ७ माशे पीसकर बनावें ।

शियाफ गर्व ।

एलुआ कुन्दुर इजरूत दम्मुल अखवैन गुलनार मुर प्रत्येक १ तोला जंगार ३ माशे पीस कर बनावें

तो पुराने सिरके में डालकर और औषधों को कूटछान कर मिलादे और ४॥ माशे सिकनबीन के साथ खावें ॥

कुर्सकाकिंच ।

बालछड़, जुन्दवेदस्तर, तज, तीनुकपटीरा, बैरून के छिलके सुरमकी, प्रत्येक १४ माशे अफीम, केसर, मीठा कूठ, जला हुआ अबरक, प्रत्येक १७॥ माशे, सफेद खशखाश रूकू अनीसून, सीसालियून, खुरासानी अजवायन, मुलामीआ करफस के बीज प्रत्येक २१ माशे, गोंदों के पानी में घोलकर और सब औषधों को पीस छानकर शहद में गूंध कर कुर्स बनाकर छाया में सुखावे ॥

कुर्स सुम्बुल ।

बालछड़, फिकाह, सरकंडे की जड़, तज, जरावन्द, तवील दारचीनी, चिरायता प्रत्येक १०॥ माशे, केशर, अनीसून, सुरमकी, कटुवाकुन्द, काली मिरचें प्रत्येक ३॥ माशे गूगल, मस्तगी प्रत्येक ७ माशे, धमाक १॥। माशे, पहिले गूगल को गुलाब में डालें फिर और औषधों को कूट छानकर, मिलालें और सात माशे खावें ॥

कुर्स पुलाऊस ।

करफस के बीज, अनीसून प्रत्येक, ५२॥ माशे, इफसंतीन ७ माशे, तज ७ माशे, सुरमकी, काली मिरचें जुन्द, अफीम प्रत्येक ८॥। माशे सबको कूट छानकर पानी में कुर्स बनावें और ८ माशे खावें ।

कुर्स कुहल ।

सुरमा, धोया हुआ शादना, दम्मुल माशे गुलनार, माजू प्रत्येक ७ माशे,

ऊदविशसान ३ तोले, बालछड़, इस्पामा प्रत्येक १४ मा
सोंठ करफस के बीज, सीसालियूसरूमी, तज, आसारो
रासन प्रत्येक ३॥ माशे सबको कूट छान कर तिगुने शहद
माजून बनालें और ३॥ माशे गरम पानी के साथ खावें ।

फिलोनिया ।

शकरकरा, फरफियून, बालछड़ प्रत्येक ३॥ माशे के
१७॥ माशे, अफीम ३५ माशे, सफेद मिरचें, सफेद चन
वजन प्रत्येक ७० माशे, कूट छान के शहद में माजून बन
जवान को मायफल की बराबर, और बुड्ढे को बाकले की ब
बर, और लड़कों को चने की बराबर दें ॥

कुर्स अम्बरबारीस ।

जरिश्क, छाल घुली हुई रेवन्दचीनी, गुलाब के
उसारा तरखशिखूक, कासनी और कुशूम के बीज, तुरम
इन सब को बराबर लेकर के छान कर कुर्स बनालें ॥

कुर्स माजरीयून ।

माजरीयून मुदब्बर, पीली हरड़ के छिलके, जो का
बराबर लेकर शकर मिलाकर कुर्स बनालें और ४॥
माशे गुल के साथ खावें ॥

कुर्स अनीसून ।

इफसतीन रूमी, आसारोन, करफस के बीज
अनीसून कूट छान कर पानी में गूंध कर बनावें और
जबीन के साथ दें ॥

कुर्स किब्र ।

जराबंद तवील ७ माशे, किब्र के जड़ की छाल, उशक
१४ माशे, संभालू के बीज, गोल मिरचें प्रत्ये २१ माशे

माक दमुल का गोंद प्रत्येक ७ माशे कपूर १॥। माशे कूट
नकर कुलफे और काहू के पानी में बनावें ॥

कुर्स वौलुद्दम ।

- ककड़ी के बीज १४ माशे निशास्ता, कतीरा, गुलनार,
क, दम्मुल अखवैन, बबूल का गोंद प्रत्येक ३॥ माशे कूटछान
र कुलफे या बारतंग के बीज में बनावें ॥

कुर्स नफसुद्दम ।

- गिले अर्मनी, कहरुवा, बबूल का गोंद दम्मुल अखवैन,
सलोचन निशास्ता, कतीरा, अकाकिया गुलनार बरगद की
को बराबर लेकर बारतंग और कुलफे के पानी में गूंधकर
बनावें ।

कुर्स तबाशीर मुलय्यन ।

निशास्ता बबूल का गोंद, सफेद खशखाश कतीरा प्रत्येक
३॥ माशे खीरे ककड़ी कद्दू के बीज प्रत्येक ६ माशे तुरंजबीन
१॥ माशा सफेद चन्दन, १४ माशे कूट छानकर ईसबगोल
के लुआब में बनावें और ४॥ माशे खावें ॥

कुर्स तबीशीरकाबिज ।

बंसलोचन १४ माशे कुलफे के बीज भुने हुए ७ माशे
गुलाब के फूल २४॥ माशे सफेद चंदन, बबूल का गोंद कतीरा
निशास्ता, शाहबलूत, चूके के बीज सब भुने हुये मुलहठी का
सत अनिश्क प्रत्येक ७ माशे गुलनार अकाकिया ३॥ माशे कूट
छान कर सेब या नरिश्क के पानी बनावें और ४॥ माशे खावें।

कुर्स काफूर ।

कपूर २ माशे, गुलाब के फूल तुरंजबीन, प्रत्येक ३५ माशे
खीरे ककड़ी के बीज बंशलोचन, मुलहठी प्रत्येक १७ माशे
के बीज, २४ माशे, कुलफे के बीज २१ माशे, कासनी के

हुआ अक़ाक़िया मत्येक ३॥ माशे, शादन, केसर, मत्येक १॥ माशे हसराम ५।, माशे, कूटछानकर हरे बारतंग के पानी में गूंध कर बनावें और ३॥ माशे, बारतंग और कुलफ़े के पानी के साथ खावें।

कुर्स गुल।

बंसलोचन, इफ़संतीन, बालछड़, मत्येक ७ माशे तुरम बीज, १०॥ माशे, गुलाब के फूल, मुलैठी, मत्येक १० माशे कूट छान कर गुलाब में बनावें, और ३ माशे या उससे अधिक खावें।

कुर्स कहरुवा।

कहरुआ, गुलुर, माती जली हुई कौड़ी पहाड़ी बकरी के सींग जला हुआ, धोया हुआ शादना, मत्येक १०। माशे गुलाब के फूल कुलफे के बीज, धनियाँ, सिमाक़ भुना हुआ निशास्ता और बबूल का गोंद, गुलनार मत्येक १७॥ माशे बंसलोचन, अक़ाक़िया, बरगद की डाढ़ो का उसारा मत्येक ७ माशे कूट छानकर बारतंग के पानी में गूंध कर गोलियाँ बनावें। और ७ माशे अफीम ३॥ माशे कूट छानकर बनावें और खावें॥

कुर्स काकन्नज।

ककड़ी के बीज ३५ माशे, काकनाज १०॥ माशे, कर्फ़स के बीज, मंग गिले अर्मनी, बबूल का गोंद दम्मुल अख़वैन, दम रुल चलन मत्येक ७ माशे खावें॥

कुर्स जियावीतुस।

बंसलोचन, मुलहटी का सत, मत्येक १७॥ माशे, कुलफ़े और काहू के बीज, गुलाबके फूल, गिले अर्मनी मत्येक ५२॥ माशे धनियाँ, मूर्द के बीज १॥ माशे, सफेद चन्दन, गुलनार,

७ माशे कद्दू के बीज १४ माशे मुलहटी का सत ११ माशे कूटछान के इसबगोल के लुआब में बनावें और ७ माशे तक खावें ॥

कमूनी ।

जीरा, मुरब्बर, सुदाब, सोंठ, काली मिरचें, नमक अर्मनी को शहद में मिला के माजून बनालें ॥

कोहलुल जवाहिर ।

इसकी दो रीति है एक यह कि लालफिरोजा मारक शीशा, सफेदा, निशास्ता, प्रत्येक ७ माशे धोया हुआ शादन रसोद शियाफ मामीसा कंकड जले हुए इकलीमियां, प्रत्येक ३ माशे तूतिया बसलोचन दहना फरग, प्रत्येक ४॥ माशे अ रूद १४ माशे, सुरमा ७० माशे, कपूर, सोंठ प्रत्येक १६ अ १७॥ माशे कच्चे अगर के रसमें घोटे ॥,

दूसरी रीति यह है, सुरमा २४॥ माशे, मार्मा शीशी १७ माशे, इकलीमिया नहरी धुली हुई, बुशद मोती प्रत्येक १० माशे, शादना ७ माशे, केसर १॥। माशे सुरमा बनावें ।

कुहलअजीजी ।

जला हुआ सुरमा १७॥ माशे सोने और चांदी की इ क्लीमियां, शादना, तूतिया, जला हुआ तांबा प्रत्येक ७ मा पीली हरड़ के छिलके, तेजपात, काली मिरचें दारफिलफि नौशादर, एलुआ, रसोत केशर केकड़ी प्रत्येक ३॥ माशे स १॥। माशे, कपूर, ८ जौ मुश्क तीन जौ, लौंग बत्तीस जौ पं कर सुरमा बनावें ॥

कलकलानजगरम ।

रेवन्द, वसारागाफिस, अनीसून, बालछड़, प्रत्येक सात माशे

सर लेकर शहद में माजून बनावें और १०॥ माशे ताजे के साथ खावें।

बिच्छू की माजून।

जला हुआ बिच्छू १२॥ माशे, जिन्तयान ५। माशे सोंठ ॥ माशे, दारफिलफिल, काली मिर्च प्रत्येक ७ माशे काक ३ १६। माशे, जुन्दबेदस्तर २४ माशे, कूटछानकर शहद में मिलाकर बनावें और १६ जौ खावें और लड़कों को ८ जौ दें॥

बिच्छू के जलाने की रीति।

मोटा शीशा कपड़ौटी करके, बिच्छू को उसमें छोड़दें, यह गरम तनूर में एकरात बसेरक्खें, और सवेरे निकाललें।

माजून हजरुलयहूद।

कद्दू खीरे ककड़ी और खरबूजे के बीजों की मिंगी प्रत्येक ७॥ माशे हजरुलयहूद असील १७५ माशे कूट छानकर शहद में मिलावें और ७ माशे से १०॥ माशे तक खावें॥

माजून कमीला।

कमीला काबली हरड़-बहेड़ा, आमला तुरबुद, सोंठ बरा-बर लेकर कूट छानकर तिगुने शहद में या कन्द के कवाम में मिलाकर माजून बनावें और सात माशे खावें।

मतबूख मुलय्यन।

उन्नाव लहसोड़े नीलोफर खैरू के बीज मनकया आलूबुखारे कूट अमलतास का गीरा तुरञ्जबीन रोगन बादाम पानी में औटाकर मल के छान के पिलावें।

मुफर्रह सगीर।

गावजुबां मूंगे की जड़ पत्तियां मोती सफेद बहमन तुरंज रेशम सफेद जला हुआ कुलफ के बीज १

छिले हुए आमले प्रत्येक ३५ माशे तुरन्जुद, सफेद बिसफाय इफतीमून वस्तखुद्दूस प्रत्येक १७॥ माशे कूट छानकर दुगने श के कवाम में माजून बनावें।

लोहे के मैल का माजून।

काली हरड़, आमला, काली मिरचें, सोंठ, दारफिलफिल, मोथा शैतरज बालछड़ प्रत्येक ३५ माशे गदने और सोये के बीज प्रत्येक १४ माशे लोहे का मैल धुला हुआ २५० माशे कूट छानकर रोगन बादाम मिलाकर शहद में मिलावें फिर मुश्क ७ माशे मिलाकर चीनी के बर्तन में रक्खें।

लोहे के मैल की धोने की रीति।

मैल को १४ दिन अंगूर के सिरके में भिगोवें और मिट्टी उसमें न गिरने दें फिर उसे सुखाकर काम में लावें।

माजून लबूब।

बादाम अखरोट हब्बफरतु म हब्बुलखतम हब्बसुनोबर हब्बे जलम फिन्दक पिस्ता नारियल ताजा हब्बफिलफिल इन सब की गिरी तशखाश सफेद दोनों तोदरी और बहमनें छिले हुए तिल खरबूजे भिरजीर पियाज शलगम रतबा हिलयून इन सब के बीज और सोंठ दारफिलफिल फर्बाया सग दारचीनी शका कुल कुलीजन सबको बराबर लेकर कूट छानकर तिगुने शहद में माजून बनावें।

माजून बुजूर।

गाजर शलगम पियाज मूली हिलयून रतबा जिरजीर इन सब के बीज हब्ब सुनोबर हब्बफिलफिल लाललोदरी हब्ब बलम सीवीतोदरी के बीज लिसानुल असाफीर शकाकुल बहमन सुर्खदान मीठाकूट सोंठ दारफिलफिल लौंग हिरफ सब

बराबर लेकर शहद में माजून बनावें और १०॥ माशे ताजे दूध के साथ खावें ।

बिच्छू की माजून ।

घला हुआ बिच्छू १२॥ माशे, जिन्तयान ४॥ माशे सोंठ ३॥ माशे, दारफिलफिल, काली मिर्च प्रत्येक ७ माशे काफ नज १६। माशे, जुन्दबेदस्तर १४ माशे, कुन्दलानगर शहद में मिलाकर बनावें और १६ माशे खावें और सदकों से ८ जोड़ें ॥

बिच्छू के जलाने की रीति ।

मोटा शीशा कपड़ौटी करके, बिच्छू को उसमें छोड़दें, पद करके गरम तनूर में एकरात बसेरक्खें, और सवेरे निकाललें ।

माजून हुजरुलयहूद ।

फद्द खीरे ककड़ी और खरपूजे के बीजों की गिरी प्रत्येक १७॥ माशे हजरुल यहूद असील १७० माशे कूट छानकर शहद में मिलावें और ७ माशे से १०॥ माशे सेवन करावें ॥

माजुन कमीला ।

कमीला कावली हरड़-बहेड़ा, आवला छुपछुद, सोंठ बराबर लेकर कूट छानकर तिगुने शहद में या कंद के कवाब में मिलाकर माजून बनावें और सात माशे खावें ।

मतबूख मुलय्यन ।

उन्नाव छहसोठे नीलोफर खैरू के बीज बनफशा पायूने के फूल अमलतास का गूदा तुरंजवीन रोगन बादाम पानी में औटाकर मल के छान के मिलावें ।

मुफर्रह सगीर ।

गावजुबां मुर्गे की सद पनियां मोती सफेद बहमन सफेद छिला के कतरवा रेशम सफेद ला हुआ हलके के बी

तोले कपूर ६ माशे कूट छानकर हरड़ के मुरब्बे के शीरे में माजून बनावें और ५ माशे खावें ।

मुफ़रह दिलकुशा ।

मूंगे की जड़ कहरुवा नरकचूर दरोनज प्रत्येक ३॥ माशे ७॥ माशे कच्चा ऊद काबली हरड़ और पिस्ते और तुरंज के छिलके कच्चा रेशम कतरा हुआ मोती प्रत्येक ७ माशे धनियां बसलोचन प्रत्येक १०॥ माशे दोनों बहमनें प्रत्येक १७॥ माशे माशे गावजुबां शाहतरा बालंगू सबको कूटछान के अनार चूक और जरिश्क का पानी प्रत्येक ३५ माशे लेकर सफेद कन्द शर्बत बनफशा प्रत्येक ४०५ माशे मिलाकर कवाम बनावें फिर औषधें डालकर माजून बनावें ।

मुलय्यन मुबारिक ।

अमलतास इमली कासनी के पानी या जौके पानी में घोलकर पिलावें और थोड़ा सा जो रोगन बादाम या रोगन गुल मिलावें तो अविलम्बदायक होगा ।

मरहम बासलकून ।

राल्तीनज जिफ्त चर्बी बराबर लेकर देवक काग़ज मिला कर मरहम बनावे ।

मरहमसुल ।

जावशीर अंगार गन्दबिरोजा मुरमकी मुरसक प्रत्येक माशे कुन्दुर जरावन्दतवील प्रत्येक १०॥ माशे मुर्दासंग १५। माशे वरक २४॥ माशे गूगल सफेद मोम राल्तीनज प्रत्येक १ माशे गूगल को सिरके में घोलकर और बाकी औषधों को के तेलमें ६०८ माशेको पिघलाकर सबको मिलाकर मरहमब

चूने का मरहम ।

चूने को पानी में घोले फिर निथार कर दूसरा और पा

डालकर इसी प्रकार ७ बार करें फिर धुला कर रोगनगुल या तिल्ली के तेल में मिलाकर मुलतानी मिट्टी डालकर मरहमबनावें

मरहम काफूर।

सफेदे के मरहम में कपूर मिला देने से बन जाता है।

सिरके का मरहम।

मुर्दासंग १॥ तोले पीस के ३ तोले अंगूर के सिरके और दो तोले जैत के पुराने तेल में डालके हलकी आग पर पकावे और घोटते रहें कि मुर्दासंग जमने न पावे जब वह जलके काला हो जावे और मरहम क्वाम ठीक हो तो उसे निकाले।

मरहम सफेदा।

रोगनगुल ४ तोले मोम एक तोले पिघलाके थोड़ासासफेदा मिलावें इतना कि रोगन और मोम को उठाले फिर अंडे की सफेदी मिलावें और कभी थोड़ा सा कपूर भी मिला लेते हैं।

दूसरी रीति इसकी यह है कि सफेदा और सफेद मोम रोगनगुल मिलाके मरहम बनावें।

मसूर का मरहम।

मसूर बाबूने के फूल नाखूना खेरू सब को पानी में औटावें जब गाढ़ा हो जावे तो अंडे की जरदी और मुर्गी की चर्बी मिलाके मरहम बनावें।

मुरदासंग का मरहम।

मुरदासंग सफेदा केसर फिटकरी पीसकर रोगन बादाम में मोम पिघलाकर वह औषधें मिलावे।

काला मरहम।

जैत तेल १२१५ माशे लें उसमें मुरदासंग ३ तोले पीस कर मिलावें और औटावें कि काला हो जावे फिर कदर

दम्मुल अखवैन, इंगरूत, प्रत्येक ७ माशे पीसकर पिलावै ।

मरहम जंगार ।

इगरूत वयाक प्रत्येक ६ माशे जंगार तोलाभर सिरके में पीस कर शहद मिलावें ।

नौशदारू ।

गुलाब के फूल २१ माशे सौंदकफी १७॥ माशे लौंग मस्तगी तगर बालछड़ प्रत्येक १०॥ माशे मरक्क बसवासा छोटी और बड़ी इलायची के दाने, जायफल, तज, केसर, प्रत्येक ७ माशे कूट छानकर अलग रक्खें और ताजे आंवले दूध में तीन रात दिन भिगोवें और हर रोज दूध बदल डाला करे फिर पानी से धोकर ताजे पानी में औटावें जब भली भांति गल जावें तो कपड़े में बांध कर सारा पानी निचोड़ डालें और भली भांति पीसकर उनमें से एक सेरभर लें फिर दो सेरशहद या कन्द के कवाम में मिलाकर पकावें फिर वह औषधें पिसी छनी हुई उसमें मिलाकर चीनी या चांदी के बरतन में रक्खें और ४० दिन तक रख छोड़े फिर ३॥ माशे से १०॥ माशे तक खावें और इसका दो वर्ष तक रहता है । जब तक नहीं बिगड़ता है ।

नाकूहामिज ।

बनफशे के फूल १७॥ माशे इमली छिली हुई ३५ माशे नीलोफर के फूल तीन आलू बड़े सात पीले आलू और उन्नाव प्रत्येक १५ माशे पानी में भिगोकर छानकर पिलावें ।

बनी हुई औषधें समाप्त ।

—※※—

औषधियों की कैफियत ।

अब हम तुम्हें कैफियत उन औषधियों की बतलाते हैं जो इस पुस्तक में बहुत काम आई हैं परन्तु तुम्हें इतना समझ लेना चाहियेकि औषधकी कैफियत यही औषध की गरमी ठंढ और तरी और खुश्की है हकीमों ने इन चारों के चार दरजे ठहराये हैं ।

जो पीछे पीने से कुछ न मालूम हो परन्तु बार २ अधिक खाने से गरमी ठंढ आदि मालूम हो तो यह पहिला दर्जा है इसकी जगह हमने १ का अंक लिखा है । और जो असर मालूम हो परन्तु मनुष्य के किसी काम में हानि न करें वह दूसरा दर्जा है उसकी जगह २ का अंक लिखा है और जो मनु य के कामों में हानि हो परन्तु मार न डाले वह तीसरा दर्जा इसकी जगह ३ का अंक लिखा है । जो कामों में हानि हो और मार डालें तो चौथा दर्जा है इसकी जगह ४ का अंक लिखा है ।

और हर दरजे में तीन २ रुतबे हैं आदि मध्यम अन्त न्तु हर औषध में इन रुतबा को जानना कठिन है और जो रमें बाहर लगाई जाती हैं उनमें तो अत्यन्त ही कठिन है। हर औषधों की गरमी पहिले दर्जे से नहीं बढ़ती क्योंकि गरमी अधिक हो जावेगी तो तरी जाती रहेगी और यह ध्यान रखना चाहिये कि दरजे और रुतबे जो ऊपर लिखे हैं उनमें हकीम लोग आपस में कुछ अन्तर भी रखते हैं । हिन्दी वैद्यों ने औषधों के दोही दर्जे ठहराये हैं पहिला जिसमें पहिला और दूसरा दर्जा आगया और दूसरा जिसमें तीसरा और चौथा दर्जा आ जाता है । इसने आगे गरम की जगह [ग] और ठंढे की ज

और तर की जगह (त) और खुश्क की जगह (ख) लिखा है।

पहिले दरजे की गरम औषधें।

चना छादन रास्न फौड़ी जंगली शाहतरा एलुआ इफसतीन बाबूना, तेंदुआ, कतां के बीज आदि ॥

दूसरे दरजे की गरम औषधें।

करफस, कुंदर, मस्तगी, गर्न की जड़, सफेद और काली माजरीयून की जड़ बादरूज जरावंद तबील और मुदहरज शहद चिरायता केसर अनसरत सोया बिरजासफ नमक फरामियून गधक सतारस शहद के छत्ते का मैल इसका कस बिलसान सटगन के बीज मेथी कुसाचल हिमार का तसारा घुन के पेड की छाल आदि।

तीसरे दरजे की गरम औषधें।

कमाजरीयूस दौनामरुवा, नाना जली हुई फिटकरी पुरानी शराब गारइस्तन्द मुली हम्मामा अनीसून इफ्तीमून जाव शोर हाशा तज शहिअरमनी पहाडी करफस, अजवायन बच, खरनूबनिबती संभालू के पत्ते और बीज तगर पहाडी पोदीना सुदाब सिकंजबीन दूध जले हुए बाल फोदनजन न हरी करोया फाशिम अखरोट आदि।

चौथे दरजे की गरम औषधें।

लहसन पियाज जुफ्दुलबहर जंगली सुदाब गदना दूध वाले पेडो के कीड़े फरफियून कूठ कुतगन आदि।

पहिले दरजे की ठंडी औषधें।

ताजे छुआरे बिसफायज बाजरा कागनी खशखाश बनफशे पत्ते बिना धुला अकाकिया मुलूर नेके पत्ते नीलपनीर

कोष, सरमक, अमरूद, नाशपाती, निशास्ता, हिन्दबा, मामीसा, तांबे का बुरादा शिंगरफ का तेल, आदि ॥

दूसरे दर्जे की ठंढी औषधें ।

तरबूज, ईसबगोल, कच्चा जैतून, दरामाज, कद्दू, चारसग, मूंग, ककड़ी, हिलयून के पत्ते, शफ़तालू रांगा, सिमाक, वत रंज के छिलके आदि ॥

तीसरे दर्जे की ठंढी औषधें ।

कुलफा, कोनियां, पूका, वतकुम, बड़ी और छोटी सदा बहार, काली खशखाश, लालसाग, फेनछतर, गुलनार, आदि ॥

चौथे दर्जे की ठंढी औषधें ।

अफीम, शुकरान, धतूरा, काली माजरीयून, और सब औषधें जो सुन करने वाली हैं ॥

पहिले दर्जे की खुश्क औषधें ।

मुलहटी, मीठा बादाम, इसराज विसफायज, खरबूजे के बीजों के छिलके, कसर, मोथा, कुन्दर, अमरूद, नाशपाती, गावजु नीलकी जड़ बाबूना, खटगम के बीज, हब्बुलगार, छोटी और बड़ी सदाबहार, अखरोट का तेल, सोंफ, साबर जौके सत्तू आदि ।

दूसरे दर्जे की खुश्क औषधें ।

मूली, जुन्दबेदस्तर, युन, बालछड़ माहदाना, मस्तगी शहद, सुरमकी, जंगली बैंगन, चाय, नीलोफर की जड़ बिलसोन, जरावद, जिप्त शीराम शादानज, चिरायता, करसना करंब मक्खी का माला, आबशीर का दूध आदि ॥

तीसरे दर्जे की खुश्क औषधें ।

लहसन, अनीसून, तगर, गुलनार, हींग,
मी

जूफा, तज, मरू, दौनामरुवा, मामन, जायफल, सातर, मुलुत अक्राकिया, इफसतीन, अभल, माजरीयून की जड़, बिलसाम नमक हाशा, चूका, धतरूम, दारशीशआन, नतरूनर्धरी मूली का तेल, जला हुआ केंकड़ा, सुरमा, बागी सुदाब, जली हुई फिटकरी, कलौंजी, जले हुए बाछ, एलुआ, सिमाक़, फादानिया कैसुर, करोया, बच, मुश्क तरामशी, अजवायन, आदि।

चौथे दर्जे की खुश्क औषधें।

राई सुदाबवर्री, गन्दना, अफरीबियून कुतरान अफीम, धतूरे के फल आदि।

पहिले दरजे की तर औषधें।

रोगन गुल, कोहू पालकगाउजवां, खुसपतुस्साखिय शफतालू बनफशे के पत्ते चिरौंजी इजीर, बादम, तोदरी, सौसन का उसारा॥

दूसरे दरजे की तर औषधें।

कुलफा, लोनियां, तरबूज, कद्दू, मिशमिश, असपगोल, पतवल॥

अ, ई, उ,

असपगोल—ठ, ३ त २, पित्तों को ठीक करता है॥
अनीशून—ग, २ ख ३ कफ को ठीक करता है॥
मुलहटी—ग, २ ख १ कफ को ठीक करता है॥
इजीर—ग, १ त, २ सौदा को ठीक करता है॥
इस्पंज—ग, १ ख, २
इलरुद—ग २ घात, ख, २ आदि में॥
अक्राकिया—ठ २ ख २ याठ १ ख २ रुधिर के दस्तों को बन्द करता है।
वस्तखुद्दस—ग १, ख १, सौदा का मुस्हाब है॥

इफसतीन--ग १, ख ३, पित्तों का जुल्लाब है ॥

इब्लाब--ठ १, त, २ पित्तों का जुल्लाब है ॥

इफतीमून-- ग ३ ख ३ सौदा का जुल्लाब है ॥

श्रामला--ठ २, त ३, आदि में सौदा का जुल्लाब है ॥

इस्फानाख--अर्थात् पालक ठ १, त, १, आदि में पसरी में पित्तों को निकालता है।

अमरूत--ग २, ख २,

अनार मीठा--ठ, त १, दिलको पुष्ट और खुश करता है

अबरेशम--अर्थात् कच्चारेशम ग १, ख १, दिलको पुष्ट और प्रसन्न करता है ॥

पशाना अर्थात् छरीला--ग, ठ जिगर को पुष्ट करता है॥

अस्फाफ्सीय--ग २ ख २, जिगर को पुष्ट करता है ॥

पशनान--ग २, ख २ या ग २ ख ३

इस्कूलूकन्दरीयून-ग १, ख २,

चरज अर्थात् चावल-इसको कुछ लोग पहिले दर्जे का गरम बतलाते हैं और कुछ लोग ठंडा कहते हैं कुछ मोतदिल जानते हैं और दूसरे दर्जे का खुश्क है, और कुछ लोग यह कहते हैं कि इसका असर मिला हुआ है और यही बात ठीक मालूम होती है।

अम्बर-ग २, ख १,

ऊद अर्थात् अगर-ग २ अंत में ख ३,

पन्नाब-गरमी और सर्दी में मोतदिल है और तरी भी इसमें पाई जाती है ॥

इनबुस्सालिब अर्थात् मकोह-इसके पानी में गरमी है इसको लोग गरम और ठंडी बताते हैं ॥

असल अर्थात् शहद-ग २, ख १,

इन्फलयतम-गोंद है मतमके पेड़का, ग २, ख २

बीहाना—ठ २, त २, पित्तों को ठीक करता है ॥

बादियान—अर्थात् सौंफ ग २ आदि ख ३ अन्त में कफको ठीक करता है ॥

बिरजास्फ—ग ३ ख ३ आदि में कफ को ठीक करता है ॥

बाबूना—ग ख

बेद के पत्ते—ठ, त.

बेद के फूल—ठ, २ त १

भंग—ग ३ ख ३

बादरंज बोया—अर्थात् बिल्ली लोटन और फारसी में इसको बालगू कहते हैं ग २ ख २ मध्यम में ।

बूरा अर्मनी—अर्थात् खारी नौन ग ३ ख ३

बिहार बिही—अर्थात् बिही के ताजे फूल मीठा ठंढा और तर होता है और मोतदिल भी कहते हैं दिल और भेजे और मेदे को पुष्ट करता है और भेजे में गरमी नहीं चढ़ने देता और गरम खफकान को दूर करता है ।

बिहारसेब—इसका गुलकन्द दिल और भेजे की कमजोरी को फायदायक है ॥

बिहार अपरूद—दिल को पुष्ट और प्रसन्न करता है ।

बिलादुर—अर्थात् भिलावा ग ४ ख ४ भेजे को पुष्ट करता है ।

बुंदुक—ग १ ख १ भेजे को पुष्ट करता है ।

बुसुद—ठ १ ख १ दिल को पुष्ट और प्रसन्न करता है ।

बहमन—सफेद—ग २ ख २

बहमनलाल—ग ३ दिल को पुष्ट और प्रसन्न करता है ।

बादरूज—ग २ ख १ दिल को पुष्ट और प्रसन्न करता है ।

बायबिडंग—ग. २ ख २ अन्त में

बारजद—अर्थात् गोंद की बीठ ग, २ ख २

प,

परसियावशां—अर्थात् हंसराज, मोवदिल ग, ख,

त,

कफक्षयूस—ग, १ ख २ सड़े हुए कफ को रगों से निकालता
है तुख्म बील को कहते हैं, इसकी जगह तु लिखा है।
तरबूजा—ग, १ त, २ सौदा को ठीक करता है।
मरू—ग, २ त २, सौदा को ठीक करता है।
सापा—ग ३ अन्त ख २ आदि पकवों में कफ को निकालता है
गार्मा—ग, २ त, २
मूली—ग ३ ख, २ वकदी में कफ को निकालता है॥
द—ग, ३ आदि ख, ३ अत में कफ का जुलाब है।
रहिन्दी—अर्थात् इमली, त १ ख २ पित्तों का जुलाब है।
गीन—ग, १ त, १
लेख—अर्थात् पान ग, २ ख २
म—त १ आदि ग १ अत

ज, च

बेदस्तर—अर्थात् दरयाई कुत्ते का फोता ग, ३ अन्त ख, २
—त १ ख २ आदि।
ार—अर्थात् गुलनार, ठ २, ख २ आदि में।
ार—अर्थात् मिसरिसी, ग २ ख ३ आदि में दिल को
पुष्ट और प्रसन्न करती है।
ख—ग २ अंत; ख ३ जिगर को पुष्ट करता है।
ान—अर्थात् केशर, ग १, ख १।
रका—ग २, ख २ अंत में।
ख—अर्थात् सोंठ, ग ३ ख ३।

नरम्बाद–अर्थात् नरकपूर ग २ ख २ अत दिलको पुष्ट प्रसन्न करता है।

नाक–ग ३ ख ३।

निफत—ग, ख

नरीनज–अर्थात् हरताल पीली ग ४, ख ३, और लाल ग४ख४

निनार—ठ, त

ह

हुमम–अर्थात् रसौत, गरमी और ठंड में मोतदिल है ख २।

हिलतीत–अर्थात् हींग म ४ आदि ख २ अत।

हब्बुल मुलूक–दूध उसका ग ३ ख ३ और पत्ते और दाने उसके ग ३, ख ३, अत में।

हब्बुलनील–अर्थात् कालादाना ग ३ ख ३ कफ का जुल्लाब है।

हुरमुल–अर्थात् इस्फन्द ग ३ ख ३ कफ का जुल्लाब है।

हजरलाजवर्द—ग १ ख २ सौदा का जुल्लाब है।

हजर अरमनी–ग २ ख २ सौदा का जुल्लाब है।

हम्मामा—ग ३ ख ३ जिगर को पुष्ट करता है।

हब्बबिलसान–ग २, ख २ अन्त में जिगर को पुष्ट करता है।

हमहमुपहुद—ग १ ख २

हलेलाजर्द—ठ १ अंत, ख २, पित्तों का जुल्लाब है।

हलैला काबिली–मोतदिल ठंड में ख १ सौदा का जुल्लाब है।

हलैला काली–ठ १ मध्यम, ख १ सौदा का जुल्लाब है हलैला हरड को कहते हैं।

ख

खुरफा–अर्थात् कुलफा, ठ ३, त २ पित्तों को ठीक करता है।

खयारैन–अर्थात् खीरे ककड़ी के बीज, ठ २ त, २ पित्तों को ठीक करता है।

गारीकून—अर्थात् कुटकी, ग, ३, ख ३
खिश्त-अर्थात् ईंट, ग २, ख ४
ख्यारशम्बर—अर्थात्-अमलतास, ग १ त १।
खिसकदाना—अर्थात् फल, ग, २ ख १ अब में कफका मुख्यारहै
सेके त, ठ
खसक—अर्थात् गोखरू, ग, ख, या, ठ, ख, या मौतदिल।
खुरफ़ा—ग, त,

द

दम्मुल अखवेन—ठ ३, ख ३,
दमागआनवरों का ठ, त, भेजे को पुष्ट करता है॥
दुराज—अर्थात् तीतर ग, ख, १, भेजे को पुष्ट करता है।
दरोनज—ग ३, ख ३, दिलको पुष्ट और प्रसन्न करती है।

र

रैहां—[तुलसी या नागबो] ग १, ख १,
रेत—ख ३,
रोगन केसर—ग २, ख १, भेजे को पुष्ट करता है।
रैवास—ठ २, ख २, दिल को पुष्ट और प्रसन्न करता है।
रोगनज़र्द—[घी] ग १, त १, अब में पुराने में खुश्की आजाती

स

सम्बुलतीफ [बालछड] ग २, ख. २, अ सकफको ठीक करती है
सिपिस्तां—[लिहसौढा] मौतदिल गरमी और ठंड में, त १, चौड़ा
 को ठीक करता है।
सबूस—(भुसी) ग १, ख १,
सिरका ठ २ ख २,
सुरंजान—ग ३, ख २।

सोद—(मोथा) ग २, ख २, ।
सकमूनिया-ग ३ ख २, धांत पित्तों का जुल्लाब है ।
सनायमक्की-ग २ अ त. ख १. सौदा का जुल्लाब है ।
सुदाब-ग ३, ख ३, ।
सलीखा—(तज) ग २, ख २, अन्त. जिगर को पुष्ट करती
साजिज-(तेजपात) ग ३ ख २ पेट को पुष्ट करता है ।
सफाक—ख, ४ ग १
सरेश—ग २, ख २ ।
सरतां—(केंकड़ा) त २. त २ ।
संगयशम— त २, ख २ ।
सरो—ग १, ख ।
सलखरैया—[कंचली] ग २. ख २ ।
सन्दल सफेद और पीली त ३, ख २. और लाल त २ ख
पित्तों को ठीक करता है ।
सिब [एलुआ] ग ख ।
सातर—ग २, ख, २ अ त ।
समग—[बबूल का गोंद] ग, ख २ ।
सावन—ग ३ ख ३ ।
बंसलोचन—त २, ख ३, दिलको पुष्ट और प्रसन्न करता

श

शूनीज—[कलोंजी] ग ३, ख ३ ।
शिब—[फिटकरी] ग २. ख ३ ।
शाहतरा—ग, ख २ ।
शुकाई—ग २, ख २ ।
शीरखिश्त—ग १ अ त और मोतदिल त. ख ।
शहमहन्जल—ग ४, ख २ कफ का जुल्लाब है ।

अकर-ग१, त१अ तर्र और पुरानी, ख
और मेद-ग.त मेजे को पुष्ट करता है
अकाकुल-ग.१त२ दिल को पुष्ट और प्रसन्न करता है
आदना-उ.१ अ त ख२

ग

गारीकून-ग१, ख२ कफ का जुल्लाब है
गालिया-ग, ख मेजे को पुष्ट करता है
गाफिस-ग१, ख२ जिगर को पुष्ट करता है
गावजबां ग१, ख सौदा को ठीक करती है
गुलबनफसा-उ१. त१
गुलाब-उ, या, ग
गुलाब के फूल-उ१, ख. २ मेंम को पुष्ट करते हैं
गजमाजज-(झाऊ) उ१ ख.२
गावरस-(बाजरा) उ१ ख२
गुलनीलोफर-उ१. त२
गिलेमखतूम-उ.२, ख.२ दिल को पुष्ट और प्रसन्न करती है
गिलेमुल्तानी-ग ख

फ

फिरंजमुश्क-(रामतुलसी) ग२. ख२ दिलको पुष्ट और प्रसन्न करती है
फादानियां-गरम दिलको पुष्ट और प्रसन्न करता है
फरफियून-ग ३ ख३
फिंमन फिरत-(सम्भालू) ग२ ख२

क

काकला-[इलायची] ग बड़ी १, ख२ छोटी ग२, ख२ कफ को ठीक करती है ॥

मी.

करनफल- [लौंग] ग३, ख३
क़ुस्त-[कूट] ग३, ख३
कलकलार--ग३. ख३
कस्तूरीपुन-बड़ी, ग२ अत ख३ छोटी ग३ ख३ कफ
जुल्लाब है ॥
कश्र उतरन-[छिलके बीजौरेके] ग१ ख२ दिलको पुष्ट व
प्रसन्न करता है
क़ुसाउलहिमार-- जुल्लाब की औषध है
कमीला—ग२ ख२
कासनी—ठ२ ख२ पित्तों को ठीक करती है ॥
किशनीज—(धनियां) ठ२ ख२ पित्तों को ठीक करती है
काहू—ठ३ ख३ अत पित्तों को ठीक करती है ॥
कमून— (जीरा) ग२ ख३ कफ को ठीक करता है ॥
कुन्दर—ग१ ख१
कुन्दुश—ग३, ख३ अत
कद्दू—ठ२ त२
काफनम—ठ २ ख२
कबाबा—ग २ ख १
कहरुवा—मोतदिल गरमी और ठंड में ख दिलको पु
प्रसन्न करता है ॥
करम्ब—ग १ ख २
करोया—ग २ ख २ मेदे को पुष्ट करता है।

ल

[illegible]लाप—ठ २,—ख २ पित्तों का जुल्लाब है
[illegible]ा वाला—ग १ अ त त २
[illegible] गरमी और ठंड में।

बांस—ग २, ख ३, या ग १, ख २,
बागिया—ग ४, ख ४,
बोवसवरखरी—ग २, ख २,

म

मामीरा—ग ३, ख ३, अ त
मुनक्का—ग १, ख १,
मुश्क—ग ३, ख ३,
मुर—ग ३ अन्त, ख २ अन्त
मरजनजोश—[दोनामरुवा] ग २ अन्त ख. १
माहीजहरज—ग ३, ख ३, कफ का जुल्लाब है, इस में से लाल पानी पर आती है।
मस्तगी—ग २, ख २ अन्त
मिलाह निफती—[नमक दुर्गंधवाला] ग ३ ख ३ कफ और सोदा को निकालता है॥
मोम—ग २ आदि में
मोती—ठ २ ख अन्त दिल और भेजे को पुष्ट करते हैं॥
मुर्ग—ग १ अ त मौतदिल तरी में भेजे को पुष्ट करता है
मिश्कतरामशी—अर्थात पहाड़ी पोदीना ग ३ अन्त मेदे को पुष्ट करता है॥
मुर्दासंग ग ३ ख, ३ विष है ऊपर लगाने से अच्छा मांस उत्पन्न होजाता है॥

न

नमक—ग, २ ख २
नानखुलाग-[सुनवामी] ठ १ त १
नानख्वाह—[अजवायन] ग ३ ख ३ आदि में
नारमन-पीले छिलके और फूल इस के ग २ ख २

नारंज की खटाई—ठ २ मं त ख १

नारंज के छिलके और बीज—ठ २ ख भेजे को पुष्ट करता है।

नारदीन—ग २ ख जिगर को पुष्ट करता है।

नौशादर—ग ३ ख ३ भोजन को पचाता है. मेदे और आंतों से मवाद निकालता है।

व.

वरक चांदी के—ठ १, ख १, दिलको पुष्ट और प्रसन्न करते हैं

वरक सोने के—मोतदिल और गरमी रखते हैं दिल को पुष्ट और प्रसन्न करते हैं।

य.

याकूत—मोतदिल गरमी और ठंड में ख २ दिल को पुष्ट और प्रसन्न करता है।

इतिसम्पूर्णम्

दवा देने का वर्णन

रोगी के हाल ऋतु और शरीर के स्थान के अनुसार औषधें देनी चाहिये, और जो वस्तु भोजन में खाने के योग्य हों उन्हें भोजन में खाना चाहिये, और जो दवा की तरह पर खाने पीने और लगाने के लिये हों उन्हें उसी प्रकार से काम में लाना चाहिये अर्थात् जो औषध खाने की हो, उसके लगाने से कुछ लाभ न होगा।

वह औषधें जो रुधिर के बिगाड़ को ठीक करें

चाहे वह बिगाड़ केवल रुधिर में हो या किसी और मवाद के मिलाने से हो।

ने को रोकने वाली औषधें।

...... और काहू के बीज धनियां गुलाब के फूल नीबू का रस सिकञ्जबीन उन्नाब चन्दन और कंवड़े का शरबत ॥

गाढ़े रुधिर को पतला करने वाली औषधें।

आलूबुखारे का पानी सौंफ का अर्क शहतरे का अर्क सिकञ्जबीन माउल असूल ॥

पतले रुधिर को गाढा करने वाली औषधें।

खिल्ली लोटन रेहां के बीज इसराम काबिली हरड़ और वाली औषधें रुधिर को ठीक करने वाली यह हैं मसदवी आबनूस और शीशम की लकड़ी नीम के फूल और पत्ते नीलो-फर और बनफसे के फूल गाजर का शर्बत गुन्दी कच-नाल नीलकंठी।

पित्तों की ठीक करने वाली औषधें।

ईसबगोल बीदाना कुलफा व कासनी खीरे ककड़ी के बीज धनियां सफेद चन्दन कपूर काहू के बीज बनफसे आलू नीलो-फर और चन्दन का शर्बत कुर्स कापूर कुर्सतबाशीर मुफर्रह तबाशीर काबिज ॥

कफ की ठीक करने वाली औषधें।

सौंफ अनीसून छिली हुई मुलहटी जीरा दालचीनी मुनक्के ...... खैर खुबकली इलायची बिरंजासफ माजून सीर माजून जालीनूस सौंठ की माजून जवारिश जालीनूस।

सौदा की ठीक करने वाली औषधें।

... सौड़ा गावजवां तरबूजे के बीज मुलहटी हलीर मुनक्के ...तीमून कनौचे के बीज सिकंजबीन इफतीमून माजून मुफ-... याकूती मुफर्रह नौशदारू मुफर्रह दिलकुशा शर्बत ...ि गावजवां ॥

गाढे मवाद को पतला करने वाली औषधें

अबहल, इसकील, चूका, सिरका, अस्लखुद्दूस इ... लसान उफहषान, इजीर, जुन्दबेदस्तर, राई, करसम... सरफटे की जड़, संभालु, बाबूना, दारचीनी, मोथा, जादा... सूखा जूफा, कूट, सातर, पोदीना, जरावन्द, अजवायन, ... शोरा, अकरकरा, सिकंबीनज, सुहाव नम्माम, ईरसा, ... हुर्फ, मशकतरामशी, बिल्ली लोटन, करदमाना, दमाजर...

मुन्जिर्शें।

यह औषधें हैं जो बिगड़े हुये मवाद को पकाकर ... लने के योग्य करदें, अर्थात् पतले को गाढ़ा करें जैसे खश... काहू के बीज या गाढ़े को पतला करें जैसे सूखे जूफा ... हाशा का जुशांदा, या कड़े और जमे हुये को नरम करें, ... अलसी और मेथी के लेप से कफ और सौदा की सूजन ... होजाती है।

पित्तों की मुंजिर्शें।

उन्नाब गुलाब के फूल बनफशे और नीलोफर के ... शाहतरा कासनी के बीज और जड़ मकोह सिकंजबीन तुरंज... खाखशकर शर्बत आलू गुलकद आफताबी।

मुनक्के, खैरू के बीज सोंफ अनीसुन मुलहटी ईस... शुकाई पीला इजीर गुलाब के फूल गुलकन्द सिकंजबीन।

सौदा की मुंजिर्शें।

बिहसोंड़े उन्नाब गावजबां बिल्ली लोटन छिली हुई ... ईसराज उस्तखुद्दूस शाहतरा शुकाई पादावर्द सोंफ तु... बीन गुलकन्द।

जुल्लाबों की औषधें।

यह औषध बुरे मवाद को दस्त से निकाल देती हैं।

पित्तों के जुल्लाव।

इमली, आलुबुखारे, तुरंजबीन, शीरखिस्त सनाय के पत्ते पीली हरड़ बनफशे और गुलाब के फूल कुसूम के बीज अमलतास, इफसंतीन सकमूनिया शाहतरा एलुआ लबलाब शिबरम माजरीयून।

कफ का जुल्लाव।

बकायन अन्तूरीयून माहीजहरज गारीकून काला दाना सुर्ख हलील खिसकदाना बिसफायज कलौंजी सुकाई मीठी सुरंजान रेवन्दचीनी सोंठ गूगल बेदईजीर के बीजों की गिरी और तेल अमलतास हब्ब अयारिज हब्बुलसा तीन फरफियून माहूदाना कुसाबुल हिमार।

सौदा के जुल्लाव।

इफ्तीमून बस्तबुह्दूसबिस्त छोटन आमला काजबर्द हजर अर्मनी काबिली हरड़ सनाय मकी कुसूस बिस ायज गारीकून कालादाना अयारिज फीकरा रेवन्दखताई।

मूत्र लाने वाली औषधें।

यह औषधें पतले और बुरे मवाद को मूत्र में निकालती हैं।

ठंडी।

खीरे ककड़ी और कुलफे के बीज जैक के फूल खारखिसक कद्दू ककड़ी और तरबूज का पानी खरबूजे और चिरचिरे के बीज अलसी के बीज आश की कासनी का पानी बीज और जड़ का कगज नीबू का अर्क मिला हुआ सोरा सिकंजबीन

गरम।

करफस के बीज सौंफ अनीसून बिरंजासफ गुलगुफा कबाबा राजबायन गुराब बीज हसराम

अमलतास मीठी कूट केसर तज तगर ऊदविलसान अब इस फक्के के बीजों की मींगी कलोंजी पोदीना खुब्बाजी पत्तों का पानी ।

मौतादिल ।

इसराज खरबूजे के बीज गरम और ठंडी औषधों को मिलाकर पीना ।

हैज बहाने वाली औषधें ।

तज कलोंजी अवहल हुरमुल गुन्दबेदस्तर बायबिडंग सिर-कारफ फर्दमाना बाबूना मीठा कूट कवाबचीनी इसराव फर सीयून ऊद फादानिया जिन्तयाना अजवायन जावशीर जाद मुदाब केसर तगर नम्माम सूखा जूफा करफस दाना मरवा, कमाजरीयूस जुन मरकवरामशी पत्तों का पानी अमलतास के छिलके मोथा तुरमुस ।

वीर्य निकालने वाली औषधें ।

करफस इफसतीन सोंफ तुर्मुस दरमनातुर की मुदाब ॥

उलटी लाने वाली औषधें ।

जो मेदे और उसके आस पास सेवाद को उलटी में निकालती हैं

मूली सोये कड़वे बादाम का पानी और बीज खरबूजे की जड़ बिना छिली मुलहटी शहद सिकंजबीन खाला शकर गरम पानी भरमीर के बीज कुन्दुश मबीजज मात्रक अस्ल भेड़ का दूध माजरीयून के बीज ताया जोविया अरतगार ॥

उलटी लाने वाली पुष्ट औषधें ।

कुटकी राई मौजुलफ़ै फकरजद मिमिलहक ॥

भेजे की पुष्ट करने वाली औषधें ठंडी और तर

मोथी आमला बिही सेव और अमरूद के ताजे फूल र और गुलाब के फूल नारंज ॥

गरम।

बलादुर, फिन्दक, बिल्लीलोटन, सोंठ, मोथा, बालछड़ मुश्क ऊद, अम्बर, गालिया, लोंग, कुन्दर, रोगन, अगर, जानवरों के भेजे, मुर्ग, तीतर, भेड़ का दूध।

और बाकी यह हैं, हरड़ का मुरब्बा, सेब, बिही, अमरूद नाशपाती, फिरंजमुश्क, जायफल, केसर, उस्तखुद्दूस, चमेली कद्दू और काहू के बीज सफेद चन्दन बादाम, शर्बत नारंज।

दिल को पुष्ट और प्रसन्न करनेवाली ठंडी औषधें।

अमरूद, नाशपाती, अनार, आमला, इमली, सेब, चन्दन, बसलोचन, गिलेमखतूम, रेवास, मुमुद, कहरुबा, कपूर, गावजबां, धनियां, गुलाब के फूल, मोती, नीलोफर, नारंज, हरड़, याकूत, चांदी के वर्क।

गरम।

सोने के वर्क, उतरुज के छिलके, उस्तखुद्दूस, रेशम, बहमनें बिसफायज, बिल्लीलोटन, बादरूजनबवार, दारचीनी नकरचूर, दरूनज, केसर, सुम्बुल, थोया, वज, शकाकुल, ऊदगर की अम्बर, फिरंजमुश्क, फादानियां, इलायची, बालछड़ नाना।

बाकी यह हैं, छड़ीला, इमफाखीव, आलू, धनियां, मूंगा, मूंगे की जड़, नीलोफर, बजरुलहुम्मास, पान, हरड़, सोसन, ऊद, अम्बर, याकूत फिरंजमुश्क, मुश्क।

जिगर की पुष्ट करने वाली औषधें।

ठंडी कासनी जरिश्क, अनार, [illegible] पानी लुआब ईसबगोल, शर्बत सन्दल, सिकन्जबीन [illegible] हम्मामा, [illegible] गरम-छड़ीला, इजफाखीव, [illegible] कुसुम [illegible] बिलसान, द [illegible] गाफिस,

[illegible]

मस्तगी, नारदीन, सोंफ कर्फस के बीज, गुलकन्द आमली आसानासिया तथा उलकरकम।

और बाकी यह हैं इफसन्तीन, नरक्चूर, मोथा, तगर, इलायची, अरावद, बिल्लीलोटन, मुनक्के, गुलाब निशास्ता, मेहका पानी ऊद हिन्दी।

मेदे को पुष्ट करने वाली औषधें।

ठंडी आमला अनारदाना, सिमाक बहेडा, हरड़ का मुरब्बा हरड़ बिही, वंसलोचन, गुलाब के फूल॥

गरम—सरकंडे की जड़ तुरंज के छिलके, बिल्लीलोटन जायफल, दारचीनी, नरकचूर, मोथा, तज, तेजपात लोंग, इलायची, कुन्दुर, करोंदा, रूमीमस्तगी, मशकतरामशी नाना ऊदगर की।

बाकी यह हैं कच्चे आलू, जायफल, तगर, गोल मिरच, ऊंटनी का दूध, छबीला, कचनार, पोदीना, ऊदहिन्दी, सगदाने, मुर्ग, दही, हम्मामा॥

जिगर को हानि कारक औषधें।

ठंडा पानी, नारंगी, छुआरा, इंजीरतर, इंजीर अधिक, सूखा हुआ सिरका निशास्ता, जाडों का शहद, काली हरड़ बसबासा, हब्बुलगार, दारशिशा आन॥

मेंदे को हानिकारक औषधें।

तिलों, मसूर, मावशईर, हालम के बीज, मीठे आलू, उन्नाब, अलसी के बीज, मुअसफर के फूल अदरक बोरक, इंजीर साफ सिया मादा हसरम, हम्मामा, पुराना पनीर, गरम पानी, गौ का घी, मिठाई॥

मेदे को ढीला करने वाली औषधें ।

इस्पुलगान, हमर अर्मनी, पेठे के बीज, सज्जी, कोथिया का साग, नारियल का दूध ॥

जे की हानिकारक पीड़ा उत्पन्न करनेवाली औषधें

इगफाकसीव की धुनी, पमपलपनम, कुन्दर, गदना, साया ।हसन, पियाज, खैरू क फूल, मु घना मसूर मेवी, मलसी के ।म, बैंगन, मूली, सूरकलांजगम, तुन, इफसतीन पालक, पालू, सरकडे की जड, तर्द, मुजून, गादा, गुलनार, जाय-ल, लुबान, पैबन्दमरियम हींग खशखाश इज्जास, अशगार बिलीहरद, तम्बाकू, सरशफ ॥

पेटकी नरम करने वाली औषधें ।

मूली, पालक, करम्ब, बिनौला, चुकन्दर, गन्ने का रस, द कफ समेत शफतालू सिरका अमिली, इन्युसमना कुलफे र बथुये का साग भेड़ का दूध बकरी का दूध मक्खन बहुत ना तरा, सौंफ, हरड़, सना, इमली, गुलाब, तुरमधीन, क की जड़ और अर्क गुलकन्द ॥

पेट बद करने वाली औषधें ।

बकरी, और भेड का कलेजा, भुना हुआ बाकला, अम की जड़, कौका ससूत, कच्चेपाये भुने हुए कचनार, जीरा ाक रैहां के बीज, ईसबगोल कनौचा बारतंग, बेलगिरी ाआस इलायची, सौंफ अनीसून, निशास्ता गिले अर्मनी : मुश्त ।

सुद्दा और बात दूर करने वाली औषधें ।

सरफड की जड़, शाहतरा, गारीकून, सौंफ, अफीम, इफ-न, साबर पसबासा, समालू जावशीर, कर्फस बसखुद-ाीमून ~ ~ , ~ किरमानी, ईरसा, ~

खार्गो, गाजर, के बीज, सोंठ, दारफिलफिल, कबाबचीनी, सुदाब, दारचीनी, केशर, दोनामरुवा, मरजंद, कबाबचीनी, कुसुम, इस्पन्द, अनीसून, ऊद, तुरमुस, हाशा, साशरस, कस्तूरीयून, करसना।

कब्ज करने वाली औषधें।

तुरज के छिलके, सगदानमुर्ग की खाल, मुलत के फल, पिस्ते के बाहर के छिलके जरिश्क, इब्बुलास, माकला, बसखापन, दम्बुल, धनबर्गेन, गुलनार तुमुद अखरोट, सिमाक, मसूर, बारतग सरफूंके की जड़, मर्रो के फल, जामन और आम की गुठली की मिंगी मस्तगी, चना, चांवल, माई माजू, कुन्दर, तीनम खतुस ईसबगोल भुना हुआ, सोने के वर्क, अमरूद कहरूबा रेहां के बीज, निशास्ता, काफूर, गावरस, नार दीन, कुनार की गुठली की मिंगी॥

नींद लाने वाली औषधें।

खशखाश और पोस्त का बरेटा खशखाश फूल सूंघना सोया सिरहाने रखना केशर मुअसफर के फूल बनफ्शे के फूल, हरा धनियां आश जौ बादाम का शीरा और रोगन, गुल रोगन नीलोफर हाथ पांव मलना पानी की आवाज, गाना हवा से पत्तों के हिलने की आवाज काहू का साग किम की मिट्टी सोते हुए आदमी के मुह पर छिड़कना अफीम तुकाह हम्माम बाजुना॥

नींद खोने वाला औषधें।

पोदीना सिरका राई लोंग सिर और माथे और कनपटी पर लगाना गोल मिरचें सुरक नमक सिरका कपूर और गुलाब के फूल सूंघना अयारिज फीकरा से कुल्ली कराना फाखता या चिमगादड़ की बीट सिरपर बांधना चाय और बुन पीना खट्टा अनार नीबू कन्द का शर्बत गुलाब॥

सोते में बुरे बुरे स्वप्न दिखलाने वाली औषधें।

गन्दना, लोबिया, बाकला पका, प्याज, शर्वतबाला, चित सोना, शालू, बैंगन, सोदा, उत्पन्न करने वाली वस्तु, हिम्मती

बुरे स्वप्न बन्द करनेवाली औषधें।

पिलौर और बेत की लकड़ी, गले में लटकाना, फिटफिरी, सिरके नीचे रखकर सोना, दरोनज, कुलफा का साग, अकरकरा सोना, मर्दशीशा, हमरुलअमाल ॥

पचाव करने वाली और भूख लगानेवाली औषधें।

नीबू—और तुरंज के छिलके, गोल मिरचें सिकंजबीन सफरजली अरिक सिरका मस्तगी कुलीजन नमक इलायची ऊटनी का दूध ठंडा पानी फिरंज मुश्क मेदे की पुष्ट करने वाली वस्तु सिवाय केशर के ॥

दांतों और मसूड़ों की पुष्ट करने वाली औषधें।

गुलनार, फिटकिरी, कुन्दुर, सुर्मा, बारहसींगा के सींग जले हुए पिस्ता हरड़ के छिलके शाखियां अकरकरा सिमाक गुलाब का जीरा, मोथा, माजू, गाई मस्तगी, इलायची काली मिरच जली हुई, कसीस, बसलोचन, भिलावा जला हुआ पीली हरड़ की गुठली जली हुई लोहे का बुरादा गुलाब की कलीनास जला हुआ तमाकू मुन्दरूस इ जरूत सगमिरादत कबाबालस्या पीली कौड़ी मीठा कूट मोती मौलसिरी की छाल मिरच के बीज अरम्ब मुक रामक मौरद के पत्ते समन्दरफेन छिली हुई मसूर इमली के बीज मुरमकी नैं और मूंगे की जड़ ॥

दांतों और मसूड़ो की हानिकारक औषधें।

दूध, ऊंटनी का दूध मूली, बर्फ और शोरेका पानी

गरम गरम वस्तु पर ठंडा पानी पीना ठंडी वस्तु पारा पश्नान

दृष्टि की पुष्टि करने वाली औषधें ।

आंवला, पीली हरड़, बादाम, सौंफ, मुन्डी पका हुआ प्याज शहद जली सीपी और रेशम सुरमा सोने और चांदी का मैल गोल मिरच लगाना मुश्क और केशर और मोती पीस के सोने की सलाई से लगाना चन्द्रमा की ओर देखना सिरका ॥

वह औषधें जो मवाद को आंख पर न गिरने दें ।

तरबूज के छिलके, कुन्दुर, करनुल, इक्लदकीक, आबनूस, घजरुलबनज केशर स्त्री के दूध में मिली हुई बनफसा लबलाब छालियां तिरियाक फारूक़ ह शरूत मकोय मिट्टी मसूर बादरुन सफेद चन्दन, बकायन फिस्तक नरबद अकाकिया लौसिमाक अमरूद सुम्द तूतिया रसौत कुबरान ॥

दृष्टि को हानिकारक औषधें ।

खारी भोजन, गरम पानी, सिर पर डालना, सूरज को देखना बैरी अर्थात् शत्रु को देखा करना मसूर कुलफा चूका करम्ब काहू, चिरचिरा गन्दना विषय की अधिकता धूप में आग के पास बैठना चमकीली वस्तु देखना ॥

स्त्री संग के चाहना को पुष्ट करने वाली औषधें।

एक वर्ष का बकरी का बच्चा, मुर्ग, तीतर, मछली, अंडे चिड़िया शलजम गाजर मूली प्याज, और उनके बीज गाय और भेड़ गाय का घी खोर छुआरे बादाम फिन्दक इक्षुरस मना पिस्ता चिलगोजा सालब शकाकुल कुलीजन चूनीदान गोखरू बहमन तोदरी तिली हाकों चिरचिरे के बीज केवांच के बीजों की मिंगी, मूसली सेंभल मूसली अकरकरा मरतगी, गन्दने के बीज दालचीनी, दार फिलफिल खशखाश सफेद

सोंठ, पशाना, तगर, नरकचूर, माकला, इन्द्रजौ, लाहे का मैल रेगमाही, माहीरोबिया, माही सकूनकूर, मुश्क, मासी, चिड़िया और उसके अंडे, अंगूर, करफस, बसबासा, कबीरा, अख रोट, पनीर, मायाशुतर, जिरजी, इन्युज्जलम, हींग, सुरमान, फिन्दक तम फूट पत्ते, बेड़ के पत्ते का मेवा, हिलयून के बीज, लोबिया नारियल की गिरी, इमीर

विषय की चाहना को खोने वाली और हानिकारक औषधें।

फिरंग मुश्क, कासनी, काहू खसखस, ईसबगोल, कूटहिन्दी, लोहकली, धनियां, मसोह, कच्चा लहसन, नीलोफर की जड़ लाली खशखाश, कपूर, पानी अधिक पीना, विषय के पीछे पानी पीना, खटाई, इमली आलू बुखारा नीबू बादी तोड़ने वाली वस्तु, चूका बकलाय मानियां॥

वीर्य उत्पन्न करने वाली औषधें।

गन्दने के बीज शकाकुल मीठा, सुरंजान, कटके दोनों की गोली पियाज, गौ का दूध ऊंटनी का दूध घृत मिला हुआ उस, मुर्ग, इन्युलम, पूमी, गहबन, बादाम पिस्ता, शलजम लोबिया चना, इन्द्रजौ, सुगाम, नारियल, तोदरी, अलसी के बीज, छड़ीला तुरंजबी, सोंठ, मुश्क केसर॥

विषय करने में अधिक ठहराने वाली औषधें।

अफीम जायफल बीर बहुटी, सूगल, धतूरे के बीज, और पत्ते खुरासानी अजवायन, लौंग काली मिरच बसबासा, सर मस्तगी, दारचीनी, सोंठ कपूर, मुश्क अकरकरा, बबूल फूल, गांमा के बीज, गिलोय सत॥

विषय करने में मजा देने वाली औषधें।

लौंग, दारचीनी, कबाब, अकरकरा, मवीजज कुचल कर और सोंठ शहद में मिला कर थूक के साथ लिंग पर मल कर विषय करना। सिर के बाल पीस कर, बीरबहूटी, पारा केसर कपूर, कबूतर की बीठ॥

लिंग के बढ़ाने वाली औषधे।

केंचुए, अकरकरा सफेद कनेर की जड़ की छाल घोड़े के सुम, लौंग जायफल, दारचीनी, केसर, रोगन जैतून मलना। कफस के पानी से कई बार धोना, बकरी के घी से चिकनाना, केंचुए और जोंक सूखे हुए सोसन के तेल में पीसकर मलना।

भग को तंग करने वाली औषधें।

बकायन और अनार की छाल, मौलसिरी की छाल को पीस कर कपड़े में लगा कर रखना, माजूफल और कपूर और शहद मिला कर भग में लगाना, बबूल, इसपंज, काली तिली गोखरू, इमली के बीज बीरबहूटी॥

नीचे लिखी हुई औषधों से बच्चा जल्दी जना जाता है।

गूगल, डंज, गुलनार, बकायन की छाल, नीलोफर। जट मोथा, बारतंग और मकोय का धसरा, काली खशखश लगाना, चुम्बक पत्थर का बड़ा टुकड़ा उलटे हाथ में पकड़ बुसुद सीधी जांघ पर बांधना; दारचीनी, खाना तिली व तेल अलसी के लुआब में मिलाके भग में लगाना॥

मरे हुए बच्चे को निकालने वाली औषधे।

जराबन्द, अबहल अलसी तम. गोल मिरच, धूमीदा सराज काली कुटकी। कालाजीरा मांजू पीस के पीना कवोंम

हरी महदी की छाल, घांस के पत्ते औटा के पीना, पीपलामूल और काली कुटकी पीस के विराना मिला के टूंडी पर लेप करना और पिसा हुआ कूदश शहद में मिला कर टूंडी या पेडू पर लेप करे।

मशीमा को निकालने वाली औषधें।

हसराज, करम्ब के बीज, कबूतर की बीट, सम, कलोंजी, बिरनास्फ, जुन्दबेदस्तर, ईरशा पिसा हुआ, अमलतास रहम में टपकाना, और पीना, बाबूना, हब्बुलकली ॥

मसाने और गुरदे की पथरी को तोड़ने वाली औषधें

सगर, बिरजास्फ, समग, आलू बुखारे के बीज, गोखरू, हंसराज, सोंफ, काले चने, हजरुल यहूद, संगसरमाही, हब्बुल किल्त, कडुआ बादाम माया, सिकबीनज, बिच्छू की राख ॥

सूजन को पटकाने वाली औषधें।

कमाजरीयूस, क्राकू, हाशा, जराबन्द, नाखूना, थम, खरजहरा, हमार मिशान, नादा, नावशीर, उशकहसराम, जंगली पियाज, बाबूना, बिरनास्फ, सरकंडे की जड़, बाकला, सगर, बकइवान, खेरू, जिफत, बतम का गोंद, साबुन नम्माम मुरहटो, गुग्गुल कुसाबजहियार, दोना मरुआ गाफिस किला, फोदना, खुरू जुन्दबेदस्तर, राई, दारहल्द खैरी दारचीनी, कैकडा, सोया पहुआ ॥

सूजन को नरम करने वाली औषधें।

गोंद, जैतून बनफ्शबनज, गुगल मोया, बेद इस्तीर और बिनौला और खुरू का तेल, बतक की चर्बी, नलीका गूदा ईसबगोल खेरू और कनोष जिफत इकलुलमलम, ईरसा, सलारस, नाखूना करम्ब, अम्बर मोम मुरलाइन मुकल्लसी, मेंहदी ॥

सूजन को पकाने वाली औषधें ।

नाखुना. ईरसा. करम्ब. बतम का गोंद अम्बर सादन. मांम. खैरू के बीज. मुर. मुक ॥

सूजन को फोड़ने वाली औषधें ।

जगली पिपास. गंधक. हरीजान. हुर्फ पेड़ों का दूध. कबूतर की बीट. चना. कूट. फरफियून. साबन फलककार. शानजार जरारीह ॥

बुरे मांस को गला देने वाली औषधें।

इनरूत. अगनान. नमक मुरदासंग. तांबे का बुरादा. सफेदा सैन्दूर. जली हुई सीपी जगार. तूतिया, चूना ॥

साफ करने वाली औषधें ।

अफहल, जिफत. शोरा नमक. मिसरी. आवकासा. ईरसा शहद. गंधक. हब्बसिलसान, इनरूत ॥

कीड़े मारने वाली औषधें ।

बायबिड़ग. इफसन्तीन आदा. सूखा नुफा. करोया हुर्फ. पोदीना. कमीला. शीह. कलौंजी. शफतालु के पत्ते तुरमुस ॥

घाव को भरने वाली औषधें ।

सुरमा. समगआलु, इनरूत इस्फन. बर्गमुलूत हम्मुल आबवेन. जिफत. जराबन्द. पातंग. कालाजीरा ईरसा. एलुआ. गिलेमखतूम. संगजिराहत, शाक. कतीरा गुलनार सफेद कन्नेर सफेद मोम. गौ का दूध. धोया हुआ. खिसानुल हमल का पानी ।

घाव को सुखाने वाली औषधें ।

जली हुई सीपी और छुआरा और घोड़े गधे का सुम. अनरूत कमीला. मुरदासंग एलुआ धोया हुआ चूना. दम्मुलअख्वैन. ।

नाक मुंह और दस्तोंके रुधिरको रोकनेवाली औषधें।

दम्मुल अखवैन. मस्तगी कन्तूरीयून ,सरोके फल पत्तियां, मरिरुक मुसद रसोत जीरा कपूर अंजबार की जड़ पोदीना गेरू वादरूज सुरमा गुलूत बारतग. कहरुवा निशास्ता वजरुलबनज. शादना. गुलनार कुन्दर माजू गिलेअर्मनी बारगद की दाढ़ी पत्थर, रेवन्दचीनी, झाऊ का फल, पेठे के बीज जुन्दबेदस्तर, साफसिसा, मवाद को खेंचने वाली है। नूरा नमक सफेद, राखका पानी बाल उड़ाने वाली हैं॥ बोप, निशास्ता, कहरुवा, कतीरा, जमाने वाली हैं॥ इमकल, उड़ीला चुनाचूना तूतिया एलुआ जली हुई सीपी साफ करने वाली है। मकोह ईसबगोल गुलनार छालियां पत्तियां मवाद को रोग की जगह नहीं गिरने देतीं। अफीम अफशी बीयून, बचनाग, निफत, मारडालने वाली हैं॥ राई, फोदनज, हुमीर, लालानोमानी, लाल करने वाली है॥ अफीम, इस्पन्द, कुचला, जर्वकी जड़, शाहतरे की जड़, तम्बाकू के पत्ते और बीज, कुन्दर, यूकरान लौंग, धतूरा का फल, बजरुलवनम, फाकनज, जवरूजुरसनम सुन करने वाली है॥ अफीम, बतख की चर्बी, यवरूजुरसनम की जड़, अंडे की सफेदी, निशास्ता कतीरा, बबूल का गोंद पीड़ा के रोकने वाले हैं॥ उकहुवान, इसतफर, इम्माम केसर सोया शकायक काहू खफाश शाहसफरम सुलाने वाले और सुन करने वाले हैं॥ तगर, इम्मुल किल्व, हाशा शाहतरा बादावर्द, बनफशे की जड़, इमवल गाफातीस, फेंफड़े को हानि देती है। तम्बाकू, नकछिकनी, छींक लाने वाली हैं। बबूल का गोंद, निशास्ता, कतीरा, घोंघाचूना, चिपकने वाला और सुधा उत्पन्न करने वाली हैं। अनीसून, इर्फलीमून, बसबासा, गाजर के बीज, सभालू भाबशीर,

सूजन को पकाने वाली औषधें ।

नाखूना. ईरसा. करम्ब. बतम का गोंद अम्बर लादन. मोम. खैरू के बीज. मुर. मुक ॥

सूजन को फोड़ने वाली औषधें ।

जगली पियाज गधक. हरीजाग. हुर्फ पेड़ों का दूध. कबूतर की बीट. चना. कूट. फरफियून. साबन. कलकतार. शानजार जरारीह ॥

बुरे मांस को गला देने वाली औषधें।

इनरूत. अशनान. नमक. मुरदासंग. तांबे का बुरादा. सफैदा सैन्दूर. जली हुई सीपी. जगार. तूतिया, चूना ॥

साफ करने वाली औषधें ।

अबहल, जिफ्त. शोरा नमक. मिसरी. आबकाला. ईरसा शहद. गधक. हब्बुसिलसान इनरूत ॥

कीड़े मारने वाली औषधें ।

वायबिडग. इफसन्तीन नादा. सूखा जूफा. करोया हुर्फ. पोदीना कमीला. शीह. कलौंजी. शफतालु के पत्ते तुरमुस ॥

घाव की भरने वाली औषधें ।

सुरमा. समगबालू. इनरूत. इस्फज पर्कबुलुव दम्मुल अखवैन. जिफ्त. मराबन्द. मातंग. कालाजीरा. ईरसा. एलुआ. गिलेमखतुम. सगजिराहत, शाख कतीरा गुलनार सफैद कन्नेर सफैद मोम. गौ का दूध धोया हुआ खिलाफुल हमल का पानी ।

घाव को सुखाने वाली औषधें ।

जली हुई सीपी और छुआरा और घोड़े गधे का सुम इनरूत कबीला. मुरदासग एलुआ धोया हुआ चूना. मुन्दरूस ।

नाक, मुंह और दस्तोंके रुधिरको रोकनेवाली औषधें।

हम्मुल अखवैन, मस्तगी फल्दूरीयून, सरोके फल धनियां, जरिश्क बुसुद रसौत जीरा कपूर अंगवार की जड़ पोदीना गेरू, पादरूज सुरमा, गुलूल घारतंग, कहरुबा निशास्ता बनरुलबनज शादना गुलनार कुन्दर माजू, गिलेअरमंती, बरगद की डाढ़ी पत्थर, रेवन्दचीनी, ढाक का फल, पेठे के बीज जुन्दबेदस्तर, साफसिया, मवाद को, खेंचने वाली है। नूरा, नमक सफेद, राखका पानी बाल उड़ाने वाली हैं॥ मोम, निशास्ता, कहरुबा, कतीरा, जमाने वाली हैं॥ इमरूद, खड़ीता धुलाचूना तूतिया पलुआ जली हुई सीपी साफ करने वाली हैं। मकाद ईसबगोल गुलनार अकाकिया धनियां मवाद को रोग की जगह नहीं गिरने देतीं। अफीम, अफ़ी बीयून, बचनाग, निफ्त, मारडालने वाली हैं॥ रोई, फोदनज, हमीर, लालानोमानी, लाल करने वाली हैं॥ अफीम, इस्पन्द, कुचला, नर्वकी जड़, शाहतरे की जड़, तम्बाकू के पत्ते और बीज, कुन्दर, यूफरान लौंग, धतूरा का फल, बनफसबनज, फाकनज, लवरूजुस्सनम सुन करने वाली है॥ अफीम, मलम की चर्बी, यवरूजुस्सनम की जड़, अंडे की सफेदी, निशास्ता कतीरा, बबूल का गोंद पीड़ा के रोकने वाले हैं॥ वकहुवात, इसतकर हम्माम केसर सोमा, फ़ाकायफ काहू काफ़ूर, शाह-सफरम सुलाने वाले और सुन करने वाले हैं॥ तगर, हब्बुल क्लिल, हाशा, शाहतरा बादावर्द, बनफशे की जड़, बुबरुल गाफातीस, फेंफड़े को हानि देती हैं। तम्बाकू, नकछिकनी, और खाने वाली हैं। बबूल का गोंद, निशास्ता, कतीरा, पोयाचूना, चिपकने वाला और मुदा उत्पन्न करने वाली

इफ्तीमून, बसबासा, नागर के बीज, सभालू

दारफिलफिल का लीमिरच, जीरा, फर्दमाना, सोंठ, नरकचूर जराबन्द, मुश्क मोथा, सातर, कुन्दर, करफस, अज-वायन पेट फूलने और वायु को लाभदायक हैं। गधक, नौन, इसकील, लहसन, पियाज, सुर्ख कबूतर की बीट, चूना, कूट, पोदीना, साबन, मुदाब, रासन करफयून, पेड़ों का दूध, घाव डालने वाले हैं। केसर, कच्चा रेशम, लौंग, कपूर, सफेद चन्दन, मुश्क, इनफारवीव, तज, बालछड़, अमरूद, बतरुज, अनार, आमला, कली और छिलका नीबू का, मूंगा, मूंगे की जड़, बिसफायज, पान, जहरमुहरा खताई, लाजवर्द, गुलाब के फूल इमली, बसलोचन, ऊद, मोती नीलोफर के फूल, पोदीना, नम्माम, याकूत, संग, युश्त, अम्बर सोने चांदी के वरक, पिस्ता बहमनें, मुफ्रद सेब, मिठी इजीर जदवार, बादरुज बिल्ली लोटन, दारचीनी, नरकचूर, बालछड़ मोथा, शकाकुल, तीनम-लतुम, फिरजमुश्क, फादानिया, इलायची, कहरुवा, गावजवां, धनियां सौसन, नोनज हरड छड़ीला, आलू, चांदनी के फूल, कुन्दर, कतीरा अरकलाना, केवड़ा, इत्र, उम्तखुदूस, मसरूम करने दिलकी पुष्ट करने वाली हैं॥

केसर, कडुआ बादाम, भंग, जावित्री, शराब में छड़ीला डालना, केसर, छड़ीला शराब पीकर सूंघना, कडुआ बादाम, या पांच दाने काकनज के पीने के पीछे खाना, शराब नशे को शीघ्र उत्पन्न करता है॥

शराब पीकर अमरूद, मिठी या मीठा बादाम या नारि-यल की गिरी या धनियां खाना नशे को देर में चढ़ने देता है॥

इति संपूर्णम्।

बूंटी प्रचार ।

यह वैद्यक का छोटा सा ग्रन्थ अपने ढंग का एक ही है इसको स्वर्गवासी महात्मा महत सुन्दरामदास जी ने जीवन भर अपने अनुभव किये हुए चुटकुलों से भरा है बड़े और छोटे से छोटे रोगों के बहुत ही सुगम उपाय लिखे हैं यह पुस्तक प्रत्येक गृहस्थी को सदैव अपने घर में रखना उचित है इसके पास होने से साधारण रोगों में वैद्य और हकीमों के पास दौड़ने की आवश्यकता नहीं रहेगी, इस पुस्तक को विदेश में भी साथ रखने से मनुष्य अपना और अपने साथियों का रोग दूर कर सकता है इन सब बातों के सिवाय धातुओं के मारण जारण की विधि जंगल की जड़ी बूटी द्वारा बहुत ही सहज लिखी हैं तथा औषधि प्रस्तुत करने की प्रणाली भी विधि पूर्वक लिखी है । जिन जिन जड़ी बूटियों का काम इस पुस्तक में पड़ा है उन सब के ऐसे सुन्दर चित्र दिये हैं मानों असल हो खींच दिया है ये चित्र प्राय २०० से अधिक पुस्तक के अन्त में नागेश्वर यन्त्र मृगागर्यन्त्र आदि के कितने ही अद्भुत और उपयोगी चित्र दिये हैं । इस तरह सब मिला कर यह पुस्तक प्राय. ३०० पृष्ठ में सम्पूर्ण हुई है मूल्य विला-यती कपड़े की जिल्द का १) रु० डाक म० ≈)

केश कल्पद्रुम ।

अर्थात् खिजाब प्रकाशक ॥

इस पुस्तक में बालों पर खिजाब करने के उत्तमोत्तम १०० नुसखे बड़े २ हकीमों तथा वैद्यों के आजमाये हुए संग्रह करके लिखे गये हैं एक२ नुसखा बुड्ढों को जवान बनाने और रोजगारों को धन कमाने के लिये काफी है, मूल्य।) आना

दारफिलफिल का सीमिरघ, जीरा, फर्दमाना, सोंठ, नरकचूर जरावन्द, सुदाय मोथा, सातर, कुन्दर, करफस, अज-वायन पेट फूलने और वायु को लाभदायक हैं। गधक, लाल, इसकील, लहसन, पियाज, सुर्ख कबूतर की बीट, चूना, कूट, पोदीना, साबन, सुदाब, रासन फरफयून, पेडों का दूध, घाव डालने वाले हैं। केसर, कच्चा रेशम, लौंग, कपूर, सफेद चन्दन, मुश्क, इजफारखीब, तज, बालछड़, अमरूद, उतरज, अनार, आमला, कली और छिल का नीबू का, मूंगा, मूंगे की जड़, बिसफायज, पान, जहरमुहरा खताई, लाजबर्द, गुलाब के फूल इमली, बसलोचन, ऊद, मोती नीलोफर के फूल, पोदीना, नम्याम, याकूत, संग, पुस्त, अम्बर सोने चांदी, के वरक, पिस्ता बहमनें, सुखद सेब, बिही इजीर जदवार, बादरज बिल्ली लोटन, दारचीनी, नरकचूर, बालछड़ मोथा, शकाकुल, तीनम-खतुम, फिरजमुश्क, फादानिया, इलायची, कहरुवा, गावजवां, धनियां सौसन, नानज हरड़ छड़ीला, आलू, चांदनी के फूल, कुन्दर, कतीरा अरकलना, केवड़ा, इत्र, दस्तखुद्दस, मसल करने दिलको पुष्ट करने वाली हैं॥

केसर, कडुआ बादाम, भग, जावित्री, शराब में छड़ीला डालना, केसर, छड़ीला शराब पीकर सूंघना, कडुआ बादाम, या पांच दाने काकनज के पीने के पीछे खाना, शराब नशे को शीघ्र उत्पन्न करता है॥

शराब पीकर अमरूद, बिही या मीठा बादाम या नारि-यल की गिरी या धनियां खाना नशे को देर में चढ़ने देता है॥

इति संपूर्णम्।

जड़ी बूटी प्रकाश ।

[illegible] वैद्यक [illegible] ग्रन्थ [illegible] है ।
इसमें [illegible]
[illegible] अनुभव किये हुए नुसखों के [illegible] और [illegible]
सारे रोगों के [illegible] दिये हैं [illegible]
प्रत्येक [illegible]
पास रखने से साधारण रोगों में वैद्य और हकीमों के पास
दौड़ने की आवश्यकता नहीं रहेगी, इस पुस्तक को [illegible]
साथ रखने से मनुष्य अपना और अपने साथियों का रोग
दूर कर सकता है इन सब बातों के सिवाय धातुओं के मारण
[illegible] की विधि जंगल की जड़ी बूटी द्वारा बहुत ही [illegible]
[illegible] हैं तथा औषधि प्रस्तुत करने की प्रणाली भी [illegible]
[illegible] लिखी है । जिन जिन जड़ी बूटियों का नाम
इस पुस्तक में आया है उन सब के ऐसे सुन्दर चित्र दिये हैं
[illegible] असल ही खींच दिया है ये चित्र प्रायः २०० से अधिक
[illegible] के अन्त में नागेश्वर पत्र मृगागर्भ आदि के [illegible]
[illegible] और रंगीन चित्र दिये हैं । इस तरह सब [illegible]
[illegible] प्रायः ३०० पृष्ठ में सम्पूर्ण हुई है मूल्य [illegible]
[illegible] का १) रु० डाक म० ।=)

केश कल्पद्रुम ।

अर्थात् खिजाब [illegible] ॥

[illegible] बालों पर खिजाब लगाने [illegible]
[illegible] रोगियों तथा वैद्यों के [illegible]
[illegible]